१

तीन जुलाई ! वह बुधवार की रात थी- जिस रात इस बेहद सनसनीखेज और दिलचस्प कहानी की शुरुआत हुई ।

वह एक मामूली ऑटो रिक्शा ड्राइवर था ।

नाम- रमेश !

रमेश पुरानी दिल्ली के सोनपुर में रहता था । सोनपुर- जहाँ ज्यादातर अपराधी किस्म के लोग ही रहा करते हैं । जेब तराशी, बूट लैगरस और चैन स्नेचिंग से लेकर किसी का कत्ल तक कर देना भी उनके लिये यूं मजाक का काम है, जैसे किसी ने कान पर बैठी मक्खी उड़ा दी हो ।

रमेश इस दुनिया में अकेला था- बिल्कुल तन्हा ।फिर वह थोड़ा डरपोक भी था ।

खासतौर पर सोनपुर के उन गुण्डे-मवालियों को देखकर तो रमेश की बड़ी ही हवा खुश्क होती थी, जो जरा-जरा सी बात पर ही चाकू निकालकर इंसान की अंतड़ियां बिखेर देते हैं ।

सारी बुराइयों से रमेश बचा हुआ था, सिवाय एक बुराई के । शराब पीने की लत थी उसे ।

उस वक्त भी रात के कोई सवा नौ बज रहे थे और रमेश सोनपुर के ही एक दारू के ठेके में विराजमान था ।

उसने मेज से उठकर दारू की बोतल मुँह से लगायी, चेहरा छत की तरफ उठाया, फिर पेशाब जैसी हल्के पीले रंग वाली दारू को गटागट हलक से नीचे उतार गया । उसने जब फट् की जोरदार आवाज के साथ बोतल वापस मेज पर पटकी, तो वह पूरी तरह खाली हो चुकी थी ।

ठेके में चारों तरफ गुण्डे-मवालियों का साम्राज्य कायम था, वह हंसी-मजाक में ही भद्दी-भद्दी गालियाँ देते हुए दारू पी रहे थे और मसाले के भुने चने खा रहे थे ।

कुछ वेटर इधर-उधर घूम रहे थे ।

“ओये- इधर आ ।” रमेश ने नशे की तरंग में ही एक वेटर को आवाज लगायी ।

“क्या है ?”

“मेरे वास्ते एक दारू की बोतल लेकर आ । जल्दी ! फौरन !!” आदेश दनदनाने के बाद रमेश ने अपना मुँह मेज की तरफ झुका लिया और फिर आंखें बंद करके धीरे-धीरे मेज ठकठकाने लगा, तभी उसे महसूस हुआ, जैसे कोई उसके नजदीक आकर खड़ा हो गया है ।

“बोतल यहीं रख दे ।” रमेश ने समझा वेटर है- “और फूट यहाँ से ।”

लेकिन उसके पास खड़ा व्यक्ति एक इंच भी न हिला ।

“अबे सुना नहीं क्या ?” झल्लाकर कहते हुए रमेश ने जैसे ही गर्दन ऊपर उठाई, उसके छक्के छूट गए ।

मेज पर ताल लगाती उसकी उंगलियां इतनी बुरी तरह कांपी कि वह लरजकर अपने ही स्थान पर ढेर हो गयीं ।

सामने धरम सेठखड़ा था, दारू के उस ठेके का मालिक !

लगभग पचास-पचपन वर्ष का व्यक्ति ! लाल-सुर्ख आंखें ! लम्बा-चौड़ा डील-डौल और शक्ल-सूरत से ही बदमाश नजर आने वाला ।

“र.. धरम सेठअ...आप !” रमेश की आवाज थरथरा उठी- “अ...आप !”

रमेश कुर्सी छोड़कर उठा ।

“बैठा रह ।” धरम सेठने उसके कंधे पर इतनी जोर से हाथ मारा कि वह पिचके गुब्बारे की तरह वापस धड़ाम से कुर्सी पर जा गिरा ।

“म...मैंने आपको थोड़े ही बुलाया था सेठ ?”

“मुझे मालूम है, तूने मुझे नहीं बुलाया ।” धरम सेठगुर्राकर बोला ।

“फ...फिर आपने क्यों कष्ट किया सेठ ?”

“ले...पढ़ इसे ।” धरम सेठने कागज का एक पर्चा उसकी हथेली पर रखा ।

“य...यह क्या है ?”

“उधारी का बिल है ।” धरम सेठने पुनः गुर्राकर कहा- “पिछले दस दिन से तू दारू फ्री का माल समझकर चढ़ाये जा रहा है, अब तक कुल मिलाकर एक हज़ार अस्सी रुपये हो गये हैं ।”

“बस !” रमेश ने दांत चमकाये- “इत्ती-सी बात ।”

“चुप रह ! यह इत्ती-सी बात नहीं है, मुझे अपनी उधारी अभी चाहिए, फौरन ।”

“ल...लेकिन मेरे पास तो आज एक पैसा भी नहीं है सेठ ।” रमेश थोड़ा परेशान होकर बोला- “चाहे जेबें देख लो ।”

उसने खाली जेबें बाहर को पलट दीं ।

“जेबें दिखाता है साले- जेबें दिखाता है ।” धरम सेठने गुस्से में उसका गिरहबान पकड़ लिया- “मुझे अभी रोकड़ा चाहिये । अभी इसी वक्त ।”

“ल...लेकिन मेरी मजबूरी समझो सेठ ।”

“क्या समझूं तेरी मजबूरी ।” धरम सेठचिल्लाया- “तू लंगड़ा हो गया है...अपाहिज हो गया है ?”

“य...यह बात नहीं...आपको तो मालूम है ।” रमेश सहमी-सहमी आवाज में बोला- “कि मैं ऑटो रिक्शा ड्राइवर हूँ और पिछले पंद्रह दिन से दिल्ली शहर में ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल चल रही है । इसलिए काम-धंधा बिल्कुल चौपट पड़ा है और बिल्कुल भी कमाई नहीं हो रही ।”

“यह बात तुझे दारू पीने से पहले नहीं सूझी थी ।” धरम सेठडकराया- “कि जब तेरा काम-धंधा चौपट पड़ा है, तो तू उधारी कहाँ से चुकायेगा ? लेकिन नहीं, तब तो तुझे फ्री की दारू नजर आ रही होगी । सोचता होगा- बाप का माल है, जितना मर्जी पियो । लेकिन अगर तूने आज उधारी नहीं चुकाई, तो तेरी ऐसी जमकर धुनाई होगी, जो तू तमाम उम्र याद रखेगा ।”

धरम सेठको चीखते देख फौरन तीन मवाली उसके इर्द-गिर्द आकर खड़े हो गये ।

रमेश भय से पीला पड़ गया ।

“स...सेठ ।” उसने विनती की- “म...मुझे एक मौका दो । हड़ताल खुलते ही मैं तुम्हारी पाई-पाई चुका दूंगा ।”

“यानि आज तू रुपये नहीं देगा ।”

“न...नहीं ।”

“बुन्दे, शेरा ।” धरम सेठचिल्लाया- “पीटो साले को ! कर दो इसकी हड्डी-पसली बराबर ।”

“नहीं !” रमेश दहशत से चिल्लाता हुआ दरवाजे की तरफ भागा ।

तीनों मवाली चीते की तरह उसके पीछे झपटे ।

दो ने लपककर हॉकियां उठा लीं ।

एक ने झपटकर रमेश को जा दबोचा ।

“नहीं !” रमेश ने आर्तनाद किया- “मुझे मत मारो, मुझे मत मारो ।”

मगर उसकी फरियाद वहाँ किसने सुननी थी ।

दो हॉकियां एक साथ उस पर पड़ने के लिये हवा में उठीं । रमेश ने खौफ से आंखें बंद कर ली ।

“रुको ।” उसी क्षण एक तीखा नारी स्वर ठेके में गूंजा ।

हॉकिया हवा में ही रुक गयीं । वहा एकाएक करिश्मा-सा हुआ था ।

रमेश ने झटके से आंखें खोलीं, सामने डिंपी खड़ी थी ।

डिंपी लगभग पच्चीस-छब्बीस साल की एक बेहद सुंदर लड़की थी । वह सोनपुर में ही रहती थी । सात साल पहले उसके मां-बाप एक एक्सीडेंट में मारे गये थे । तबसे डिंपी बिलकुल अकेली हो गयी थी । परन्तु उसने हिम्मत नहीं हारी । वह बी.ए. पास थी, उसने एक ऑफिस में टाइपिस्ट की नौकरी कर ली और खुद अपनी जिंदगी की गाड़ी ढोने लगी ।

रमेश जितना डरपोक था, डिंपी उतनी ही दिलेर ।

पिछले एक महीने से सोनपुर में उन दोनों की मोहब्बत के चर्चे भी काफी गरम थे ।

रमेश जहाँ अपनी मोहब्बत को छिपाता, वहीं डिंपी किसी भी काम को चोरी-छिपे करने में विश्वास ही नहीं रखती थी ।

“क्या हो रहा है यह ?” डिंपी अंदर आते ही चिल्लायी- “क्यों मार रहे हो तुम इसे ?”

“डिंपी !” धरम सेठभी आंखें लाल-पीली करके गुर्राया- “तू चली जा यहाँ से- इस हरामी को इसके पाप की सज़ा दी जा रही है ।”

“लेकिन इसका कसूर क्या है ?”

“इसने उधारी नहीं चुकाई ।”

“बस !” तिलमिला उठी डिंपी- “इतनी सी बात के लिये तुम इसे मार डालना चाहते हो ।”

“यह इतनी सी बात नहीं है बेवकूफ लड़की ।” धरम सेठका कहर भरा स्वर- “आज इसने उधारी नहीं चुकाई...कल कोई और नहीं चुकायेगा । यह छूत की ऐसी बीमारी है, जिसे फौरन रोकना जरूरी होता है । और इस बढ़ती बीमारी को रोकने का एक ही तरीका है, इस हरामी की धुनाई की जाये । सबके सामने । इधर ही, ताकि सब देखें ।”

“लेकिन इसकी धुनाई करने से तुम्हें अपने रुपये मिल जायेंगे ?”

“जबान मत चला डिंपी- अगर तुझे इस पर दया आती है, तो तू इसकी उधारी चुका दे और ले जा इसे ।”

“कितने रुपये हैं तुम्हारे ?”

“एक हज़ार अस्सी रुपये ।”

डिंपी ने फौरन झटके से अपना पर्स खोला, रुपये गिने और फिर उन्हें धरम सेठकी हथेली पर पटक दिये ।

“ले पकड़ अपनी उधारी ।”

फिर वह रमेश के साथ तेजी से दरवाजे की तरफ बढ़ी ।

“वाह-वाह ।” पीछे से एक गुंडा व्यंग्यपूर्वक हँसा- “प्रेमिका हो तो ऐसी, जो दारू भी पिलाये और हिमायत भी ले ।”

रमेश ने एकदम पलटकर उस गुंडे को भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा ।

“तेरी तो... ।” रमेश ने उसे ‘गाली’ देनी चाही ।

“गाली नहीं ।” गुण्डा शेर की तरह दहाड़ उठा- “गाली नहीं । अगर गाली तेरी जबान से निकली, तो मैं तेरा पेट अभी यहीं के यहीं चीर डालूंगा साले ।”

“चल ।” डिंपी ने भी रमेश को झिड़का- “चुपचाप घर चल ।”

रमेश खून का घूँट पीकर रह गया ।

जबकि ठेके में मौजूद तमाम गुंडे उसकी बेबसी पर खिलखिलाकर हँस पड़े ।

“तू क्यों गयी थी ठेके पर ?” अपने एक कमरे के घर में पहुँचते ही रमेश डिंपी पर बरस पड़ा ।

“क्यों नहीं जाती ?”

“बिल्कुल भी नहीं जाती ।” रमेश चिल्लाया- “वह हद से हद क्या बिगाड़ लेते मेरा, मुझे हॉकियों से पीट डालते, धुन डालते । तुझे नहीं मालूम, वहाँ एक से एक बड़ा गुंडा मौजूद होता है ।”

डिंपी ने हैरानी से रमेश की तरफ देखा ।

“ऐसे क्या देख रही है मुझे ?”

“अगर तुझे मेरी इज्जत का इतना ही ख्याल है, तो तू ठेके पर जाता ही क्यों है, छोड़ क्यों नहीं देता इस शराब को ?”

“मैं शराब नहीं छोड़ सकता ।”

“क्यों नहीं छोड़ सकता ।” डिंपी झुंझलाई- “और अगर नहीं छोड़ सकता, तो फिर कमाता क्यों नहीं । ऑटो रिक्शा ड्राइवरों ने ही तो हड़ताल की हुई है, जबकि कमाने के तो और भी सौ तरीके हैं ।”

“देख-देख मुझे भाषण मत दे ।”

“मैं भाषण दे रही हूँ ?”

“और नहीं तो क्या दे रही है ?” रमेश चिल्लाया- “थोड़ी-सी उधारी क्या चुका दी, अपने आपको तोप ही समझने लगी ।”

“अगर ऐसा समझता है, तो यही सही ।” डिंपी बोली- “ज्यादा ही हिम्मतवाला है तो जा, मेरी उधारी के रुपये मुझे वापस लाकर दे दे ।”

“मुझे गुस्सा मत दिला डिंपी ।” रमेश आक्रोश में बोला ।

“नहीं तो क्या कर लेगा तू ? मेरे रुपये अभी वापस लाकर दे देगा ? कहाँ से लायेगा ? रुपये क्या पेड़ पर लटक रहे हैं या जमीन में दफन हैं ?”

“मैं कहीं से भी लाकर दूं, लेकिन तुझे तेरे रुपये लाकर दे दूंगा ।”

और तब डिंपी ने वो 'शब्द' बोल दिये, जो रमेश की बर्बादी का सबब बन गये ।

जिनकी वजह से एक खतरनाक सिलसिले की शुरुआत हुई । ऐसे सिलसिले की, जिसके कारण रमेश त्राहि-त्राहि कर उठा ।

"ठीक है ।" डिंपी बोली- "अगर अपने आपको इतना ही धुरंधर समझता है- तो जा, मुझे मेरे रुपये वापस लाकर दे दे ।"

रमेश फौरन बाहर गली में खड़ी अपनी ऑटो रिक्शा की तरफ बढ़ गया ।

डिंपी चौंकी । रात के दस बजने जा रहे थे ।

"ल...लेकिन इतनी रात को कहाँ जा रहा है तू ?"

"तेरे वास्ते रुपये कमाने जा रहा हूँ ।" रमेश ने ऑटो में बैठकर धड़ाक से उसे स्टार्ट किया- "और कान खोलकर सुन डिंपी- अब मैं तेरे रुपये कमाकर ही वापस लौटूंगा ।"

अगले ही पल रमेश की ऑटो सोनपुर की उबड़-खाबड़ सड़क पर तीर की तरह भागी जा रही थी ।

पीछे डिंपी दंग खड़ी रह गयी । भौंचक्की !

यह बात तो डिंपी की कल्पना में भी न थी कि रमेश इस तरह इतनी रात को रुपये कमाने निकल पड़ेगा ।

तभी एकाएक काले सितारों भरे आसमान पर बादल घिरते चले गये । काले घनघोर बादल ।

पलक झपकते ही उन्होंने स्याह आसमान के विलक्षण रूप को अपने दानव जैसे आवरण में ढांप लिया ।

तेज बिजली कौंधी और फिर मूसलाधार बारिश होने लगी । डिंपी का दिल कांप गया ।

दैत्याकार काली घटाओं से घिरे आसमान की तरफ मुँह उठाकर बोली वह "मेरे रमेश की रक्षा करना भगवान, मेरे रमेश की रक्षा करना ।" लेकिन नहीं ।

उसका रमेश तो पल-प्रतिपल अपनी बर्बादी की तरफ बढ़ता जा रहा था । अपनी मुकम्मल बर्बादी की तरफ ।

२

रमेश ने अपनी ऑटो रिक्शा कनॉट प्लेस के रीगल सिनेमा के सामने ले जाकर खड़ी की ।

जिस हिस्से में उसने ऑटो रिक्शा खड़ी की, वहाँ घुप्प अँधेरा था ।

सिनेमा पर 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेंगे' चल रही थी ।

रमेश ने सोचा कि वह नाइट शो छूटने पर वहाँ से सवारियाँ ले जायेगा ।

लेकिन अभी तो सिर्फ सवा दस बजे थे ।शो छूटने में काफी टाइम बाकी था ।

रमेश ने सीट की पुश्त से पीठ लगाकर इत्मीनान से आंखें बंद कर ली ।मूसलाधार बारिश लगातार हो रही थी ।

मस्त बर्फीली हवा ने रमेश पर चढ़े दारू के नशे को दो गुना कर दिया ।

परन्तु एक बात चौंकाने वाली थी, इतनी तेज मूसलाधार बारिश में भी फ्लाइंग स्क्वाड की एक मोटरसाइकिल लगातार उस इलाके का चक्कर काट रही थी ।

मोटरसाइकिल पर दो पुलिसकर्मी सवार थे ।

जरूर कुछ चक्कर था ?

जरूर कोई गहरा चक्कर था ?

"होगा कुछ ?" फिर रमेश ने जोर से अपने दिमाग को झटका दिया- "उसकी बला से ।"

फिर कब मस्त बर्फानी हवा के नरम-नरम रेशमी झौंकों ने रमेश को सुला दिया, उसे पता न चला ।

धांय-धांय !

थोड़ी देर बाद ही बराबर वाली गली में दो तेज धमाके हुए ।

साथ ही किसी के हलक फाड़कर चिल्लाने की आवाज भी आधे से ज्यादा कनॉट प्लेस में गूंजी ।

मोटरसाइकिल पर सवार दोनों पुलिसकर्मी चौंके ।

तुरन्त उनकी बुलेट सड़क पार 'यू' का आकार बनाती हुई तेजी से उसी गली में जा घुसी ।

लेकिन रमेश सोता रहा ।

उसके इतने नजदीक गोलियां चलीं । कोई हलक फाड़कर चिल्लाया- मोटरसाइकिल धड़धड़ाती हुई गली में घुसी । इतनी हाय-तौबा मची, परन्तु रमेश के कान पर जूं तक न रेंगी । उसकी नींद तो तब टूटी, जब आफत बिल्कुल उसके सिर पर आकर खड़ी हो गयी ।

ऑटो रिक्शा को भूकम्प की तरह लरजते देख उसने चौंककर आंखें खोली ।

उसने हड़बड़ाकर पीछे देखा ।

ऑटो रिक्शा की यात्री सीट पर उस समय एक काले रंग का कद्दावर-सा आदमी बैठा बुरी तरह हाँफ रहा था । उसने अपने शरीर पर नीले रंग की प्लास्टिक की बरसाती पहन रखी थी, सिर पर प्लास्टिक का ही फेल्ट हैट था ।

कद्दावर आदमी के हाथ में एक काले रंग का ब्रीफकेस भी था, जिसे वो अपनी जान से भी ज्यादा संभालकर सीने से चिपटाये हुए था ।

“क...कौन हो तुम ?”

“जल्दी ऑटो भगा ।” उस आदमी ने लम्बे-लम्बे सांस लेते हुए कहा ।

वह बेहद खौफजदा था ।

“ल...लेकिन... ।”

“सुना नहीं ।” वह आदमी चिंघाड़ उठा और उसने बरसाती की जेब से रिवॉल्वर निकालकर एकदम रमेश की तरफ तान दी- “जल्दी ऑटो स्टार्ट कर, वरना एक ही गोली में तेरी खोपड़ी के परखच्चे उड़ जायेंगे ।”

रमेश के होश फना हो गये ।

पलक झपकते ही उसका सारा नशा हिरन हो चुका था । फिर उसके हाथ बड़ी तेजी से चले, उसने ऑटो स्टार्ट की और गियर बदला ।

फौरन ऑटो रिक्शा सड़क पर बिजली जैसी रफ़्तार से भागने लगी ।

रमेश ऑटो रिक्शा चला जरूर रहा था, लेकिन उसके दिल-दिमाग में नगाड़े बज रहे थे, ढ़ेरों नगाड़े ।

चेहरे पर आतंक-ही-आतंक था ।

तभी रमेश को अपने पीछे किसी वाहन की घरघराहट सुनाई दी- उसने उत्सुकतापूर्वक शीशे में देखा ।

फौरन रमेश के छक्के छूट गये । उसके मुँह से चीख-सी खारिज हुई- "प...पुलिस !"

"पुलिस ।" कद्दावर आदमी भी हड़बड़ाया ।

"हाँ, पीछे पुलिस लगी है ।"

"क्या बकवास कर रहा है ।" वह चीखा और फिर उसने एकदम झटके से पीछे मुड़कर देखा ।

अगले क्षण वो सन्न रह गया ।
ऐसा लगा, जैसे किसी ने मिक्सी में डालकर उसके चेहरे का सारा खून निचोड़ लिया हो ।

वाकई एक बुलेट मोटरसाइकिल उनके पीछे दौड़ी चली आ रही थी, जिस पर फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते के वही दोनों पुलिसकर्मी सवार थे ।

वह बार-बार विसल बजाकर ऑटो रिक्शा रोकने का आदेश भी दे रहे थे ।

अजनबी ने जल्दी से अपने चेहरे का पसीना साफ किया ।

"ऑटो की स्पीड और बढ़ा ।" फिर वह बोला ।

"ल...लेकिन... ।"

"बहस मत कर ।" अजनबी दहाड़ा- "यह बहस का वक्त नहीं है । इस समय मेरी जान पर बनी है ।"

"ल...लेकिन अगर मैंने ऑटो रिक्शा न रोकी, तो पुलिस मेरी बाद में ऐसी-तैसी कर देगी साहब ।"

"पुलिस तो तेरी बाद में ऐसी तैसी करेगी ।" अजनबी ने फौरन रिवॉल्वर रमेश की कनपटी पर रख दी- "लेकिन उससे पहले मैं तेरी अभी, इसी वक्त ऐसी तैसी फेर दूंगा । रिवॉल्वर का घोड़ा दबेगा और तू ऊपर होगा, हमेशा के लिये ऊपर ।"

अजनबी ने रिवॉल्वर का सैफ्टी-कैच हटाया, तो रमेश के प्राण हलक में आ फंसे ।

“न...नहीं ।” रमेश की आवाज कंपकंपायी- “न...नहीं ।”

“तो फिर स्पीड बढ़ा ।”

“बढ़ाता हूँ- अ...अभी बढ़ाता हूँ ।”

उसके बाद रमेश ने सचमुच ऑटो की स्पीड बढ़ा दी ।

फौरन ऑटो बुलेट को पछाड़कर सडक पर भागी ।

“अ...आह...आह ।”

यही वो पल था, जब उस अजनबी के मुँह से पहली बार कराह निकली ।

रमेश ने पीछे मुड़कर देखा, उस समय वह अजनबी अपना सीना भींचे किसी दर्द को दबाने की कोशिश कर रहा था ।

रमेश ने स्पीड और तेज कर दी ।

एक ऑटो रिक्शा ड्राइवर होने के नाते उसे यूं तो सभी रास्तों की जानकारी बड़े अच्छे ढंग से थी, लेकिन कहाँ बुलेट और कहाँ उसकी ऑटो ?

खरगोश और कछुए जैसी उस दौड़ में जो बात रमेश के लिये सबसे ज्यादा फायदेमंद साबित हुई, वह था कनॉट प्लेस में बिछा सड़कों का जाल ।

रमेश अपनी ऑटो रिक्शा को स्टेट्समैन तथा सुपर बाजार की पेंचदार गलियों में घुमाता हुआ जल्द ही फ्लाइंग स्क्वाड की मोटरसाइकिल को धोखा देने में कामयाब हो गया ।

दस मिनट बाद ही ऑटो रिक्शा दरियागंज के इलाके में दौड़ रही थी ।

“श...शाबाश !” अजनबी उसकी सफलता से खुश हुआ- “श...शाबास ।”

रमेश ने फिर पीछे मुड़कर देखा ।

अजनबी अब सीट पर अधलेटा-सा हो गया था और उसने अपना सिर पीछे टिका लिया था ।

रमेश को उसकी हालत ठीक न दिखाई दी ।

जरूर वह कोई खतरनाक अपराधी था ।

“एक सवाल पूछूं ?” रमेश थोड़ी हिम्मत करके बोला ।

“प...पूछो ।”

“तुम्हारे पीछे पुलिस क्यों लगी थी ?”

“प...पुलिस !”

“हाँ ।”

“त..तुम अभी यह बात नहीं समझोगे ।” अजनबी पुनः पीड़ा से कराहता हुआ बोला- “य...यह एक लम्बी कहानी है ।”

“तुम कराह क्यों रहे हो ?”

“म...मुझे गोली लगी है ।”

“गोली ।”

बम सा फट गया रमेश के दिमाग में, उसके कण्ठ से चीख-सी खारिज हुई ।

हाथ ऑटो रिक्शा के हैंडल पर बुरी तरह कांपें, जिसके कारण पूरी ऑटो को भूकम्प जैसा झटका लगा ।

“ल...लेकिन किसने मारी तुम्हें गोली- प...पुलिस ने ?”

अजनबी कुछ न बोला ।

ऑटो रिक्शा अभी भी तूफानी गति से सड़क पर दौड़ी जा रही थी ।

“त...तुम्हें जाना कहाँ है ?”

अजनबी फिर चुप ।

वह कराहता हुआ सीट पर कुछ और पसर गया ।

“जवाब क्यों नहीं देते ?”

“त...तुम कहाँ रहते हो ?”

“म...मैं !” रमेश सकपकाया- “ल...लेकिन तुम्हें इससे क्या मतलब है ?”

“बताओ तो सही, शायद कुछ मतलब निकल आये ।” अजनबी की आवाज में अब थोड़ी नरमी आ गयी थी ।

वह नरमी का ही असर था जो रमेश ने बता दिया- “मैं सोनपुर में रहता हूँ ।”

“अ...और कौन-कौन रहता है तुम्हारे साथ?” अजनबी ने कराहते हुए पूछा ।

“अकेला रहता हूँ ।”

“अ...अभी शादी नहीं हुई ?”

“नहीं ।”

“म...मां-बाप ?”

“वह भी नहीं हैं ।”

“ओह !”

“ठ...ठीक है ।” अजनबी ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला- “अगर तुम अकेले रहते हो, त...तो तुम मुझे अपने ही घर ले चलो । इ...इस समय वही जगह सबसे ठीक रहेगी ।”

“य...यह क्या कह रहे हो ?” रमेश के कंठ से सिसकारी छूट गयी ।

उसके दिल दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी ।

ऑटो रिक्शा को झटका लगा, इतना तेज झटका कि उस झटके से उभरने के लिये रमेश को ऑटो फुटपाथ के किनारे सड़क पर रोक देनी पड़ी ।

“क्या कहा तुमने अभी ?” रमेश तेजी से अजनबी की तरफ पलटकर बोला- “क्या कहा ? तुम सोनपुर जाओगे ?”

“ह...हाँ ।” अजनबी ने संजीदगी से कहा- “सोचता हूँ, आज रात तुम्हारे ही घर आराम कर लूं ।”

“लेकिन क्यों करोगे मेरे घर पर आराम ? तुम अपना पता बोलो, तुम जहाँ रहते हो, मैं तुम्हें वहीं लेकर जाऊंगा । दिल्ली के आखिरी कोने में भी तुम्हारा घर होगा, तो मैं तुम्हें वहीं ले जाकर छोडूंगा ।”

“म...मगर मैं इस वक्त अपने घर नहीं जाना चाहता ।” अजनबी इस समय भी काला ब्रीफकेस कसकर अपने सीने से चिपकाये हुए था ।

“क्यों नहीं जाना चाहते अपने घर ?”

“तुम नहीं जानते बेवकूफ आदमी ।” अजनबी थोड़ा खीझ उठा- “पुलिस मेरे पीछे लगी है, मुमकिन है कि पुलिस ने मुझे गिरफ्तार करने के लिये मेरे घर पर भी पहरा बिठा रखा हो, अगर ऐसी हालत में मैं अपने घर गया, तो क्या फौरन पकड़ा न जाऊंगा ?”

रमेश सन्न रह गया ।

एकदम सन्न !

उसे अब महसूस हो रहा था, एकाएक कितनी बड़ी आफत में वो फंस चुका है ।

एक लगभग मरा हुआ सांप उसके गले में आ पड़ा था ।

“तुम नहीं जानते ।” अजनबी बोला- “त...तुमने पुलिस से मेरी जान बचाकर मेरे ऊपर कितना बड़ा अहसान किया है, मैं तहेदिल से तुम्हारा आभारी हूँ । अब मेरे ऊपर एक अहसान और कर दो- सिर्फ आज रात के लिये मुझे अपने घर में शरण दे दो । मैं वादा करता हूँ, दिन निकलने से पहले ही मैं तुम्हारे घर से चला जाऊंगा और तुम्हारे ऊपर मेरी वजह से कोई आंच नहीं आयेगी ।”

रमेश चुपचाप उस अजनबी को देखता रहा ।

“म...मुझे इस तरह क्या देख रहे हो ?”

“क्या तुम्हारे पास इसके अलावा कोई और रास्ता नहीं ?”

“अ...अगर रास्ता होता, त...तो मैं तुम्हें ही क्यों परेशान करता दोस्त !”

वह बार-बार पीड़ा से कराह रहा था ।

“गोली का क्या करोगे ?”

“व...वह कोई बड़ी समस्या नहीं है ।” अजनबी बोला- “गोली निकालना मेरे बायें हाथ का खेल है, आखिर आज मैं कोई पहली बार थोड़े ही जख्मी हुआ हूँ ।”

रमेश कोई फैसला नहीं कर पा रहा था ।

“क्या सोच रहे हो ?”

रमेश चुप ।

“म...मेरे जख्म से खून बहुत बुरी तरह निकल रहा है ।” अजनबी लगभग छटपटाता हुआ बोला- “म...मुझे जल्दी अपने घर ले चलो, व...वरना मैं मर जाऊंगा ।”

रमेश फिर चुप ।

“द...देर मत करो ।” अजनबी इस बार गिड़गिड़ाया ।

“म...मेरी जिंदगी का सवाल है, अ...अगर मेरे ऊपर नहीं, तो कम-से-कम मेरी हालत पर ही रहम खाओ ।”

रमेश ने देखा, उसकी आंखों में अब सफेदी पुतने लगी थी । होंठ शुष्क होने लगे थे ।

रमेश कश-म-कश में उलझा रहा ।

फिर कुछ सोचकर वो वापस ऑटो की ड्राइविंग सीट पर जा बैठा और उसने ऑटो रिक्शा सोनपुर की तरफ दौड़ा दी ।

३

थोड़ी ही देर बाद जब रमेश की ऑटो रिक्शा सोनपुर मौहल्ले में अपने घर के सामने जाकर रुकी, तो उस समय पूरी गली अंधेरे में डूबी थी ।

बारिश भी बंद हो चुकी थी और अब सिर्फ हल्की-फुल्की बूंदा-बांदी ही हो रही थी ।

रमेश ने नीचे उतरकर अपने घर का ताला खोला ।

अजनबी व्यक्ति भी संभल-संभलकर चलता हुआ रमेश के पीछे-पीछे ही घर में आ गया था ।

अंदर घर में भी गली जैसा ही घुप्प अंधेरा था ।

रमेश ने बल्ब जलाने के लिये जैसे ही स्विच बोर्ड की तरफ हाथ बढ़ाया, तभी वो घटना घटी, जिसके बाद रमेश त्राहि-त्राहि कर उठा ।

अजनबी तब तक उसके करीब आ गया था, तभी एकाएक अजनबी का पूरा शरीर बुरी तरह लरजा । उसके मुँह से तेज कराह फूटी और झाग निकले ।

रमेश उसे संभाल पाता, उससे पहले ही वह अजनबी धड़ाम से नीचे फर्श पर जा गिरा ।

रमेश ने लपककर बल्ब का स्विच ऑन किया ।

भक्क से बल्ब जला ।

बल्ब के जलते ही रमेश ने जो मंजर देखा, उसे देखकर उसके कंठ से इतनी तेज हृदयविदारक चीख खारिज हुई कि वो चीख पूरे सोनपुर में गूंजी ।

वह चीख डिंपी ने भी सुनी ।

रमेश की चीख सुनते ही डिंपी एकदम उछलकर खड़ी हो गयी । फिर वो आनन-फानन दरवाजा खोलकर बाहर निकली और बेपनाह फुर्ती से रमेश के घर की तरफ लपकी ।

उसके घर का दरवाजा खुला था ।

डिंपी दनदनाती हुई अंदर घुसी ।

और !

अंदर घुसते ही डिंपी के कंठ से भी तेज चीख खारिज होते-होते बची ।

फर्श के बिल्कुल बीचों-बीच एक लम्बे कड़ियल आदमी की लाश पड़ी थी, उसकी बरसाती आधी से ज्यादा खून में लथपथ थी । अजनबी की मौत दो गोलियां लगने से हुई थी, जो उसकी पीठ में धंसी थीं ।

इसके अलावा जो सबसे ज्यादा चौंका देने वाली बात थी, वो यह थी कि अजनबी ने काले रंग के ब्रीफकेस को मरने के बाद भी कसकर अपने सीने से चिपटा रखा था ।

"य...यह तुमने क्या किया ?" लाश को देखते ही डिंपी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

"म...मैंने !" थर्रा उठा रमेश ।

"क्या तुमने इसकी हत्या नहीं की ?"

"म...मैं भला इसकी हत्या क्यों करने लगा ?" रमेश कंपकंपाये स्वर में बोला- "म...मैं तो यह भी नहीं जानता कि ये कौन है ?"

"फिर इसकी लाश यहाँ कैसे आ गयी ?"

रमेश ने बड़ी तेजी से पूरी घटना सुना दी ।

डिंपी सन्न रह गयी ! एकदम सन्न ।

घटना वाकई सनसनीखेज थी ।

"अ...अगर इसके पीछे पुलिस लगी थी ।" डिंपी का सकपकाया स्वर- "तब तो संभव है कि पुलिस ने ही इसे गोली मारी हो ?"

"मुझे भी यही लगता है कि जरूर इसे पुलिस ने गोली मारी है ।" रमेश बोला- "यह कोई अपराधी है, जो पुलिस से बचकर भाग रहा था । इसके अलावा एक बात और मुमकिन है ।"

"क्या ?"

"मौके का फायदा उठाकर क्या पता इसके किसी साथी ने ही इसे गोली मार दी हो ।"

"ओह !"

“क्या सोचने लगी डिंपी ।”

“तुझसे भयंकर गलती हो चुकी है रमेश- त...तू फंस गया ।”

“य...यह क्या कह रही है तू ?” रमेश के होश फना हुए ।

“म...मैं सच कह रही हूँ, तू वाकई फंस गया, अब इस आदमी की हत्या का इल्जाम तेरे सिर पर आने वाला है ।”

“लेकिन मैं हत्यारा नहीं हूँ ।”

“सिर्फ तेरे कहने से कुछ नहीं होगा रमेश ।”

“कैसे कुछ नहीं होगा ।” रमेश झल्ला उठा- “अगर मैंने इसकी हत्या की होती, तो क्या मैं यूं ही इसकी लाश की नुमाइश करता ? इसे लेकर अपने घर में ही आता ? फिर इसकी हत्या गोली लगने से हुई है, जरा सोच मेरे जैसे मामूली आदमी के पास रिवॉल्वर जितना खतरनाक हथियार कहाँ से आ सकता है ? और अगर रिवॉल्वर जैसा हथियार आ भी गया, तो क्या उसे चलाना मेरे बसका है ?”

डिंपी चुप ।

“फिर क्या मैं तुझे इतना ही बड़ा पागल नजर आता हूँ ।” रमेश बोला- “कि तेरी उधारी चुकाने के चक्कर में, मैं किसी की हत्या तक करने पर आमादा हो जाऊं ?”

“गया तो इसी तरह था ।” डिंपी बोली- “जैसे आज कहीं से भी लायेगा । किसी का भी गला काटकर लायेगा । लेकिन मेरी उधारी जरूर चुकता करेगा ।”

“उस समय मैं गुस्से में था । मुझे खुद मालूम नहीं, मैं क्या-क्या बक गया ।” रमेश बोला- “फिर चंद रुपयों के लिये मैं किसी की भी हत्या कैसे कर सकता हूँ- इतना ही दिलेर दिखाई देता हूँ मैं तुझे ? अगर मैं इतना ही दिलेर होता, तो आज शाम धरम सेठऔर उसके गुण्डों की ठेके में ऐसी-तैसी न कर देता ।”

“तू कहना क्या चाहता है ?”

“मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ, यह हत्या मैंने नहीं की । मैं हत्यारा नहीं ।” रमेश ने लगभग आर्तनाद करते हुए कहा ।

“मत भूल रमेश !” डिंपी एक-एक शब्द चबाते हुए बोली- “हर हत्या करने वाला यही कहता

है, जो तू कह रहा है, ऐसी हालत में कौन तेरी बात पर यकीन करेगा ?”

“तू तो करेगी ?”

“मेरे यकीन करने या न करने से कुछ नहीं होने वाला ।” डिंपी बोली- “असली बात यह है कि पुलिस तेरी बात पर यकीन करती है या नहीं ।”

“प...पुलिस !”

“लाश तेरे घर में पड़ी है ।” डिंपी विचलित मुद्रा में बोली- “फिर तेरे कपड़े भी खून में सने हुए हैं, पुलिस को तुझे हत्यारा साबित करने के लिये इससे बड़ा सबूत और क्या चाहिए ?”

रमेश की जान हलक में आ फंसी ।

उसे एकाएक वो लाश अपनी मौत का वारण्ट लगने लगी ।

मौत का ऐसा वारण्ट- जो उसे हर पल, हर लम्हा बर्बादी की तरफ लिये जा रही थी ।

तभी घटना ने एक और ऐसा नया मोड़ लिया, जिसके बाद रमेश के ग्रह पूरी तरह संकट में घिर गये ।

रमेश की नजर एकाएक अजनबी के ब्रीफकेस पर पड़ी ।

तुरन्त उसके दिमाग में सवालों का धमाका हुआ ।

“इ...इसने ब्रीफकेस अपने सीने से क्यों चिपटा रखा है ?”

“क्या है इसके अंदर ?”

“इसमें ऐसी क्या खास चीज है, जो मरने के बाद भी अजनबी का ब्रीफकेस से मोह भंग न हुआ ?”

रमेश के दिमाग में घण्टियां बजने लगीं ।

तेज घण्टियां !

“जरूर-जरूर इसमें कोई खास चीज है ।”

“कोई बेहद खास चीज ।”

घण्टियों की आवाज अब रमेश के दिमाग में तेज़ होती जा रही थी ।

उसे एकाएक वो ब्रीफकेस अपना उद्धारकर्ता नजर आने लगा । उसे लगने लगा, वो ब्रीफकेस उसे पुलिस के फंदे से बचा सकता है ।

और !

यह अहसास होते ही रमेश तुरन्त अजनबी की तरफ बढ़ा ।

डरते-डरते नीचे झुका ।

फिर उसके हाथ अजनबी के शिकंजे से ब्रीफकेस निकालने के लिए जैसे ही उसके सीने की तरफ बढ़े-

“य...यह क्या कर रहा है तू ?” डिंपी दहशत से चिल्ला उठी ।

मगर तब तक रमेश ब्रीफकेस का एक कोना पकड़ चुका था ।

कोना पकड़ते ही उसने ब्रीफकेस अपनी तरफ खींचा और फिर वह उसे लेकर यूँ अपनी पहले वाली जगह भागा, मानों पीछे से उस अजनबी द्वारा पकड़ लिये जाने का खतरा हो ।

डिंपी भी फौरन उसके नजदीक पहुँची ।

“य...यह ब्रीफकेस तूने किसलिये छीना है ?”

“देखती जा ।”

रमेश ने अब वो ब्रीफकेस नीचे फर्श पर टिका दिया था और फिर उसने धड़कते दिल से उसे खोला ।

चट् की हल्की आवाज हुई ।

ब्रीफकेस में ताला लगा हुआ नहीं था, इसलिये फौरन ही वो खुल गया ।

और ब्रीफकेस खुलते ही उन दोनों के दिल-दिमाग पर आसमान-सा टूटकर गिरा ।

तेज बिजली गड़गड़ाई ।

काले रंग के उस ब्रीफकेस में सोने की छः नटराज मूर्तियां थीं ।

शुद्ध सोने की मूर्तियां ।जो बेपनाह मूल्यवान थीं ।

“य...यह तो सोने की मूर्तियां हैं डिंपी !” उन मूर्तियों पर नजर पड़ते ही रमेश की आवाज खुशी से कंपकंपा उठी- “असली सोने की मूर्तियां ।”

“स...सोने की मूर्तियां !” डिंपी को भी तेज झटका लगा ।चार सौ चालीस वोल्ट से भी ज्यादा ।

सारे प्रतिरोध, उसके शरीर की तमाम हरकत इस तरह फ्रीज हो गयीं, मानो बिजली से चलने वाली मशीन का किसी ने स्विच बंद कर दिया हो ।

“ह...हाँ, यह शुद्ध सोने की मूर्तियां हैं ।” रमेश की आंखों में चमक कौंधी- “द...देख- इसके नीचे क्या गुदा है- चौबीस कैरेट प्योर गोल्ड !”

“हे भगवान !” डिंपी के मुँह से सिसकारी छूटी- “तब तो यह मूर्तियां बहुत कीमती हैं ।”

“हाँ, यह बहुत कीमती मूर्तियां हैं । बेहद कीमती । अ...अब हमारे दिन बदल गये डिंपी !

नसीब जाग गये हमारे ।”

चौंकी डिंपी- “यह तू क्या कह रहा है रमेश ?”

लेकिन रमेश तो दीवाना हो उठा था ।

इस समय वो कल्पना लोक के सागर में गोते लगा रहा था ।

“म...मैं ठीक कह रहा हूँ डिंपी !” उसने खुशी से कंपकंपाये लहजे में ही कहा- “तुझे अब नौकरी करने की जरूरत नहीं- मुझे ऑटो चलाने की जरूरत नहीं । हम दोनों अब शादी करेंगे डिंपी ! तू रानी बनकर रहेगी ।”

“बेवकूफ- तू पागल हो गया है ।” डिंपी ने उसे झंझोड़ डाला- “अपनी बर्बादी का सारा प्लान खुद ही बना रहा है- होश में आ ।”

रमेश ने चौंककर डिंपी को देखा ।

“तू सपने देख रहा है रमेश ।” डिंपी ने गुस्से में उसे कोड़े जैसी फटकार लगायी- “दिमाग ठिकाने पर नहीं है तेरा ।”

“मेरा दिमाग पूरी तरह ठिकाने पर है ।”

“नहीं है ।” डिंपी चीखी- “अगर तेरा दिमाग अपनी जगह होता, तो तू ऐसी बहकी-बहकी बातें हरगीज न करता । तू भूल गया है, तेरे घर में लाश पड़ी है । फांसी का फंदा तेरे गले में झूल रहा है और ऐसी हालत में तुझे अपने नसीब जागते हुए नजर आ रहे हैं, तुझे शादी करने की पड़ी है ।”

ल...लाश !

रमेश की नजर पुनः अजनबी के शव पर जाकर अटक गयी । एकाएक उसने ब्रीफकेस की तमाम जेबों की तलाशी ले डाली, लेकिन उसमें से उसे कोई भी ऐसा कागज या विजिटिंग कार्ड न मिला, जिससे अजनबी की पहचान हो पाती ।

“इसमें क्या देख रहे हो ?”

“इसका नाम या घर का पता तलाशने की कोशिश कर रहा हूँ ।”

“मिला कुछ ?”

“नहीं ।” रमेश ने बेहद हताश भाव से इंकार में गर्दन हिलाई ।

“अगर ब्रीफकेस में नहीं है, तो जरूर इसकी पैंट-शर्ट की जेब में कुछ होगा ।”

रमेश की नजर फिर लाश की तरफ उठी ।

उसकी हिम्मत न हुई कि वो लाश की पैंट-शर्ट में हाथ डाले ।

लेकिन उसे तलाशी तो लेनी ही थी ।

रमेश ने अपने अंदर हौसला पैदा किया और एक बार फिर डरते-डरते लाश की तरफ बढ़ा । नीचे झुका ।

अगले ही क्षण उसने कंपकंपाते हाथों से अजनबी की जेबों की तलाशी ले डाली, वहाँ भी कुछ न था ।

तमाम जेबों में कागज का ऐसा एक अदद टुकड़ा तक न था, जिससे अजनबी की पहचान हो पाती या फिर उसकी पहचान की मालूमात करने की दिशा में वह कम-से-कम सूत्रधार का काम तो करता ।

काश! काश रमेश ने अजनबी की उसी हालत से कोई नतीजा निकाला होता ।

उसी से उसने खतरे का अंदाजा लगाया होता, आखिर उसकी जेबों में कुछ न था ।

लेकिन रमेश के दिल-दिमाग पर तो उस समय पूरी तरह लालच सवार था ।

वह फिर मूर्तियों को संजीदगी के साथ देखने लगा ।

“इन्हें इस तरह क्या देख रहा है रमेश ?” डिंपी का दिल धाड़-धाड़ करके बज रहा था ।

“यह मूर्तियां नहीं हैं डिंपी ।” एकाएक वो बड़बड़ाया- “यह मूर्तियां नहीं है ।”

“फ...फिर क्या हैं ये ?”

“यह किस्मत है- किस्मत । कारून का खजाना हैं ये ।” रमेश खुशी से कंपकंपाये स्वर में बोला- “मैंने आज तक सिर्फ सुना था डिंपी, ऊपर वाला जब देता है, छप्पर फाड़कर देता है । लेकिन आज अपनी आंखों से देख भी लिया । भगवान सचमुच बड़ा कारसाज है । उसने हमारी बंद किस्मत के दरवाजे खोल दिये ।”

“तू पागल हो गया है ।” डिंपी झुंझला उठी- “मौत तेरे सिर पर मंडरा रही है बेवकूफ- और तू भगवान का गुणगान कर रहा है । तूने इस लाश को देखा है ।” डिंपी ने दांत किटकिटाये- “पुलिस को जब यह लाश तेरे घर में से बरामद होगी, तो पुलिस वाले तेरी ऐसी ज़बरदस्त धुनाई करेंगे कि किस्मत के जो दरवाजे तुझे इस समय खुलते नजर आ रहे हैं, वह सबके सब एक झटके में बंद हो जायेंगे ।”

“प...पुलिस अब मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकती ।” रमेश ने एकाएक बम-सा छोड़ा ।

“क्यों नहीं बिगाड़ सकती ?”

“क्योंकि पुलिस का एक इंतजाम मैंने सोच लिया है ।”

“क...कैसा इंतजाम ?”

“जरा सोच डिंपी, पुलिस उसी हालत में तो मेरा कुछ बिगाड़ सकती है, जब दिन निकलने पर उसे यह लाश मेरे घर के अंदर से बरामद होगी । लेकिन अगर यह लाश ही पुलिस को मेरे घर के अंदर से न मिले, तब कैसा रहेगा ?”

“त...तू कहना क्या चाहता है ?”

“बहुत आसान सी बात है डिंपी ।” रमेश ने विस्फोट किया- “मैं इस लाश को आज रात ही गायब कर दूंगा ।”

“त...तू लाश गायब कर देगा ?”

“हाँ, डिंपी ! अब इस मुसीबत से छुटकारा पाने का यही एक तरीका है ।” रमेश का दिमाग इस समय काफी तेजी से चल रहा था- “मैं लाश को आज रात ही किसी ऐसी जगह फेंक आऊंगा, जहाँ से बरामद होने पर पुलिस को मेरे ऊपर किसी भी तरह का कोई शक न हो ।”

“य...यह तू करेगा ?” डिंपी हैरत से बोली ।

“हाँ, यह मैं करूंगा ।”

“यह सब करने की हिम्मत है तेरे अंदर ?”

“हिम्मत हो या न हो डिंपी !” रमेश दृढ़तापूर्वक बोला- “लेकिन इस काम को मैं करूंगा जरूर । क्योंकि तभी पुलिस से बचा जा सकता है । इस लाश से बचा जा सकता है । और... ।”

“अ...और क्या ?”

“सोने की इन कीमती मूर्तियों को हड़पा जा सकता है ।”

डिंपी दंग रह गयी ।

“आज जरूर तेरी खोपड़ी खराब हो गयी है ।” डिंपी गुस्से में बोली- “तू क्या सोचता है, तू लाश को कहीं भी फेंककर पुलिस के हाथों से बच जायेगा ? मूर्तियां इतनी आसानी से हड़प लेगा तू ? नहीं रमेश, नहीं । यह वहम है तेरा । पुलिस तुझे तलाशती हुई एक-न-एक दिन तेरे तक जरूर पहुँच जायेगी । फिर तू नहीं बचेगा । फिर तू सिर पटक-पटक कर कितनी भी दुहाई देगा कि यह हत्या तूने नहीं की, तूने नहीं की । तब भी पुलिस को तेरे ऊपर यकीन नहीं आयेगा । आज जो रास्ते तू अपने बचाव के लिये बना रहा है रमेश, आने वाले दिनों में वही रास्ते तेरी मुकम्मल तबाही के, बर्बादी के कारण बन जायेंगे ।”

“त...तू कहना क्या चाहती है ?”

“मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ, अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा रमेश ! तू सभी मूर्तियां और लाश कानून के हवाले कर दे और पुलिस को सब कुछ सच-सच बता दे । तेरा कुछ नहीं बिगड़ेगा ।”

“कैसे कुछ नहीं बिगड़ेगा ।” रमेश उत्तेजित हो उठा- “पुलिस क्या इतनी ही सीधी है, जो वह खामोशी से मेरी हर बात मान लेगी ।”

“क्यों नहीं मानेगी ? पहले की और अब की परिस्थिति में फर्क है रमेश- इस समय तेरे पास बेशकीमती मूर्तियां हैं । अब पुलिस भी यह सोचेगी कि अगर तेरे मन में कोई छल-कपट होता, तो तू यह मूर्तियां ही कानून के हवाले क्यों करता ।”

तू नहीं जानती डिंपी !” रमेश के दिमाग पर लालच पूरी तरह हावी हो चुका था- “पुलिस मेरी इस ईमानदारी का भी कोई नया अर्थ निकाल लेगी । आजकल अपराधियों ने जासूसी उपन्यास पढ़-पढ़कर कानून की आंखों में धूल झोंकने की ऐसी-ऐसी तरकीबें ढूंढ ली हैं कि किसी के लिये भी सही गलत का अंदाजा लगाना मुश्किल हो गया है, ऐसी हालत में मेरी ईमानदारी को भी शक की नजर से देखा जायेगा ।”

डिंपी यूं आश्चर्य से रमेश को देखने लगी, मानो वह आज उसका कोई नया रूप देख रही हो ।

“फिर तू ही सोच डिंपी !” रमेश धाराप्रवाह ढंग से बोलता चला गया- “क्या जिंदगी है हमारी- एक भूखे नंगे, बेघर और गंदे गटर में कुलबुलाते कीड़े जैसी जिंदगी बसर कर रहे हैं हम । जबकि इस समय हम पलक झपकते ही धनवान बन सकते हैं । कहने की जरूरत नहीं, आज के समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा का अधिकारी सिर्फ वही व्यक्ति होता है, जिसके पास दौलत है- ढेर सारी दौलत ! ठण्डे दिमाग से सोच डिंपी, हम क्या हैं और क्या बन सकते हैं ?

तमाम जिंदगी मेहनत करने के बाद भी हमें समाज में वो पोजिशन हासिल नहीं होगी, जो अब हम पलक झपकते ही हासिल कर सकते हैं । अपने तमाम ख्वाब पूरे करने का इससे बेहतर मौका हमारे हाथ फिर कभी नहीं आने वाला ।"

डिंपी टुकुर-टुकुर उसे देखती रही ।

"मैंने क्या कुछ गलत कहा ?"

"ल...लेकिन अगर पुलिस को यह पता चल गया रमेश !" डिंपी बोली- "कि मूर्तियां हड़पने के लिये तूने ही यह लाश ठिकाने लगायी थी, तब तू क्या करेगा ?"

"मगर पुलिस को यह किस तरह पता चलेगा ?" रमेश ने एक-एक शब्द चबाते हुए पूछा- "पुलिस को क्या आसमान से आवाज आयेगी ? मत भूल डिंपी, यह आदमी रीगल सिनेमा के सामने एकाएक मेरी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा था, उसके बैठते ही मैंने ऑटो फुल स्पीड से सड़क पर दौड़ा भी दी थी, पुलिस की मोटरसाइकिल तो बाद में पीछे लगी ।"

"लेकिन उन पुलिसकर्मियों ने तुझे रीगल के सामने खड़े तो देखा होगा ?"

"नहीं ।" रमेश प्रफुल्लित मुद्रा में बोला- "नहीं देखा । मैंने ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल के कारण आज अपनी ऑटो घुप्प अंधेरे में खड़ी कर रखी थी, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि किसी की नजर मेरे ऊपर पड़े । आज किस्मत पूरी तरह मेरे साथ थी ।"

"लेकिन एक और बड़ी ख़ास बात तू भूल रहा है रमेश !"

"कौन-सी बात ?"

"पुलिसकर्मियों ने पीछा करते समय तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर तो नोट किया ही होगा ।"

"नहीं, नम्बर भी नोट नहीं किया ।" रमेश खुश होकर बोला- "मैंने कहा न, आज किस्मत मेरे साथ थी । मैंने गली में आते ही नम्बर प्लेट देखी थी, उस पर मिट्टी पुती हुई थी । जरूर ऑटो रिक्शा का पहिया किसी गारा से भरे गड्ढे में पड़ गया होगा और फौरन ढेर सारी मिट्टी उछलकर नम्बर प्लेट पर पुत गयी । बहरहाल जो भी हुआ, मेरे हक में बहुत अच्छा हुआ । अगर नम्बर प्लेट पर मिट्टी न पुतती, तो मेरे फंसने के फुल चांस रहते ।"

डिंपी बेचैन हो उठी ।

"तू चाहे अपनी बात के पक्ष में कितने ही तर्क दे रमेश !" डिंपी सनसनाये स्वर में बोली- "मगर मुझे लगता है, अगर तूने इन मूर्तियों को हड़पने के लिये कोई भी कदम उठाया, तो तू

जरूर किसी भारी मुसीबत में फंस जायेगा । कोई आफत तेरे ऊपर टूटकर गिरेगी, इसके अलावा तू एक बात और नजर अंदाज कर रहा है ।”

“क्या ?”

“यह आदमी शक्ल से ही कोई गुण्डा दिखाई देता है- मुमकिन है कि इसने यह मूर्तियां कहीं से चुराई हों । अगर ऐसा हुआ रमेश, तो जब तू इन मूर्तियों को बेचने जायेगा, तभी तू फंसेगा ।”

“यह सब बाद की बातें हैं ।” रमेश मूर्तियां हड़पने के लिये दृढ़ था- “मूर्तियां बेचने के लिये भी कोई-न-कोई ऐसा रास्ता सोच लिया जायेगा, जिसमें कोई खतरा न हो । फिलहाल हमें अपना सारा ध्यान इस बात पर लगाना चाहिये कि लाश को किस तरह ठिकाने लगाया जाये ।”

उन दोनों के बीच थोड़ी देर और बहस चली ।

लेकिन आखिरकार रमेश ने डिंपी को इस बात के लिये तैयार कर ही लिया कि उस लम्बे कड़ियल आदमी की लाश ठिकाने लगाने में ही उनका भला है ।

४

रमेश ने डिंपी की मदद से उस अजनबी आदमी के शव को घर के अंदर से निकालकर ऑटो रिक्शा में लादा ।

वह उन दोनों के लिये बड़े नाजुक क्षण थे ।

डिंपी तो लाश को हाथ लगाते हुए भी घबरा रही थी, लेकिन रमेश के बार-बार के आग्रह के बाद वो इस काम को करने के लिये तैयार हो गयी ।

उस समय रात के २ बज रहे थे । पूरा सोनपुर सन्नाटे में डूबा था ।

रमेश ने चैन की सांस ली, आज से पहले वो यह कहते हुए नहीं थकता था कि उस मोहल्ले में बेहद पत्थर दिल लोग रहते हैं, रात को कितनी हायतौबा मचती है, वहाँ कैसी-कैसी झड़पें होती हैं, लेकिन क्या मजाल कोई अपनी खिड़की में से भी झांककर देख ले ।

वहाँ कोई मरता है तो मर जाये, उनकी बला से ।

मगर आज रमेश के दिल से दुआयें निकल रही थीं । अगर आज उसकी नगाड़े जैसी चीख सुनकर वहाँ डिंपी के अलावा कोई और आ धमकता, तो वह गया था दो के भाव । फिर वह मूर्तियों का वारिस तो क्या बनना था, उल्टे उसे हत्या के अपराध में जेल के अंदर चक्की और पीसनी पड़ती ।

बहरहाल अभी तक नसीब उसके साथ था । उसने खून से रंगे कपड़े उतारकर नये धुले हुए कपड़े पहने ।

उसके बाद खून से रंगे कपड़ों पर कैरोसीन ऑयल डालकर उसने उनमें आग लगा दी और राख को नाली के रास्ते बहा दिया ।

डिंपी ने भी एक महत्वपूर्ण काम किया ।उसने पहले पानी तथा फिर डेटॉल की मदद से फर्श पर लगे खून के धब्बों को अच्छी तरह साफ कर डाला ।

जबकि रमेश ने आनन-फानन में अजनबी की जेबों से अपने फिंगर प्रिंट भी मिटा दिये थे ।

फिर ऑटो की नेम प्लेट पर लगी मिट्टी भी साफ की, ताकि उसी एक प्वाइंट की वजह से वो कहीं फंस न जाये ।

बहरहाल रमेश जैसे सीधे-सादे आदमी से जितनी उम्मीद की जा सकती है, उसने उससे कहीं

ज्यादा काबिलियत का परिचय देते हुए सबूत मिटाये ।

अजनबी को ऑटो रिक्शा में लादते समय उन दोनों ने अपने हाथों में दस्ताने पहन लिये ।

अजनबी क्योंकि लम्बी-चौड़ी कद काठी वाला आदमी था, इसलिये टांगें वगैरह मोड़कर वह बड़ी मुश्किल से ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर सेट हो गया ।लाश के ऊपर एक मोटा कम्बल डाल दिया गया ।

फिर डिंपी बेहद खौफजदा मुद्रा में लाश के पहलू में इस तरह बैठ गयी, जैसे वह लाश, लाश न होकर कोई मरीज हो और वह उस मरीज की कोई सगी-सम्बन्धी हो ।

अगले पल ऑटो तूफानी गति से सड़क पर दौड़ पड़ी ।

अब रमेश की आंखों के सामने रात के काजली अंधेरे में डूबी काली कोलतार की वीरान सड़क थी, जो मूसलाधार बारिश होने की वजह से शीशे की तरह चमक रही थी ।और उसकी आंखों में सपने थे । सुनहरी सपने ।

रमेश ने देखा, उसकी और डिंपी की शादी हो रही है ।

उनके पास एक बड़ा घर है ।

शानदार गाड़ी है ।

आगे-पीछे नौकर-चाकर हैं ।

वह खुश है ।

बेहद खुश ।

रमेश सपने देखता रहा, ऑटो रिक्शा अपना फासला तय करती रही ।

तभी संकट की शुरुआत हुई ।

पिक! पिक!

पीछे से आती सायरन की आवाज को सुनकर रमेश चौंका ।

सारे सपने एक झटके में बिखर गये ।

उसने पीछे गर्दन घुमाई और गर्दन घुमाते ही मानो एक साथ हजारों बिच्छुओं ने उसे डंक मार दिया था ।

“प...पुलिस !” रमेश के मुँह से चीख निकली ।

“पुलिस” का नाम सुनकर डिंपी के भी होश उड़ गये ।

पीछे फ्लाइंग स्क्वाड की एक नीली जिप्सी सायरन बजा-बजाकर ऑटो रिक्शा को रोकने का आदेश दे रही थी ।

“य...यह पुलिस हमारा पीछा क्यों कर रही है ?” डिंपी ने बदहवासों की तरह पूछा ।

“म...मुझे क्या मालूम ।” रमेश के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

“जरूर उन्हें यह पता चला गया है, हमारी ऑटो में लाश है ।”

“लेकिन उन्हें कैसे पता चल सकता है ?”

“य...यह तो वही बेहतर जाने ।” डिंपी कंपकंपाये स्वर में बोली- “मगर हंड्रेड परसेंट उन्हें हमारी हरकत के बारे में मालूम हो गया है । मैं तेरे से पहले ही बोलती थी, रमेश इस चक्कर में मत पड़ ! मत पड़ ! फंस जायेगा । मगर नहीं, तब तो तुझे धनवान बनने का बड़ा शौक चढ़ा हुआ था ।”

“बेकार की बात मत कर डिंपी ।” रमेश झुंझला उठा, पहले ही उसका दहशत के मारे बुरा हाल था, उसके जिस्म से पसीने की धारायें बह निकली थीं ।

उसने ऑटो रिक्शा की स्पीड और बढ़ा दी ।

ऑटो अब आंधी-तूफान की तरह सड़क पर दौड़ने लगी और उससे भी कहीं ज्यादा तेजी से दौड़ रहा था उस समय रमेश का दिमाग । जो उस एकाएक गले पड़ी मुसीबत से छुटकारा पाने की कोई नायाब तरकीब सोच रहा था ।

“म...डिंपी ।” रमेश आंदोलित लहजे में बोला- “म...मेरी बात ध्यान से सुन ।”

“क...क्या बात ?”

“पुलिस से बचने का मेरे दिमाग में एक आइडिया आया है, तू कम्बल ओढ़कर लाश के ऊपर लेट जा । जल्दी । फौरन ।”

डिंपी के पसीने छूट गये - “य...यह क्या कह रहा है तू ?”

“बहस मत कर ।” रमेश चिल्ला उठा- “पुलिस की जिप्सी नजदीक आती जा रही है, जैसा मैं कह रहा हूँ, जल्दी वैसा कर । वरना आज हम दोनों का फंसना तय है ।”

“ल...लेकिन लाश के ऊपर लेटने से ही क्या हो जायेगा ?” डिंपी की आंखों में मौत नाच रही थी ।

उसकी हवा खुश्क थी ।

“लाश के ऊपर लेटने के बाद यह भी पता चल जायेगा कि क्या होगा, इसलिये जल्दी कर ।”

उन दोनों की आपसी बहस किसी ठोस नतीजे तक पहुँच पाती, उससे पहले ही पुलिस की नीली जिप्सी जोर-जोर से सायरन बजाती हुई ऑटो रिक्शा के पहलू में से गुजरी और फिर सड़क के बिल्कुल बीचों-बीच ऑटो के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

रमेश के हाथ-पांव फूल गये ।

उसने फौरन ब्रेक लागाइ ।

फिर भी ऑटो रिक्शा के पहिये किर्र-किर्र की भयानक आवाज करते काफी दूर तक घिसटते चले गये और एक्सीडेंट होते-होते बचा ।

उसी पल डिंपी भी हरकत में आ गयी ।

वह एकदम दहशत के वशीभूत होकर लाश के ऊपर जा पड़ी थी । लाश के ऊपर गिरते ही उसने झट से लाश पर पड़ा कम्बल खींच लिया था और फिर उस कम्बल से अपने आपको तथा लाश को अच्छी तरह ढक लिया ।

अब वह लाश के एकदम ऊपर थी । अजनबी की गोद में ।

उधर जिप्सी के रुकते ही उसमें से धड़ाधड़ तीन पुलिसकर्मी नीचे कूदे ।

वह शक्ल-सूरत से ही शैतान नजर आ रहे थे ।

नीचे कूदते ही वह ऑटो रिक्शा की तरफ बढ़े ।

रमेश ने देखा, उनमें जो सबसे आगे था, वह एक बड़े खतरनाक मुखमण्डल वाला सब-इंस्पेक्टर की रैंक का पुलिसकर्मी था, जबकि उसके पीछे-पीछे आने वाले दोनों पुलिसकर्मी हवलदार थे ।

रमेश ऑटो रिक्शा की ड्राइविंग सीट से कुछ और ज्यादा चिपककर बैठ गया तथा अपने होने वाले खौफनाक अंजाम की कल्पना से ही थर-थर कांपने लगा ।

तब तक वह तीनों उसके करीब आ चुके थे ।

“क...क्या हुआ साहब?” रमेश ने मरियल-सी जबान में पूछा ।

“बाहर निकल साले !” सब-इंस्पेक्टर की हथौड़े जैसी आवाज ने सीधे उसके दिमाग पर चोट की- “बाहर निकल ।”

थरथरा उठा रमेश ।

हाथ-पैर कीर्तन करने लगे ।

“ल...लेकिन बात क्या है साहब ?”

“सुना नहीं हरामी !” सब-इंस्पेक्टर ने चिंघाड़ते हुए आगे झुककर उसका गिरेहबान पकड़ लिया- “सुना नहीं, मैं क्या कह रहा हूँ ।”

“म...मगर... ।”

रमेश के मुँह से निकलने वाले आगे के तमाम शब्द एक लम्बी चीख में परिवर्तित हो गये, क्योंकि गुस्से में भिन्नाते हुए उस सब-इंस्पेक्टर ने रमेश को न सिर्फ बाहर पकड़कर खींच लिया था बल्कि बाहर खींचते ही उसने धड़ाधड़ उसके मुँह पर तीन-चार ऐसे झापड़ भी जड़े कि वो चीखते हुए घड़ी के पेंडुलम की तरह दायें-बायें झूल गया ।

“जबान चलाता है साले ! अपने बाप से जबान चलाता है ।” उसने एक झापड़ और जड़ा ।

बिलबिला उठा रमेश ।

उसकी आंखों के गिर्द अनार-पटाखे से छूटने लगे ।

“ल...लेकिन मेरा कसूर तो बोलो साहब ?” रमेश ने फरियाद की- “म...मेरा अपराध क्या है ?”

“तुझे अपना अपराध नहीं मालूम साले ।” सब-इंस्पेक्टर ने उसे कहर बरपा करती नजरों से घूरा- “तुझे अपना कसूर नहीं मालूम ।”

धड़ाधड़ दो झापड़ बड़े कसकर उसकी कनपटी पर पड़े ।

रमेश की रुलाई छूटते-छूटते बची ।

“उल्लू के पट्ठे !” सब-इंस्पेक्टर ने उसके बाल पकड़कर झंझोड़े- “इतनी तेज ऑटो रिक्शा

चला रहा था, हवाई जहाज बना रखा था इसे और ऊपर से पूछता है मेरा अपराध क्या है, मेरा कसूर क्या है ?"

सब-इंस्पेक्टर ने गुस्से में भिन्नाकर उसके पेट में इतनी जोर से घुटना मारा कि वह हलकाये कुत्ते की तरह डकरा उठा ।

सचमुच बड़ा कड़क पुलिस वाला था ।

फिर यह सोचकर रमेश को राहत मिली कि मामला स्पीडिंग के चालान का था, लाश वगैरह का नहीं ।

"ल...लेकिन इसमें मेरी क्या गलती है साहब ?" रमेश रुंधे हुए स्वर में कलपते हुए बोला ।

"अच्छा, इसमें तेरी गलती कुछ नहीं ।" सब-इंस्पेक्टर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा- "ऑटो रिक्शा को आंधी तूफान बना रखा था, पुलिस सायरन की आवाज भी तुझे सुनाई नहीं दे रही थी, लेकिन फिर भी तेरी कुछ गलती नहीं ।"

"साहब, मेरे पास एक इमरजेन्सी केस है ।" रमेश आहत स्वर में बोला- "इसी वजह से मैं ऑटो आंधी-तूफान बनाकर चला रहा था ।"

"इमरजेन्सी, कैसी इमरजेन्सी ?"

"एक लड़की की जान खतरे में है साहब ।"

सब-इंस्पेक्टर ने फौरन अपने हाथ में मौजूद टॉर्च का प्रकाश ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर डाला, डिंपी मुँह खोले पड़ी थी । अलबत्ता कम्बल से उसने लाश को बड़े करीने से ढक रखा था ।

"अ...आह ।"

मुँह पर टॉर्च का प्रकाश पड़ते ही डिंपी दर्द भरे अंदाज में से कराही, उसने इमरजेन्सी वाली बात शायद सुन ली थी ।

"क्या हआ है इसे ?" लड़की को बीमार हालत में देखा सब-इंस्पेक्टर के तेवर कुछ ढीले पड़े ।

"पेट से है साहब ! दाई ने बोला है कि केस सीरियस है, इसलिए इसे फौरन हॉस्पिटल ले जाओ ।"

"अगर यह बात है, तो पहले क्यों नहीं बताया ?" सब-इंस्पेक्टर चीखा ।

“अ...आपने बोलने का मौका ही कहाँ दिया साहब, अ... आप तो- आप तो एकदम से... ।”

“ठीक है-ठीक है ।” सब-इंस्पेक्टर ने फिर से आंखें लाल-पीली की- “ल...लेकिन यह तो कुछ ज्यादा ही मोटी नजर आ रही है ।”

“व...वो क्या है साहब ।” रमेश जल्दी से बोला- “य...यह पेट से है न, इ...इसीलिए देखने में ऐसा लगता है ।”

“ओह ! ओह !!” सब-इंस्पेक्टर मुस्कराया ।

उसी के साथ दोनों हवलदार भी हो-हो करके हँसे ।

“अब मैं जाऊं साहब ?” रमेश ने व्याकुलता दर्शाई- “जितना ज्यादा लेट होऊंगा, उतना ही केस बिगड़ेगा ।”

“ठीक है, जाओ । और सुनो!” सब-इंस्पेक्टर कठोर लहजे में बोला- “आज तो मैंने तुम्हें एमरजेन्सी की वजह से छोड़ दिया है, लेकिन अगर आइन्दा फिर कभी तुमने फ्लाइंग स्क्वाड के सायरन की आवाज सुनकर भी ऑटो रिक्शा न रोकी, तो फिर तुम्हारी खैर नहीं । समझे ।”

“स...समझ गया साहब ! समझ गया ।”

“अब दफा हो जाओ यहाँ से ।”

रमेश तुरन्त ऑटो लेकर वहाँ से नौ दो ग्यारह हो गया ।

उसे ऐसा लगा, मानो जान बची और लाखों पाये ।

५

सुबह के ५ बजे का समय ।

यह वो समय होता है, जब मॉर्निंग वॉक के लिये लोग अपने-अपने घरों से बाहर निकलते हैं ।

लेकिन उस दिन की शुरुआत बड़े ही सनसनीखेज ढंग से हुई, इंडिया गेट के आसपास चहलकदमी करते लोगों का जमघट एकाएक अमर जवान ज्योति के नजदीक वाली झाड़ियों के आसपास लग गया था ।

जमघट लगने का कारण था, घनी झाड़ियों में एक लाश का पाया जाना ।

अजनबी की क्षत-विक्षिप्त लाश को सबसे पहले कारपोरेशन के एक माली ने देखा, जो सूरज निकलते ही झाड़ियों की कंटाई-छंटाई के वास्ते रोजाना वहाँ आता था ।

झाड़ियों में लाश देखते ही उसने गला फाड़-फाड़कर चिल्लाना शुरू कर दिया ।

परिणामस्वरूप वहाँ भीड़ जमा हो गयी।

यह भी बड़ी दिलचस्प बात थी कि रमेश उस समय खुद भी वहाँ पुलिस और आम लोगों की प्रतिक्रिया जानने के लिये मौजूद था, उसने ट्रेक सूट पहन रखा था और उसके हाव-भाव ऐसे थे, मानो वह भी दूसरे लोगों की तरह ही मॉर्निंग वॉक के लिये निकला हो और लाश की बात सुनकर चौंका हो ।

दरअसल रात वह फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते का सामना करने के बाद इतना घबराया था कि अमर जवान ज्योति के पास सन्नाटा देखकर उसने लाश को वहीं झाड़ियों में फेंक दिया, वरना रमेश का इरादा तो लाश को किसी ऐसी जगह ठिकाने लगाने का था, जहाँ से वो पुलिस को कई हफ्ते तक बरामद न होती ।

रमेश जानता था कि उसने लाश ऐसी जगह फेंकी है, जहाँ सुबह होते ही हड़कम्प मच जायेगा, इसलिये वो खुद भी उस हड़कम्प का नजारा करने के लिये वहाँ मौजूद था ।

तभी एकाएक भीड़ में शोर-शराबा सा हुआ और फिर जोर-जोर से सायरन बजाती एक पुलिस जीप घटनास्थल पर आकर रुकी ।

फिर देखते-ही-देखते इंस्पेक्टर राजविर अपने पूरे दल-बल के साथ जीप में से कूदा ।

इंस्पेक्टर राजविर सत्ताइस-अट्ठाइस साल का एक हृष्ट-पुष्ट नौजवान था । वह इतने दबंग

व्यक्तित्व का मालिक था कि अण्डरवर्ल्ड के बड़े-बड़े गुण्डों की उसके नाम से रुह कांपती थी, अपने इसी रौब-दाब के कारण ही वो अभी नया-नया ही सब-इंस्पेक्टर से इंस्पेक्टर बना था और फ्लाइंग स्क्वाड के उस दस्ते से सम्बन्धित था, जो सिर्फ हत्या वाले केसों की तफ्तीश करता है ।

इंस्पेक्टर राजविर को देखते ही भीड 'खाई' की तरह फट गयी । उसके व्यक्तित्व से रमेश भी प्रभावित हआ और उसके दिल-दिमाग में एक ही सवाल नगाड़े की तरह बजने लगा-

"अब क्या होगा ?"

"अब क्या होगा ?"

उधर राजविर जैसे ही अपने सहयोगियों के साथ लाश के नजदीक पहुँचा, तुरन्त एक हवलदार के मुँह से निकला- "अरे यह तो कांचा पहलवान है साहब ।"

"च...कांचा पहलवान ।"

"वही कांचा पहलवान साहब ।" हवलदार बोला- "जो पहले अखाड़े में जाकर पहलवानी करता था, लेकिन फिर धीरे-धीरे जुर्म के पेशे में आ गया और खून-खराबा करने लगा, दिल्ली पुलिस के रिकॉर्ड में इसका नाम काफी ऊपर है साहब ।"

"कहीं यह वही कांचा पहलवान तो नहीं !" इंस्पेक्टर राजविर जल्दी से बोला- "जिसका कई डकैतियों में भी हाथ था ?"

"बिल्कुल सही अंदाजा लगाया साहब, यह वही कांचा पहलवान है ।"

"ओह...ओह ।"

इंस्पेक्टर राजविर अब धीरे-धीरे स्वीकृति में गर्दन हिलाने लगा ।

उसके बाद पुलिस ने सबूत जुटाने और पंचनामा बनाने की तैयारी शुरू कर दी थी ।

रमेश जब घर पहुँचा, तो वहाँ डिंपी बड़ी बेसब्री से उसी का इंतजार कर रही थी ।

वह घबराहट के मारे आज ऑफिस भी नहीं गयी थी ।

"क्या हुआ ?" रमेश को देखते ही वह उसकी तरफ लपकी- "कोई खास बात पता चली ?"

"हाँ ।" रमेश गहरी सांस लेता हुआ कुर्सी पर बैठ गया- "उस अजनबी का नाम मालूम हो गया

है ।”

“क...कौन था वो ?”

“कोई कांचा पहलवान नाम का अपराधी था, जिसके ऊपर डकैती और हत्या के कई केस दर्ज थे ।”

“ओह, इसके अलावा कुछ और पता चला ?”

“नहीं, बाकी तो कुछ नहीं पता चला ।” रमेश ने सस्पेंसफुल मुद्रा में कहा- “अब शाम को सांध्य टाइम्स आयेगा, शायद उसी से कोई और नई जानकारी मालूम हो ।”

उसके बाद बड़ी बेसब्री से “सांध्य टाइम्स” का इंतजार शुरू हुआ ।

वह दोनों नटराज मूर्तियों के बारे में कोई जानकारी हासिल करने के लिये कुछ ज्यादा ही उत्सुक थे ।

खासतौर पर रमेश तो इस मामले में हद से ज्यादा बेकरार था ।

शाम को तीन बजे के करीब सांध्य टाइम्स आया ।

कांचा पहलवान से सम्बन्धित खबर अखबार के कवर पेज पर ही मोटी-मोटी हैडलाइनों में छपी थी ।

लिखा था :

कुख्यात अपराधी कांचा पहलवान की रहस्यमयी हत्या

शव बरामद

नई दिल्ली, ४ जुलाई । आज सुबह दिल्ली शहर के कुख्यात अपराधी कांचा पहलवान की क्षत-विक्षिप्त लाश पुलिस को इंडिया गेट के नजदीक बेहद रहस्यमयी हालत में पड़ी मिली । मृत्यु का कारण वह दो गोलियां बतायी जाती हैं, जो कांचा पहलवान की पीठ में लगी हुई थीं ।

इस सम्बन्ध में गश्तीदल के दो पुलिसकर्मियों का कहना है कि उन्होंने रीगल सिनेमा के नजदीक गश्त लगाते समय पौने बारह बजे के करीब गोलियों के दो धमाके सुने थे, गोलियों की आवाज सुनकर वह फौरन आवाज की दिशा में दौड़े, जहाँ उन्होंने कांचा पहलवान को भागते हुए देखा । उसके हाथ में काले रंग का एक ब्रीफकेस था, वह पुलिसकर्मी कांचा पहलवान को पकड़ पाते, उससे पहले ही वो रीगल के सामने अंधेरे में खड़ी एक ऑटो रिक्शा में बैठकर फरार हो गया । गश्तीदल के पुलिसकर्मियों ने ऑटो का नम्बर भी नोट करने का प्रयास किया, लेकिन उसकी नम्बर प्लेट पर मिट्टी पुती होने के कारण वह अपने मकसद में

कामयाब न हो सके ।

पुलिस का अनुमान है कि ऑटो रिक्शा ड्राइवर कांचा पहलवान का कोई साथी था, पुलिस मामले की तह तक पहुँचने के लिये ऑटो रिक्शा ड्राइवर और कांचा पहलवान के ब्रीफकेस की बड़ी सरगर्मी से तलाश कर रही है ।

रमेश ने वह खबर खुद भी पढ़ी और डिंपी को भी सुनाई । पूरे समाचार में नटराज मूर्तियों का कहीं भी कोई जिक्र न था । लेकिन एक बात बड़ी भयानक थी- दिल्ली पुलिस, ऑटो रिक्शा ड्राइवर का कांचा पहलवान से जो सम्बन्ध निकाल रही थी, उसने उन दोनों के होश उड़ाकर रख दिये ।

"य...यह तो बड़ी खतरनाक खबर है ।" सांध्य टाइम्स अखबार में छपी उस खबर को सुनकर डिंपी के शरीर में कंपकंपी दौड़ी ।

"क्यों ?"

"मालूम नहीं- पुलिस तुम्हारे और कांचा पहलवान के बीच क्या सम्बन्ध निकाल रही है ? वह तुम्हें उसका कोई सगेवाला समझ रही है ।"

"मुझे नहीं समझ रही ।" रमेश गुर्राया - "बल्कि वह उस ऑटो ड्राइवर को उसका सगेवाला समझ रही है, जो उसे रीगल सिनेमा के पास से लेकर भागा था ।"

"लेकिन रमेश !" डिंपी की आंखों में हैरानी के भाव थे - "वह ऑटो ड्राइवर तू ही तो था ।"

"अभी यह बात सिर्फ हम दोनों को मालूम है, हम दोनों को । पुलिस यह रहस्य नहीं जानती कि वो ऑटो ड्राइवर मैं ही था ।"

"अगर पुलिस अभी इस रहस्य को नहीं जानती ।" डिंपी थर-थर कांपते हुए स्वर में बोली- "तो बहुत जल्द वो जान भी जायेगी । मैं तुझसे पहले ही कहती थी रमेश, इस चक्कर में मत पड़ ! मत पड़ !! फंस जायेगा । लेकिन नहीं, तब तो मेरी बात तेरे कान पर नहीं रेंग रही थी, तब तो तुझे सिर्फ धनवान बनने का शौक चढ़ा था ।"

"अब इन बेकार की बातों को छोड़ डिंपी !" रमेश झुंझला उठा- "सच बात तो यह है कि अभी भी हमारा कुछ नहीं बिगड़ा है । अगर हम ठण्डे दिमाग से सारे हालातों का जायजा लें, तो खुद हमें भी महसूस होगा कि पुलिस हम तक कभी भी नहीं पहुँच सकती ।"

"क्यों नहीं पहुँच सकती ?"

"क्योंकि पुलिस अभी सिर्फ यह जानती है डिंपी !" रमेश एक-एक शब्द चबाता हुआ बोला- "कि कोई कांचा पहलवान को ऑटो रिक्शा में लेकर भागा । शब्दों पर गौर करो- 'कोई' । अभी यह बात मुकम्मल अंधेरे में है कि वह 'कोई' कौन था ? दिल्ली पुलिस अभी न तो मेरे नाम से ही वाकिफ है और न उसे मेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर ही मालूम है । डिंपी !" रमेश की आवाज और ज्यादा रहस्यमयी हो उठी- "दिल्ली शहर में ऑटो रिक्शाओं की कमी नहीं है । यहाँ हजारों की संख्या में ऑटो हैं । इसलिये दिल्ली पुलिस को यह बात इतनी आसानी से नहीं पता चलेगी कि जिस ऑटो रिक्शा में कांचा पहलवान रीगल के पास से भागा, उस ऑटो

रिक्शा का ड्राइवर कौन था ।”

“अ...और मूर्तियां !” डिंपी ने सकपकाये स्वर में पूछा- “मूर्तियों का क्या होगा ?”

“मूर्तियों के सम्बन्ध में एक बड़ी अच्छी बात है ।” रमेश उत्साहपूर्वक बोला- “उनके बारे में अभी दिल्ली पुलिस को कुछ भी मालूम नहीं है ।”

“त...तुम कहना क्या चाहते हो ?”

“देखो डिंपी !” रमेश ने उसे विस्तार से समझाया- “इस समय जो बात कांचा पहलवान से हमारा लिंक जोड़ती है, वो है हमारे पास मौजूद सोने की छः नटराज मूर्तियां । उन मूर्तियों के अलावा हमारे पास ऐसा कोई सूत्र नहीं है, जो पुलिस के सामने इस बात की शहादत बन सके कि हमारा कांचा पहलवान से या उसकी लाश से कैसा भी कोई रिश्ता था । और फिलहाल हमारे पास सबसे दूसरा ट्रम्प कार्ड यह है कि पुलिस उन मूर्तियों की तरफ से भी पूरी तरह अंजान है, इसलिये इससे पहले कि दिल्ली पुलिस ऑटो ड्राइवरों की छानबीन करती हुई मेरे तक पहुंचे, उससे पहले ही क्यों न हम मूर्तियां बेचकर दिल्ली से ही फरार हो जायें ।”

“यह...यह क्या कह रहे हो तुम ?” डिंपी चौंकी ।

“ठीक ही तो कह रहा हूँ ।” रमेश सनसनीखेज स्वर में ही बोला- “पुलिस को सभी ऑटो ड्राइवरों की जांच-पड़ताल करने में कम-से-कम तीन-चार दिन का समय लग जायेगा । इस बीच हम आराम से वह नटराज मूर्तियां बेच सकते हैं । मूर्तियां बेचने के बाद हमारे पास कोई सबूत भी नहीं रहेगा ।”

“ल...लेकिन सवाल तो ये है रमेश, वो मूर्तियां बेची भी किस तरह जायेंगी ?” डिंपी शुष्क स्वर में बोली- “मैं पहले ही आशंका जाहिर कर चुकी हूँ, अगर वह मूर्तियां चोरी की हुई तो...?”

“तो क्या होगा ?”

“तब तू पकड़ा नहीं जायेगा ?”

“नहीं ।” रमेश ने बड़े ही विश्वास के साथ इंकार में गर्दन हिलाई- “मैं तब भी नहीं पकड़ा जाऊंगा ।”

“क...कैसे ?” डिंपी ने हैरानी से नेत्र फैलाकर पूछा ।

“जरा सोचो डिंपी !” रमेश ने आइडिया बताया- “अगर कोई आदमी किसी ऐसी दुकान पर जाकर चोरी का माल बेचे, जो दुकानदार ज्यादातर चोरी का ही माल खरीदता हो, तो फिर खतरा कैसा ? फिर वो दुकानदार भला पुलिस को इन्फॉर्मेशन क्यों देगा ?”

“त...तुम ऐसे किसी सर्राफ को जानते हो ?” डिंपी के मुँह से सिसकारी छूटी- “जो चोरी का सोना खरीदता है ?”

“हाँ, जानता हूँ । और आज रात को ही मैं उससे मूर्तियों का सौदा करूंगा, क्योंकि इस मामले में मैं ज्यादा देर नहीं करना चाहता ।”

डिंपी हैरानी से रमेश को देखती रह गयी ।

उस रमेश को, जो हर पल एक गहरी पहेली बनता जा रहा था

६

दरीबा कलां !

यह जगह दिल्ली में चांदनी चौक के नजदीक ही है ।

उस समय रात के ग्यारह बज रहे थे, सर्राफे की रिटेल मार्केट के रूप में प्रसिद्ध दरीबा कलां की तब तक लगभग हर दुकान बंद हो चुकी थी । सिर्फ अपवाद के तौर पर एक दुकान खुली थी, जिसके शटर के ऊपर एक नियोन साइन बोर्ड जल-बुझ रहा था ।

उस नियोन साइन पर लिखा था-

सेठ रुपचंद एण्ड सन्स

सनमाइका के विशाल काउण्टर के पीछे सेठ रुपचंद एण्ड सन्स का एक सेल्समैन खड़ा था ।

सेल्समैन ने सबसे पहले अपना चश्मा दुरुस्त किया, फिर तीक्ष्ण दृष्टि काउंटर पर कोहनी टिकाये खड़े रमेश पर डाली और उसके बाद अपनी बेहद पारखी नजरों से उस नटराज मूर्ति को देखने लगा, जिसे रमेश ने अभी-अभी उसे बेचने की खातिर सौंपी थी ।

मूर्ति देखते-देखते सेल्समैन की आंखों में एकाएक हैरानी के चिन्ह उभरने लगे ।

फिर उसने घोर आश्चर्य से पूछा- "य...यह मूर्ति तुम्हारे पास कहाँ से आयी ?"

"मैंने चुराई है ।" रमेश ने बड़ी दिलेरी के साथ जवाब दिया ।

"च...चुराई है ?" एक पल के लिये सेल्समैन के होश उड़ गये ।

"हाँ ।"

"अगर यह चोरी की हैं, तो तुम इसे यहाँ क्यों लेकर आये हो ?" सेल्समैन थोड़ा भड़ककर बोला- "हम चोरी का माल बिल्कुल नहीं खरीदते, समझे !"

रमेश मुस्कराया ।

उसकी 'मुस्कान' ने सेल्समैन को और ज्यादा सस्पेंस में फंसा दिया- "त...तुम मुस्करा क्यों रहे हो ?"

"क्योंकि मुझे सब मालूम है बिरादर !" रमेश बोला- "मैं जानता हूँ कि तुम और तुम्हारे सेठजी रात के दो-दो बजे तक यहाँ बैठकर क्या करते हैं ।"

"क्या करते हैं ?" सेल्समैन ने अपनी आंखें लाल-पीली कीं ।

"देखो, मैं यहाँ लड़ाई-झगड़ा करने नहीं आया ।" रमेश ने अपनी आवाज नरम की- "अगर तुम्हारी इच्छा हो, तो मूर्ति खरीदो । न इच्छा हो, तो मना करो ।" उसके बाद रमेश ने सेल्समैन के हाथ से अपनी इकलौती नटराज मूर्ति ले ली और फिर चलने का उपक्रम करता हुआ बोला- "वैसे एक बात कहूँ ?"

"कहो ।"

“मेरे जिस दोस्त ने मूर्ति बेचने के लिये मुझे यहाँ का पता दिया था, वह पता गलत नहीं हो सकता । क्योंकि मेरा दोस्त बहुत भरोसे वाला आदमी है और उसने अपने जीते जी कभी कोई गलत बात जबान से बाहर नहीं निकाली ।”

वह बात कहने के बाद रमेश जैसे ही जाने के लिए मुड़ा ।

“सुनो !” सेल्समैन ने फौरन उसे पुकारा ।

रमेश ठिठका ।

“क्या है ?”

“तुम अपने उस दोस्त का नाम बता सकते हो, जिसने तुम्हें यहाँ का पता दिया ?”

अब रमेश सकपकाया ।

उसे एकाएक कोई जवाब न सूझा ।

“बताया नहीं तुमने, तुम्हारे दोस्त का क्या नाम है?”

“च...चीना... कांचा पहलवान ।” रमेश के मुँह से कांचा पहलवान का नाम अनायास ही निकल गया- “च...कांचा पहलवान ने मुझे यहाँ का पता दिया था ।”

कांचा पहलवान !

उस नाम को सुनकर सेल्समैन के नेत्र यूं अचम्भे से फटे, मानो उसके सिर पर एकाएक बम आकर गिर गया हो ।

“त...तुम कांचा पहलवान के दोस्त हो ?” सेल्समैन के मुँह से सिसकारी छूटी ।

“हाँ ।”

“ठीक है, तुम मुझे मूर्ति दिखाओ ।” सेल्समैन आश्चर्यपूर्ण मुद्रा में ही बोला- “मैं अभी अंदर सेठ जी से बात करके आता हूँ ।”

रमेश ने खुशी-खुशी मूर्ति उसे सौंप दी।

सेल्समैन मूर्ति लेकर दुकान के अंदर वाले पोर्शन में चला गया ।

रमेश नहीं जानता था, अब वो एक और कितनी बड़ी आफत में फंसने जा रहा है ।

कितनी बड़ी मुश्किल उसके सिर पर टूटने वाली है ।

दरअसल 'सेठ रुपचंद एण्ड संस' की ज्वैलरी शॉप दो पोर्शन में बंटी हुई थी ।

एक फ्रंट पोर्शन !

जबकि दूसरा फ्रंट पोर्शन से ही होता हुआ अंदर का पोर्शन ।

उस अंदर के पोर्शन में ही सर्राफों के सर्राफ सेठ रुपचंद बैठते थे और वहाँ तक सिर्फ सेल्समैन की पहुँच थी, वहाँ कोई कस्टमर नहीं जा सकता था ।

वह सर्राफे की दुकान रोजाना रात के दो बजे तक खुलती थी । इतना ही नहीं, तब तक वहाँ रमेश जैसे इक्का-दुक्का ग्राहक भी आते रहते थे ।

ऐसे ही कई ग्राहकों को रमेश पहले भी कई मर्तबा अपनी ऑटो रिक्शा में बिठाकर वहाँ लाया था । उनमें से कुछेक ग्राहक नशे में बुरी तरह धुत्त होते और वह ऑटो में बैठे-बैठे सेठ रुपचंद को माल बेचकर बस रुपया हासिल होने की बात करते रहते । रमेश को तभी मालूम हुआ, रात के समय वहाँ कौन-सा धंधा होता है ।

इस समय रमेश फ्रंट पोर्शन में बिल्कुल अकेला खड़ा था ।

ज्वैलरी के वहाँ जितने भी शोकेस थे, वह सब लॉक्ड थे, ताकि कोई उनके साथ छेड़छाड़ न कर सके ।

रमेश ने अपने चेहरे पर नकली दाढ़ी-मूंछे भी चिपकाई हुई थीं।

उसे वहाँ खड़े-खड़े दस मिनट से भी ज्यादा गुजर गये, लेकिन सेल्समैन अंदर वाले पोर्शन से बाहर न निकला ।

अब रमेश बेचैन हो उठा ।

"क...क्या चक्कर है ? यह बाहर क्यों नहीं आ रहा ?"

रमेश बेचैनीपूर्वक इधर-से-उधर टहलने लगा ।

पांच मिनट और इसी तरह गुजर गये, लेकिन सेल्समैन फिर भी बाहर न निकला ।

अब रमेश की बेचैनी हद से ज्यादा बढ़ चुकी थी ।

उसके दिमाग में रह-रहकर खतरे की घण्टियां बजने लगी ।

"ज...जरूर कुछ चक्कर है ?"

"ज...जरूर कुछ घपला है ?"

"भाग रमेश, भाग !"

"भाग !"

रमेश के माथे पर पसीने चुहचुहाने लगे ।

एकाएक रमेश बड़ी फुर्ती के साथ ज्वैलरी शॉप से बाहर निकला और नजदीक ही बने कारपोरेशन के पेशाबघर में जा घुसा ।

पेशाबघर की जालियों के पीछे से ज्वैलरी शॉप का नजारा बिल्कुल साफ देखा जा सकता था ।

तभी घटना ने एक और नया मोड़ लिया ।

रमेश ने देखा- उसके पेशाबघर में घुसते ही भड़ाक से सेकंड पोर्शन का दरवाजा खुला था, फिर उसमें से सेल्समैन के साथ-साथ बुरी तरह हड़बड़ाया एक और आदमी भी बाहर निकला ।

जरूर वह सेठ रुपचंद था ।

उसकी उम्र तक़रीबन चालीस-पैंतालीस के बीच थी । गेंहुआ रंग, लम्बी-चौड़ी कद काठी, साधारण सेठों की भांति उसका शरीर थुलथुला होने की बजाय काफी तंदरुस्त था । उसने काले रंग का बंद गले का कोट और काली पैंट के साथ ही अपने गले में ढेरों किस्म की रंग-बिरंगी मालायें भी पहनी हुई थीं । दोनों हाथों में रत्नजड़ित अंगुठियां थीं । कुल मिलाकर सेठ रुपचंद अपने पहनावे से ही धनकुबेर नजर आ रहा था । लेकिन उसके चेहरे पर ऐसी क्रूरता विद्यमान थी, जो ज्यादातर खतरनाक अपराधियों के चेहरे पर ही पाई जाती है ।

रमेश को ज्वैलरी शॉप के अंदर से गायब देख वह दोनों चौंके ।

“य...यह कहाँ गया?” सेल्समैन की साफ-साफ भौंचक्की आवाज रमेश के कानों में पड़ी ।

“वडी तेरे को ही मालूम होगा नी, कहाँ गया ?” सेठ रुपचंद अपनी 'सिन्धी' भाषा में बोला-"मेरे से क्या पूछता है नी ?”

“ल...लेकिन अभी तो यहीं था ।” सेल्समैन दौड़कर ज्वैलरी शॉप से बाहर निकला और सड़क पर दायें-बायें देखने लगा- “अभी-अभी में वो कहाँ गायब हो गया ?”

पेशाबघर में छिपा रमेश माजरा समझ पाता, तभी उसके देखते ही देखते सेठ रुपचंद की ज्वैलरी शॉप के सामने एक फियेट धड़धड़ाती हुई आकर रुकी ।

फिर फियेट में से एक-एक करके दनादन तीन मवाली बाहर कूदे ।

दो के हाथ में हॉकियां थीं ।

एक के हाथ में साइकिल की चैन ।

नीचे कूदते ही उन्होंने सेठ रुपचंद और सेल्समैन से धीरे-धीरे कुछ बातें कीं, उनके हाव-भाव बता रहे थे कि चर्चा उसी के बारे में हो रही है ।

“वह जरूर इधर गया है ।” तभी सेल्समैन ने गली में दायीं तरफ उंगली उठाई ।

“तुमने देखा था उसे भागते हुए ?” एक गुण्डे ने सेल्समैन से पूछा ।

“न...नहीं ।” सेल्समैन सकपकाया- “भागते हुए तो नहीं देखा ।”

“फिर क्या गारंटी है कि वो इसी तरफ गया है ?” दूसरा गुण्डा बोला- “सम्भव है कि वो इस तरफ गया हो ।” गुण्डे ने दूसरी दिशा में उंगली उठाई ।

“वडी तुम लोग यूं ही बक-बक किये जाओगे नी ।” सेठ रुपचंद झल्ला उठा- “या फिर दौड़कर उस हरामी को पकड़ोगे भी । भई सब हर तरफ फैल जाओ, वह जिस तरफ भी भागा होगा, अपने आप पकड़ा जायेगा ।”

सेठ रुपचंद के तर्क में जान थी ।

फौरन वह तीनों मवाली और सेल्समैन अलग-अलग दिशाओं में दौड़ पड़े ।

जबकि पेशाबघर में छिपे रमेश का दिमाग सुनसान पड़ी वीरान घाटियां बन चुका था ।

उसके मस्तिष्क में रह-रहकर एक ही सवाल डंके की तरह बज रहा था- “सेठ रुपचंद को उसके पीछे गुण्डे लगाने की क्या जरूरत थी ?”

“वह इस तरह उसे क्यों ढूंढ रहे थे ?”

“क्या चक्कर था ?”

रमेश को लगा- जैसे रहस्य का जाल हर पल उसके चारों तरफ कसता जा रहा हो ।

उस दिन रमेश चोरों की तरह छिपता-छिपाता सोनपुर में दाखिल हुआ, दरीबा कलां से वहाँ तक का रास्ता उसने दौड़कर पूरा किया था ।

इसलिए उसकी सांस बेहद तेज चल रही थी ।

आज वो एक नये संकट में फंसते-फंसते बचा था, यह तो ऊपर वाले की कृपा थी कि वह आज डिंपी के पास से सिर्फ एक ही नटराज मूर्ति लेकर चला था, वरना आज उन तमाम नटराज मूर्तियों से उसे हाथ धोना पड़ता ।

सोनपुर में आकर रमेश ने चैन की सांस ली, लेकिन उसे कहाँ मालूम था कि अब चैन उसकी किस्मत से पूरी तरह छिन चुका है ।

नकली दाढ़ी-मूंछे वो पेशाबघर में ही उतार चुका था ।

तभी उसके साथ एक और घटना घटी ।

खतरनाक घटना ।

रोजाना की तरह उस दिन भी सोनपुर में सन्नाटा फैला था । तभी एकाएक रमेश को अपने पीछे सरसराहट-सी सुनाई दी ।

“क...कौन है ?”

रमेश जैसे ही बौखलाकर पलटा, तुरन्त उसके मुँह से हृदयविदारक चीख निकल गयी ।

एक लम्बे फल वाला चाकू बिजली की तरह चमचमाता हुआ अंधेरे में कौंधा था और फिर उसके बायें बाजू से रगड़ खाकर गिरा ।

अगर रमेश से पलटने में एक क्षण का भी देर हो जाती, वह चाकू उसकी पीठ में आर-पार जा धंसना था ।

एकाएक हुए इस हमले से रमेश के होश फना हो गये ।

अंधेरा होने के बावजूद उसने हमलावर को बिल्कुल साफ-साफ पहचाना, चाकू जग्गु ने चलाया था ।

जग्गु !

यानि सोनपुर का नम्बर एक गुण्डा ।

जग्गु, रमेश पर दोबारा हमला करने के लिये पुनः चाकू के ऊपर झपटा ।

“क्या हुआ? क्या हुआ?”

उसी क्षण भड़ाक से डिंपी के घर का दरवाजा खुला और फिर वह लगभग चीखती-चिल्लाती रमेश की तरफ लपकी ।

डिंपी द्वारा एकदम से मचायी चीख-पुकार से घबराकर जग्गु भाग खड़ा हुआ ।

“क्या हुआ रमेश, क्या हुआ ?”

डिंपी दौड़कर रमेश के करीब पहुँची और उसने उसे अपनी बांहों में भर लिया ।

“व...वो...वो...।” रमेश की दहशत के मारे बुरी हालत थी ।

“क्या हुआ ?”

“व...वो जग्गु मुझे चाकू मारकर भाग गया ।”

“व...वो जग्गु था ?” डिंपी के मुँह से सिसकारी छूटी ।

डिंपी भी घबरा उठी ।

“ह...हाँ, वो जग्गु ही था ।”

“चल, तू जल्दी घर चल रमेश !”

“ल...लेकिन बात क्या है ?”

“तूने सुना नहीं ।” डिंपी गुर्रा उठी- “जल्दी घर चल ।”

“म...मगर... !”

रमेश के आगे के तमाम शब्द अधूरे रह गये, क्योंकि बुरी तरह दहशतजदां डिंपी ने उसकी शर्ट का कॉलर पकड़ा था और फिर वह उसे लगभग घसीटती हुई घर की तरफ ले गयी ।

किसी भूसे के बोरे की तरह उसने रमेश को चारपाई पर पटका और फिर बेपनाह फुर्ती के साथ दरवाजा बंद करती हुई बोली- “तेरे पीछे यहाँ पुलिस आयी थी बेवकूफ ।”

“प...पुलिस !”

वह ‘शब्द’ रमेश के दिमाग में इस तरह टकराया, मानो धायं से राइफल की गोली लगी हो ।

शरीर थंडा !

हाथ-पैर सुन्न !

चेहरे का रंग उड़ गया ।

थर-थर कांपते स्वर में पूछा उसने- “ल...लेकिन पुलिस यहाँ क्यों आयी थी ?”

“तुझे पकड़ने आयी थी ।” डिंपी ने एक और भयंकर धमाका किया- “गिरफ्तार करने आयी थी तुझे ।”

“ग...गिरफ्तार करने ।” रमेश का जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया- “य...यह तू क्या कह रही है डिंपी ?”

“वही कह रही हूँ बेवकूफ, जो सच है ।” डिंपी ने दांत किटकिटाये- “पुलिस की एक पूरी जीप भरकर सोनपुर में आयी थी, वह तेरे बारे में ही पूछताछ कर रहे थे । कोई इंस्पेक्टर राजविर नाम का बड़ा कड़क पुलिसिया था, वह बोलता था कि तूने कांचा पहलवान का खून किया है ।”

“ख...खून ! च...कांचा पहलवान का खून !!!” रमेश इस तरह थर-थर कांपने लगा, जैसे जूड़ी का मरीज कांपता है ।

“उस इंस्पेक्टर ने मोहल्ले वालों के सामने तेरे घर का ताला भी तोड़ा और वहाँ की तलाशी भी ली ।”

“फ...फिर मिला उसे कुछ वहाँ से ?”

“कहाँ से मिलता ?” डिंपी गुर्रायी- “मूर्तियां तो तूने मेरे पास रख छोड़ी हैं । रमेश, मैं तेरे से पहले ही बोलती थी, कोई भी अपराधी पुलिस के फंदे से ज्यादा दिन तक नहीं बचा रह सकता । अब देख तेरी तमाम चालाकियों के बावजूद, तेरी तमाम योजना के बावजूद पुलिस तेरे तक कितनी जल्दी पहुँच गयी । कितनी जल्दी तेरी करतूत का पर्दाफाश हो गया ।”

उस हादसे ने रमेश की खोपड़ी और ज्यादा फिरकनी की तरह घुमाकर रख दी ।

“ल...लेकिन मेरे एक बात समझ नहीं आयी ।” रमेश झल्लाकर बोला- “इंस्पेक्टर राजविर को इतनी जल्दी यह हकीकत कैसे मालूम हो गयी कि कांचा पहलवान की लाश हम दोनों ने ठिकाने लगायी थी ?”

“हम दोनों ने नहीं ।” डिंपी नागिन की तरह फुंफकार उठी- “हम दोनों ने नहीं रमेश- सिर्फ खुद को बोल । मैं तेरे इस बेहद खतरनाक और जानलेवा चक्कर में नहीं पड़ने वाली ।”

“मैं ही सही, लेकिन इंस्पेक्टर राजविर को यह खबर हुई कैसे ?” रमेश विचलित मुद्रा में बोला- “उसने यह कैसे पता लगाया कि कांचा पहलवान की हत्या में या उसकी लाश ठिकाने लगाने में मेरा कैसा भी कोई हाथ था ?”

“मुझे क्या मालूम ? इंस्पेक्टर राजविर को किस तरह मालूम हुआ ? पुलिस वालों के अपने सोर्स होते हैं । जांच करने का अपना स्टाइल होता है । जरूर इंस्पेक्टर राजविर ने किसी तरह यह सारी हकीकत पता लगा ली होगी ।”

रमेश के दिमाग में धमाके होने लगे ।तेज धमाके ।

सारी घटनायें इतनी सुपर फास्ट स्पीड से घट रही थीं, जिनकी रमेश ने कल्पना भी न की थी ।

हर क्षण चौंका देने वाला था ।

हर कदम रहस्य से भरा हुआ ।

तभी डिंपी ने एक और भयंकर विस्फोट किया ।

"जानता है जग्गु कौन है ?" डिंपी का सनसनाया स्वर ।

"क...कौन है ?"

"वो कांचा पहलवान का सगा भतीजा है ।"

"भ...भतीजा ? च...कांचा पहलवान का भतीजा ?"

"हाँ ।"

"क...कमाल है, पहले तो मुझे यह बात मालूम नहीं थी ।"

"सिर्फ तुझे क्या, सोनपुर में पहले यह बात किसी को मालूम नहीं थी ।" डिंपी बोली- "एक बात सुनकर तू और हैरान होगा रमेश, कांचा पहलवान रहता भी सोनपुर में ही था । आगे जो कोने वाला मकान है, उसी में ।"

"यह कैसे हो सकता है ?" रमेश के मुँह से तेज सिसकारी छूटी- "अ...अगर कांचा पहलवान सोनपुर में ही रहता था, तो वह पहले कभी दिखाई क्यों नहीं दिया ? जबकि मैंने पहले उसे किशनपरा में तो क्या पूरी दिल्ली में कहीं नहीं देखा था ।"

"मैंने खुद पहली कभी उसे सोनपुर में नहीं देखा था ।" डिंपी बोली- "दरअसल वह आधी रात के समय कभी-कभार ही उस घर में आता था, जिसमें जग्गु रहता है । इसलिये हममें से कोई भी उसे न देख सका ।"

"ओह ।"

सचमुच सारी परिस्थितियां बेहद चौंका देने वाली थीं । चौंका देने वाली भी और हद से ज्यादा सस्पेंसफुल भी ।

"कांचा पहलवान की लाश का क्या हुआ ?"

"वह शाम तक ताबूत में बंद शवगृह के अंदर रखी थी । इंस्पेक्टर राजविर बता रहा था कि लावारिस लाशों को तीन-चार दिन तक इसलिये शवगृह में रखा जाता है कि क्या पता उन्हें कोई हासिल करने वाला आ ही जाये । अगर कोई नहीं आता, तो फिर उन लावारिस लाशों का सरकार ही दाह-संस्कार कर देती है । आज इंस्पेक्टर राजविर की जग्गु से मुलाकात न होती, तो बहुत मुमकिन था कि कांचा पहलवान की लाश को भी लावारिस समझकर सरकार ही उसका दाह संस्कार कर देती ।"

"इ...इसका मतलब इंस्पेक्टर राजविर भी इस बात से वाकिफ नहीं था ।" रमेश भौंचक्के स्वर में बोला- "कि कांचा पहलवान जग्गु का चाचा है ?"

"नहीं, अगर इंस्पेक्टर राजविर इस बात से वाकिफ होता, तो सुबह ही जग्गु को कांचा

पहलवान की हत्या की इन्फॉर्मेशन न दे दी जाती । दरअसल जग्गु को तो अपने चाचा की मौत की खबर तब मिली, जब इंस्पेक्टर राजविर तुझे गिरफ्तार करने सोनपुर आया था ।"

"ओह !" रमेश भयभीत मुद्रा में बोला- "तब तो जग्गु बहुत भड़क रहा होगा ?"

"भड़कता ही । आखिर उसके चाचा की हत्या हुई थी, वह इंस्पेक्टर राजविर के सामने ही खूब गरज-गरजकर कह रहा था कि अगर रमेश ने उसके चाचा को मारा है, तो वह रमेश को किसी भी हालत में जिंदा नहीं छोड़ेगा, उसे भी मार डालेगा ।"

रमेश के शरीर में झुरझुरी दौड़ गयी ।

अब सारा माजरा उसकी समझ में आया ।

अब वो समझा कि सोनपुर में घुसते ही जग्गु ने उसके ऊपर जानलेवा हमला क्यों किया था ।

"जग्गु जब चिल्ला-चिल्लाकर मुझे जान से मार डालने के लिये कह रहा था ।" रमेश अपने शुष्क होठों पर जबान फिराता बोला- "तो इंस्पेक्टर राजविर ने उससे कुछ नहीं कहा ?"

"वह क्या कहता? आखिर चाचा मरा था जग्गु का । इसलिये उसका यूँ गुस्से में गरजना-बरसना जायज ही था । कौन सदमे की हालत में इस तरह की बातें नहीं बोलता ।"

"एक बात कहूँ रमेश ?" डिंपी ने अपलक उसे देखते हुए कहा ।

"क्या ?"

"जरूर जग्गु बहुत देर से सोनपुर में तेरे आने का इंतजार कर रहा होगा, जो उसने यूं एकदम से तेरे ऊपर हमला कर दिया ।"

रमेश के गले की घण्टी जोर से उछली ।

"ल...लेकिन मुझे यह थोड़े ही मालूम था ।" रमेश सकपकाये स्वर में बोला- "कि कांचा पहलवान , जग्गु का चाचा है । फिर कांचा पहलवान ने भी तो मुझे कल रात यह बात नहीं बतायी कि वो सोनपुर में ही रहता है । अगर उसने मुझे यह बात बतायी होती, तो फिर क्या मैं पागल था, जो उससे मूर्तियां हड़पने की सोचता । फिर यह बात भी बड़ी अजीबोगरीब है कि सोनपुर में आने के बाद भी कांचा पहलवान अपने घर नहीं गया बल्कि मेरे घर आया । वाकई एक के बाद एक नये-नये मायाजाल जन्म ले रहे हैं ।"

"इस बात के पीछे तो एक सॉलिड वजह हो सकती है, जो कांचा पहलवान अपने घर नहीं गया ।"

"क्या सॉलिड वजह हो सकती है ?"

"मत भूलो, कांचा पहलवान के पास सोने की छः बेशकीमती मूर्तियां थीं । मुमकिन है कि उन बहुमूल्य मूर्तियों को लेकर कांचा पहलवान ने अपने भतीजे के पास जाना मुनासिब न समझा हो । आखिर उसका भतीजा था तो एक गुण्डा ही, मवाली ही । क्या पता कांचा पहलवान को यह शक हो कि अगर वो मूर्तियां लेकर जग्गु के पास गया, तो जग्गु उन मूर्तियों को डकार जायेगा ।"

डिंपी काफी हद तक ठीक कह रही थी ।

यह बात संभव थी ।

“र...रमेश, अब तू जितनी जल्दी हो सके, यहाँ से चला जा ।”

“क...क्यों ?”

“पागल आदमी !” डिंपी दांत किटकिटाकर बोली- “तू नहीं जानता, तुझे गिरफ्तार करने यहाँ कभी भी इंस्पेक्टर राजविर आ सकता है । फिर जग्गु के सिर पर भी खून सवार है, वो इतनी आसानी से खामोश बैठने वाला नहीं है । इस बार तो उसका वार खाली चला गया, लेकिन बहुत मुमकिन है कि उसका दूसरा वार खाली न जाये ।”

रमेश का पोर-पोर कांप उठा ।

“इसलिए जितना जल्द से जल्द हो ।” डिंपी बोली- “यहाँ से चला जा ।”

“ल...लेकिन मैं इतनी रात को कहाँ जाऊं ?”

“कहीं भी जा ।” डिंपी का स्वर जज्बाती हो उठा- “लेकिन अगर तुझे अपनी जान की थोड़ी-सी भी परवाह है, अपने हाथ-पैरों को हिलते-डुलते देखना चाहता है, तो सोनपुर में एक सेकेंड के लिये भी मत रुक । वरना तू खामख्वाह अपनी इस जिंदगी से हाथ धो बैठेगा ।”

रमेश के शरीर से पसीने की धारायें छूटने लगीं ।

कैसी विचित्र हालत हो गयी थी उसकी ।

सोनपुर के अलावा उसका कहीं कोई और ठिकाना भी तो नहीं था, जहाँ वो जाता ।

“अब खड़े-खड़े सोच क्या रहा है ?”

रमेश मरे-मरे कदमों से दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

“और सुन !”

रमेश के कदम ठिठक गये ।

“उस मूर्ति का क्या हुआ, जिसे तू बेचने गया था ?” डिंपी जल्दी से उसके सामने पहुँचकर बोली ।

‘मूर्ति’ के नाम रमेश की गर्दन लटक गयी ।

“बताता क्यों नहीं, क्या हुआ मूर्ति का ? क्या वो बिक गयी ?”

“न...नहीं ।”

“फिर ?”

रमेश ने फंसे-फंसे स्वर में पूरी घटना डिंपी को बता दी ।

डिंपी हैरानी से उसे देखती रह गयी ।

“कोई बात नहीं ।” फिर डिंपी ने उसकी हिम्मत बंधाई- “मूर्ति गयी, तो गयी । जिंदगी बची रहनी चाहिये । इंसान की जिंदगी सलामत रहे, तो हजार मर्तबा उसके सामने धनवान बनने के मौके आते हैं ।”

रमेश चुप रहा ।

“अब तू जा, जल्दी जा । तेरा यहाँ ज्यादा ठहरना ठीक नहीं है ।”

रमेश पुनः मरे-मरे कदमों से दरवाजे की तरफ बढ़ गया ।

तभी फिर एक और बेहद हृदयविदारक घटना घटी ।

रमेश दरवाजे तक पहुँच पाता, उससे पहले ही इतनी जोर-जोर से दरवाजा भड़भड़ाया गया, मानो कोई उसे तोड़ ही डालेगा ।

“कौन है ?” डिंपी चिल्लायी ।

“दरवाजा खोलो ।” बाहर से इंस्पेक्टर राजविर का कड़कड़ाता स्वर उभरा- “पुलिस ।”

“प...पुलिस !” रूह कांप गयी रमेश और डिंपी की ।

दोनों दहल उठे ।

“ज...जरूर...जरूर जग्गु ने पुलिस को तुम्हारे बारे में इन्फॉर्मेशन दे दी है ।” डिंपी फुसफुसाई ।

“दरवाजा खोलो ।” इस बार इंस्पेक्टर राजविर पहले से भी ज्यादा जोर से हलक फाड़कर चिल्लाया ।

साथ ही उसने अपने कंधे की प्रचण्ड चोट भी दरवाजे पर मारी ।

“र...रमेश !” डिंपी का चेहरा सफेद झक्क पड़ चुका था- “रमेश, तू पिछली खिड़की से कूदकर भाग जा ।”

“ल...लेकिन... ।”

“बहस मत कर । जल्दी भाग, जल्दी ।”

रमेश फौरन खिड़की की तरफ झपट पड़ा । खिड़की सड़क से चार, साढ़े चार फुट ऊपर थी ।

वह एक क्षण के लिये हिचकिचाया ।

“दरवाजा खोलो ।” तभी इंस्पेक्टर राजविर की खौफनाक आवाज पुनः उसके मस्तिष्क पर हथौड़े की तरह पड़ी ।

रमेश तुरन्त खिड़की से नीचे कूद गया ।

कूदते समय उसके कानों में दरवाजा भड़भड़ाये जाने की भी तेज आवाज पड़ी ।

लेकिन अब रमेश को मुड़कर कहाँ देखना था ।

रमेश ने एक बार भागना शुरू किया, तो वह रेस के घोड़े की तरह भागता ही चला गया ।

७

रमेश की जिंदगी में एक ऐसे खतरनाक सिलसिले की शुरुआत हो चुकी थी, जिसका अन्त खुद उसे भी मालूम नहीं था ।

वह उस क्षण को कोसने लगा, जब रातों-रात धनवान बनने की लालसा में नटराज मूर्तियों हड़पने का ख्याल उसके मन में आया था ।

थोड़ी ही देर बाद वो डी.टी. सी. के बस स्टॉप शेल्टर के नीचे खड़ा था ।

भागने के कारण उसकी सांस धोकनी की तरह चल रही थीं ।

चेहरे पर हवाइयां थीं ।

रमेश ने सोचा, वह बच गया ।

लेकिन नहीं, बचा तो वह तब भी नहीं ।

उसकी किस्मत में तो पूरी खानाखराबी लिखी थी ।

वह एक और बड़े 'नरक' में जाकर गिरा ।

रमेश की जेब में उस समय सिर्फ बीस रुपये थे, वह भी उसने दरीबा कलां जाने से पहले डिंपी से उधार लिये थे । जल्द ही बस स्टॉप पर एक बस आकर रुकी, वह उसी में चढ़ गया ।

इतनी रात के समय भी बस में खूब भीड़भाड़ थी ।

अगला सितम रमेश के ऊपर यह टूटकर गिरा कि वह जब टिकट लेने के उद्देश्य से कंडक्टर के पास पहुँचा और उसने अपनी जेब में हाथ डाला, तो फौरन उसके होश उड़ गये ।

जेब साफ थी ।

"हे भगवान !" रमेश के शरीर में थरथरी दौड़ गयी- "किसी को जेब भी मेरी ही काटनी थी ?"

"मैं ही मिला था उसे ?"

लेकिन जिस भगवान के सामने वो दुहाई दे रहा था, उसी भगवान ने उसके सर्वनाश की फुल योजना बना रखी थी ।

और सर्वनाश न सही, परन्तु नाश तो रमेश का तभी हो गया ।

बस जैसे ही अपने अगले स्टॉप पर जाकर रुकी, तभी उसमें आगे-पीछे से दो टिकट-चेकर दनदनाते हुए चढ़ गये ।

परिणाम !

रमेश को टिकट न लेने के अपराध में बाकी की सारी रात हवालात के अन्दर गुजारनी पड़ी ।

वह रात उसके ऊपर बड़ी भारी गुजरी ।

दरअसल रात उसी के साथ-साथ हवालात में एक कत्ल का अपराधी भी बंद हुआ था । वह

बड़ी-बड़ी मूंछों वाला विशालकाय जिस्म का मालिक था । उसे जब यह मालूम हुई कि रमेश टिकट न लेने के अपराध में बंद हुआ है, तो उसने रमेश पर रौब गाँठना शुरू कर दिया, उसे धमकाना शुरू कर दिया ।

जिसका रिजल्ट यह निकला कि थोड़ी ही देर बाद रमेश बड़ी तन्मयता से उसके हाथ-पैर दबा रहा था ।

आधी से ज्यादा रात उसकी हाथ-पैर दबाते हुए गुजरी ।

सुबह दस बजे के करीब वहाँ दो कांस्टेबल आये और उन्हें हवालात में से निकालकर उसी थाने के इंस्पेक्टर के सामने पेश करने के लिये ले गये ।

वहाँ एक और नई आफत रमेश का इंतजार कर रही थी । उसकी दृष्टि इंस्पेक्टर राजविर पर पड़ी ।

इंस्पेक्टर राजविर, स्थानीय थानाध्यक्ष के बिल्कुल पहलू में पड़ी एक कुर्सी पर बैठा था ।

राजविर को देखते ही रमेश के शरीर में यूं भीषण प्रकंपन हुआ, मानो उसने साक्षात् यमरमेश के दर्शन कर लिये हों । निश्चय ही इंस्पेक्टर राजविर ने बड़ी-बड़ी मूंछों वाले उस कत्ल के अपराधी को गिरफ्तार किया था और इसी सिलसिले में वो वहाँ मौजूद था ।

तभी टेलीफोन की घण्टी बजी ।

फोन स्थानीय थानाध्यक्ष ने रिसीव किया ।

कुछ देर वो बड़े ध्यान से कोई आदेश सुनता रहा और हूँ-हाँ करता रहा, फिर उसने रिसीवर वापस क्रेडिल पर रख दिया ।

“किसका फोन था ?” इंस्पेक्टर राजविर ने मनपसन्द ब्राण्ड ‘फोर स्क्वायर’ की सिगरेट सुलगाते हुए पूछा ।

“हेडक्वार्टर से फोन था ।” थानाध्यक्ष ने बताया- “संग्रहालय से सोने की जो छः नटराज मूर्तियां चोरी हुई थीं, आज उन्हीं के सिलसिले में दोपहर दो बजे हेडक्वार्टर के अंदर एक मीटिंग है ।”

नटराज मूर्तियों के नाम से रमेश के कान खड़े हो गये ।

“सुना है ।” इंस्पेक्टर राजविर बोला- “उन मूर्तियों की कीमत अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दो करोड़ रुपये आंकी गयी है ।”

“ऑफकोर्स, यह सच है ।” थानाध्यक्ष थोड़े व्यग्र स्वर में बोला- “और सबसे बड़ी हैरतअंगेज बात यह है कि दिल्ली के विभिन्न संग्रहालयों से ऐसी दुर्लभ (एंटिक) वस्तुओं की लगभग आठ चोरियां हो चुकी हैं, लेकिन चोर आज तक नहीं पकड़ा जा सका ।”

“दिल्ली पुलिस कोशिश तो बहुत कर रही है ।” इंस्पेक्टर राजविर बोला ।

“कोशिश, सिर्फ कोशिश ।” स्थानीय थानाध्यक्ष ने कसैला-सा मुँह बनाया- “हमारी उन कोशिशों का आज तक कोई भी रिजल्ट नहीं निकल सका । क्या कर सके हैं हम आज तक ? सिवाय यह पता लगाने के कि इन दुर्लभ वस्तुओं की चोरी के पीछे जरूर ही कोई बड़ा

अपराधी संगठन सक्रिय है ।”

वह भौंचक्का-सा खड़ा रह गया ।

द...दो करोड़ !

बाप रे !

तो उन मूर्तियों की कीमत दो करोड़ रुपये है ।

उन्हें संग्रहालय से चुराया गया है ?

और...और अब दिल्ली पुलिस में उन्हीं मूर्तियों को लेकर इतनी हायतौबा मची है ।

इतना हड़कम्प मचा है ।

रमेश की हवा खुश्क हो गयी ।

यही वो पल था, जब स्थानीय थानाध्यक्ष की बड़ी कड़कदार आवाज रमेश के कानों में पड़ी- “इसने क्या किया है ?”

फौरन रमेश की विचार-श्रृंखला टूटी ।

“साहब!” वहीं खड़ा एक हवलदार बोला- “यह बस में बिना टिकट यात्रा कर रहा था, रात ही पकड़ा गया है ।”

“क्यों बे ?” थानाध्यक्ष चिंघाड़ा- “बिना टिकट यात्रा क्यों कर रहा था ?”

“प...पैसे नहीं थे साहब ।”

“उल्लू के पट्ठे !” थानाध्यक्ष ज्यालामुखी की तरह फटा- “पैसे नहीं थे, तो बस में ही क्यों चढ़ा था ? पैदल चलते टांगें टूटती हैं साले ?”

रमेश जबड़ा भींचे खड़ा रहा ।

वो जानता था कि वहाँ जेब कटने वाली उसकी बात पर कोई यकीन नहीं करेगा ।

अगर उसने वह बात अपनी जबान से बाहर निकाली, तो उसकी धुनाई के चांस बढ़ जाने थे ।

वह घुटा हुआ मुजरिम साबित हो जाना था ।

“नाम क्या है तेरा ?” थानाध्यक्ष ने उसे कोड़े जैसी फटकार लगायी ।

रमेश ने एक सकपकायी-सी नजर राजविर पर डाली ।

“उधर क्या देख रहा है हरामी !” थानाध्यक्ष पुनः आंखें लाल-पीली करके चिंघाड़ा- “इधर देख, नाम क्या है तेरा ?”

“क...रमेश ।”

“रहता कहाँ है ?”

यहीं, दिल्ली में ।”

“अबे भूतनी के दिल्ली में कहाँ रहता है ?” थानाध्यक्ष गुर्राया- “मोहल्ले का भी कुछ नाम

होगा ?”

अब...अब रमेश की जान हलक में आ फंसी ।

उसे मालूम था कि इधर उसने सोनपुर का नाम अपनी जबान से बाहर निकाला और उधर इंस्पेक्टर राजविर फौरन हरकत में आ जायेगा, एकदम पहचान लेगा उसे और उसके बाद उसकी खैर नहीं थी ।

“अबे तेरी माँ का पैंदा मारूं, जवाब नहीं दिया ।” थानाध्यक्ष ने दांत किटकिटाये- “कहाँ रहता है ?”

रमेश चुप !

“साले- हरामी, बोलता नहीं है । कुत्ता समझता है मुझे ! मुँह में जबान नहीं है तेरे ।” आक्रोश में चिंघाड़ते हुए थानाध्यक्ष कुर्सी से उछलकर खड़ा हुआ तथा फिर बिजली जैसी फुर्ती से अपने डंडे की तरफ झपटा ।

रमेश का पोर-पोर कांप उठा ।

“मैं देखता हूँ सूअर !” थानाध्यक्ष फिर दहाड़ा- “मैं देखता हूँ कि तू कैसे नहीं बोलता । तेरा तो बाप भी बोलेगा । अगर आज मैंने मार-मारकर तेरे जिस्म से चमड़ी अलग न कर दी, तो मैं अपने बाप से पैदा नहीं ।”

गुस्से में गरजते हुए थानाध्यक्ष ने झपटकर अपना डंडा उठाया, फिर वह जैसे ही उसे मारने के लिए दौड़ा ।

“न...नहीं ।” रमेश आतंकित होकर चिल्ला उठा- “नहीं ।”

“क्या नहीं ?”

“म...मारना नहीं, मारना नहीं साहब !” रमेश खौफजदां आलम में बोला- “म...मैं बताता हूँ- सब कुछ बताया हूँ ।”

“जल्दी बता ।”

“क...सोनपुर, म...मैं सोनपुर में रहता हूँ साहब !”

और जिस बात का रमेश को डर था, वही हुआ ।

‘सोनपुर’ का नाम लेते ही धमाका-सा हो गया ।

सोनपुर का नाम सुनकर थानाध्यक्ष तो न चौंका, लेकिन इंस्पेक्टर राजविर जरूर उछल पड़ा ।

उसकी आंखों में एकाएक अचम्भे जैसे भाव उभरे ।

“त...तू सोनपुर में रहता है ?”

रमेश चुप !

“त...तू वही रमेश है न ।” इंस्पेक्टर राजविर झटके से कुर्सी छोड़कर उठा और फिर तेजी से उसकी तरफ बढ़ा- “व...वही रमेश, जो ऑटो चलाता है ?”

रमेश की आंखों में अब खौफ की छाया डोल गयी ।

उसने अपने हाथ-पैर ढीले छोड़ दिये, वह समझ चुका था कि तमाम कोशिशों के बावजूद वह आखिरकार राजविर के शिंकजे में फंस गया है ।

“जवाब दे ।” राजविर ने उसका गिरेहबान पकड़कर बुरी तरह झंझोड़ा- “तू ऑटो ड्राइवर रमेश ही है न ?”

“ह...हाँ ।” रमेश भारी मन से बोला- हाँ, मैं वही हूँ ।”

“और...और वह भी तू ही था ।” राजविर उत्तेजित हो उठा- “जो बुधवार की रात को ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल के बावजूद रीगल सिनेमा के सामने खड़ा था ?”

“व...वो मैं नहीं था ।”

“झूठ बोलता है साले !” राजविर हिंसक लहजे में बोला- “झूठ बोलता है । मैंने पूरे केस की खूब अच्छी तरह इंवेस्टीगेशन की है. मेरे पास ऐसी सरकमस्टेंशनल एविडेन्सिज (मौका-ए-वारदात की गवाहिया) और सबूत हैं, जो साफ-साफ तेरी वहाँ उपस्थिति साबित करते हैं ।”

“आप चाहे कुछ भी कहें साहब !” रमेश दृढ़ लहजे में बोला- “मैं बुधवार की रात रीगल सिनेमा के सामने नहीं था, तो नहीं था । फिर पूरे दिल्ली शहर में ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल चल रही है, मुझे क्या अपनी आफत बुलानी थी साहब, जो मैं यूनियन के नियम तोड़कर ऑटो के साथ रीगल के सामने जाकर खड़ा होता ?”

“यानि तूने नियम नहीं तोड़ा ?” राजविर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा ।

“ब...बिल्कुल भी नहीं साहब ।”

“झूठ बोलता है हरामी !” राजविर ने उसका गिरेहबान और बुरी तरह झंझोड़ा- “झूठ बोलता है ।”

“म...मेरी क्या मजाल साहेब, जो मैं आपसे झूठ बोलूं ? आप जैसे बड़े सरकारी अफसर से झूठ बोलूं ?”

“यानि तू !” इंस्पेक्टर राजविर जहरीले नाग की तरह फुंफकारा- “तू बुधवार की रात वाकई रीगल सिनेमा के सामने नहीं था ?”

“बिल्कुल नहीं ।”

“फिर तू रात डिंपी के घर से भागा क्यों ?” राजविर चीखता चला गया- “अगर तू बेकसूर था साले ।” राजविर ने उसे झंझोड़ा- “तूने कुछ नहीं किया था, तो रात मेरी आवाज सुनकर तेरी हवा खराब क्यों हुई ?”

“क...कौन कहता है ।” रमेश ने पूरे ढीठपने से उत्तर दिया- “कि मैं रात डिंपी के घर से भागा था ?”

“मैं कहता हूँ ।”

“ज...जरूर आपको कोई गलतफहमी हो गयी है साहब, म...मैं तो नहीं भागा ।”

“झूठ बोलता है- फिर झूठ बोलता है ।” आक्रोश में चिंघाडते हुए राजविर ने अपने लोहे जैसे

हाथ का एक ऐसा प्रचण्ड झांपड़ रमेश के मुँह पर मारा कि वह हलक फाड़कर चिल्ला उठा ।

उसकी आंखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे घूम गये ।

“मुझे झूठा साबित करता है, मेरे से जबानदरमेशी करता है ।” राजविर ने धड़ाधड़ दो झांपड़ और उसके मुँह पर जड़े, फिर चीखता हुआ बोला- “रात जग्गु ने एकदम साफतौर पर मुझे रिपोर्ट दी थी कि उसने तुझे अपनी आंखों से डिंपी के घर में घुसते देखा है, उसकी रिपोर्ट मिलते ही मैं फौरन भागा-भागा सोनपुर पहुँचा ।”

“ब...जग्गु ने जरूर आपसे झूठ बोला होगा साहब !” रमेश कंपकंपाये स्वर में बोला- “व...वो समझता है कि मैंने उसके चाचा का खून किया है, इसी वजह से वो मुझसे बदला लेना चाहता है ।”

इंस्पेक्टर राजविर फौरन हवलदार की तरफ घूमा ।

“रात टिकट चेकर इसे किस वक्त यहाँ पकड़कर लाये थे ?”

हवलदार सकपकाया ।

“जवाब दो, क्या बज रहा होगा उस समय ?”

“ए...एकदम कन्फर्म तो मुझे नहीं मालूम साहब !”

“फिर भी अंदाजन ?”

‘य...यही कोई साढ़े बारह और एक के बीच का समय रहा होगा ।”

“सुना-सुना ।” राजविर फिरकनी की तरह वापस रमेश की तरफ घूम गया- “सुना, हवलदार क्या कह रहा है ।”

“क्या कह रहा है ?”

“उल्लू के पट्ठे !” राजविर तिलमिलाया- “यह कहता है कि टिकट चेकर तुझे साढ़े बारह और एक बजे के बीच में यहाँ लेकर आये । यानि उन्होंने साढ़े बारह बजे के करीब तुझे बस के अंदर पकड़ा और बारह बजे के आसपास मैंने जग्गु की इन्फॉर्मेशन पर डिंपी के घर रेड डाली थी । इन सभी घटनाओं की टाइमिंग से यह बात पूरी तरह साबित होती है कि तूने डिंपी के घर से फरार होकर सीधे बस पकड़ी और तभी तू बिना टिकट यात्रा करने के अपराध में गिरफ्तार भी हो गया ।”

“मैं पुलिस से बचकर नहीं भागा ।”

“अगर तू पुलिस से बचकर नहीं भागा ।” इंस्पेक्टर राजविर दांत किटकिटाता हुआ बोला- “तो तूने बस क्यों पकड़ी ? इतनी रात को कहाँ जा रहा था तू ?”

“म...मैंने बस ऐसी ही पकड़ ली ।”

“ऐसे ही !”

“द...दरअसल मेरा थोड़ा सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था ।”

“इतनी रात गये ?” राजविर ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा- “इतनी रात गये तेरा

सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था साले ! जेब में एक पैसा नहीं था और तेरा सैर-सपाटा करने को दिल चाहा था । वाह, क्या कहानी है ।"

रमेश सकपकाकर दायें-बायें बगलें झांकने लगा ।

उसकी खामोशी ने राजविर के गुस्से पर घी डालने जैसा काम किया, राजविर ने आवेश में फुंफकारते हुए रमेश के शरीर पर लात-घूंसे बरसा डाले ।

हाहाकार कर उठा रमेश !

उसके करुणादाई रूदन से कक्ष की दीवारें दहल गयीं ।

परन्तु राजविर ने उस पर तरस नहीं खाया, उसका कलेजा नहीं कांपा ।

तीन-चार मिनट में ही उसने रमेश की वो दुर्गति कर डाली, जो शायद ही उसकी जीवन में पहले कभी हुई हो ।

कपड़े शरीर पर तार-तार होकर झूलने लगे ।

रमेश अब जमीन पर चारों खाने चित्त पड़ा जोर-जोर से हिचकियां लेकर रो रहा था ।

"अभी देखता हूँ साले !" राजविर ने भड़ाक से उसके एक लात जड़ी और फुंफकारा- "अभी देखता हूँ कि तू कैसे कबूल नहीं करता कि उस रात रीगल सिनेमा के सामने तू ही था ।"

फिर राजविर टेलीफोन की तरफ बढ़ गया ।

स्थानीय थानाध्यक्ष जो अभी तक वस्तुस्थिति से अंजान था, उसने जिज्ञासावश पूछा- "आखिर बात क्या है राजविर- इसने क्या किया है ?"

"इसने !" इंस्पेक्टर राजविर ने हिचकियों से रोते रमेश की तरफ भाले की तरह उंगली उठाई- "इसने कांचा पहलवान की हत्या की है ।"

"च...कांचा पहलवान की हत्या !"

वहाँ मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के मुँह से कांचा पहलवान के नाम सिसकारी छूट गयी ।

खासतौर पर बड़ी-बड़ी मूंछों वाला वह हत्यारा तो सन्न ही खड़ा रह गया, जिसने रमेश से सारी रात टांगें दबवाई थीं ।

सब दंग !

जबकि रमेश अभी भी जोर-जोर से हिचकियां लेकर रो रहा था ।

इंस्पेक्टर राजविर ने कहीं फोन किया ।

फोन करने के लगभग पंद्रह मिनट बाद जिस व्यक्ति ने पुलिस स्टेशन में कदम रखा, उसे देखते ही रमेश के होश फना हो गये ।

वह फ्लाइंग स्क्वाड के उस दस्ते का सब-इंस्पेक्टर था, जिसने बुधवार की रात रमेश की ऑटो रिक्शा को आई.टी.ओ. के ओवर ब्रिज से थोड़ा आगे स्पीडिंग के अपराध में रोका था ।

वहाँ मौजूद हवलदार और बड़ी-बडी मूंछों वाला हत्यारा, वह सभी अब रमेश से दहशतजदां

नजर आ रहे थे । जैसाकि होना था, फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर ने आते ही रमेश को पहचान लिया । उसने कहा कि बुधवार की रात उसने जिस ऑटो रिक्शा को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोका, उसका चालक वही था ।

उसने यह भी कहा कि इसके ऑटो रिक्शा में एक बड़े मोटे पेट वाली लड़की थी, जिसके फौरन बच्चा होने वाला था ।

"तुम उस लड़की को पहचान सकते हो ?" राजविर ने सब-इंस्पेक्टर से पूछा ।

सब-इंस्पेक्टर थोड़ा हिचकिचाया ।

"जवाब दो ।"

"स...सॉरी सर !" उस इंस्पेक्टर की आवाज निराशा में डूबी हुई थी- "दरअसल रात गहरी थी, फिर सड़क पर बिल्कुल करीब कोई रोड लैम्प भी न जल रहा था, इसलिए मैं लड़की का चेहरा बिल्कुल साफतौर पर न देख सका । मैंने तो इसकी ऑटो का नम्बर भी इसलिये नोट कर लिया था सर, क्योंकि सभी ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल चल रही थी । अगले दिन मुझे जब यह मालूम हुआ कि कोई कांचा पहलवान को ऑटो में लेकर फरार हुआ है और कांचा पहलवान की लाश इंडिया गेट पर पड़ी पायी गयी है, तो मैंने इसकी ऑटो का नम्बर आपको सौंपना ज्यादा मुनासिब समझा ।"

"ल...लेकिन इससे यह कहाँ साबित होता है ।" पूरी बात सुनकर रमेश के अंदर हौसला जाग गया- "कि कांचा पहलवान को मैं ही रीगल सिनेमा से लेकर भागा था । दिल्ली शहर में हजारों की तादाद में ऑटो रिक्शा हैं साहब, हो सकता है कि जो कांचा पहलवान को रीगल सिनेमा के सामने से लेकर फरार हुआ, वह कोई और ऑटो ड्राइवर हो । इस घटना से मेरा अपराध तो साबित ही नहीं होता ।"

"होता है, होता है तेरा अपराध भी साबित ।" इंस्पेक्टर राजविर गजब के आत्मविश्वास के साथ बोला- "तेरा कांचा पहलवान की हत्या में इसलिये अपराध साबित होता है रमेश, क्योंकि तूने बुधवार की रात इन सब-इंस्पेक्टर साहब को जिस लड़की के बारे में यह बताया था कि यह पेट से है, वह लड़की हकीकत में पेट से थी ही नहीं ।"

रमेश चौंका ।

"य...यह बात आप इतने यकीन के साथ कैसे कह सकते हो ?"

"क्योंकि वह एक बेहद पतली-दुबली लड़की थी ।" राजविर धमाके पर धमाके करता हुआ बोला- "और उस समय वह एक लाश के ऊपर लेटी थी ।"

"ल...लाश के ऊपर !" रमेश के मुँह से चीख निकली ।

"हाँ !" राजविर बड़े सहज भाव से बोला- "लाश के ऊपर ।"

"क...किसकी लाश के ऊपर ?"

"कांचा पहलवान की लाश और किसकी लाश ।"

रमेश के दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी । उसके नेत्र हैरत से फैल गये ।

“य...यह आपको कैसे मालूम कि वो लड़की कांचा पहलवान की लाश के ऊपर लेटी थी ?”

यह शब्द कहते ही रमेश ने अपने होंठ सी लिये ।

उससे गलती हो चुकी थी, भयंकर गलती ।

यह सवाल पूछकर उसने लगभग कबूल ही कर लिया था कि वो अपराधी है ।

जबकि मुस्कराया राजविर !

बड़े ही खतरनाक ढंग से मुस्कराया ।

“मैं तुझे बताता हूँ ।” राजविर बोला- “कि मुझे यह बात कैसे मालूम हुई, वो लड़की एक लाश के ऊपर लेटी है । दरअसल अगर वह लड़की सचमुच पेट से होती और उसकी हालत वाकई उतनी ही सीरियस होती, जितनी तू बयान कर रहा था, तो तूने उस लड़की को फौरन किसी हॉस्पिटल के मैटरनिटी वार्ड में जरूर भर्ती कराया होता । बोल, कराया होता या नहीं ?”

रमेश चुप !

उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगा ।

“यही बात तूने बुधवार की रात इन सब-इंस्पेक्टर साहब के सामने भी कही थी ।” राजविर आगे बोला- “तूने बेहद बौखलाये हुए अंदाज में कहा था कि लड़की की हालत काफी सीरियस है, दाई ने कहा है कि अगर लड़की की जिंदगी चाहते हो, तो इसे फौरन किसी बड़े हॉस्पिटल ले जाओ । लेकिन... ।”

“ल...लेकिन क्या ?”

“तू उस लड़की को किसी हॉस्पिटल में लेकर नहीं गया ।” राजविर ने झटके के साथ कहा ।

“क्या सबूत है आपके पास ?” रमेश बोला- “कि मैं उस लड़की को किसी हॉस्पिटल में लेकर नहीं गया ?”

“सबूत- सबूत मांगता है मुझसे ।” इंस्पेक्टर राजविर गुर्रा उठा, उसकी आंखों में खून उतर आया- “साले- मुझे सब-इंस्पेक्टर से जैसे ही तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर मिला, तो मैंने फौरन तमाम हॉस्पिटलों की चैकिंग की थी, वहाँ के मेटरनिटी वार्डों की भर्ती रजिस्ट्री चेक की थी । और मालूम मेरी उस सारी भागा-दौड़ी का क्या नतीजा निकला ?”

“क...क्या नतीजा निकला ?”

“मुझे मालूम हुआ ।” राजविर दांत पीसता हुआ बोला- “कि बुधवार की रात दिल्ली शहर के किसी भी हॉस्पिटल के किसी भी मेटरनिटी वार्ड में उस समय के आसपास डिलीवरी का कैसा भी कोई केस एडमिट नहीं हुआ था ।”

रमेश सन्न रह गया ।एकदम सन्न ।

वह हैरत से आंखें फाड़-फाड़कर इंस्पेक्टर राजविर को इस तरह देखने लगा, मानों साक्षात् कुतुबमीनार उसके सामने आकर खड़ी हो गयी हो ।

उसने तो कल्पना भी नहीं की थी कि पुलिस इतने मामूली से प्वॉइंट को लेकर इतनी जल्दी उस तक पहुँच जायेगी ।

बहरहाल राजविर ने उसके तमाम सपनों को तोड़ दिया था ।

राजविर ने साबित कर दिया था, कानून के हाथ वाकई बहुत लम्बे होते हैं ।

जिनसे कोई नहीं बच सकता ।

“अगर तू अब भी यही कहता है ।” इंस्पेक्टर राजविर बड़े सब्र के साथ बोला- “कि तेरी ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर कांचा पहलवान की लाश नहीं बल्कि गर्भ धारण किये हुए कोई लड़की ही थी, तो तू कह सकता है । मुझे कोई ऐतराज नहीं । लेकिन फिर तू मुझे उस हॉस्पिटल का नाम बता, जिसमें तूने गर्भधारण किये हुए उस लड़की को एडमिट कराया था ?”

रमेश चुप !

“इसके अलावा मुझे उस लड़की का भी नाम बता ।” राजविर बोला- “जो गर्भ से थी । उस लड़की का पता भी बता, ताकि पुलिस उसके घर जाकर उससे पूछताछ कर सके और अपना यह शक दूर कर सके कि बुधवार की रात तेरी ऑटो रिक्शा में गर्भ धारण किये हुए कोई लड़की थी भी या नहीं थी ।”

रमेश फिर चुप !फिर खामोश !

वह सिर्फ दहशतजदां आंखों से बार-बार सबके चेहरे देख रहा था । वो जानता था, वो एक बड़ी मुश्किल में फंस चुका है ।

“इन सब बातों के अलावा इसलिये भी तेरा अपराध साबित होता है ।” इस बार फ्लाइंग स्क्वाड का सब-इंस्पेक्टर बोला- “क्योंकि बुधवार की रात फ्लाइंग स्क्वाड दस्तों ने पूरी दिल्ली में सिर्फ दो बार ऑटो रिक्शा देखी । पहली बार ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा के पास देखी गयी, जबकि दूसरी बार मैंने मण्डी हाउस के करीब देखी । चूँकि रीगल सिनेमा के पास गश्तीदल के गार्डो ने कांचा पहलवान को अपने पैरों से दौड़कर ऑटो रिक्शा में सवार होते देखा था, तो बात भी खुद-ब-खुद ही साबित हो जाती है कि कांचा पहलवान ऑटो में बैठने के बाद मरा और ऑटो रिक्शा ड्राइवर ने ही उसे इंडिया गेट पर अमर जवान ज्योति के पास फेंका । इसके अलावा एक सबसे महत्वपूर्ण बात ये है ।” सब-इंस्पेक्टर ने अपने शब्दों पर पूरी तरह जोर दिया- “कि इंडिया गेट के आसपास गश्त लगाते फ्लाइंग स्क्वाड के और दस्तों ने भी तेरे अलावा किसी दूसरी ऑटो रिक्शा को उस इलाके में नहीं देखा । अगर वो किसी दूसरी ऑटो रिक्शा को देखते, तो हड़ताल होने की वजह से उनका खास ध्यान जरूर उस तरफ जाता । तुझे यह बात सुनकर हैरानी होगी रमेश, इंडिया गेट के आसपास गश्त लगाते फ्लाइंग स्क्वाड के अभी ऐसे दो दस्ते और हैं, जिन्होंने बुधवार की रात तेरी ऑटो रिक्शा उस इलाके में देखी और हड़ताल होने की वजह से उन्होंने तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर भी नोट किया ।”

रमेश के मस्तिष्क में अनार-पटाखे छूटने लगे ।

उसे अपना दिमाग अंतरिक्ष में चक्कर काटता महसूस हुआ ।

“ल...लेकिन यह जरूरी तो नहीं ।” रमेश लगभग हथियार डालता हुआ बोला- “कि कांचा पहलवान की हत्या भी उसी ऑटो रिक्शा ड्राइवर ने की हो, जो ऑटो रिक्शा में कांचा पहलवान को रीगल के पास से लेकर भागा था ?”

“बिल्कुल जरूरी है ।” राजविर दृढ़ लहजे में बोला- “बिल्कुल उसी ऑटो ड्राइवर ने ही कांचा पहलवान की हत्या की है ।”

“क...क्यों जरूरी है ?”

“क्योंकि कोई और हत्या कर ही नहीं सकता ।” राजविर पहले की तरह ही दृढ़ लहजे में बोला- “कोई और प्राइम सस्पेक्ट है ही नहीं । जब कांचा पहलवान सही-सलामत अपने पैरों पर भागता हआ ऑटो में बैठा, तो उसकी हत्या ऑटो ड्राइवर के अलावा और कौन कर सकता है ? फिर उसी ऑटो ड्राइवर ने ही कांचा पहलवान की लाश को ठिकाने भी लगाया । यानि दोनों जगह एक ही आदमी मौजूद था । कांचा पहलवान की सलामती पर भी और उसके इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद भी । यह सारी हरकत एक ऑटो ड्राइवर की है और वह ऑटो ड्राइवर तू है, सिर्फ तू ।”

“न...नहीं, मैं नहीं हूँ ।”

“तू झूठ बोल रहा है ।” इंस्पेक्टर राजविर ने एकाएक उसे इतनी जोर से घुड़का कि रमेश की सारी सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी ।

“म...मैं निर्दोष हूँ ।” फिर भी रमेश ने आर्तनाद किया- “म...मैं बेकसूर हूँ साहब !”

“तू बेकसूर नहीं, तू निर्दोष भी नहीं ।” राजविर उसे कहर बरपा करती आंखों से घूरता हुआ बोला- “सच्चाई ये है कि तू एक बेहद चालाक अपराधी है, तू आदि मुजरिम है, मुझे तो यही सोचकर हैरानी हो रही है कि तेरे जैसा दुर्दान्त अपराधी आज तक दिल्ली पुलिस की नजरों से बचा कैसे रहा ? तेरा नाम तो अपराधियों की लिस्ट में सबसे ऊपर होना चाहिये था ।”

“अ...आप मेरे बारे में बहुत खतरनाक अंदाजा लगा रहे हैं साहब, म...मैं ऐसा नहीं ।” रमेश थर-थर कांपते स्वर में बोला- “अच्छा, आप मेरे एक सवाल का जवाब दो ।”

“पूछ, वह भी पूछ ।”

“रीगल सिनेमा के पास वह दो गोलियां किसने चलायी थीं, जिनकी आवाज सुनकर आपके मुताबिक गश्तीदल के दोनों पुलिसकर्मी गली में दौड़े थे ?”

“खुद कांचा पहलवान ने वो गोलियां चलायी थीं ।” राजविर ने एकदम से जवाब दिया ।

“च...कांचा पहलवान ने ?” रमेश के दिमाग में एक और बम फटा- “प...पुलिसकर्मियों ने क्या कांचा पहलवान को गोलियां चलाते देखा था ?”

“नहीं देखा ।”

“फ...फिर आप कैसे कह सकते हैं कि वह गोलियां कांचा पहलवान ने चलायी थीं ? यह भी तो हो सकता है साहब, वह गोलियां कांचा पहलवान के ऊपर किसी ने चलायी हों ?”

“नहीं, ऐसा नहीं हो सकता ।” राजविर ने पूरे यकीन के साथ इंकार में गर्दन हिलाई ।

“क्यों नहीं हो सकता ?” रमेश की आंखों में हैरानी के भाव तैरे- “क्या मुश्किल है ?”

“क्योंकि अगर किसी ने वह गोलियां कांचा पहलवान पर चलाई होतीं, तो कांचा पहलवान के जिस्म पर खून के धब्बे तो होते ? कुछ निशान तो होते, जिनसे साबित होता कि उसे गोलियां

लगी हैं ? जबकि रीगल सिनेमा के सामने गश्तीदल के जिन पुलिसकर्मियों ने पहलवान के शरीर पर खून का कैसा भी कोई धब्बा नहीं देखा था ।"

रमेश सन्न-सा खड़ा रह गया ।

उसे फौरन याद आया कि कांचा पहलवान जब उसकी ऑटो में आकर बैठा था, तो खून के धब्बे उसे भी नहीं दिखाई दिये थे, क्योंकि कांचा पहलवान ने ऊपर से नीले रंग की बरसाती जो पहन रखी थी ।

"ज...जरूर कांचा पहलवान ने वो बरसाती गोलियां लगने के बाद भागते-भागते पहनी होगी ।

रमेश को अपने हाथ-पैरों की जान निकलती महसूस हुई ।

उसे लगा, जैसे वह किसी भयानक षडयंत्र का शिकार होता जा रहा है ।

"ल...लेकिन कांचा पहलवान ने रीगल सिनेमा के पास वह दो गोलियां क्यों चलायी थीं ?"

"जरूर उसने किसी से काले रंग का वह ब्रीफकेस छीनने के लिये उस पर गोलियां चलायी होंगी, जिसे लेकर वह भागते देखा गया ।" राजविर ने कल्पना की एक नई उड़ान बड़े खूबसूरत ढंग से पेश की ।

"क्या किसी ने छीना-झपटी की ऐसी कोई रिपोर्ट पुलिस स्टेशन में दर्ज करायी ?"

"नहीं ।"

"अगर किसी के साथ ऐसा हादसा हुआ था ।" रमेश बोला- "तो उसने रिपोर्ट दर्ज क्यों नहीं करायी ?"

"मूर्ख आदमी, तुम क्या समझते हो कि गैंगस्टर या मवाली किस्म के लोग ऐसी वारदातों की रिपोर्ट पुलिस स्टेशन में दर्ज कराते हैं ?"

"य....यानि आपका मतलब !" रमेश चौंककर बोला- "जिससे कांचा पहलवान की झड़प हुई, वह भी कांचा पहलवान की तरह ही कोई बड़ा बदमाश था ? हिस्ट्रीशीटर मवाली था ?"

"एग्जेक्टली ! वह भी कोई मवाली ही था ।" राजविर बोला- "और उस ब्रीफकेस को हथियाने के लिए तुम कांचा पहलवान के मददगार के तौर पर उसके साथ थे । कांचा पहलवान को ब्रीफकेस छीनना था और तुम्हें कांचा पहलवान को ऑटो में बिठाकर घटनास्थल से फरार होना था । परन्तु तुमने ऐन मौके पर कांचा पहलवान के साथ विश्वासघात कर दिया ।"

"व...विश्वासघात !!! वह क्यों ?"

"दरअसल कांचा पहलवान जो ब्रीफकेस किसी से हथियाकर भागा था, उसमें जरूर कोई बहुत मूल्यवान वस्तु थी ।" इंस्पेक्टर राजविर बोला- "कोई बड़ा माल-मत्ता था । उस मूल्यवान वस्तु को देखकर तुम्हारी नीयत खराब हो गयी और इसीलिये तुमने उस ब्रीफकेस को हड़पने की खातिर सबसे पहले कांचा पहलवान की चुपचाप हत्या कर दी और फिर उसकी लाश भी इंडिया गेट की सुनसान झाड़ियों में डाल दी । यही वजह है कि वो ब्रीफकेस झाड़ियों में कांचा पहलवान की लाश के नजदीक न पाया गया और उस ब्रीफकेस का वहाँ न पाया जाना ही इस बात की शहादत देता है कि उसके अंदर जरूर कोई खास वस्तु थी ।"

रमेश के दिमाग में और तेज धमाके होने लगे ।

जबकि उसके बाद इंस्पेक्टर राजविर ने रमेश पर सीधे-सीधे कांचा पहलवान की हत्या का इल्जाम लगाते हुए जो मनगढ़ंत कहानी सुनायी, उसने रमेश के रहे-सहे होश भी फना कर दिये ।

इंस्पेक्टर राजविर एक-एक शब्द चबाते हुए बोला- "रमेश- तू बुधवार की रात को रीगल सिनेमा के सामने उपस्थित ही इसलिये हुआ था, ताकि तू कांचा पहलवान को घटनास्थल से भगाकर ले जा सके । तू कांचा पहलवान का पक्का हिमायती था, उसका दोस्त था । इतना ही नहीं, तुम दोनों के बीच पहले से ही सांठ-गांठ थी, तुम दोनों को यह बात एडवांस में ही मालूम थी कि रात के ग्यारह और बारह बजे के बीच में कोई अपराधी मोटा माल लेकर रीगल सिनेमा के पास से गुजरेगा, इसीलिये तुम दोनों वहाँ शिकारी कुत्ते की तरह घात लगाये बैठे थे । तुम दोनों की योजना उस अपराधी को लूटने की थी और जैसाकि हालातों से जाहिर है, तुम अपनी योजना में कामयाब हुए । यह बात अलग है कि ब्रीफकेस में मोटा माल देखकर तुम्हारी भी नीयत खराब हो गयी और तुमने उस मोटे माल को अकेले ही हड़पने की खातिर अपने दोस्त कांचा पहलवान को भी ठिकाने लगा दिया ।"

"मैंने ऐसा कुछ नहीं किया ।" रमेश चिल्लाया- "और न ही मैं रीगल सिनेमा के सामने इसलिये मौजूद था, ताकि मैं पहलवान की मदद कर सकूँ ।"

"यानि तेरा कांचा पहलवान के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था ?"

"बिल्कुल भी कोई सम्बन्ध नहीं था ।" रमेश गुर्राकर बोला- "मैं सोनपुर में जरूर रहता हूँ, लेकिन मैंने पहले कभी कांचा पहलवान की शक्ल तक नहीं देखी थी ।"

"ठीक है, मैं मानता हूँ तेरी बात कि तूने पहले कभी कांचा पहलवान की शक्ल तक नहीं देखी थी ।" इंस्पेक्टर राजविर आवेश में नहले पर दहला मारता हुआ बोला- "तो फिर यह बता मेरे भाई, तू आधी रात के समय रीगल सिनेमा के सामने खड़ा क्या कर रहा था ? जब ऑटो ड्राइवरों की हड़ताल चल रही थी, तब तू इतनी रात को वहाँ क्या करने गया था ? कोई तो काम होगा तुझे वहाँ ?

रमेश फिर चुप !

फिर खामोश !

वो जानता था, उसकी उधार चुकाने वाली बात पर 'राजविर' जैसा धुरंधर इंस्पेक्टर किसी हालत में यकीन नहीं करेगा ।

"और तूने अपनी ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा के सामने अंधेरे में क्यों खड़ी कर रखी थी ?" राजविर कर्कश लहजे में बोला- "उसके पीछे भी तो कोई वजह होगी ? क्या उसकी इकलौती वजह यह नहीं थी कि तू कांचा पहलवान के वहाँ पहुँचने से पहले गश्तीदल की आंखों से छिपना चाहता था ? क्या इसीलिये तूने अपनी ऑटो की पिछली नम्बर प्लेट पर मिट्टी भी नहीं पोत रखी थी ? ताकि भागते समय गश्तीदल के पुलिसकर्मी तेरी ऑटो रिक्शा का नम्बर भी नोट न कर सकें ? क्या यह सारी बातें झूठी हैं ?" राजविर आंदोलित लहजे में बोला- "क्या इतनी ढेर सारी बातें झूठी हो सकती हैं रमेश ? और अगर यह सारी बातें झूठी हैं, तो फिर यह बता कि तेरी ऑटो रिक्शा की नम्बर प्लेट पर मिट्टी किसने पोती ?"

रमेश के दिमाग में आंधी चलने लगी ।

सांय-सांय आंधी ! उफ ! कितनी बुरी तरह फंस चुका था वह ।

अब रमेश इंस्पेक्टर राजविर को कैसे समझाता कि ऑटो रिक्शा की नम्बर प्लेट पर मिट्टी उसने खुद नहीं पोती थी, वह तो इत्तेफाक से ऑटो का पिछला पहिया गारा भरे गड्ढे में जा गिरा और जरूर इसीलिये खुद-ब-खुद नम्बर प्लेट पर मिट्टी पुत गयी ।

फिर रीगल सिनेमा के सामने उसने अपनी ऑटो अंधेरे में भी इसलिये खड़ी कर रखी थी, ताकि यूनियन की हड़ताल चलने की वजह से गश्तीदल के पुलिसकर्मी उसे वहाँ से भगा न दें ।

फिर यह बात भी रमेश से बेहतर और किसको मालूम हो सकती थी कि जिन दो गोलियों की आवाज सुनकर गश्तीदल के पुलिसकर्मी गली में दौड़े थे, वह गोलियां कांचा पहलवान ने नहीं चलायी थीं बल्कि वह गोलियां तो किसी ने कांचा पहलवान पर चलायी थीं, जो बाद में उसकी मौत का कारण बनीं । अब यह तो भगवान जाने कि कांचा पहलवान ने गोलियां लगने के बावजूद भागते-भागते इतनी जल्दी प्लास्टिक की बरसाती कैसे पहन ली ?

रमेश को लग रहा था, अगर उसने इंस्पेक्टर राजविर को सारी हकीकत बता भी दी, तब भी वह उसकी बात पर यकीन नहीं करेगा ।

तब भी वो यही समझेगा कि वह कोई नया 'षडयंत्र' रच रहा है ।

फिर रमेश के पास अपनी बात को साबित करने के लिये सबूत भी तो नहीं थे, जबकि राजविर के पास ऐसे ढेरों तर्क और सबूत थे, जिसके बलबूते पर वह अपनी मनगढ़ंत कहानी को भी अदालत में सच साबित कर सकता था ।

रमेश अपनी बेबसी पर झल्ला उठा ।

कल रात तक जो बातें उसे अपनी ताकत नजर आ रही थीं, वही अब उसकी कमजोरी बन चुकी थीं ।

पूरा खेल, पूरी कहानी पलट चुकी थी ।

"इस पूरे ड्रामे में तुझसे एक गलती हुई रमेश- और बड़ी भारी गलती हुई ।" इंस्पेक्टर राजविर ने अपनी मनगढ़ंत कहानी का उसे आखिरी हिस्सा सुनाया- "दरअसल जब तू कांचा पहलवान की लाश को किसी लड़की के सहयोग से ठिकाने लगाने जा रहा था, तभी फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते द्वारा रोक लिये जाने पर तूने लड़की के बच्चा होने वाला जो ड्रामा रचा, वही ड्रामा वास्तव में तेरी बर्बादी का कारण बना । उसी ड्रामे की वजह से तू इस वक्त गिरफ्तार है । तुझे अब खुद भी लग रहा होगा कि वह नाटक सचमुच तुझे बहुत महंगा पड़ा । न डिलीवरी होने वाली बात बोलता, न मैं मेटरनिटी वार्डों की भर्ती रजिस्ट्री चेक करता और न तू इस वक्त अपराधी बना हम सबके सामने खड़ा होता ।"

रमेश की इच्छा हुई, वो दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे ।

कितनी खतरनाक आफत उसके गले पड़ चुकी थी ।

"अब अगर तू अपनी खैरियत चाहता है ।" इंस्पेक्टर राजविर ने उसे साफ-साफ धमकी दी-

“अगर तू चाहता है कि तेरे ऊपर थर्ड डिग्री का इस्तेमाल न हो, तेरी धुनाई न हो, तो तू मुझे साफ-साफ यह बता कि काले रंग के उस ब्रीफकेस के अंदर क्या था, जिसे कांचा पहलवान रीगल सिनेमा के सामने से लेकर भागा ? वह लड़की कौन थी, जिसने कांचा पहलवान की लाश ठिकाने लगाने में तुझे सहयोग दिया ? और वह आदमी कौन था, जिससे कांचा पहलवान ने काले रंग का वो ब्रीफकेस छीना ?”

“मैं कुछ नहीं जानता ।” रमेश पागलों की तरह चिल्ला उठा- “मुझे कुछ नहीं मालूम ।”

“तुझे सचमुच कुछ नहीं मालूम ?” राजविर ने उसे एकाएक भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा ।

“न... नहीं, मुझे कुछ नहीं मालूम ।”

इंस्पेक्टर राजविर ने फौरन लपककर अपनी फौलाद जैसी मुट्ठी में उसके सिर के बाल कसकर जकड़ लिये, फिर उन्हें इतना तेज झटका दिया कि रमेश भैंसे की तरह डकरा उठा, उसका मुँह झटके से छत की तरफ उठ गया ।

“एक बार !” राजविर अब साक्षात दरिन्दा नजर आने लगा था- “एक बार फिर बोल कि तुझे कुछ नहीं मालूम ।”

“म...मेरी बात पर यकीन करो ।” रमेश दयनीय अवस्था में गिड़गिड़ा उठा- “म...मैं सचमुच कुछ नहीं जानता, कुछ नहीं ।”

राजविर का गुस्सा सातवें आसमान पर जा पहुँचा ।

उसने गुस्से में चिंघाड़ते हुए रमेश पर लात-घूंसों की बारिश कर डाली ।

वह उसे रूई की तरह धुनने लगा ।

रमेश की चीखों से पूरा पुलिस स्टेशन थर्रा उठा, उसकी हृदयविदारक और करुणादायी चीखों ने वहाँ मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के दिल-दिमाग को झंझोड़ डाला ।

परन्तु राजविर रुका नहीं ! वह बेहद जुनूनी अंदाज में उसकी धुनाई करता रहा ।

वह सचमुच दरिन्दा बन चुका था ।

खूनी दरिन्दा ! तभी पुलिस स्टेशन में जग्गु के कदम पड़े ।

जग्गु के आते ही घटनाक्रम ने फिर एक बड़ा अजीबोगरीब मोड़ लिया ।

जग्गु एकदम काला भुर्राट व्यक्ति था, उसके जिस्म की त्वचा ऐसी थी, मानो किसी ने उसके स्याही मल दी हो । उसकी आंखें लाल सुर्ख थीं, जो उसके काले भुर्राट चेहरे पर यूं चमकती थीं, मानों दो जलते अंगारे ! अगर रात के अंधेरे में कोई बच्चा जग्गु को देख ले, तो इसमें कोई शक नहीं कि वो उसे भूत समझकर चिल्ला उठे ।

शक्ल-सूरत में इतना खतरनाक था जग्गु !

उसे न जाने कैसे यह मालूम हो गया था कि रमेश को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है, थाने में आते ही उसने एक बड़ी सनसनीखेज घोषणा की ।

“इंस्पेक्टर साहब !” जग्गु आते ही इंस्पेक्टर राजविर से बोला- “मैं उस लड़की का नाम बता

सकता हूँ, जिसने बुधवार की रात मेरे चाचा की लाश ठिकाने लगाने में रमेश की मदद की थी ।"

जग्गु के उन शब्दों का इंस्पेक्टर राजविर पर तुरन्त असर हुआ- रमेश की धुनाई करते उसके हाथ ठिठक गये ।

उसने घूमकर जग्गु की तरफ देखा ।

पीड़ा से बुरी तरह कराहते रमेश के ऊपर भी जग्गु के वह शब्द गाज की तरह गिरे ।

"कौन है वो लड़की ?" राजविर ने फौरन पूछा ।

"उसका नाम डिंपी है ।"

"म...डिंपी !"

"हाँ, इंस्पेक्टर साहब ! वह डिंपी है ।"

"यह झूठ बोल रहा है ।" रमेश एकाएक हलक फाड़कर चिल्ला उठा- "डिंपी उस रात मेरे साथ नहीं थी, डिंपी का इस पूरे हादसे से कोई वास्ता नहीं है ।"

"झूठ मैं नहीं तू बोल रहा है ।" जग्गु ने आक्रोश में दांत किटकिटाये- "बुधवार की रात डिंपी ही तेरे साथ थी, तुम दोनों ने ही मिलकर पूरी घटना का जाल बुना ।"

"यह झूठ है ।" रमेश चिंघाड़ा- "गलत है ।"

दोबारा रमेश की तरफ बढ़ा राजविर !

फिर उसने रमेश की शर्ट का कॉलर कसकर अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया और बड़ी खूंखार नजरों से उसकी तरफ देखा ।

काँप गया रमेश!

"यानि बुधवार की रात वाकई तेरे साथ डिंपी नहीं थी ?"

"न...नहीं ।" रमेश का कंपकंपाया स्वर- "म...डिंपी का इस घटना से कोई वास्ता नहीं ।"

"अगर वो डिंपी नहीं थी, तो फिर कौन थी ?" राजविर गुर्राया- "मुझे उस दूसरी लड़की का नाम बता ?"

रमेश चुप !

"मैं तेरे से कुछ पूछ रहा हूँ रमेश !" राजविर ने शर्ट का कॉलर पकड़े-पकड़े उसे बुरी तरह झंझोड़ा- "मेरे सवाल का जवाब दे हरामजादे ! वरना तेरी अभी तो कम धुनाई हुई है, इस बार तेरे जिस्म से हड्डियां तक गायब हो जानी है । बोल, क्या नाम है उस लड़की का ?"

"म...मैं उस लड़की का नाम नहीं बता सकता ।" रमेश ने हिम्मत करके कहा ।

"क्यों नहीं बता सकता ?" जग्गु चीखा- "इसलिये नहीं बता सकता, क्योंकि वह लड़की डिंपी के अलावा कोई थी ही नहीं । इंस्पेक्टर साहब !" जग्गु उत्तेजना में भरा हुआ राजविर की तरफ घूमा- "सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि सोनपुर के हर आदमी को मालूम है कि डिंपी, रमेश के वास्ते कुछ भी कर सकती है । इतनी बड़ी दुनिया में एक वही लड़की ऐसी है, जो इसके लिये अपने

आपको बड़े-से-बड़े खतरे में डाल देगी ।”

“यह सब झूठ है ।”

“चुप कर ।” राजविर ने फौरन उसे घुड़क दिया- “चुप !”

रमेश ने सहमकर होंठ बंद कर लिये ।

“यह डिंपी तो वही लड़की है न !” राजविर, जग्गु से सम्बोधित हुआ- “जिसके घर से यह कल रात फरार हुआ था ?”

“हाँ, इंस्पेक्टर साहब ! वही लड़की डिंपी है ।”

इंस्पेक्टर राजविर ने फौरन स्थानीय थानाध्यक्ष के माध्यम से एक कांस्टेबल को तलब किया ।

कांस्टेबल का नाम रामसिंग था ।

“बोलिये सर, क्या काम है ?” रामसिंग ने आते ही राजविर को जोरदार सैल्यूट मारकर पूछा ।

“रामसिंग , तुम फ़ौरन एक काम करो ।” राजविर ने आदेश दनदनाया- “सोनपुर चले जाओ और वहाँ जाकर डिंपी को अपने साथ ले आओ । उससे बोलना, इंस्पेक्टर साहब ने बुलाया है ।”

“ओ.के. सर !” रामसिंग ने तत्परता के साथ कहा- “मैं अभी डिंपी को लेकर आता हूँ ।”

“लेकिन आप डिंपी को यहाँ क्यों बुला रहे हैं साहब !” रमेश एकाएक हलक फाड़कर चिल्ला उठा- “वह बुधवार की रात सचमुच मेरे साथ नहीं थी, वह बेकसूर है ।”

“बोलता है, बोलता है स्साले !!!!” राजविर ने उसे नीचे गिरा दिया तथा फिर अपने फौलादी जूते की उसके मुँह पर धड़ाधड़ कई सारी प्रचण्ड चोटें जड़ी- “जबान चलाता है हरामी !”

रमेश हाहाकर कर उठा ।

उसकी हृदयविदारक चीखों से एक बार फिर पूरा पुलिस स्टेशन दहल गया ।

आधा घण्टे बाद ही रामसिंग , डिंपी को लेकर वहाँ आ गया ।

पुलिस स्टेशन में दाखिल होते ही डिंपी की नजर रमेश की नाजुक हालत पर पड़ी ।

उसके तार-तार हुए कपड़े, गालों पर सुख चुके आंसू, बिखरे हुए बाल और चेहरे से टपकती मनहूसियत ।

वह सब बातें रमेश के साथ हुए जुल्म की चीख-चीखकर गवाही दे रही थीं ।

डिंपी का दिल रो पड़ा ।

खुद रमेश भी तड़पकर रह गया था ।

उसे ऐसा लगा, मानो डिंपी की आंसुओं से छलछलाई आंखें उससे कह रही हैं- “मैं तेरे से पहले ही कहती थी न रमेश, इस चक्कर में मत पड़, मत पड़ । फंस जायेगा । लेकिन नहीं, तब तो दौलत ने तेरी आंखों पर लालच की पट्टी बांध दी थी, तब तो तुझे अपनी किस्मत के

बंद कपाट खुलते नजर आ रहे थे, तब तो तुझे ऐसा लग रहा था- मानो साक्षात् लक्ष्मी तेरे दरवाजे पर खड़ी दस्तक दे रही है ।"

रमेश सिसककर रह गया ।

उसके दिल ने चाहा, वह डिंपी से चीख-चीखकर माफी मांगे ।

वह वाकई गलती पर था ।

उससे सचमुच भयंकर भूल हुई थी ।

लेकिन वो कैसे कहता ?

उसकी जबान को तो उस पल लकवा मार गया था ।

"तुम्हारा ही नाम डिंपी है ?" तभी इंस्पेक्टर राजविर, डिंपी से सम्बोधित हुआ ।

"जी...जी हाँ ।"

"तुम्हें यह तो मालूम ही होगा ।" राजविर शालीन शब्दों का प्रयोग करता हुआ बोला- "कि हमने रमेश को यहाँ किस अपराध में पकड़कर रखा है ? इसलिये उन सब बातों को दोहराने से कोई फायदा नहीं । दरअसल तुम्हें यहाँ इसलिये बुलाया गया है, क्योंकि इन सब-इंस्पेक्टर महोदय ने !" राजविर ने फ्लाइंग स्क्वाड के सब-इंस्पेक्टर की तरफ इशारा किया- "बुधवार की रात रमेश की ऑटो रिक्शा को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोका था । इन सब-इंस्पेक्टर महोदय का कहना है कि उस वक्त रमेश की ऑटो रिक्शा में एक लड़की भी थी, जिसे यह पेट से बता रहा था । तुम्हें सिर्फ एक सवाल का जवाब देना है और सच-सच देना है, क्या वो लड़की तुम थीं ?"

डिंपी ने सकपकायी-सी नजरों से रमेश की तरफ देखा ।

"तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा ।" राजविर बोला- "जो बात है, बेहिचक बताओ । हम तुम्हें सरकारी गवाह बना लेंगे ।"

रमेश ने आहिस्ता से डिंपी की तरफ इंकार में गर्दन हिलाई ।

"साले !" जग्गु चिल्ला उठा- "लड़की को बहकाता है, उसे झूठ बोलने के लिए कहता है । तेरी तो... ।"

"गाली नहीं ।" राजविर ने उसे बीच में ही घुड़क दिया- "गाली नहीं जग्गु- किसी भी लड़की के सामने गाली नहीं चलेगी ।"

"मगर यह लड़की को बहका रहा है साहब !" जग्गु धधकते स्वर में बोला- "आंखों-ही-आंखों में उसे मना करने के लिये बोल रहा है ।"

"मुझे सब मालूम है, सब दिख रहा है मुझे ।" राजविर, रमेश को आग्नेय नेत्रों से घूरता हुआ फुंफकारा- "इसका मैं बाद में इंतजाम करूंगा, पहले लड़की से सवाल-जवाब कर लूं ।"

जग्गु तिलमिलाकर रह गया ।

"देखो डिंपी !" राजविर, डिंपी के साथ पुनः बड़ी शालीनता से पेश आया- "मुझे सच-सच बताओ, बुधवार की रात तुम रमेश के साथ थीं या नहीं ? कुछ भी बोलने से पहले एक बात

का खास ख्याल रखना, पुलिस से कोई भी बात छिपाना संगीन जुर्म होता है- जिसे कानून की जबान में 'कंसीलमेंट ऑफ फैक्ट्स' कहा जाता है, इस जुर्म को करने पर सख्त-से-सख्त सजा हो सकती है । इसलिये जो भी बात कहना, सोच-समझकर कहना । अब बताओ, तुम इसके साथ थीं या नहीं ?"

"मैं नहीं थी ।" डिंपी बेहिचक बोली ।

"सच कह रही हो ?"

"मैं बिल्कुल सच कह रही हूँ ।" डिंपी की आवाज दृढ़ हो उठी ।

"एक बार फिर सोच लो । मैं तुम्हें फिर वार्निंग देता हूँ कि अगर तुम्हारा झूठ पकड़ा गया, तो कानून को गुमराह करने के ऐवज में तुम्हें बड़ी सख्त सजा दी जा सकती है ।"

"मुझे जो कहना था, मैंने कह दिया ।" डिंपी थोड़ा झल्लाकर बोली- "मैं अगर बुधवार की रात रमेश के साथ नहीं थी, तो नहीं थी । दुनिया की कोई ताकत मुझसे जबरदस्ती कुछ भी नहीं कबूलवा सकती ।"

इंस्पेक्टर राजविर हैरानी से डिंपी को देखता रह गया ।

फिर डिंपी चली गयी ।

परन्तु वह रात रमेश के लिये कहर की रात साबित हुई ।

दिन भर तो राजविर ने उससे कुछ भी न कहा, लेकिन रात होते ही वह उसके ऊपर वज्र की तरह टूट पड़ा ।

सारे दिन का भूखा-प्यासा था रमेश !

फिर ऊपर से वो भयानक प्रताड़ना ।

उसे टॉर्चर-रूम में उल्टा लटका दिया गया ।

लात-घूंसों से बेपनाह मारा ।

भारी-भरकम लोहे के रूलों से उसकी पिण्डलियों को रौंदा ।

रमेश चीखता रहा, चीखता रहा ।

लेकिन इंस्पेक्टर राजविर उस रात अपनी मर्जी के मुताबिक उससे एक भी शब्द न कबूलवा सका, उस रात रमेश ने पहली बार अपनी दृढ़ता का परिचय दिया, इस बात का परिचय दिया कि एक आम आदमी भी फौलाद हो सकता है ।

उसकी हृदयविदारक चीखें पुलिस स्टेशन की दीवारों को दहलाती रहीं ।

वह हिचकियां ले-लेकर रोता रहा ।

न जाने कब तक इंस्पेक्टर राजविर का कोप उस पर बरसा ।

कब तक कहर टूटा ।

यह खुद रमेश को भी मालूम न था ।

लेकिन हाँ, उसे सिर्फ इतना मालूम था कि जब इंस्पेक्टर राजविर उसे मारते-मारते बुरी तरह थक गया, तो उसने आवेश में उसे दोनों बाजुओं में भरकर सिर से ऊपर उठा लिया तथा फिर उसे धड़ाम से नीचे पटक डाला ।

रमेश के कण्ठ से एक अत्यन्त कष्टदायक चीख निकली ।

फिर उसकी चेतना लुप्त होती चली गयी ।

८

अगला दिन बड़ा महत्वपूर्ण था- इंस्पेक्टर राजविर ने एफ.आई.आर. (प्राथमिक सूचना रिपोर्ट) के आधार पर रमेश को लोअर कोर्ट में पेश कर दिया ।

कोर्ट की दर्शक दीर्घा उस दिन दर्शकों से खचाखच भरी थी ।

रमेश विटनेस बॉक्स में खड़ा था ।

इंस्पेक्टर राजविर ने रात भर उसकी ऐसी जमकर धुनाई की थी कि इस समय तो शक्ल-सूरत से ही कोई चोर-उचक्का मालूम दे रहा था । आंखों के पपोटे सूज-सूजकर मोटे हो गये थे, पूरे शरीर पर दर्जनों जगह खरोंच के निशान थे, शेव बढ़ी हुई, भूख और बेतहाशा कमजोरी के कारण आंखों के गिर्द काले गुंजान दायरे थिरकते हुए ।

टांगों में इतनी अधिक पीड़ा और कम्पन था कि खुद को विटनेस बॉक्स में खड़ा रखने की कोशिश में ही उसके मुँह से बार-बार कराह निकल रही थी ।

तभी एक बेहद रौबीली पर्सनेलिटी वाला जज अपने चैम्बर से निकलकर कुर्सी पर आकर बैठ गया, उसकी आयु चालीस-पैंतालीस के बीच थी ।

कुर्सी पर बैठते ही उसने एक भरपूर दृष्टि रमेश पर डाली, पहली नजर में ही उसे रमेश की तेज पीड़ा का अहसास हो गया ।

“मिस्टर रमेश !” शायद इसीलिये जज उससे थोड़ा सहानुभूतिपूर्वक पेश आया- “क्या तुमने कोर्ट में अपना डिफेंस (बचाव पक्ष) प्रस्तुत करने के लिये कोई वकील किया है ?”

“न...नहीं साहेब !” रमेश ने आहिस्ता से इंकार में गर्दन हिला दी ।

“अगर तुम अपना डिफेंस प्रस्तुत करने के लिये कोई वकील चाहते हो ।” जज ने अपना ऐनक दुरुस्त किया- “तो सरकारी खर्चे पर तुम्हारे लिये डिफेंस काउंसल की व्यवस्था हो सकती है ।”

“न...नहीं ।” रमेश का कंपकंपाया स्वर- “म...मुझे ऐसी मेहरबानी की कोई जरूरत नहीं ।”

“ओ.के.- जैसी तुम्हारी इच्छा ।” जज ने अपने कंधे उचकाये, फिर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर (सरकारी वकील) से सम्बोधित होकर बोला- “अटैन्ड टू स्टार्ट योअर वर्क मिस्टर प्रॉसीक्यूटर ।”

“थैंक्यू योअर ऑनर !” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने जज के सामने सम्मानपूर्वक गर्दन झुकाई तथा फिर कोर्ट को बुधवार की रात से शुरू होने वाले उस बेहद सनसनीखेज घटनाक्रम के बारे में बताना शुरू किया ।

जिसमें हर पल नये-नये मोड़ आये थे, बेहद सनसनीखेज और चौंका देने वाले मोड़ ।

पूरे कोर्ट रूम में सन्नाटा छा गया ।

सब स्तब्ध-सी मुद्रा में बैठे शुरू से अंत तक घटे उस घटनाक्रम को सुनने लगे ।

पूरा घटनाक्रम इतना दिलचस्प और रोमांचकारी था कि लोग पलकें तक झपकाना भूल गये ।

दर्शक दीर्घा की प्रथम पंक्ति में इंस्पेक्टर राजविर और जग्गु भी मौजूद थे, लेकिन डिंपी कहीं नजर न आ रही थी ।

पूरा घटनाक्रम सुनाने के बाद पब्लिक प्रॉसीक्यूटर खामोश हो गया ।

परन्तु कोर्ट-रूम में अभी भी सन्नाटा था । सब मन्त्रमुग्ध से बैठे थे ।

"मिस्टर रमेश !" पूरा घटनाक्रम और उस पर लगाये गये सभी आरोप सुनने के पश्चात् जज ने रमेश की तरफ देखा- "क्या तुम अपना अपराध कबूल करते हो कि कांचा पहलवान की हत्या तुम्हीं ने की ?"

"नहीं ।" दर्द से बुरी तरह कराहते होने के बावजूद रमेश ने जज के सवाल का जोरदार शब्दों में खण्डन किया- "कांचा पहलवान की हत्या मैंने नहीं की । मैं बेगुनाह हूँ । निर्दोष हूँ ।"

"अगर तुम निर्दोष हो ।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपने चिर-परिचित अंदाज में गला फाड़कर चिल्लाया- "अगर तुमने सचमुच कांचा पहलवान की हत्या नहीं की, तो तुम हादसे वाली रात यानि बुधवार की रात इंडिया गेट के इलाके में क्या कर रहे थे ? जहाँ फ्लाइंग स्क्वाड की तीन गश्तीदल गाड़ियों ने हड़ताल होने की वजह से तुम्हारी ऑटो का नम्बर नोट किया ? इसके अलावा एक सब-इंस्पेक्टर ने उस रात स्पीडिंग के अपराध में तुम्हारी ऑटो रिक्शा को रोका भी मिस्टर रमेश ! यह बात अलग है कि तुम उसे एक लड़की के पेट से होने का खूबसूरत धोखा देकर वहाँ से भाग निकलने में कामयाब हो गये । और क्या यह सच नहीं है कि जिस रहस्यमयी लड़की को तुम पेट से बता रहे थे, वह लड़की वास्तव में पेट से नहीं थी । सच्चाई ये है कि वो लड़की एक लाश पर लेटी थी और वह लाश !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने पूरी ताकत से अपना हलक फाड़ा- "कांचा पहलवान की लाश थी मी लॉर्ड ! कांचा पहलवान की लाश ।"

"यह सब झूठ है ।" विटनेस बॉक्स में खड़ा रमेश भी चिल्ला उठा- "झूठ है । मुझे जबरदस्ती कांचा पहलवान की हत्या के इल्जाम में फंसाया जा रहा है ।"

"अगर हम तुम्हें कांचा पहलवान की हत्या के इल्जाम में जबरदस्ती फंसा रहे हैं मिस्टर रमेश !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के होंठों पर कुटिल मुस्कान दौड़ी- "अगर हम सब झूठ बोल रहे हैं तो ठीक है, फिर तुम्हीं बताओ कि आखिर सच्चाई क्या है ? क्या है वो हकीकत, जिसे तुम अभी तक हम तमाम लोगों से छिपाये हुए हो ?"

"स...सच्चाई ये है ।" रमेश अपनी आवाज में यकीन पैदा करता हुआ बोला- "कि बुधवार की रात मेरी ऑटो रिक्शा में सचमुच गर्भ धारण किये हुए एक लड़की मौजूद थी ।"

"वो लड़की !" हंसा पब्लिक प्रॉसीक्यूटर- "जिसकी फौरन डिलीवरी होने वाली थी, जिसे तुम फौरन किसी हॉस्पिटल में भर्ती कराने के लिये ले जा रहे थे, लेकिन इंस्पेक्टर राजविर- जो इस केस के आई.ओ. (इन्वेस्टीगेशन ऑफिसर) हैं, उनकी इन्वेस्टीगेशन यह बताती है मी लार्ड !" वह पुनः गला फाड़कर चिल्लाया- "कि बुधवार की रात दिल्ली शहर के किसी भी हॉस्पिटल के किसी भी मेटरनिटी वार्ड में उस समय के आसपास डिलीवरी का कोई केस भर्ती ही नहीं हुआ । और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है मी लॉर्ड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने गरजते हुए ही कहा- "कि मिस्टर रमेश कानून को उस लड़की का नाम बताने से भी परहेज कर रहे हैं, जो

बुधवार की रात इनकी ऑटो रिक्शा में थी । क्या इसी एक प्वॉइंट से साबित नहीं हो जाता कि मिस्टर रमेश जो कुछ भी कह रहे हैं, वह सिर्फ झूठ का एक पुलिन्दा है, बकवास है । मिस्टर रमेश ने इस मनगगढ़ंत कहानी की रचना ही इसलिये की है, ताकि यह कानून को धोखा दे सकें, अदालत की आंखों में धूल झोक सकें । जबकि सच्चाई ये है मी लॉर्ड, मिस्टर रमेश इस बात को जानते हैं कि अगर इन्होंने उस लड़की का नाम अदालत को बता दिया, तो वह लड़की भरी हुई अदालत के सामने इतने बड़े झूठ को किसी भी हालत में कबूल नहीं करेगी कि उसके कोई बच्चा होने वाला था । क्योंकि लड़की चाहे कोई भी हो, किसी भी धर्म या जाति से सम्बन्धित हो, लेकिन वो अपनी इज्जत पर कैसा भी कोई झूठा दाग लगना पसंद नहीं करेगी ।"

रमेश खामोश खड़ा सुनता रहा ।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की जबान से निकला एक-एक शब्द उसके कानों में पिघले हुए सीसे की तरह गिर रहा था ।

"मिस्टर रमेश !" रौबदार पर्सनेलिटी वाला जज एक बार फिर रमेश से सम्बोधित हुआ- "अगर तुम किसी खास वजह से लड़की का नाम गुप्त रखना चाहते हो, तो तुम्हें कम-से-कम उस हॉस्पिटल का नाम तो जरूर ही अदालत को बताना पड़ेगा, जिसके मेटरनिटी वार्ड में तुमने उस रात लड़की को एडमिट कराया था ।"

"मैं उस हॉस्पिटल का नाम भी अदालत को नहीं बता सकता ।"

"मी लार्ड!" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अब क्रोध में चिल्ला उठा- "मुल्जिम जबरदस्ती इस केस को उलझाने की कोशिश कर रहा है, जबकि पूरा केस ओपन एण्ड शट केस है । इसलिये अदालत का मुल्जिम से यह पूछा जाना कि बुधवार की रात उसने लड़की को किस हॉस्पिटल में भर्ती कराया था, बिल्कुल बेतुका है, तर्कहीन है । क्योंकि मी लॉर्ड, दिल्ली पुलिस के बेहद काबिल इंस्पेक्टर मिस्टर राजविर पहले ही इस बात की खूब जांच-पड़ताल कर चुके हैं कि बुधवार की रात मेटरनिटी वार्डों में उस समय के आसपास कहीं कोई भर्ती हुई ही नहीं थी । हॉस्पिटल का या उस लड़की का नाम न बताकर मुल्जिम खुद बार-बार यह कबूल रहा है कि वह झूठा है और उसके बयान में कोई जान नहीं ।"

जज ने खामोशी के साथ कुर्सी पर पहलू बदला ।

"मी लॉर्ड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर पुनः चिल्लाया था- "इंस्पेक्टर राजविर की इन्वेस्टीगेशन की वजह से पूरा केस आइने की तरह साफ़ हो चुका है, इसलिये अब मैं अदालत से रिक्वेस्ट करूंगा कि वो मुल्जिम के शब्द जाल में फंसकर अपना बहुमूल्य समय नष्ट करने की बजाय उन ढ़ेरों सवालों की तरफ ध्यान दे, जिनका अभी तक मुल्जिम ने कोई जवाब नहीं दिया है । जैसे सवाल नम्बर एक- कांचा पहलवान ने जिससे रीगल सिनेमा के सामने ब्रीफकेस छीना, वह व्यक्ति कौन था ? सवाल नम्बर दो- उस ब्रीफकेस के अंदर क्या था ? सवाल नम्बर तीन- वह रहस्यमयी लड़की कौन थी, जो मण्डी हाउस के इलाके में मुल्जिम की ऑटो रिक्शा के अंदर देखी गयी और जिसे मुल्जिम ने पेट से बताया ?"

"मैं बताता हूँ कि वो रहस्यमयी लड़की कौन थी ।"

तभी कोर्ट-रूम में एक गरजती हुई आवाज गूंजी ।

बिल्कुल अजनबी आवाज ।

उस आवाज ने सबको चौंका दिया ।

सबकी निगाह खुद-ब-खुद गेट की तरफ चली गई ।

और अगला क्षण, एक और धमाके का क्षण था ।

सचमुच उस पूरे कथानक में एक के बाद एक चौंका देने वाली घटनाओं का जन्म हो रहा था ।

कोर्ट-रूम के दरवाजे पर उन सब लोगों ने जिस व्यक्ति को खड़े देखा, उसे देखकर सभी भौंचक्के रह गये ।

सबके शरीर का प्रत्येक अंग यूं फ्रीज हो गया, मानो उसे लकवा मार गया हो ।

कोर्ट-रूम के दरवाजे पर इस समय दिल्ली शहर का सबसे ज्यादा प्रसिद्ध वकील रौनक मल्होत्रा खड़ा था ।

रौनक मल्होत्रा की उम्र सिर्फ तीस-बत्तीस साल के आसपास थी, लेकिन इतनी कम आयु में ही उसने दिल्ली जैसे महानगर में अपनी वकालत के झण्डे गाड़ दिये थे । रौनक मल्होत्रा का फिल्म अभिनेताओं जैसा व्यक्तित्व बरबस ही हर व्यक्ति का मन मोह लेता था ।

इस समय भी रौनक मल्होत्रा ने अपने छः फुट लम्बे कसरती शरीर पर सफेद शर्ट, सफेद पैन्ट, सफेद टाई और ऊपर से काले रंग का चोगा पहन रखा था ।

जिसमें वो फिल्मी हिरो की तरह काफी स्मार्ट लग रहा था ।

उसकी आंखों पर चढ़ा था, सोने के फ्रेम वाला कीमती आई साइड ऐनक ।

रौनक मल्होत्रा को जिस वजह से वकालत की दुनिया में रातों-रात प्रसिद्धि मिली, वह उसके केस लड़ने का स्टाइल था । रौनक मल्होत्रा का रिकॉर्ड रहा था कि वो अपने जीवन में कभी कोई केस नहीं हारा । उसका क्लायंट बेगुनाह हो या गुनाहगार, रौनक मल्होत्रा कोर्ट में पूरे केस को इस तरह तोड़-मरोड़कर पेश करता था कि उसका क्लायंट हर हालत में अदालत से बाइज्जत बरी हो जाता था ।

यह बात अलग है कि रौनक मल्होत्रा अपने क्लायंट से मुँह मांगी फीस लेता था ।

दिल्ली का सबसे मंहगा वकील था वो ।

बहरहाल उस समय रौनक मल्होत्रा को कोर्ट-रूम में देखकर सभी चौंक पड़े ।

सबका चौंकना वाजिब भी था ।

आखिर रौनक मल्होत्रा जैसा धुरंधर वकील किसी भी केस को आसानी से हाथ लगाता ही कहाँ है ।

और जब हाथ लगाता है, तो करिश्मा होता है ।

“आपको उस रहस्यमयी लड़की के बारे में जो कुछ भी कहना है मिस्टर मल्होत्रा!” जज भी उसके व्यक्तित्व से प्रभावित होकर बोला- “कृपया विटनेस बॉक्स में आकर कहिये ।”

“सॉरी मी लॉर्ड ! मैं इस समय कोर्ट रूम में एक गवाह की हैसियत से उपस्थित नहीं हुआ हूँ

बल्कि मिस्टर रमेश के डिफेंस काउंसल (बचाव पक्ष) की हैसियत से यहाँ आया हूँ ।”

“ड...डिफेंस काउंसल !”

बम-सा गिरा कोर्ट रूम में ।

चारों तरफ सनसनी दौड़ गयी ।

इंस्पेक्टर राजविर और जग्गु भी यह सोचकर हैरान रह गये कि रमेश जैसे मामूली ऑटो रिक्शा ड्राइवर ने रौनक मल्होत्रा जैसा महंगा वकील कैसे कर लिया ?

खुद रमेश भी इस सुखद परिस्थिति पर हैरान था ।

विटनेस बॉक्स में खड़े-खड़े वो अपने अंदर एक नई स्फूर्ति अनुभव करने लगा ।

दर्शक दीर्घा में मौजूद तमाम लोग भी अब सजग हो-होकर कुर्सियों पर बैठ गये, उन्हें यह समझते देर न लगी कि जल्द ही केस कोई नया रोमांचकारी मोड़ लेने वाला है ।

जबकि रौनक मल्होत्रा ने रमेश से हस्ताक्षर कराने के बाद अपना वकालतनामा जज की तरफ बढ़ा दिया था ।

जज ने गौर से वकालतनामा देखा, फिर कहा- “आप डिफेंस काउंसल की हैसियत से यह मुकदमा लड़ सकते हैं मिस्टर मल्होत्रा !”

“थैंक्यू मी लॉर्ड !”

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने एक चैलेन्ज भरी दृष्टि रौनक मल्होत्रा पर डाली, जबकि रौनक मल्होत्रा हलके से मुस्करा दिया ।

मुकदमा फिर पहले की तरह ही गरमजोशी के साथ शुरू हो गया बल्कि अब उसमें पहले से भी ज्यादा गरमी थी ।

"मी लॉर्ड !" रौनक मल्होत्रा ने अपना काला चोगा दुरुस्त करके बोलना शुरू किया- "सबसे पहले तो मैं मिस्टर रमेश के बचाव पक्ष का वकील होने के नाते यह कहना चाहूँगा कि मेरे बेहद काबिल और जहीन दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और इंस्पेक्टर राजविर ने मिलकर मेरे क्लायंट पर कांचा पहलवान की हत्या का जो इल्जाम लगाया है, वह बिल्कुल बेतुका है, झूठा है, मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा ने अपनी आवाज़ थोड़ी तेज की- "सच्चाई ये है कि अभी तक मेरा भोला-भाला और निर्दोष क्लायंट अदालत के शब्द जाल से बचने की कोशिश नहीं करता रहा बल्कि मेरे काबिल दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर साहब खुद इंस्पेक्टर राजविर की गलत इन्वेस्टीगेशन के कारण दिशा भ्रमित होते रहे हैं ।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर आदत के मुताबिक हलक फाड़कर चिल्लाया- "मल्होत्रा साहब, इंस्पेक्टर राजविर जैसे बेहद कर्तव्यनिष्ठ इंस्पेक्टर की काबिलियत पर उंगली उठा रहे हैं । वो इंस्पेक्टर राजविर, जो दिल्ली पुलिस में एक मिसाल है । एक आदर्श है । जिसे देखकर दिल्ली पुलिस के दूसरे जवान प्रेरणा लेते हैं और कल्पना करते हैं कि काश वो भी इंस्पेक्टर राजविर की तरह ही बन जायें । यह बड़े अफसोस की बात है मी लॉर्ड, मल्होत्रा साहब उसी इंस्पेक्टर राजविर की कर्तव्यनिष्ठा पर इल्जाम लगा रहे हैं ।"

"गलत- बिल्कुल गलत ।" रौनक मल्होत्रा ने बिना उत्तेजित हुए कहा- "मैंने इंस्पेक्टर राजविर की कर्तव्यनिष्ठा पर कोई इल्जाम नहीं लगाया मी लार्ड ! सच्चाई तो ये है कि मैं खुद इस बात को तहेदिल से कबूल करता हूँ कि इंस्पेक्टर राजविर जैसे बेहद कर्मठ और ईमानदार पुलिस ऑफिसर हमारी दिल्ली पुलिस में कुछेक ही हैं और जो चन्द हैं, वह दिल्ली पुलिस की नाक हैं । परन्तु हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये मी लॉर्ड !" रौनक मल्होत्रा ने फौरन चाल चली- "कि इंस्पेक्टर राजविर एक कर्तव्यपरायण पुलिस इंस्पेक्टर होने के साथ-साथ एक इंसान भी हैं । इंसान, जिसे हमारे शास्त्र या वेद-पुराणों में गलतियों के पुतले की संज्ञा दी गयी है । कहा गया है कि बड़े-बड़े तपस्वी और ऋषि-मुनियों से भी जाने-अंजाने कोई-न-कोई गलती अवश्य हो जाती है । और ऐसी ही एक गलती इंस्पेक्टर राजविर से हो चुकी है मी लॉर्ड, उन्होंने इस पूरे केस की इन्वेस्टीगेशन तो पूरी लगन और मेहनत से की, लेकिन वो सबूत इकट्ठे करने में बस थोड़ा-सा धोखा खा गये ।"

"ल...लेकिन ।"

"न- न ।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपनी बात पूरी कर पाता, उससे पहले ही रौनक मल्होत्रा ने उसकी बात काट दी और प्रभावपूर्ण ढंग से आगे बोला- "मुझे मालूम है पब्लिक प्रॉसीक्यूटर साहब कि आप क्या कहना चाहते हैं । यही न कि मेरे पास इस बात का क्या सबूत है कि इंस्पेक्टर राजविर ने जो इन्वेस्टीगेशन की वो गलत है । तो इसके जवाब में, मैं सिर्फ यह कहना चाहूँगा प्रॉसीक्यूटर साहब, मैं भी एक वकील हूँ । और कम-से-कम इतना जहीन भी हूँ कि अदालत में ऐसी कोई बात अपनी जबान से नहीं निकालूंगा, जिसका मेरे पास कोई जवाब न हो । जहाँ तक इंस्पेक्टर राजविर द्वारा मेरे क्लायंट पर लगाये गये बेबुनियाद इल्जामों का सवाल है, तो मैं अभी चंद मिनट बाद उसका सबूत भरी अदालत में पेश करूंगा । अगर मैं सबूत पेश न कर सकूँ, तो मेरे काबिल दोस्त सिर्फ मेरे ऊपर ऑब्जेक्शन लगाकर ही खामोश

न बैठें बल्कि वो खुशी-खुशी मेरे ऊपर इंस्पेक्टर राजविर की तरफ से मान-हानि का मुकदमा भी दायर कर सकते हैं ।"

"ऑब्जेक्शन ओवर रूल्ड !" जज ने फौरन ही पब्लिक प्रॉसीक्यूटर का ऑबेजक्शन प्रस्ताव खारिज कर दिया ।

"थैंक्यू मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा ने जज के सामने सिर झुकाया ।

जबकि पब्लिक प्रॉसीक्यूटर अपनी पहली ही परमेशय पर बुरी तरह तिलमिला उठा था ।

"हाँ, तो मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा ने थोड़ा रुककर पुन: शुरू किया- "मैं कह रहा था कि मेरे काबिल दोस्त पब्लिक प्रॉसीक्यूटर साहब खुद इंस्पेक्टर राजविर की गलत इन्वेस्टीगेशन के कारण भ्रमित हो रहे हैं । जबकि सच्चाई ये है कि फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर ने जब बुधवार की रात को मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रमेश की ऑटो रिक्शा रोकी, तो उसमें सचमुच कांचा पहलवान की लाश नहीं थी बल्कि उसके अंदर वास्तव एक लड़की थी, जो पेट से थी ।"

"लेकिन सवाल ये है मल्होत्रा साहब !" अपनी परमेशय से बुरी तरह झल्लाया पब्लिक प्रॉसीक्यूटर फिर चिल्ला उठा- "अगर ऑटो रिक्शा में उस समय लड़की थी, तो वह लड़की कौन थी ? फिर अगर वो वास्तव में ही पेट से थी, तो मिस्टर रमेश ने उसे किसी हॉस्पिटल के मेटरनिटी वार्ड में भर्ती क्यों नहीं कराया ? और इन सबसे बड़ा सवाल ये है कि मिस्टर रमेश उस लड़की का नाम बताने से ऐतराज क्यों कर रहे हैं ?"

आहिस्ता से मुस्कराया रौनक मल्होत्रा ।

"प्रॉसीक्यूटर साहब !" फिर रौनक मल्होत्रा गंभीरतापूर्वक बोला- "हर खामोशी के पीछे कोई-न-कोई वजह होती है, फर्क सिर्फ इतना है कि कोई उस खामोशी की आवाज को सुन लेता है और कोई नहीं सुन पाता । इस मामले में, मैं शायद आपसे ज्यादा सौभाग्यशाली हूँ, क्योंकि मैंने खामोशी की वह आवाज सुन ली है । मी लॉर्ड !" रौनक मल्होत्रा, जज की तरफ घूमा- "मैं रमेश की खामोशी की वजह बयान करने से पहले अदालत से प्रार्थना करूंगा कि वो प्रॉसीक्यूटर के ही एक गवाह जग्गु को विटनेस बॉक्स में पेश करने की इजाजत दे ।"

"इजाजत है ।"

दर्शक दीर्घा में बैठे काले-भुर्राट जग्गु का दिल एकाएक बुरी तरह धड़क उठा ।

हालांकि वो काफी हिम्मतवाला इंसान था ।

परन्तु रौनक मल्होत्रा जैसे धुरंधर वकील के सामने खड़े होने की कल्पना मात्र से ही उसकी पिण्डलियां कंपकंपा उठीं ।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और इंस्पेक्टर राजविर की भी कुछ ऐसी ही हालत हुई, वह नहीं समझ पा रहे थे कि अब क्या होने वाला है ?

कुछ तो होने वाला था । कुछ बड़ा ।

मरता क्या न करता, काला-भुर्राट जग्गु आखिरकार विटनेस बॉक्स में जाकर खड़ा हुआ ।

फिर उसने सबसे पहले 'गीता' पर हाथ रखकर सच बोलने की सौगन्ध खाई ।

उसके बाद कुछ औपचारिक अदालती सवालों के बाद रौनक मल्होत्रा ने जग्गु को घूरते हुए पहला प्रश्न पूछा- “मिस्टर जग्गु, क्या यह सच है कि तुम रमेश की गिरफ्तारी के बाद पुलिस स्टेशन गये थे ?”

“ह...हाँ ।” जग्गु ने कंपकंपाये स्वर में कहा- “य...यह सच है ।”

“वहाँ तुम इंस्पेक्टर राजविर से भी मिले ?”

“हाँ...हाँ, यह भी सच है ।”

“और क्या यह भी सच है ।” रौनक मल्होत्रा थोड़े तेज स्वर में बोला- “कि तुमने पुलिस स्टेशन में घुसकर इंस्पेक्टर राजविर के सामने यह घोषणा की थी कि तुम उस रहस्यमयी लड़की को जानते हो, जो हादसे की रात रमेश के साथ मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर देखी गयी ?”

जग्गु ने अब सकपकाकर राजविर की तरफ देखा ।

“उधर मत देखो ।” चिल्लाया रौनक मल्होत्रा- “मेरी तरफ देखो ।”

जग्गु ने फौरन राजविर की तरफ से निगाह हटा ली ।

“जवाब दो, क्या तुमने पुलिस स्टेशन में पहुँचकर ऐसी ही घोषणा की थी ?”

“ह...हाँ, म...मैंने यही कहा था ?”

मुस्कराया रौनक मल्होत्रा- “फिर तो तुमने इंस्पेक्टर राजविर को उस लड़की का नाम भी जरूर बताया होगा ?”

“ह...हाँ, नाम बताया था ।”

“क्या नाम बताया था ?”

जग्गु ने अब बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

इतना तो वह समझ ही चुका था कि रौनक मल्होत्रा उसके ही चलाये तीर से कोई शिकार करना चाहता है ।

“मिस्टर जग्गु !” रौनक मल्होत्रा ने एक नई चाल चली- “क्या तुम्हें उस लड़की का नाम अदालत के सामने दोहराने से कोई ऐतराज है ?”

“न...नहीं, म...मुझे भला क्या ऐतराज हो सकता है ।”

“तो फिर बोलते क्यों नहीं. क्या नाम था उस लड़की का ?”

“म...डिंपी ! डिंपी नाम था ।”

“यह नाम नोट किया जाये मी लॉर्ड ।” रौनक मल्होत्रा बिजली जैसी तेजी के साथ जज की तरफ घूमा और चिल्लाया- “यह नाम अदालत की कारवाई में खासतौर पर दर्ज किया जाये । इसके अलावा मैं अदालत को एक बात और बताना चाहूँगा कि डिंपी नाम की यह लड़की सोनपुर में ही रहती है तथा एक ऑफिस के अंदर टाइपिस्ट के तौर पर काम करती है ।”

दर्शन दीर्घा में सन्नाटा था ।

ऐसा सन्नाटा कि अगर वहाँ कोई सुई भी गिरे, तो आवाज हो ।

वह नाम अदालत की कार्यवाही में दर्ज कराने के बाद रौनक मल्होत्रा दोबारा जग्गु की तरफ घूम गया था ।

बेचारा जग्गु ! उसे ऐसा लग रहा था, मानों आज वह किसी शेर के जबड़े में आ फंसा हो ।

"मिस्टर जग्गु !" रौनक मल्होत्रा बोला- "अब मैं तुमसे यह पूछना चाहूँगा कि तुमने इंस्पेक्टर राजविर के सामने जाकर डिंपी का ही नाम क्यों लिया ? सोनपुर में तो और भी दर्जनों लड़कियां रहती हैं, तुमने उनमें से किसी का नाम क्यों नहीं लिया ?"

"क...क्या मतलब ?" जग्गु चौंका ।

"मतलब बिल्कुल साफ है मिस्टर जग्गु- क्या तुमने बुधवार की रात डिंपी को अपनी आंखों से कांचा पहलवान की लाश के ऊपर लेटे देखा था ?"

"नहीं ।"

रौनक मल्होत्रा चिल्ला उठा- "फिर तुमने पुलिस स्टेशन में जाकर यह घोषणा किस आधार पर की कि उस रात डिंपी, रमेश की ऑटो रिक्शा में थी ? तुमने डिंपी का ही नाम क्यों लिया ? जबकि तुमने डिंपी को रमेश की ऑटो रिक्शा में देखा तक नहीं था ।"

"ऑब्जेक्शन मी लॉर्ड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने एकाएक गला फाड़ा- "डिफेंस काउंसिल साहब जग्गु को क्रॉस एग्जामिन कर रहे हैं, वह उसे उलझन और गहरी पेशोपेश में डालकर होस्टाइल करार देने की कोशिश कर रहे हैं । वरना इन तमाम सवालों का केस से क्या ताल्लुक है ?"

"ताल्लुक है मी लार्ड- ताल्लुक है ।" रौनक मल्होत्रा ने बिना विचलित हुए अपनी बंद मुट्ठी हवा में लहराई- "मेरे इन तमाम सवालों का रमेश की उस खामोशी से गहरा ताल्लुक है, जो वह बेगुनाह होकर भी विटनेस बॉक्स में एक अपराधी बना खड़ा है । आखिर वह कौन-सा रमेश है, जिसे एक भोले-भाले इंसान ने अपने सीने में दफन कर रखा है । आप सब लोग चिल्ला-चिल्लाकर उस पर यह झूठा इल्जाम लगा रहे हैं कि बुधवार की रात उसकी ऑटो रिक्शा के अंदर कांचा पहलवान की लाश थी, इतना बड़ा झूठा इल्जाम लगने के बावजूद वो चुप है, आखिर क्यों चुप है ? क्या है इस खामोशी की वजह ?"

अब !

अब विटेनस बॉक्स में खड़े रमेश की आंखों में भी हैरानी के निशान उभरे ।

उसे भी लगा कि रौनक मल्होत्रा सचमुच कोई 'गेम' खेलने वाला है ।

"दरअसल मैं जग्गु से जो भी सवाल पूछ रहा हूँ मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा बोला- "उन सवालों के जवाब न सिर्फ रमेश की खामोशी को तोड़ेंगे बल्कि वो पूरे केस को भी एक ही झटके में हल कर देंगे ।"

"ठीक है, आप सवाल पूछ सकते हैं ।"

"थैंक्यू- थैंक्यू वैरी मच मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा ने एक बार फिर जज के सामने आदर से गर्दन झुकाई तथा पुनः जग्गु से सम्बोधित होकर बोला- "हाँ, तो मिस्टर जग्गु- तुमने बिना देखे

यह अंदाजा कैसे लगाया कि तीन जुलाई की रात रमेश की ऑटो रिक्शा में डिंपी रही होगी ?”

जग्गु की जबान बंद !

“इस तरह की घोषणा करने के पीछे कोई तो वजह होगी ?”

जग्गु पागलों की तरह इधर-उधर देखने लगा ।

“मैं तुमसे कोई सवाल पूछ रहा हूँ मिस्टर जग्गु ।” मल्होत्रा थोड़ा गुस्से में बोला- “जवाब दो ।”

“ए...एक मैं ही क्या, क...सोनपुर में रहने वाला कोई भी व्यक्ति यह अंदाजा बड़ी आसानी से लगा सकता है कि वो डिंपी रही होगी ।”

“क्यों, ऐसा अंदाजा क्यों लगा सकता है ?”

“क...क्योंकि रमेश और डिंपी एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, जान छिड़कते हैं यह एक-दूसरे पर । फिर भला डिंपी के अलावा और कौन लड़की इसकी मदद कर सकती है ।”

“तुम यह कहना चाहते हो ।” रौनक मल्होत्रा ने फौरन शब्द चबाया- “कि रमेश और डिंपी एक-दूसरे के लिये कुछ भी कर सकते हैं ।”

“जी हाँ ।”

“मैंने इन दोनों के विषय में एक बात और भी सुनी है ।” रौनक मल्होत्रा का व्यक्तित्व एकाएक बेहद रहस्यमयी हो उठा और वो जग्गु के थोड़ा करीब पहुँचकर बोला- “मैंने सुना है कि यह दोनों अपने-अपने घर में रहते भी अकेले हैं ?”

“आपने बिल्कुल ठीक सुना है साहब !” जग्गु ने इस बार थोड़ा उत्साह के साथ जवाब दिया- “डिंपी तो बहुत पहले से सोनपुर में रहती है, शायद बचपन से ही । पहले डिंपी के साथ उसकी मां भी रहती थी- जिसका पिछले साल ही देहान्त हो गया- अब वो घर में बिल्कुल अकेली है ।”

“वैरी गुड ! और रमेश ?”

“रमेश ने तो अभी सिर्फ एक महीना पहले से ही सोनपुर में रहना शुरू किया है ।”

“सिर्फ एक महीना पहले से ?”

“जी साहब ।”

“और इस एक महीने में ही रमेश और डिंपी की मोहब्बत इस मुकाम तक पहुँच गयी ।” रौनक मल्होत्रा हैरत से नेत्र फैलाकर बोला- “कि यह एक-दूसरे के लिये कुछ भी कर सकते हैं ? यकीन नहीं होता एकाएक मिस्टर जग्गु ।”

“आप गलत समझ रहे हैं, वकील साहब !” जग्गु बोला- “रमेश को सोनपुर में रहते जरूर एक महीना हुआ है, लेकिन डिंपी और रमेश की दोस्ती बहुत पुरानी है । मैंने सुना है कि डिंपी पहले रमेश की ऑटो रिक्शा में बैठकर अक्सर ऑफिस जाती थी, बस तभी से उन दोनों के बीच प्रेम हो गया ।”

“फिर तो रमेश को सोनपुर में घर भी डिंपी ने ही दिलाया होगा ?”

“जी हाँ, उसी ने दिलाया था ।”

“वैरी गुड ! वाकई काफी जबरदस्त प्रेम है ।”

खून अब रमेश की कनपटी पर ठोकरें-सी मारने लगा ।

वह समझ नहीं पा रहा था कि रौनक मल्होत्रा वहाँ उसे बाइज्जत बरी कराने आया है या उसकी इज्जत के परखच्चे उड़ाने आया है ।

“मी लॉर्ड, वैसे मैंने यह भी सुना है ।” रौनक मल्होत्रा एकाएक चीखता हुआ जज की तरफ घूमा- “कि जिस रात इंस्पेक्टर राजविर, रमेश को गिरफ्तार करने सोनपुर में पहुँचा, तो उस समय रमेश, डिंपी के घर में था । जरा कल्पना कीजिये मी लॉर्ड एक नौजवान लड़का, एक नौजवान लड़की के साथ घर में अकेला बंद है । रात का समय है । दरवाजे की उन दोनों ने अन्दर से सिटकनी भी चढ़ा रखी है । एक पूरी ड्रामेटिक सिचुएशन आपके सामने है, क्या यह पूरी सिचुएशन इस बात की तरफ इशारा नहीं करती कि इन दोनों के बीच सिर्फ प्रेम सम्बन्ध ही नहीं थे बल्कि शारीरिक सम्बन्ध भी कायम हो चुके थे । वैसे भी जब दो तपते हुए जिस्म तन्हाई में एक-दूसरे के इतना करीब हों, तो फिर आग लगने से कैसे बच सकती है ।”

“यह सब झूठ है ।” रमेश दहाड़ उठा- “झूठ है यह सब । मेरे और डिंपी के बीच ऐसे कोई सम्बन्ध नहीं थे ।”

“तुम दोनों के बीच सम्बन्ध थे रमेश !” रौनक मल्होत्रा उससे भी ज्यादा पुरजोर अंदाज में चिंघाड़ा- “सम्बन्ध थे । इतना ही नहीं तीन जुलाई, बुधवार की रात तुम्हारी ऑटो रिक्शा में जो लड़की देखी गयी, वो भी डिंपी ही थी, सिर्फ और सिर्फ डिंपी ।”

पूरे कोर्ट-रूम में सब दंग रह गये ।बुरी तरह दंग !

वहाँ सन्नाटा-सा स्थापित हो गया ।

जज से लेकर सरकारी वकील और इंस्पेक्टर राजविर तक बेहद भौंचक्की मुद्रा में यह सोचते देखे गये कि आखिर रौनक मल्होत्रा जैसा धुरंधर वकील अपने ही क्लायंट के विरुद्ध क्यों जा रहा है ?”

क्या वजह है ?

क्या कारण है ?

बहुत जल्द ही उस कारण का भी पर्दाफाश हो गया ।

ऐसा जबरदस्त बम विस्फोट कि यही बहुत बड़ा शुक्र था कि कोर्ट-रूम में मौजूद प्रत्येक व्यक्ति का सस्पेंस के मारे हार्टफेल न हो गया ।

“तो आप भी यह कबूल करते हैं मल्होत्रा साहब !” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर उत्साह में भरकर बोला- “कि तीन जुलाई, बुधवार की रात जो लड़की कांचा पहलवान के ऊपर लेटी देखी गयी, वह डिंपी थी ?”

“मैंने कब कहा ।” रौनक मल्होत्रा ने फौरन अपने तेवर दिखाये- “मैंने यह कब कहा कि डिंपी, कांचा पहलवान के ऊपर लेटी थी ? प्रॉसीक्यूटर साहब- मैंने तो सिर्फ ये कहा है कि बुधवार की रात जब फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते ने रमेश की ऑटो रिक्शा मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर

रोकी, तो उसमें रहस्यमयी लड़की कोई और नहीं बल्कि डिंपी थी । जिसकी लाश का तो मैंने अभी तक जिक्र भी नहीं किया है, पहले ही कोर्ट में कह चुका हूँ कि ऐसी कोई लाश उस समय रिक्शा के अंदर नहीं थी ।"

अब सभी के दिमाग में फिरकनी सी घूमी ।

"इ...इसका मतलब आप यह कहना चाहते हैं ।" प्रॉसीक्यूटर हैरान होकर बोला- "कि बुधवार की रात को डिंपी के सचमुच बच्चा होने वाला था और रमेश उसे हॉस्पिटल में ही भर्ती कराने के लिये ले जा रहा था ?"

"बिल्कुल- यह सच है ।" रौनक मल्होत्रा ने अपने कंधे झटके- "मैं यही कहना चाहता हूँ मी लॉर्ड !" रौनक मल्होत्रा फिर चीखता हुआ जज की तरफ घूमा- "रमेश की ऑटो रिक्शा में उस रात जो लड़की थी, वह हंड्रेड परसेंट डिंपी थी । इतना ही नहीं- उसके पेट में पलने वाला वह बच्चा, जिसे हमारा समाज ऐसी परिस्थिति में पाप की संज्ञा देता है, वह पाप किसी और का नहीं बलकी रमेश का था मी लार्ड ।" रौनक मल्होत्रा कोर्ट-रूम में और बुरी तरह चिंघाड़ा तथा उसने अपनी उंगली भाले की तरह रमेश की तरफ उठाई- "वह पाप इसी का था, रमेश का ।"

"य...यह झूठ है ।" रमेश दहाड़ उठा- "यह झूठ है मी लॉर्ड । यह मेरे ऊपर और डिंपी पर सरासर झूठा इल्जाम लगा रहे हैं । यह कीचड़ उछाल रहे हैं हम पर । म...मैं कबूल करता हूँ मी लार्ड, उस रात कांचा पहलवान की लाश मेरी ही ऑटो रिक्शा में थी ।" बोलते-बोलते रमेश की आवाज जज्बाती हो उठी- "म...मैं यह भी कबूल करता हूँ कि कांचा पहलवान की हत्या मैंने की है, मैं ही हत्यारा हूँ । लेकिन भगवान के लिये डिंपी पर इतना बड़ा झूठा इल्जाम मत लगाओ, उसकी जिंदगी बर्बाद मत करो ।" बोलते-बोलते रमेश इस बार विटनेस बॉक्स में खड़ा-खड़ा ही रो पड़ा ।

परन्तु रमेश को ये कहाँ मालूम था कि आज उसके सामने रौनक मल्होत्रा जैसा बेहद धुरंधर वकील खड़ा है ।

रौनक मल्होत्रा ने रमेश द्वारा स्वीकार किये गये हत्या के अपराध से भी फायदा उठाया ।

"देखा- देखा आपने मी लॉर्ड ।" रौनक मल्होत्रा ने घनगरज की- "देखा, इसके दिल में बसे डिंपी के प्रति बेपनाह प्यार को देखा । सिर्फ डिंपी के ऊपर कोई कालिख न लग जाये, इसी वजह से यह कांचा पहलवान की हत्या का इल्जाम अपने सिर पर लेने को तैयार है, यह फांसी चढ़ने को तैयार है बेवकूफ आदमी ! डिंपी की इज्जत बचाने के लिये यह इस समय वो कबूल कर रहा है, जो इसने कल इंस्पेक्टर राजविर के जबरदस्त टॉर्चर के सामने भी कबूल नहीं किया । यही मोहब्बत इसकी खामोशी की वजह थी मी लॉर्ड- यह इसी कारण चुप था कि कहीं इसकी हकीकत का पर्दाफाश न हो जाये ।"

"जबकि हकीकत ये है मी लॉर्ड !" रौनक मल्होत्रा ने सन्नाटे के ऊपर अपनी आवाज से प्रचण्ड चोट की- "कि तीन जुलाई की रात न तो यह रीगल सिनेमा के सामने ही खड़ा था और न ही इसे कांचा पहलवान के बारे में ही कुछ पता था । दरअसल बुधवार की रात को डिंपी के बच्चा होने की बहुत तेज पीड़ा हुई थी, किसी हॉस्पिटल में ले जाने के लिये रमेश ने डिंपी को ऑटो रिक्शा की पिछली सीट पर लिटाया, लेकिन जब यह आई.टी.ओ. का ओवर ब्रिज पार करके मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर मुड़ रहा था, तभी इत्तेफाक से तेज स्पीड के कारण फ्लाइंग स्क्वाड का एक दस्ता इसके पीछे लग गया । जबकि सच्चाई ये है मी लॉर्ड, यह ऑटो

रिक्शा इसलिये तेज चला रहा था, ताकि यह डिंपी को लेकर जल्द-से-जल्द किसी हॉस्पिटल पहुँच सके । लेकिन इसकी किस्मत खराब थी, जो फ्लाइंग स्क्वाड के दस्ते ने इसे बीच रास्ते में ही रोक लिया । दस्ते के सब-इंस्पेक्टर से रमेश ने वही कहा, जो सच था, यानि लड़की के बच्चा होने वाला है । मगर तब तक देर हो चुकी थी मी लॉर्ड- बहुत देर ।" रौनक मल्होत्रा चीखता चला गया- "रमेश फ्लाइंग स्क्वाड के दस्ते से निपटकर अभी इंडिया गेट से थोड़ा आगे पहुँचा ही था कि पिछली सीट पर लेटी डिंपी के प्रसव पीड़ा हो गयी । जी हाँ मी लॉर्ड, डिंपी की डिलीवरी हो गयी । उसके एक बच्चा पैदा हुआ, लेकिन जिन्दा नहीं बल्कि मरा हुआ ।"

भावनाओं के प्रवाह में बोलते-बोलते कुछ क्षण के लिये रुका रौनक मल्होत्रा ।

उसने अपना सोने के फ्रेम वाला ऐनक दुरुस्त किया ।

अदालत में अभी भी सन्नाटा था ।

सब चुप बैठे थे ।

जबकि रमेश के नेत्र तो हद दर्जे तक फैल गये थे ।

उसके बाद रौनक मल्होत्रा ने अदालत में उस कहानी का हिस्सा सुनाया- "मी लॉर्ड- रमेश और डिंपी ने मिलकर वह मरा हुआ बच्चा उसी रात यमुना नदी में बहा दिया, उसके बाद दोनों ने ही उस मामले में चुप लगाना बेहतर समझा । क्योंकि मामला खुद-ब-खुद ही खत्म हो गया था । वह समाज की अवहेलना का शिकार होने से बच गये थे, लेकिन अब इसे इत्तेफाक या रमेश की बदनसीबी ही कहा जायेगा कि उसी रात कोई ऑटो ड्राइवर कांचा पहलवान को रीगल सिनेमा के पास से लेकर फरार हो गया । इतना ही नहीं, फिर उसने कांचा पहलवान की लाश भी इंडिया गेट पर डाल दी । इन दोनों इत्तेफाकों से एक भयानक रिजल्ट यह निकला कि इंस्पेक्टर राजविर की गलत इन्वेस्टीगेशन शुरू हो गयी । राजविर का शक सीधा रमेश पर जा पहुँचा, जबकि रमेश ने इस डर की वजह से कि कहीं बच्चा होने वाली बात का रमेश न खुल जाये, पुलिस से बचने का भी प्रयत्न किया । लेकिन आखिरकार जैसाकि सब जानते हैं मी लॉर्ड, वह पकड़ा ही गया । यही वो वजह थी, जो रमेश ने इंस्पेक्टर राजविर के इतने खौफनाक टार्चर के सामने भी अपनी जुबान न खोली और वह जुबान खोलता भी कैसे, उसे तो कुछ मालूम ही न था ? रमेश कैसे बताता कि कांचा पहलवान के ब्रीफकेस में क्या था ? उससे वह ब्रीफकेस किसने छीना ? या फिर अगर उसकी ऑटो रिक्शा में कोई ऐसी लड़की थी, जिसके बच्चा होने वाला था, तो रमेश ने उसे किस हॉस्पिटल में भर्ती कराया ? आप ही बताओ मी लॉर्ड, वह किस हॉस्पिटल का नाम बताता ? क्योंकि हॉस्पिटल तक पहुँचने की तो नौबत ही न आयी थी । और रमेश कानून के सामने सच्चाई इसलिये जाहिर नहीं करना चाहता था, क्योंकि इससे डिंपी की इज्जत की धज्जियां बिखर जाती । लेकिन अफसोस मी लॉर्ड ! अफसोस !! इंस्पेक्टर राजविर और अदालत ने रमेश की इसी बेबसी को, इसी खामोशी को उसका इकबालिया जुर्म मान लिया । जबकि यह बेकसूर है मी लॉर्ड- बिल्कुल बेकसूर । अगर इसका कोई अपराध है, तो वो ये है कि इसे डिंपी से बेपनाह मोहब्बत है ।"

कोर्ट-रूम में अब बेचैनी-सी फैल गयी ।

अब तमाम लोगों की समझ में आया कि रौनक मल्होत्रा जैसा धुरंधर वकील शुरू में क्यों अपने क्लायंट के विरुद्ध जा रहा था ।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर हिम्मत करके रौनक मल्होत्रा की तरफ बढ़ा ।

“लेकिन अभी-अभी आपने जो कहानी सुनाई मल्होत्रा साहब !” प्रॉसीक्यूटर बोला- “उसे सच कैसे माना जाये ? जबकि खुद आपका क्लायंट रमेश भी उस कहानी को मानने से इंकार कर रहा है, उसे वो सरासर झूठी कहानी करार दे रहा है ?”

मुस्कराया मल्होत्रा ।

वह मुस्कान ऐसी थी, जैसे मजाक उड़ाते समय किसी के होठों पर आ जाती है ।

“आपने यह बड़ा बेतुका सवाल पूछा है प्रॉसीक्यूटर साहब ।”

“क...क्यों ?” सकपकाया प्रॉसीक्यूटर ।

“इस सवाल की जगह अगर आपने मुझसे यह सवाल पूछा होता कि मुझे इन तमाम बातों का कैसे पता चला, तो मैं समझता हूँ कि आपकी ज्यादा काबिलियत जाहिर होती ।”

“क...क्या मतलब ?”

“जाहिर-सी बात है प्रॉसीक्यूटर साहब ।” रौनक मल्होत्रा बोला- “किसी भी काबिल वकील के दिमाग में सबसे पहले यही सवाल कौंधेगा कि जिस कहानी को खुद मुल्जिम झूठी करार दे रहा है, तो उस कहानी के बारे में मुल्जिम के डिफेंस काउंसल को किस तरह पता चला ।”

“क...किस तरह पता चला ?”

“डिंपी से ।”

रौनक मल्होत्रा ने एक और भयंकर विस्फोट कर दिया था ।

“म...डिंपी !” विटनेस बॉक्स में खड़े रमेश के दिमाग में भी डिंपी का नाम सुनकर धमाके से होने लगे ।

“जी हाँ- मुझे यह सारी कहानी डिंपी ने बतायी थी ।” रौनक मल्होत्रा एक बार फिर कोर्ट-रूम में गरजता हुआ बोला- “इतना ही नहीं, उसी डिंपी को मैं गवाह के तौर पर अपने साथ भी लाया हूँ, जो इस समय बाहर बैठी मेरा इंतजार कर रही है ।”

अदालत में अब ऐसी हलचल मच चुकी थी, जैसी कभी चींटियों के झुण्ड में मच जाती है ।

फौरन ही डिंपी को कोर्ट-रूम में बुलाया गया ।

विटनेस बॉक्स में खड़े होकर उसने सबसे पहले वही कसम खाई, जो प्रत्येक गवाह को कोर्ट में गवाही देने से पहले खानी पड़ती है ।

उसने गीता पर हाथ रखकर कहा- “मैं जो कहूँगी, सच कहूँगी । सच के अलावा कुछ नहीं कहूँगी ।”

“तुम्हारा नाम ?” वह सवाल डिंपी से पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने पूछा था ।

“डिंपी ।”

“तुम्हारे पिता का नाम ?”

“स्वर्गीय देवसिंह ।”

“कहाँ रहती हो ?”

“सोनपुर में ।”

“रमेश को जानती हो ?”

“जी हाँ ।”

“कब से ?”

“यही कोई एक साल हो गया ।”

“सुना है ।” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की आवाज थोड़ी संकोचपूर्ण हो गयी- “तुम दोनों आपस में प्यार भी करते हो ?”

“हाँ ।”

“क्या हाँ ?”

“य...यह सच है ।”

“सिर्फ प्यार या कुछ और भी ?”

डिंपी चुप ।

“मेरे सवाल का जवाब दो ।” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर इस बार चिल्लाया- “तुम दोनों सिर्फ प्यार करते हो या तुम दोनों का प्यार शरीर की उन सीमाओं को भी लांघ गया है, जिसे ज्यादातर शादी के बाद लांघा जाता है । मत भूलो, मल्होत्रा साहब ने तुम पर इल्जाम लगाया है कि तुम रमेश के बच्चे की मां बनने वाली थीं ?”

“ह...हाँ ।” डिंपी ने अपनी नजरें नीचे झुका लीं और वो हिम्मत करके धीमे स्वर में बोली- “य...यह सच है । म...मैं वाकई रमेश के बच्चे की मां बनने वाली थी ।”

“और क्या यह भी सच है ।” पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और जोर से चिल्लाया- “कि बुधवार की रात तुम किसी हॉस्पिटल में भर्ती होने के लिये जा रही थीं ?”

“ह...हाँ, यह भी सच है ।”

“फिर तुम किसी हॉस्पिटल में गयी क्यों नहीं ?”

“क...क्योंकि बीच रास्ते में ही मेरी डिलीवरी हो गयी थी ।” डिंपी बोली- “यह इत्तेफाक है कि मेरे पेट से मरे हुए ब...बच्चे ने जन्म लिया, जिसे हमने उसी रात यमुना नदी में बहा दिया ।”

“म...डिंपी !” रमेश हिस्टीरियाई अंदाज में चिल्ला उठा, उसके नेत्र अचम्भे से फट पड़े थे- “य...यह तू क्या कह रही है डिंपी, शायद तेरा दिमाग खराब हो गया है ।”

“दिमाग मेरा नहीं बल्कि तुम्हारा खराब हुआ है रमेश ।” डिंपी कोर्ट-रूम में पहली बार गला फाड़कर चिल्लाई- “जब मुझे अपनी इज्जत की फिक्र नहीं है, तो फिर तुम मेरी इज्जत के लिये अपनी जान की बाजी क्यों लगा रहे हो ? क्यों ज़बरदस्ती फांसी के फंदे पर लटक जाना चाहते हो ? तुम इस बात को कबूल क्यों नहीं कर लेते कि हमारे बच्चा हुआ था । आखिर हम

एक-दूसरे से प्यार करते हैं रमेश ! और प्यार कोई पाप तो नहीं होता ।”

रमेश की खोपड़ी अंतरिक्ष में चक्कर काटने लगी ।

वह हैरान रह गया ।

बुरी तरह हैरान ।

“क्या आपको मुझसे कोई और सवाल पूछना है ?” डिंपी ने पब्लिक प्रॉसीक्यूटर की तरफ देखा ।

“न...नहीं, कुछ नहीं पूछना ।”

डिंपी विटनेस बॉक्स से निकलकर दर्शक दीर्घा में जा बैठी ।

यह रौनक मल्होत्रा के दिमाग का ही कमाल था, जो अब पूरा केस पलट चुका था ।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के हौसले पस्त हो चुके थे, लेकिन उसने रमेश को फंसाने के लिये अपनी तरफ से एक आखिरी चाल और चली ।

"मी लॉर्ड- इससे पहले कि आप इस केस का कोई फैसला सुनायें ।" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर जज से सम्बोधित हुआ- "मैं आपसे एक अंतिम दरख्वास्त और करना चाहूँगा ।"

"कर सकते हो ।"

"मी लॉर्ड ।" प्रॉसीक्यूटर पुनः थोड़े आवेश में चिल्लाया- "अभी-अभी केस ने जो नाटकीय मोड़ लिया और मेरे काबिल दोस्त रौनक मल्होत्रा साहब ने जो नई कहानी अदालत के सामने पेश की, उस कहानी के सिर्फ दो चश्मदीद गवाह हैं ।" पहला गवाह- रमेश ! दूसरी गवाह- डिंपी । जहाँ तक रमेश का सवाल है, वह डिंपी के बच्चा होने वाली कहानी को पूरी तरह झूठ का पुलिन्दा करार दे रहा है, जबकि डिंपी उसी कहानी को सच बता रही है । रौनक मल्होत्रा साहब ने रमेश की 'इंकार' के पीछे यह जो तर्क दिया है कि वो डिंपी की इज्जत बचाने के लिये झूठ बोल रहा है, मैं मानता हूँ कि ऐसा हो सकता है । परन्तु एक शक फिर भी रह जाता है मी लॉर्ड, और वो शक ये है कि क्या ऐसा नहीं हो सकता, मल्होत्रा साहब और डिंपी ने मिलकर रमेश को बचाने के लिये बच्चा पैदा होने वाली कहानी गढ़ ली हो । मी लॉर्ड !" पब्लिक प्रॉसीक्यूटर और बुलन्द आवाज में चिल्लाया- "मैं यह कहना चाहता हूँ कि अभी-अभी अदालत में जो कहानी सुनाई गयी, वह महज एक बेहद काबिल वकील के तेज दिमाग की उपज भी हो सकती है, कानून की आंखों में धूल झौंकने की यह एक साजिश भी हो सकती है । और हकीकत की तह तक पहुँचने का अब सिर्फ एक उपाय है मी लॉर्ड, सिर्फ एक उपाय ।"

"क...कौन-सा उपाय ?" जज के मुँह से भी सस्पेंसफुल स्वर निकला ।

"मेडिकल चेकअप !" इस बार सचमुच पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने भी धमाका कर दिया था ।

"म...मेडिकल चेकअप !"

"यस मी लॉर्ड !" प्रॉसीक्यूटर चीखता चला गया- "मैं मेडिकल चेकअप की बात कर रहा हूँ । मेरी अदालत से दरख्वास्त है कि डिंपी का किसी लेडी डॉक्टर के जरिये से मेडिकल चेकअप कराया जाये । अगर डिंपी के सचमुच कोई बच्चा हुआ है, वो प्रेग्नेंट हुई है, तो यह बात मेडिकल चेकअप के द्वारा बिल्कुल स्पष्ट हो जायेगी । कुल मिलाकर दूध का दूध और पानी का पानी करने के लिए इस समय हमारे पास सिर्फ एक हथियार बचा है, और वो हथियार है मेडिकल चेकअप ! अदालत जल्द-से-जल्द डिंपी का मेडिकल चेकअप कराये और उसके बाद ही इस केस के सम्बन्ध में कोई फैसला करे ।"

डिंपी के दिल-दिमाग पर सन्नाटा-सा खिंचता चला गया ।

उसे अपनी सारी कोशिशें बेकार होती नजर आयीं ।

यूँ लगा, जैसे अब रमेश को फांसी पर लटकने से कोई नहीं बचा सकता ।

परन्तु नहीं, पब्लिक प्रॉसीक्यूटर का मुकाबला आज रौनक मल्होत्रा से था ।

वो रौनक मल्होत्रा, जो प्रॉसीक्यूटर की उस बात को सुनकर जरा भी विचलित न हुआ ।

“मी लॉर्ड ।” रौनक मल्होत्रा मुस्कराता हुआ बोला- “मैं जानता था कि प्रॉसीक्यूटर साहब अदालत में इस पॉइंट को जरूर उठायेंगे, अदालत का कीमती वक्त बर्बाद न हो, इसलिये मैंने आज सुबह ही कोर्ट आने से पहले ऑल इंडिया मेडिकल इंस्टीट्यूट की लेडी डॉक्टर निकिता चॅटर्जी से डिंपी का मेडिकल चेकअप करा लिया था । यह है लेडी डॉक्टर द्वारा दी गयी वह मेडिकल रिपोर्ट, जिसमें बिल्कुल साफ-साफ लिखा है कि डिंपी पिछले दिनों गर्भवती रह चुकी है ।”

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर ने बेहद हैरतअंगेज स्थिति में मेडिकल रिपोर्ट को पढ़ा ।

उसमें वही सब कुछ लिखा था, जो रौनक मल्होत्रा ने बयान किया ।

जज ने भी वह रिपोर्ट पढ़ी ।

“मी लॉर्ड !” लेकिन पब्लिक प्रॉसीक्यूटर भी जैसे आज हार न मानने की सौगन्ध खा चुका था- “मैं फिर भी डिंपी का एक बार और मेडिकल चेकअप कराना चाहता हूँ ।”

“क्यों ?” रौनक मल्होत्रा ने पूछा- “आप डिंपी का दोबारा चेकअप क्यों कराना चाहते हैं ?”

“क्योंकि मुझे इस मेडिकल रिपोर्ट पर भी संदेह है मी लॉर्ड । मुझे शक है कि यह रिपोर्ट लेडी डॉक्टर और रौनक मल्होत्रा की मिली भगत का एक नमूना हो सकती है ।”

“आई ऑब्जेक्ट मी लॉर्ड !” रौनक मल्होत्रा इस बार इतनी जोर से चिल्लाया कि कोर्ट-रूम की दीवारें तक दहलती-सी लगीं- “प्रॉसीक्यूटर साहब सिर्फ मेरे ऊपर ही नहीं बल्कि एक लेडी की ईमानदारी और उसके नोबेल प्रोफेशन पर भी इल्जाम लगा रहे हैं । अगर वो सोचते हैं कि यह मेडिकल सर्टिफिकेट जाली है, तो खुशी-खुशी डिंपी का दूसरा चेकअप करा सकते हैं, मुझे कोई ऐतराज नहीं । लेकिन वो एक बात याद रखें ।” रौनक मल्होत्रा की आवाज में एकाएक चेतावनी का पुट आ गया- “अगर दूसरी मेडिकल रिपोर्ट में भी यही बात साबित होती है, तो मैं लेडी डॉक्टर की तरफ से प्रॉसीक्यूटर साहब पर न सिर्फ मान-हानि का दावा दायर करूंगा बल्कि इस वक्त इन्होंने अपने जिस्म पर यह जो काला चोगा पहन रखा है- उसे भी इसी भरी अदालत के अंदर उतरवा लूंगा । मी लॉर्ड- चूंकि इन्होंने यह इल्जाम एक लेडी डॉक्टर की कर्तव्यपरायणता और उसकी ईमानदारी पर लगाया है, इसलिये यह इल्जाम क्षमा के काबिल नहीं, माफी के काबिल नहीं ।”

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के छक्के छूट गये ।

उसकी एक सांस ऊपर, तो दूसरी नीचे रह गयी ।

“मिस्टर पब्लिक प्रॉसीक्यूटर !” जज ने सरकारी वकील की तरफ देखा- “क्या आप अभी भी डिंपी का दूसरा मेडिकल चेकअप कराने के इच्छुक हैं ?”

“ज...जी नहीं, बिल्कुल नहीं ।”

रौनक मल्होत्रा के होंठों पर विजयी मुस्कान दौड़ गयी ।

उसके बाद जज ने अपना फैसला सुनाया ।

“मिस्टर रमेश पर लगाया गया कोई भी अपराध अदालत में साबित नहीं हो सका है, इसलिये

ये अदालत मिस्टर रमेश को कांचा पहलवान की हत्या के इल्जाम से बाइज्जत रिहा करती है । परन्तु मिस्टर रमेश ने दिल्ली परिवहन निगम की बस में बिना टिकट यात्रा करके जरूर कानून का उल्लंघन किया है, इसलिये यह अदालत मिस्टर रमेश को एम.वी. एक्ट १९८८ की धारा १७८ के अन्तर्गत बिना टिकट यात्रा करने के अपराध में पांच सौ रुपये जुर्माना या पंद्रह दिन बामुशक्कत सख्त कैद की सजा सुनाती है ।”

रौनक मल्होत्रा ने फौरन कोर्ट में जुर्माने की राशि जमा कर दी ।

इस तरह रमेश कानून के शिकंजे में फंसने के बावजूद बच निकला ।

पहली ही पेशी पर बच निकला ।

मगर नहीं !

रमेश बचा कहाँ था ?

सच्चाई तो ये है कानून के शिकंजे से निकलने के बाद वो एक और ऐसे भयानक शिकंजे में जा फंसा कि उस शिकंजे में फंसने से बेहतर तो यही था, वो कानून के शिकंजे में फंसा रहता ।

बहरहाल रमेश के साथ ह्रदयविदारक और आश्चर्य से भरी घटनाओं का दौर जारी रहा ।

आगे भी ऐसी-ऐसी सनसनीखेज घटनायें उसके साथ घटी, जिन्होंने उसे हिलाकर रख दिया ।

९

"यह तुमने क्या किया डिंपी ।" अदालत के प्रांगण में आते ही रमेश डिंपी पर बरस पड़ा था- "इतना बड़ा झूठ क्यों बोला तुमने ?"

"तो और क्या करती मैं ?" डिंपी ने कहा- "अदालत तुम्हें फांसी की सजा सुना देती और मैं चुप रहती, खामोश रहती ?"

"ल...लेकिन इतना बड़ा झूठ डिंपी !" रमेश की आवाज कंपकंपायी-"अब दुनिया क्या कहेगी ? क...कितनी उंगलियां उठेंगी तुम्हारे चरित्र पर ?"

"मुझे लोगों की परवाह नहीं है, सिर्फ तुम्हारी परवाह है । मैं इस दुनिया के बगैर रह सकती हूँ, म...मगर तुम्हारे बिना नहीं रह सकती ।"

"म...डिंपी !" रमेश की आवाज कंपकंपा उठी ।

"और फिर एक झूठ से जिंदगी कहीं ज्यादा बड़ी होती है रमेश !"

"ल...लेकिन मैं पूरी तरह निर्दोष कहाँ था ।" रमेश का स्वर आत्मग्लानि से भर गया- "कानून से छिपकर लाश ठिकाने लगाना भी तो आखिर एक अपराध ही है ।"

"नहीं है अपराध ।" डिंपी बोली- "ऐसे अपराध दुनियां करती है रमेश ! तुमने सिर्फ लाश ठिकाने लगायी थी, वह भी दौलत के लिये, धनवान बनने के लिये । दुनिया में ऐसा कौन आदमी है, जो दौलत के लिये पाप नहीं करता ?"

रमेश हैरान निगाहों से डिंपी को देखने लगा ।

"ल...लेकिन तुमने मल्होत्रा जैसे बड़े वकील की फीस कहाँ से भरी डिंपी ?"

"म...मैंने फीस भरी ?" डिंपी चौंकी ।

"नहीं तो किसने भरी ?" रमेश बोला ।

"मुझे क्या पता, किसने भरी ?" डिंपी की आवाज में साफ-साफ हैरानी थी- "मैंने तो उसे एक पैसा भी नहीं दिया ।"

रमेश के दिमाग में पुनः धमाके से होने लगे ।

उसे अपने कानों पर एकाएक यकीन न हुआ ।

एक नये 'मायाजाल' की शुरुआत हो चुकी थी ।

"दरअसल रौनक मल्होत्रा खुद मेरे पास सोनपुर में आया था ।" डिंपी ने आगे बताया- "मैं तो उसे जानती भी नहीं थी, उसने मुझसे कहा कि रमेश को अदालत से रिहा कराने के लिये उसे मेरी गवाही की जरुरत है, मैं फौरन तैयार हो गयी, इंकार का प्रश्न ही नहीं था ।"

"उसने तुमसे अपनी फीस वगैरा के बारे में कोई बात नहीं की ?" रमेश का कौतूहल बढ़ता जा रहा था ।

"नहीं-उसने मुझसे इस बारे में कोई बात नहीं की । रौनक मल्होत्रा ने मुझसे बस इतना कहा कि वो तुम्हारा केस लड़ रहा है, मुझे तो उस मैडीकल रिपोर्ट के बारे में भी कुछ मालूम न था, जिसे रौनक मल्होत्रा ने अदालत में पेश किया । मुझे गवाह के तौर पर जो बयान देना था, मल्होत्रा ने उस बयान की डिटेल भी मुझे बीच रास्ते में अपनी कार के अंदर बतायी ।"

रमेश सन्न रह गया । बिल्कुल सन्न । उसे लगने लगा, कुछ होने वाला है । कुछ बेहद चौंका देने वाला ।

तभी रमेश ने रौनक मल्होत्रा को कोर्ट-रूम से बाहर निकलते देखा, वह अपने कुछ वकील मित्रों और प्रशंसकों से घिरा उसी तरफ बढ़ा चला आ रहा था ।

रमेश ने उस तरफ तेजी से कदम बढ़ाये ।

"वकील साहब !" रमेश रौनक मल्होत्रा के सामने पहुँचकर बोला-"आपने बिना फीस लिये मेरा जो केस लड़ा, यह अहसान मैं आपका जिन्दगी भर नहीं उतार सकता । आप सचमुच फरिश्ते हैं ।"

"म...मैंने बिना फीस लिये केस लड़ा ?" रौनक मल्होत्रा के नेत्र यूं हैरानी से फटे, मानो उसने कोई बहुत चौंका देने वाली बात सुन ली हो- "इस तरह का अहसान तो मैंने आज तक अपनी पूरी लाइफ में कभी किसी पर नहीं किया बंधु ! आज से पांच साल पहले जब मैंने जिंदगी में पहली बार वकील का यह काला चोगा पहना था, तभी एक सौगन्ध खाई थी कि बिना फीस लिये मैं अपने सगे बाप का भी केस नहीं लड़ूंगा और अपने उस फैसले पर मैं आज तक अटल हूँ ।"

"इ...इसका मतलब आपको फीस मिल गयी ?" रमेश के मुँह से सिसकारी छूटी ।

"बिलकुल मिल गयी बंधु ! अगर मुझे फीस न मिलती या अगर मुझे कोई तुम्हारे केस पर अप्वाइंट न करता, तो मुझे भला तुम्हारा केस लड़ने की क्या जरुरत थी ? मैं एक क्रिमिनल लॉयर हूँ बंधु, कोई समाज सेवक थोड़े ही हूँ ।"

ल...लेकिन मेरा केस लड़ने की आपको कितनी फीस मिली ?"

"पांच लाख रुपये ।"

प...पांच लाख । "रमेश के नेत्र अचम्भे से उबले ।

"संभल के ।" रौनक मल्होत्रा ने उसे फौरन थाम लिया था-"संभाल के बंधु ! पांच लाख का नाम सुनकर शायद तुम्हें मिर्गी का दौरा पड़ गया लगता है ।"

"ल...लेकिन आपको इतनी रकम किसने दी साहब ? क...किसने आपको मेरे केस पर अप्वॉइंट किया ?"

"एक हमारे-तुम्हारे जैसा ही सिम्पल-सा आदमी था बंधु ! उसी ने मुझे तुम्हारे केस पर अप्वॉइण्ट किया था ।"

"अ...आप मुझे उस आदमी का नाम बता सकते हो साहब, उसका पता बता सकते हो ?"

"क्या करोगे उसका नाम और पता जानकर ?"

“उ...उसका धन्यवाद अदा करूंगा साहब ।” रमेश बोला- “उस फरिश्ते को दण्डवत प्रणाम करूंगा, जो उसने मेरे जैसे मामूली आदमी की जिंदगी बचाने के लिये अपने पांच लाख रुपये दांव पर लगा दिये । वैसे भी कम-से कम एक बार मुझे उस फरिश्ते की सूरत तो देखनी ही चाहिये ।”

“कह तो तुम ठीक रहे हो बन्धु !” रौनक मल्होत्रा ने अपना सोने के फ्रेम वाला ऐनक दुरुस्त किया ।

यही वो पल था, जब किसी वाहन का जोर-जोर से दो बार हॉरन बजा ।

वह हॉरन बेहद ख़ास स्टाइल में बजाया गया था ।

रौनक मल्होत्रा और रमेश, दोनों ने चौंककर हॉरन की दिशा में देखा ।

कोर्ट के कच्चे प्रांगण में ही सफेद रंग की एक होंडा सिटी खड़ी थी, उसी कार में बैठे व्यक्ति ने जोर-जोर से दो बार हॉरन बजाये थे ।

मल्होत्रा से दृष्टि मिलते ही वह मुस्कराया ।

“लो बंधु !” मल्होत्रा के होठों पर भी मुस्कान दौड़ी थी- “तुम अभी मुझसे उस व्यक्ति के बारे में पूछ रहे थे न, जिसने मुझे तुम्हारे केस पर अप्वॉइण्ट किया और फीस के पांच लाख रुपये दिये, यही वो व्यक्ति है ।”

रमेश ने आश्चर्यचकित निगाहों से उस व्यक्ति को देखा ।

वह एक हृष्ट-पुष्ट शरीर वाला कद्दावर जिस्म का आदमी था, उसने शरीर पर शानदार थ्री पीस सूट पहना हुआ था और आंखों पर काले रंग का सनग्लास चढ़ा रखा था ।

रमेश के लिये वह बिलकुल अजनबी आदमी था ।

उसने जीवन में पहले कभी उसकी शक्ल तक नहीं देखी थी ।

“इ...इस आदमी ने आपको मेरा केस लड़ने के लिये अप्वॉइण्ट किया ?”

“हाँ ।”

“ल...लेकिन मेरा तो इससे कोई वास्ता नहीं ।”

“तुम्हारा इससे कोई वास्ता न बंधु, मगर हो सकता है कि उसका तुम्हारे से कोई वास्ता हो ।”

तभी कार में बैठे उस आदमी ने फिर जोर-जोर से दो बार हॉरन बजाया ।

“जाओ भाई !” मल्होत्रा ने उसका कंधा थपथपाया-“वह तुम्हें ही बुला रहा है ।”

“ल...लेकिन... !”

“अब जो सवाल पूछना हो, उसी से पूछना बंधु । तुम्हारे सवालों के जवाब वही बेहतर दे सकता है ।”

रमेश मरे-मरे कदमों से कार की तरफ बढ़ा ।

न जाने क्यों उसे किसी भारी खतरे का अहसास हो रहा था ।

“और सुनो ।”

मल्होत्रा की आवाज सुनकर रमेश के कदम फिर ठिठके ।

“मैंने तुम्हें बचाने के लिये कोर्ट में जो मनगढंत कहानी सुनायी थी, मैं समझता हूँ कि उससे तुम्हारी भावनाओं को काफी ठेस पहुँची है, उसके लिये मैं तुमसे माफी चाहता हूँ । लेकिन अगर सच पूछते हो, तो तुम्हें बचाने के लिये इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता भी न था । क्योंकि काफी सबूत तुम्हारे खिलाफ अदालत में इकट्ठे हो गये थे ।”

रौनक मल्होत्रा ने आगे भी कुछ कहा, परन्तु वह सब रमेश ने न सुना ।

क्योंकि तभी उसने जग्गु को बड़े खतरनाक अंदाज में लम्बे फल वाला चाकू खोलकर मल्होत्रा की तरफ लपकते देख लिया था ।

उसके चेहरे पर हैवानियत बरस रही थी ।

वह साक्षात दरिन्दा नजर आ रहा था ।

“मल्होत्रा साहब !” रमेश चीखता हुआ रौनक मल्होत्रा के ऊपर गिद्ध की तरफ झपटा- “ब...बचो मल्होत्रा साहब ।”

लेकिन वह मल्होत्रा को बचा पाता, उससे पहले ही जग्गु उसके सिर पर जा चढ़ा ।

अगले ही पल जग्गु का चाकू हवा में इस तरह कौंधा, जैसे आकाश में बिजली कौंधी हो, फिर वो पलक झपकते ही मल्होत्रा के सीने में जा घुसा ।

“न...नहीं ।”

चिंघाड़ उठा मल्होत्रा, वह भैंसे की तरह डकराया ।

उसके हाथ में मौजूदा फाइल छूट गयी और उसके अंदर दबे कागज़ हवा में इधर-उधर उड़े ।

जबकि जग्गु ने एक ही बार में सब्र नहीं किया था ।

वह बेहद जुनूनी अंदाज में एक के बाद एक मल्होत्रा के ऊपर चाकू से वार करता रहा ।

मल्होत्रा की दहशतनाक चीखें गूंजती रहीं, गूजती रहीं ।

“साले !” साथ ही साथ जग्गु चिंघाड़ता भी जा रहा था- “मेरे चाचा के हत्यारे को बचाने के लिये झूठ बोलता है, नहीं छोड़ूंगा । मैं आज तुझे नहीं छोड़ूंगा । तू कानून का फैसला बदल सकता है हरामजादे, लेकिन जग्गु का नहीं । और ले, और ले !” भीषण गर्जना करते हुए जग्गु का चाकू वाला हाथ बिलकुल मशीनी अंदाज में मल्होत्रा के सीने पर पड़ने लगा ।

खून में लथपथ हो गया रौनक मल्होत्रा ।

कोर्ट प्रांगण में खड़ा हर व्यक्ति स्तब्ध !

भौंचक्का !

किसी में भी इतनी हिम्मत न हुई, जो वह आगे बढ़कर जग्गु को दबोचे ।

उधर साक्षात नाग की तरह फुंफकारता हुआ जग्गु फिर रमेश की तरफ पलटा ।

उफ़ !

उसकी आँखों में खून-ही-खून था ।

छक्के छूट गये रमेश के ।

जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

“साले-हलकट !” जग्गु अर्द्धविक्षिप्तों की भांति चिंघाड़ा- “मैं आज तुझे भी नहीं छोडूंगा, तुझे भी नहीं ।”

रमेश हाय-तौबा मचाता वहाँ से अंजानी दिशा में भागा ।

उसके पीछे-पीछे जग्गु लपका ।

सचमुच आज उस पर बेपनाह जुनून सवार था ।

रमेश को अपना दिल दहलता-सा लगा ।

उसकी रूह फनां हो रही थी ।

“म...मैंने कांचा पहलवान का खून नहीं किया ।” रमेश भागता हुआ दहशतजदां आलम में चिल्ला रहा था- “म...मैं बेकसूर हूँ । म...मैं निर्दोष हूँ ।”

उसी क्षण धुआंधार रफ़्तार से दौड़ती हुई सफेद रंग की वही होंडा सिटी रमेश के नजदीक आकर रुकी ।

फिर धड़ाक से उसका स्लाइडिंग डोर खुला ।

“अंदर आ जाओ ।” साथ ही वही अजनबी शख्स चिल्लाया था ।

रमेश फ़ौरन लपककर कार में सवार हो गया ।

उसके बाद कार जिस तरह धुआंधार रफ्तार से दौड़ती हुई उसके नजदीक आयी थी, वैसी ही धुंआधार रफ्तार से आगे दौड़ती चली गयी ।

रमेश ने पीछे मुड़कर देखा, तो पाया कि इंस्पेक्टर राजविर एकाएक किसी जिन्न की तरह बेपनाह फुर्ती से दौड़ता हुआ कोर्ट के प्रांगण में प्रकट हुआ था, फिर वो वहशी जग्गु के ऊपर एकदम गिद्ध की तरह झपटा ।

कोई दस मिनट तक सफेद रंग की होंडा सिटी कार दिल्ली की विभिन्न सड़कों पर दौड़ती रही ।

रमेश जो थोड़ी देर पहले बुरी तरह हॉफ रहा था, बेहद डरा हुआ था, वह भी अब अपने आपको काफी हद तक संतुलित कर चुका था ।

मौत कैसे उसके करीब से गुजर गयी थी ।

कैसा वो आज मरते-मरते बचा था ।

रमेश के होश जब थोड़े से संतुलित हुए, तो उसने उस अजनबी व्यक्ति को देखा, जो वैन ड्राइव कर रहा था ।

अगर उस अजनबी के शानदार कपड़ों को नजरअंदाज कर दिया जाये, तो वह कोई धनवान कम तथा कोई गुण्डा-मवाली ज्यादा नजर आता था ।

"क्या बात है बिरादर, मुझे यूं घूरकर क्या देख रहा है ?" अजनबी थोड़े कठोर लहजे में बोला ।

"क...कुछ नहीं ।"

"फिर भी, कुछ तो ।"

"द...दरअसल मैं यह याद करने की कोशिश कर रहा हूँ साहब, मैंने आपको आज से पहले कहाँ देखा है ? या फिर हमारे बीच क्या सम्बन्ध हैं ?"

मुस्कुराया अजनबी ।

"याद आया कुछ ?"

"न...नहीं साहब, कुछ याद नहीं आ रहा ।"

"मैं तुम्हारी कुछ मदद करूं ?"

क...किस मामले में ?"

"तुम्हारी याददाश्त वापस लाने में ।"

"हाँ-हाँ क्यों नहीं । जरूर मदद करो ।"

"तो सुनो बिरादर, तुम ख्वामखाह अपने दिमाग पर जोर डाल रहे हो, ख्वामखाह परेशान हो रहे हो ।"

"क...क्यों ?"

"क्योंकि बिरादर, तुम्हारे और मेरे बीच कोई सम्बन्ध नहीं है, हम दोनों आज से पहले कभी मिले भी नहीं, फिर ऐसी परिस्थिति में तुम अपने दिमाग पर जोर डालकर ख्वामखाह परेशान ही तो हो रहे हो ।"

रमेश दंग रह गया ।

कार अभी भी तूफानी गति से सड़क पर दौड़ रही थी ।

“अ...आपके और मेरे बीच सचमुच कोई सम्बन्ध नहीं ?” रमेश ने पुनः हैरतअंगेज स्वर में पूछा ।

“बिलकुल भी नहीं बिरादर ! हमारे बीच सम्बन्ध क्या खाक होना है ? मैं तो आज तुम्हारी सूरत भी पहली बार देख रहा हूँ ।”

रमेश की कौतूहलता अब अपनी चरम सीमा पर पहुँच गयी ।

“अ...अगर हमारे बीच कोई सम्बन्ध नहीं साहब ।” रमेश सनसनाये स्वर में बोला-“तो आपने मुझे छुड़ाने के लिये रौनक मल्होत्रा जैसे महंगे वकील को अप्वाइण्ट क्यों किया ? उसे पांच लाख रुपये की बड़ी धनराशि फीस के तौर पर क्यों दी ?”

“यह दुनियां बड़ी निराली है बिरादर ।” अजनबी मुस्कराकर बोला- “इस दुनियां के दस्तूर बड़े निराले हैं । यहाँ कब कौन किस पर मेहरबान हो जाये, कुछ पता नहीं चलता ।”

“ल...लेकिन मुझे यह तो मालूम पड़े साहब !” रमेश की कौतूहलता बढ़ती जा रही थी- “आपने मेरे ऊपर वह रकम खर्च क्यों की ?”

“वजह तो मुझे भी नहीं मालूम, असली वजह तो उसे ही मालूम है, जिसने यह सारा इंतजाम किया है ।”

“य...यानि ।” रमेश उछल पड़ा- “यानि वह व्यक्ति कोई और है, जिसने मुझे आजाद कराया है ?”

“हाँ ।” अजनबी सहज भाव से बोला- “वह व्यक्ति कोई और ही है । मैंने रौनक मल्होत्रा को तुम्हारे केस पर अप्वॉइंट जरूर किया था, लेकिन मुझे उसको अप्वॉइंट करने का आदेश किसी और से मिला था । इसी तरह मैंने रौनक मल्होत्रा को तुम्हारा केस लड़ने के लिए पांच लाख की रकम दी जरूर, लेकिन वो रकम मेरी जेब से नहीं निकली थी । मैं तो सिर्फ एक माध्यम हूँ, मैंने तो महज एक बिचौलिये की भूमिका निभाई है ।”

रमेश के दिमाग में जोर-जोर से कोई चक्की-सी चलने लगी ।

उसे लगने लगा, अगर हालात ऐसे ही बने रहे, तो उसे पागल होने से कोई नहीं बचा सकता ।

“ल...लेकिन फिर वह कौन है साहब ।” रमेश बुरी तरह झल्लाये स्वर में बोला- “जिसने मेरी मदद की ? जिसने मुझे आजाद कराया ?”

“सब्र रख बिरादर, थोड़ी देर सब्र रख । अभी मालूम हो जायेगा कि वो समाज सेवक कौन है, वो महान रहनुमा कौन है ।”

यही वो पल था, जब अजनबी ने होंडा सिटी एक बेहद निर्जन-सी जगह पर ले जाकर रोक दी ।

फिर उसने कार के डैश बोर्ड के अंदर से काले रंग की एक चौड़ी पट्टी निकालकर रमेश की तरफ बढ़ाई- "लो इस काली पट्टी को अपनी आंखों पर बांध लो और खामोशी से सीट पर लेट जाओ ।"

"प...पट्टी आंखों पर बांध लूं ?" रमेश का दिल जोर से धड़का ।

"हाँ ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि जिस महान समाज सेवक ने तुम्हारी मदद की है, उससे जो भी मिलता है, इसी तरह मिलता है ।"

"अ...आंखों पर पट्टी बांधकर ?" रमेश के नेत्र और ज्यादा हैरानी से फटे ।

"हाँ ।"

"क...किसी से मिलने का यह कौन-सा तरीका हुआ भला ?"

"बिरादर !" अजनबी एकाएक नाटकीय लहजे में बोला- "बड़े लोगों की हर बात अलग होती है, हर तरीका जुदा होता है । उनका ऐसा ही तरीका है । चलो, जल्दी से आंखों पर पट्टी बांधो ।"

उस पल रमेश को न जाने क्यों फिर ऐसा अहसास हुआ कि वह किसी नये 'चक्कर' में फंसने जा रहा है ।

"चक्कर के नाम से ही उसकी रूह कांप उठी ।

"अब जल्दी करो बिरादर ।"

"न...नहीं ।" रमेश भी शीघ्रतापूर्वक बोला- "मुझे यह काली पट्टी अपनी आंखों पर नहीं बांधनी ।"

"कैसे नहीं बांधनी पट्टी ।" अजनबी इस बार थोड़े सख्त लहजे में बोला-"अगर पट्टी नहीं बांधोगे, तो उस समाज सेवक से किस तरह मिलोगे, जिसने तुम्हारी मदद की ?"

"मुझे नहीं मिलना किसी से ।" रमेश एकाएक कार के डोर की तरफ झपटा- "उन्होंने मेरी जो मदद की, उसके लिये तुम उनसे मेरा धन्यवाद बोलना ।"

रमेश डोर खोलकर कार से बाहर हो पाता ।

"साले तेरी तो... ।"

उससे पहले ही अजनबी ने उसे एक बड़ी मोटी, भद्दी सी गाली बकी तथा वह बेपनाह फुर्ती से उसके ऊपर यूं झपटा, जैसे चील मांस के लोथड़े पर झपटती है ।

पलक झपकते ही रमेश की शर्ट का कॉलर अजनबी के फौलादी शिकंजे में था ।

फिर उसने रमेश के शरीर को झटका दिया, तो वह पीछे को उछलकर धड़ाम से वैन की सीट पर जा गिरा ।

अजनबी फौरन उसके सीने पर चढ़ बैठा ।

उसने उसके हाथों को पीछे बांध दिया ।

“मैं देखता हूँ साले ।” अजनबी ने उसे भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा- “तू इस काली पट्टी को कैसे अपनी आंखों पर नहीं बांधता ।”

“मुझे नहीं बांधनी पट्टी ।” रमेश और जोर से हलक फाड़कर चिल्ला उठा- “छोड़ दो मुझे, वरना मैं चीख-चीखकर भीड़ जमा कर लूंगा ।”

वह अजनबी के शिकंजे में मचल उठा ।

उसने हाय-तौबा मचा डाली ।

ठीक तभी आवेश में बुरी तरह भिन्नाये अजनबी का हाथ हवा में लहराया तथा फिर धड़ाक से रमेश की खोपड़ी पर पड़ा ।

तुरंत ही रमेश की बोलती बन्द हो गयी ।

उसके नेत्र दहशत से फट पड़े और गर्दन दायीं तरफ लुढ़क गयी ।

इसमें कोई शक नहीं, तमाशा तो सचमुच अब शुरू हुआ था ।

रमेश की चेतना जब धीरे-धीरे लौटनी शुरू हुई, तो उसने महसूस किया कि उसका शरीर टब के पानी में पड़ा हिचकौले-सा खा रहा है ।

उसने आहिस्ता-आहिस्ता पलकें खोल दीं ।

फिर वह टब में ही एकदम से उछलकर खड़ा हो गया ।

फौरन उसके दिमाग को झटका लगा ।शक्तिशाली झटका ।

उसके सामने अजनबी के साथ जो दो और व्यक्ति खड़े थे, उन्हें वहाँ देखकर वो हैरान रह गया ।

वह एक काफी बड़ा हॉल था, जिसकी छत डबल हाइट वाली थी और फर्श काले पत्थरों का था ।

उस हॉल के बीचों-बीच वो विशाल टब रखा था, जिसमें वो थोड़ी देर पहले तक किसी लाश की तरह तैर रहा था । हॉल से जुड़े हुए ही वहाँ कई सारे कमरे भी थे ।

“त...तुम ।” रमेश शक्ल-सूरत से ही बेहद घाघ नजर आ रहे एक व्यक्ति की तरफ उंगली उठाकर बोला- “त...तुम तो सेठ रुपचंद ज्वैलरी शॉप के वही सेल्समैन हो न, जिसके पास मैं उस दिन नटराज की एक मूर्ति बेचने गया था ?”

मुस्कराया सेल्समैन, उसकी मुस्कान भी बेहद खतरनाक थी ।

“और तुम ।” तत्क्षण रमेश की उंगली चालीस-पैंतालीस साल के एक अन्य व्यक्ति की तरफ उठी- “त...तुम सर्राफों के सर्राफ सेठ रुपचंद हो ?”

वह भी आहिस्ता से मुस्करा दिया ।

“मैं पूछता हूँ ।” रमेश चिल्ला उठा- “मुझे यहाँ क्यों लाया गया है ?” झुंझलाहट में रमेश ने दौड़कर अजनबी का गिरेहबान पकड़ लिया और उसे बुरी तरह झंझोड़ डाला- “जवाब दो, तुम तो मुझे उस व्यक्ति के पास ले जाने वाले थे, जिसने मेरी मदद की, मुझे कानून के शिकजे से छुड़ाया ?”

अजनबी ने रमेश के हाथों से अपना गिरेहबान छुड़ाया तथा फिर उसे इतना तेज झटका दिया कि वो सीधा सेठ रुपचंद के कदमों में जा गिरा ।

“सेठ रुपचंद ही वह व्यक्ति है ।” उसी पल अजनबी ने तेज धमाका-सा किया- “जिन्होंने तुम्हारी मदद की ।”

“क...क्या ?”

हतप्रभ रह गया रमेश ।आश्चर्यचकित ।

“त...तुमने !” वह हैरतअंगेज निगाहों से सेठ रुपचंद को देखता हुआ बोला- “तुमने मेरी मदद की ? त...तुमने मुझे आजाद कराया ?”

“हाँ ।”

“लेकिन क्यों ? क्यों तुमने मेरी मदद की ? क...क्यों मुझे आजाद कराया ?”

“वड़ी तू पागल हुआ है नी ।” सेठ रुपचंद सिंधी भाषा में ही बोला-“वडी तू अपने आपको आजाद समझ रहा है रमेश साई !”

“क...क्या मतलब ?”

“मतलब बिलकुल साफ है साईं, तू आजाद हुआ कहाँ है ? वडी हमारी मेहरबानी से तो सिर्फ जगह बदली हुई है । पहले तू पुलिस का मेहमान था, अब हमारा मेहमान है । फिर इसमें तेरी मदद कहाँ से हो गयी ?”

रमेश के नेत्र दहशत से फैल गये ।

“य...यानि तुमने मुझे यहाँ कैद करके रखा है ?”

“बिल्कुल ।” सेठ रुपचंद के होठों पर मजाक उड़ाने वाली मुस्कान दौड़ी- “वड़ी रमेश साईं, हमने तुझे यह कैद इसलिये दी है, ताकि हम तुझसे उन सवालों के जवाब उगलवा सकें, जिन्हें इंस्पेक्टर राजविर भी न उगलवा सका ।”

“क...कौन से सवालों के जवाब ?” रमेश की आवाज कंपकंपायी ।

“वडी यही कि तूने कांचा पहलवान जैसे धुरंधर आदमी की हत्या क्यों की ? किसने तुझे उसकी हत्या करने के लिये प्रेरित किया ? यह काम तेरे जैसा सिंगल सिलेण्डर का आदमी अकेले तो हरगीज भी नहीं कर सकता, मुझे अपने साथी का नाम बता साईं ! वडी उस हराम के बच्चे का नाम बता, जिसने तुझसे यह खतरनाक जुर्म कराया ?”

रमेश के पूरे शरीर में सनसनी दौड़ गयी ।वह आतंकित हो उठा । कहने की जरुरत नहीं कि रमेश एक नये ‘चक्कर’ में फंस चुका था ।

“वडी जल्दी बोल साईं !” रुपचंद की त्यौरियां चढ़ गयी- “जल्दी जवाब दे, किसके कहने पर तूने कांचा पहलवान का खून किया नी ?”

रमेश झुंझला उठा- “कौन कहता है कि मैंने कांचा पहलवान का खून किया है ?”

“वडी मैं कहता हूँ ।” रुपचंद ने बड़े रौब से अपना सीना ठोका- “हालात कहते हैं ।”

“लेकिन यह सब झूठ है ।” रमेश चिल्ला उठा- “खुद तुम्हारे वकील रौनक मल्होत्रा ने अदालत में साबित किया है कि मेरा कांचा पहलवान के खून से कोई वास्ता नहीं था, कोई सम्बन्ध नहीं था । मुझे तो जबरदस्ती उस केस में फंसाया गया था ।”

“साले !” रुपचंद की आंखों में शोले लपलपाये- “मेरी गोली मेरे को ही देता है । वडी रौनक मल्होत्रा ने अदालत में जो कहानी सुनाई, वो झूठी थी, मनगढंत थी । हकीकत ये है साईं, बुधवार की रात जो ऑटो रिक्शा रीगल सिनेमा के सामने देखी गयी, वह तेरी ऑटो रिक्शा थी । वडी तू ही कांचा पहलवान को वहाँ से लेकर भागा, तूने ही उसका खून किया । हमें सब मालूम है रमेश साईं ! उस रात डिंपी के कोई बच्चा नहीं होने वाला था । जब फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते ने तेरी ऑटो रिक्शा मण्डी हाउस जाने वाले मार्ग पर रोंकी, तो उसमें डिंपी, कांचा पहलवान की लाश के ऊपर लेटी थी ।”

“यह सब झूठ है ।” रमेश हलक फाड़कर चीखा- “झूठ है ।”

“वडी यह सब सच है हरामी, सच है ।” रुपचंद उससे भी ज्यादा जोर से चिल्लाया था ।

“ल...लेकिन अगर यह सब सच है ।” रमेश गले का थूक सटकता हुआ बोला- “तो रौनक मल्होत्रा ने मेरे लिये अदालत में झूठ क्यों बोला ? आखिर वो तुम्हारा वकील था, तुमने उसे अप्वॉइंट किया था ।”

“रमेश साईं, मल्होत्रा ने वह झूठ हमारे कहने पर बोला ।”

“त...तुम्हारे कहने पर ?”

“हाँ ।” सेठ रुपचंद ने दांत किटकिटाये- “वडी तभी तो तू पुलिस की कैद से आजाद होकर हम तक पहुँच सकता था नी । साईं तुझसे सारी हकीकत उगलवाने के लिये तेरा पुलिस कस्टडी से रिहा होना बेहद जरुरी था ।”

“ल...लेकिन तुम कांचा पहलवान की हत्या के बारे में इतनी गहन पूछताछ क्यों कर रहे हो, तुम्हारा उससे क्या सम्बन्ध था ?”

“सम्बन्ध !” रुपचंद का चेहरा एकाएक धधकता ज्वालामुखी बन गया- “वडी तू मेरे और कांचा पहलवान के सम्बन्धों के बारे में पूछता है नी ? साईं कांचा पहलवान ताकत था मेरी, वो मेरा साथी था, मेरा दायां बाजू था ।”

“स...साथी !” रमेश के मुँह से सिसकारी छूटी- “च...कांचा पहलवान तुम्हारा साथी था ?”

“न सिर्फ साथी था बल्कि वो मेरा दोस्त भी था वडी, वो मेरी हर योजना को कामयाब बनाता था ।”

रमेश की आंखों में आतंक की छाया डोल गयी ।

और अब उसे यह समझते देर न लगी कि सेठ रुपचंद क्यों कांचा पहलवान के हत्यारे के पीछे पड़ा था, यह बात भी तीर की तरह उसके दिमाग में हलचल मचाती चली गयी कि सेठ रुपचंद ने रौनक मल्होत्रा को पांच लाख रूपये की धनराशि उसके लिये नहीं दी थी बल्कि कांचा पहलवान की रहस्यमयी मौत की गुत्थी सुलझाने की राह में उसने वो धनराशि खर्च की थी ।

तुरन्त ही रमेश के मानस-पटल पर उस दिन का दृश्य भी कौंधा, जब वह सीना चौड़ाकर दरीबा कलां में सेठ रुपचंद की दुकान पर मूर्ति बेचने गया था । उसे वह क्षण भी याद आये, जब उसने सेल्समैन के सामने कांचा पहलवान का नाम ले दिया था । कांचा पहलवान का नाम सुनते ही उसके शरीर में कैसी बिजली दौड़ी थी ? कितनी तेजी से वो मूर्ती लेकर अंदर की तरफ भागा था ?

जरूर इसीलिए तब उन्होंने अपने गुण्डे साथियों को वहाँ बुलाया था, क्योंकि उसने कांचा पहलवान का नाम लिया था

रमेश के शरीर से पसीने की धारायें बहने लगीं ।

कितने बड़े चक्रव्यूह में फंसता जा रहा था वो ।

कैसे इतफाक हो रहे थे उसके साथ ।

वह मूर्ति भी बेचने गया था, तो सेठ रुपचंद की दुकान पर ।

उसी की दुकान पर जिसका कांचा पहलवान साथी था ।

“ल...लेकिन इससे ये कहाँ साबित होता है ।” रमेश थोड़ी हिम्मत करके बोला- “कि कांचा पहलवान का खून मैंने किया है ?”

“रमेश साईं !” सेठ रुपचंद ने उसे फिर भस्म कर देने वाली नजरों से घूरा- “वडी यह अदालत नहीं है, जहाँ कुछ भी साबित करने के लिये गवाहों की जरुरत होती है, सबूतों की जरुरत होती है । वडी हमें जो भी साबित करना होता है, जिससे जो भी कबूलवाना होता है, दो ही झांपडों में कबूलवा लेते हैं । लठ के दम पर कबुलवा लेते हैं । समझा नी !”

रमेश के पूरे शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी ।

“ल...लेकिन... ।”

“यह ऐसे कुछ नहीं बोलेगा बॉस !” अजनबी ने उसकी बात बीच में ही काट दी- “यह बड़ा गुरु-घंटाल आदमी है, जितना शरीफ दिखाई देता है, वास्तव में उतना ही चलता पुर्जा है, उतना ही खुराफाती है ।”

“अच्छा !”

“बिलकुल बॉस ! अगर यह भला मानस होता, तो इंस्पेक्टर राजविर के सामने ही सब कुछ न बक देता । आप मुझे इजाजत दो बॉस !” उसने थोड़ी व्यग्रता प्रदर्शन किया- “मैं अभी इसकी ऐसी धुनाई करता हूँ कि यह सब कुछ बकता हुआ नजर आयेगा ।”

“रहने दे-रहने दे ।” सेठ रुपचंद मीठी जबान में बोला- “वडी तू क्यों मार-पिटाई करता है, क्यों झगड़ा-फसाद करता है ? यह बहुत भला-मानस आदमी है, यह ऐसे ही सब कुछ बता देगा ।”

“यह इस तरह कुछ नहीं बतायेगा ।”

“ठीक है, मैं ट्राई करके देखता हूँ । अगर यह प्यार-मोहब्बत से कुछ न बताये, तो फिर तुम इसका जो मर्जी आये करना । रमेश साईं !” फिर सेठ रुपचंद ने बड़ी शहद मिश्रित जबान में उसे पुकारा ।

तुरन्त रमेश के गले की घण्टी जोर से उछली ।

उसे अपने देवता कूच करते महसूस दिये ।

“वडी तू काहे को अपनी धुनाई करवाना चाहता है साईं ! क्यों अपने इस जिस्म का पलस्तर उधड़वाना चाहता है । वडी तू कबूल क्यों नहीं कर लेता कि तूने ही कांचा पहलवान का खून किया है ।”

“म...मैंने कांचा पहलवान का खून नहीं किया ।”

“फिर झूठ !” अजनबी ने गुस्से में चिंघाड़ते हुए उसका गिरेहबान पकड़ लिया- “फिर झूठ !”

अजनबी ने धड़ाधड़ उसके मुँह पर झांपडों की बारिश डाली । इस बार सेठ रुपचंद ने भी कोई हस्तक्षेप न किया ।

फिर पिटाई का वह बेहद खौफनाक सिलसिला शुरू हो गया, जो पिछले कई दिन से रमेश का शायद नसीब बन चुका था ।

रमेश चिल्लाता रहा ।

हाहाकार करता रहा ।

डकराता रहा ।

लेकिन अजनबी ने उसकी दुर्दान्त धुनाई का रूटीन जारी रखा । जब रमेश की धुनाई करते-करते वह बुरी तरह हाँफने लगा था, तो वह उसे घसीटता हुआ पब्लिक टेलीफोन बूथ जैसे शीशे के एक केबिन के पास ले गया ।

“इस केबिन को देख रहा है, यह टॉर्चर केबिन है । मैं जब तुझे इस केबिन के अंदर बंद करूंगा, तो तू मौत मांगेगा । तू इस तरह तड़पेगा, जैसे रेगिस्तान की गरम रेत पर मछली तड़पती है ।”

अजनबी ने वह शब्द गुर्राते हुए कहे और उसके बाद रमेश को शीशे के उसी केबिन के अंदर धकेल दिया ।

इतना ही नहीं, उसे धकेलते ही उसने धड़ाक से दरवाजा भी बंद कर दिया था ।

केबिन के दायीं तरफ प्लाईबोर्ड पर एक पैनल भी लगा था, फिर अजनबी ने पैनल पर लगा एक स्विच भी दबा दिया ।

फौरन ही केबिन के अंदर लगे एक इंच व्यास के दो पाइपों के अंदर से पीले रंग की गैस निकलकर केबिन में भरनी शुरू हो गयी ।

वह ज्वलनशील गैस थी ।

कुछ ही देर बाद केबिन की स्थिति यह हो गयी कि उसके अंदर मौजूद रमेश दिखाई देना बंद हो गया ।

अब केबिन में सिर्फ गैस-ही-गैस दिखाई दे रही थी ।

पीली गैस !

तब अजनबी ने पैनल में लगा एक दूसरा स्विच दबाया ।

फौरन ही वो अन्य पाइप केबिन में मौजूद गैस को वापस खींचने लगे थे । जितनी तेजी से केबिन के अंदर गैस फैली थी, उतनी ही तेजी से वो वापस हटने लगी ।

जल्द ही सारी गैस केबिन के अंदर से गायब हो गयी थी ।

गैस के हटते ही केबिन में बंद रमेश नजर आया ।

उस थोड़ी देर में ही उसकी जीर्ण-शीर्ण हालत हो गयी थी ।

वह गठरी-सी बना पड़ा जोर-जोर से खांस रहा था ।

फिर अजनबी ने कैबिन का दरवाजा खोलकर उसे बाहर घसीट लिया ।

रमेश जैसे ही बाहर के वातावरण में आया और जैसे ही बाहर के वातावरण में मौजूद ऑक्सीजन उसके शरीर से टकराई, तो वह आर्तनाद कर उठा ।

उसे यूं लगा, मानों उसकी नस-नस सुलग उठी हो ।

अंग-अंग जलने लगा हो ।

वह चीखने लगा, वह सचमुच मछली की तरह छटपटाने लगा और अपने जिस्म के एक-एक अंग को झंझोड़ने लगा ।

“रमेश साईं !” सेठ रुपचंद अपने जूते ठकठकाता हुआ उसके करीब पहुँचा- “वडी अब तो तेरी अक्ल ठिकाने आयी नी या अभी भी नहीं आयी ? तू क्यों अपनी जान का दुश्मन बनता है । रमेश साईं, क्यों अपनी हड्डी-पसली बराबर कराता है । वडी अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा, बोल पड़ ! बोल पड़ !! वरना हमारे पास तेरे जैसे मच्छर की जबान खुलवाने के ऐसे-ऐसे नायाब हथकण्डे हैं कि तू तो तू तेरे फरिश्ते भी घबराकर बोल पड़ेंगे ।

फिर एक और ऐसी घटना घटी, जिसने रमेश को और अधिक चौंकाकर रख दिया ।

दरअसल सेठ रुपचंद ने अपनी जेब से एक मूर्ति निकाली थी, फिर उसे रमेश की पीड़ा से छटपटाती आंखों के गिर्द नचाता हुआ बोला-“साईं पहचानता है इस मूर्ति को ?”

रमेश ने फौरन वो मूर्ति पहचान ली ।

वो वही नटराज की मूर्ति थी, जिसे वो हड़बड़ाहट में ज्वैलरी शॉप पर छोड़ आया था ।

“वडी तू कुछ बोलता क्यों नहीं ?” सेठ रुपचंद गुर्राया- “पहचानता है इस मूर्ति को ?”

“ह...हाँ ।” रमेश की गर्दन बड़ी मुश्किल से हिली- “हाँ ।”

“यह मूर्ति तेरे पास कहाँ से आयी ?”

“म...मैंने इसे चुरायी थी ।”

“तूने !” सेठ रुपचंद हिस्टीरियाई अंदाज में चिंघाड़ उठा- “इसे तूने चुराया ?”

“ह...हाँ ।”

“रमेश साईं !" रुपचंद ने दांत किटकिटाये- “वडी क्यों तेरी खाल मसाला मांग रही है ? क्यों तू मरना चाहता है ? वह मूर्ति तूने चुरायी कंजर-तूने ! है तेरे अंदर इतना दम, जो तू इस मूर्ति को चुरा सके ।”

रमेश ने अपने होंठ सख्ती से भींच लिये ।

“वडी तू यही बात इंस्पेक्टर राजविर के सामने बोल देगा, अपने बयान से फिरेगा तो नहीं तू ?”

रमेश बगलें झांकने लगा ।

एक बात वो अब तक भली-भांति समझ चुका था, सेठ रुपचंद सिर्फ दिल्ली शहर के सर्राफों का सर्राफ ही नहीं है बल्कि वह कोई बड़ा गैगस्टर भी है, रैकेटियर भी है ।

“साले !” सेठ रुपचंद ने गुस्से में उसके बाल पकड़कर बुरी तरह झंझोड़े- “जिस मूर्ति को तू अपने द्वारा चुरायी गयी बता रहा है, वडी वो नेशनल म्यूजियम की चोरीशुदा मूर्ति है । और उन मूर्तियों को तूने नहीं बल्कि कांचा पहलवान के साथ मिलकर हमने चुराया था, हम सबने । उन मूर्तियों की संख्या छः थी रमेश साईं, जिन्हें कांचा पहलवान हादसे वाली रात हमारे सुपर बॉस डॉन अँटोनी को सौंपने जा रहा था । लेकिन बीच रास्ते में ही तूने कांचा पहलवान की हत्या करके उससे वह सभी छः नटराज मूर्तियां हड़प लीं । अब यह बता वह सभी छः नटराज

मूर्तियां कहाँ है ?”

छः नटराज मूर्तियां !

रमेश ने नेत्र अचंभे से फैले ।

उसे ऐसा लगा, मानो सेठ रुपचंद कोई भारी मजाक कर रहा था । एक नटराज मूर्ति तो खुद सेठ रुपचंद के हाथ में थी, फिर भी बाकी मूर्तियों की संख्या छः कैसे संभव थी ?

“रमेश साईं !” सेठ रुपचंद ने उसके बाल और बुरी तरह झंझोड़े-“वडी जल्दी बोल, छः नटराज मूतियां कहाँ हैं ?”

“ल...लेकिन अभी भी उन नटराज मूर्तियों की संख्या छः कैसे हो सकती है साहब ?”

“यह बता, उन मूर्तियों की संख्या छः कैसे नहीं हो सकती ?”

“क...क्योंकि साहब !” रमेश डरते-डरते बोला- “एक मूर्ति तो तुम्हारे हाथ में ही है ।”

“यह !” रुपचंद चिंघाड़ा- “यह तुझे मूर्ति दिखाई देती है ?”

अब !

अब रमेश के नेत्र और ज्यादा हैरानी से फैले ।

उसने अपनी पलकें फड़फड़ाकर मूर्ति को देखा, लेकिन वो शत-प्रतिशत मूर्ति ही थी ।

नटराज जी अपनी चिताकर्षक मुद्रा में विद्यमान !

“म...मुझे तो यह मूर्ति ही दिखाई देती है साहब !”

फौरन सेठ रुपचंद के भारी-भरकम हथौड़े जैसे हाथ का एक ऐसा झन्नाटेदार झांपड़ उसके मुँह पर पड़ा कि वो खड़े-खड़े फिरकनी की तरह घूम गया ।

उसकी आंखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे झिलमिला उठे ।

“साले-कंजर !” सेठ रुपचंद ने मूर्ति फिर उसकी आंखों के गिर्द नचायी- “वडी क्या तेरे को यह अब भी ये वही मूर्ति नजर आती है ?”

“ह...हाँ, यह....वही मूर्ति है ।”

धड़ाधड़ दो झांपड़ और उसके मुँह पर पड़े ।

रमेश की रुलाई छूटते-छूटते बची ।

“हरामजादे ! यह नटराज मूर्ति जो तू हमारी ज्वैलरी शॉप पर बेचने आया था, पीतल की मूर्ति है, सिर्फ पीतल की । इस पर सोने का पानी चढ़ा है ।”

रमेश सन्न रह गया । उसके दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी ।

इ...इसका मतलब जिन मूर्तियों के लिये इतना बड़ा हंगामा हुआ, जिनकी वजह से उसकी इतनी धुनाई हुई, व...वही मूर्तियां पीतल की हैं ?

रमेश का दहाड़े मार-मारकर रोने को दिल चाहा ।

“वडी रमेश साईं ।” सेठ रुपचंद ने उसके सिर पर हाथ फेरा, लेकिन उस हाथ फेरने में भी धमकी जैसा अहसास था- “अब तो तेरी समझ में आया कि इन मूर्तियों के अलावा भी तेरे पास छः और नटराज मूर्तियां कैसे हो सकती हैं । साईं, अब तू सीधे-सीधे मुझे यह बता कि तूने असली सोने की मूर्तियों कहाँ छिपाकर रख छोड़ी हैं ? इसके अलावा यह भी बता कि तूने यह सारा नाटक किसलिये किया ? किस वास्ते कांचा पहलवान से शुद्ध सोने की मूतियां हड़पकर यह नकली पीतल की मूर्तियां बनवाईं ? फिर इन्हें हमारी ज्वैलरी शॉप पर ही क्यों बेचने आया ? इसके पीछे भी जरूर कोई गहरा चक्कर है । वडी यह तेरे अकेले का काम तो हरगीज भी नहीं हो सकता नी ! जरूर तेरे साथ हमारा कोई दुश्मन भी मिला है । रमेश साईं !” सेठ रुपचंद ने उसके सिर पर हाथ फेरते-फेरते उसके बालों को अपनी मुट्ठी में कसकर जकड़ लिया- “अगर तू आज अपनी खैरियत चाहता है, अगर तू अपनी बॉडी के कलपर्जों को टुटवाना नहीं चाहता, तो चुपचाप मुझे मेरे दुश्मन का नाम बता दे । सोने की मूर्तियों का पता बता दे, वरना आज तेरी खैर नहीं साईं । फिर तो तू अपनी ज़िंदगी की किश्ती को डूबा समझ ।”

रमेश दहशत से पीला पड़ गया ।

उसे दूर-दूर तक अपने छुटकारे के आसार नजर नहीं आ रहे थे ।

“क्या तूने सोने की मूर्तियां डिंपी के पास रख छोड़ी हैं ?”

“न...नहीं ।” रमेश के जिस्म का रोआं-रोआं खड़ा हो गया ।

“फिर किसके पास रख छोड़ी हैं ? वडी कहीं तूने उस आदमी के पास तो असली मूर्तियां नहीं रख छोड़ी, जिसने इस पूरे खेल में हमारे खिलाफ तेरी मदद की ?”

“ऐसा कोई आदमी नहीं है ।” रमेश चिल्लाया- “यकीन मानो, ऐसा कोई नहीं है ।”

“फिर यह करिश्मा कैसे हो गया साईं ? वडी असली मूर्तियां किधर गयीं ?”

“मेरे पास नहीं हैं ।”

“वही तो मैं तुझसे पूछ रहा हूँ नी, अगर तेरे पास नहीं हैं तो किसके पास हैं ? मुझे पता क्यों नहीं बता देता तू ?”

रमेश ने अपने आपको विचित्र-सी दुविधा में फंसा महसूस किया ।

“द...देखो साहब !” रमेश लगभग परमेशित स्वर में बोंला- “म...मैं कबूल करता हूँ कि मैंने कांचा पहलवान के ब्रीफकेस से मूर्तियां हथियाई थीं, ल...लेकिन मैं इश्वर की सौगन्ध खाकर कहता हूँ, मैंने उसका खून नहीं किया, म...मैं खूनी नहीं हूँ । और जो मूर्तियों मैंने कांचा पहलवान के ब्रीफकेस से हथियाई थीं, वो भी यही मूर्तियां थीं ।”

“य...यह !” रुपचंद बोला- “पीतल की मूर्तियां ?”

“हाँ, यही नकली मूर्तियां साहब ! अगर मुझे पहले से इस बात का पता होता कि यह मूर्तियां पीतल की हैं, तो यकीन जानो-मैं कभी इस चक्कर में न पड़ता ।”

सेठ रुपचंद सहित सेल्समैन और अजनबी की आंखों में भी अब हैरानी के निशान उभर आये ।

उन्होंने सवालिया निगाहों से एक-दूसरे की तरफ यूँ देखा, मानो वह इस बात की तस्दीक करना चाहते हों कि रमेश की बात पर यकीन किया जाये या नहीं ?

“कहीं तू यह बात तो साबित नहीं करना चाहता बिरादर !” इस बार अजनबी बोला- “कि असली मूतियां तो कांचा पहलवान का हत्यारा ले गया और वो उन असली मूर्तियों की जगह ब्रीफकेस में नकली पीतल की मूर्तियां रख गया ?”

रमेश की आंखों में तेज चमक कौंध उठी ।

लेकिन जल्द ही उसकी आंखों से वो चमक भी गायब हो गयी ।

“नहीं ।” रमेश की गर्दन इंकार में हिली- “यह नहीं हो सकता ।”

“क्या नहीं हो सकता ?”

“यही कि जिसने कांचा पहलवान का खून किया, वही उन मूर्तियों को भी ले उड़ा ?”

“क्यों ?” सेठ रुपचंद की आंखों में सस्पैंस के भाव पैदा हुए- “वडी तेरे को यह बात कैसे मालूम कि वही उन मूर्तियों को न ले उड़ा ?”

“क्योंकि साहब, हत्यारे की दो गोलियां लगने के बावजूद भी कांचा पहलवान अपने पैरों पर दौड़ता हुआ मेरी ऑटो में आकर बैठा था, उस वक्त वह पूरे होश-हवास में था, अगर हत्यारे ने उसके ब्रीफकेस में से मूर्तियां निकालने की कोशिश की होती, तो उसकी तरफ से जबरदस्त विरोध जरूर होना था । फिर तुम लोगों को अखबार के माध्यम से इतना तो मालूम हो ही गया होगा कि गोलियां चलने की आवाज सुनते ही फ्लाइंग स्क्वाड की गश्तीदल गाड़ी फौरन तूफानी गति से गली के अंदर दौड़ी थी । अगर यह मान भी लिया जाये कि हत्यारे ने मूर्तियों को बदलने की हौसलामंदी दिखाई थी, तब भी वह इतनी जल्दी तो अपना काम हरगीज भी अंजाम नहीं दे सकता था कि गश्तीदल की गाड़ी गली में पहुँचने से पहले ही उसने मूर्तियां भी बदल दीं और वो वहाँ से फरार भी हो गया ।”

तीनों हैरतअंगेज नजरों से रमेश को देखने लगे ।

“साहब !” रमेश वातावरण को अपने पक्ष में होते देख बोला- “हत्यारा मूर्तियों को न ले उड़ा हो, इसका एक और बड़ा पुख्ता सबूत मेरे पास है ।”

“क...कैसा सबूत ?”

“जब कांचा पहलवान मेरी ऑटो में आकर बैठा था ।” रमेश उन्हें एक-एक बात अच्छी तरह समझाता हुआ बोला- “तो उसने ब्रीफकेस बड़े कसकर अपने सीने से चिपटा रखा था । अगर हत्यारे ने उसके ब्रीफकेस के अंदर से असली मूर्तियां निकाल ली थीं, तो कांचा पहलवान को क्या जरूरत थी कि वह गोलियां लगने के बावजूद भी उन ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटाये रखता ? लेकिन मैंने खुद अपनी आंखों से देखा था साहब, उसने न सिर्फ तब ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटा रखा था बल्कि अपने जीवन की आखिरी सांस तक भी वह उस ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटाये हुए था ।”

रमेश की बात सुनकर उस हॉल जैसे बड़े कमरे में सन्नाटा छा गया ।

“वडी इस पूरे घटनाचक्र से तो एक और बात भी साबित होती है ।” रुपचंद बोला ।

“कौन-सी बात ?

“यही कि उन मूर्ती को कम-से-कम कांचा पहलवान ने भी नहीं बदला था ।”

"क्यों ?"

"वडी अगर उसने वो मूर्तियां बदली होतीं, तब भी उसे क्या जरुरत पड़ी थी, जो वह उस ब्रीफकेस को अपने जीवन की आखिरी सांस तक बच्चे की तरह सीने से चिपटाये रखता । उसके द्वारा आखरी सांस तक ब्रीफकेस को अपने सीने से चिपटाये रखना ही इस बात को साबित करता है कि कांचा पहलवान नकली मूर्तियों की तरफ से पूरी तरह अंजान था ।"

सेठ रुपचंद के तर्क में वाकई जान थी ।

उस तर्क ने सभी को प्रभावित किया ।

अब सवाल ये था कि अगर वह मूर्तियां कांचा पहलवान ने भी नहीं बदली थीं, तो फिर किसने बदलीं ?

और बदली भी इस ढंग से कि कांचा पहलवान को कानों-कान भनक तक न हुई ।

"रमेश !" तभी सेल्समैन, रमेश से सम्बोधित हुआ- "एक बता बतायेगा ?"

"पूछो ।"

"तू बुधवार की रात अपनी ऑटो लेकर रीगल सिनेमा के सामने क्यों खड़ा था, जबकि यूनियन की हड़ताल चल रही थी ?"

रमेश ने सारा घटनाक्रम बता दिया ।

सच-सच बता दिया ।

"यानि...यानि तू वहाँ सिर्फ इसलिये खड़ा था, ताकि नाइट शो खत्म होने पर तू वहाँ से कोई सवारी ले जा सके और अपनी उधारी चुकता कर सके ?"

"हाँ ।"

"इसके अलावा कोई और वजह नहीं ?"

"बिलकुल नहीं ।"

"वडी तेरे को यह भी मालूम है ।" एकाएक सेठ रुपचंद दांत किटकिटाकर बोला- "कि अगर तेरे को वहाँ खड़ा ऑटो रिक्शा वाला तेरा कोई भाई-बंद देख लेता, तो यूनियन में तेरी क्या दुर्गति होती ?"

रमेश ने अपने होंठ सी लिये ।

"रमेश साईं, वह हड़ताल तोड़ने के जुर्म में तेरे खिलाफ कोई सख्त कदम उठा सकते थे । तुझे यूनियन मेम्बरशिप से बर्खास्त कर सकते थे । इतना ही नहीं, वह तेरा दिल्ली शहर में ऑटो रिक्शा भी चलाना बंद करा सकते थे ।"

"म...मैं जानता हूँ ।"

"सब कुछ जानते-बुझते तूने ऐसा किया नी, वडी बता सकता है क्यों ?"

"क्योंकि मैं उस समय नशे में था ।" रमेश बोला- "उस वक्त मुझे मालूम नहीं था कि मैं क्या करने जा रहा हूँ । उस वक्त तो मेरे ऊपर एक ही भूत सवार था, मैं किसी भी तरह दारु की

उधारी चुका दूं ।"

"बकता है साला !" अजनबी उसे फिर मारने दौड़ा ।

"रहने दे-रहने दे ।" रुपचंद ने उसे बीच में ही पकड़ लिया ।

"आप नहीं जानते बॉस !" अजनबी गुर्राया- "यह साला देखने में जरूर डेढ़ पसली का है, लेकिन पक्का हरामी है, पक्का कमीन है । देखा नहीं, पहले ही कैसी शानदार कहानी गढ़ के लाया है कंजर !"

उसने गुस्से में झुंझलाते हुए रमेश के पेट में एक लात जड़ दी ।

रमेश पुनः हलक फाड़कर डकराया !

"रमेश साईं !" सेठ रुपचंद ने उसे कहर बरपा करती नजरों से घूरा-"वडी मैं तेरे को आखिरी वार्निंग दे रहा हूँ । जो बात है, सच-सच बता दे । क्योंकि हमारी निगाह में और कोई ऐसा शख्स नहीं, जो मूर्तियां बदलने की जुर्रत कर सके या जिसे मूर्तियां बदलने का मौका हासिल हो । वडी सारे हालात चीख-चीखकर तुझे ही अपराधी ठहरा रहे हैं और कह रहे हैं कि असली मूर्तियां अभी भी तेरे पास हैं ।"

"मेरे पास मूर्तियां नहीं हैं, नहीं हैं ।" रमेश हलक फाड़कर डकरा उठा- "अगर मेरे पास असली मूर्तियां होती तो मुझे क्या जरुरत थी, जो मैं पीतल की मूर्तियां बनवाता ? फिर उन मूर्तियों को बनवाकर मैं तुम्हारी ही ज्वैलरी शॉप पर बेचने भी जाता ? मैंने जो कहना था साहब, कह दिया । अगर आप लोग अब भी मुझे अपराधी मानते हो, अब भी मुझे कसूरवार समझते हो, तो लो-मेरा जो मर्जी आये करो, मार डालो मुझे । कूट डालो मुझे ।"

कहने के साथ रमेश वहीं फर्श पर हाथ-पैर फैलाकर लेट गया तथा धीरे-धीरे सुबकने लगा ।

तीनों की हालत अजीब हो गयी ।

तीनों स्तब्ध !

क्या करें ?

"साईं !" तभी सेठ रुपचंद ने उसकी पीठ थपथपाई- "चल अब खड़ा हो ।"

रमेश खड़ा न हुआ ।

"वडी अब खड़ा भी हो नी, क्यों नखरे करता है ?"

रुपचंद ने उसे जबरदस्ती खड़ा किया ।

रमेश सुबकियां लेता हुआ अपने स्थान से उठा ।

"चल अब यह रोना-धोना बंद कर और चुपचाप हमें यह बता कि तूने इसके साथ की बाकि पांच मूर्तियां कहाँ छिपा रखी हैं ?"

"म...डिंपी के पास है ।"

"वह मूर्तियां हमें लाकर देगा ?"

रमेश ने सुबकते हुए ही स्वीकृति में गर्दन हिला दी ।

यह मालूम होने के बाद कि वह नटराज मूर्तियां वास्तव में सोने की नहीं बल्कि पीतल की हैं, अब उसे उनका करना भी क्या था ?

१०

अजनबी का नाम गुड्डू त्यागी था ।

गुड्डू त्यागी ही रमेश को सफेद रंग की होंडा सिटी कार में बिठाकर वापस सोनपुर तक ले गया ।

कार उसने सोनपुर के बाहर ही खड़ी कर दी ।

फिर वह रमेश की आंखों से काली पट्टी खोलता हुआ बोला- "जा, तू डिंपी से मूर्तियां लेकर आ । मैं यहीं खड़ा हूँ ।"

रमेश बड़ा हैरान हुआ ।

गुड्डू त्यागी ने उसके जाने और वापस आने की बात कुछ ऐसे यकीन के साथ कही थी, मानों उसे इस बात का पूरा भरोसा था कि वह लौट ही आयेगा ।फरार नहीं होगा ।

रमेश हैरान-सी मुद्रा में चुपचाप सोनपुर की तरफ बढ़ा ।

"और सुन !"

रमेश के कदम ठिठके ।

"अगर साले !" त्यागी दांत किटकिटाकर बोला- "तूने सेठ जी के सम्बन्ध में डिंपी के सामने या किसी के सामने एक शब्द भी जबान से बाहर निकाला, तो तेरी खैर नहीं ।"

"हूँ !"

"चल अब फूट यहाँ से और जल्दी लौटकर आ ।"

रमेश तेज-तेज कदमों से सोनपुर की तरफ बढ़ गया ।

उस वक्त पूरे सोनपुर में गहन अंधकार व्याप्त था ।

रात के बारह या एक बजे का वक्त रहा होगा ।

रमेश, डिंपी के घर के सामने पहुँचा और उसने दरवाजा थपथपाया ।

"कौन ?" अंदर से फौरन डिंपी की आवाज उभरी ।

"मैं रमेश !"

तुरंत सांकल खुलने की आवाज हुई तथा फिर झट से दरवाजा खुल गया ।

"तू ! आ, अंदर आ ।" रमेश को देखते ही डिंपी का चेहरा खिल उठा था ।

रमेश ने अंदर कदम रखा ।

पूरे घर में काजली अंधेरा व्याप्त था ।

“तू यहीं ठहर, मैं रोशनी का इंतजाम करती हूँ ।”

डिंपी तेजी के साथ पेट्रोमेक्स की तरफ बढ़ी और जल्द ही उसने पेट्रोमेक्स जला दिया ।

पेट्रोमेक्स जलते ही चारों तरफ रोशनी फैल गयी ।

रमेश एकदम से तड़प उठा, रोशनी फैलते ही उसने देखा कि डिंपी के साफ-सुथरे कपोलों पर आंसुओं की ढेर सारी बूंदें जमीं हुई थीं ।

जरूर डिंपी उसके वहाँ आने से पहले काफी देर तक रोती रही थी ।

“ऐ, इस तरह क्या देख रहा है ?” डिंपी बोली ।

“क...कुछ नहीं ।”

“कुछ तो ?”

“लाइट को क्या हुआ ?” एकाएक रमेश विषय बदलकर बोला-“बाहर तो सबकी आ रही है ।”

डिंपी का चेहरा सुत गया ।

“अ...अपनी लाइट नहीं आयेगी रमेश !” डिंपी बोली ।

“क...क्यों ?”

“आज दोपहर कट गयी ।”

“ल...लाइट कट गयी ।” रमेश इस तरह चौंका, मानो उसे बिच्छू ने काटा हो- “म...मगर क्यों ?”

“तू इस बात को छोड़ रमेश ! तू मुझे यह बता कि आज सुबह से कहाँ गायब था, मैं सारा दिन परेशान होती रही ।”

“मैं तेरे हर सवाल का जवाब दूंगा डिंपी, लेकिन पहले मुझे यह बता कि लाइट कैसे कटी ?”

“कैसे कटती ।” डिंपी थोड़ा कुपित होकर बोली- “मैंने पिछले दो महीने से बिजली का बिल नहीं भरा था, इस बृहस्पतिवार को बिल जमा करने की आखिरी तारीख थी, जिसे मैं नहीं जमा कर सकी । इसीलिए आज बिजली विभाग के दो कर्मचारी आये और लाइट काट गये ।”

“ब...बृहस्पतिवार बिल जमा करने की आखिरी तारिख थी ?” रमेश के मुँह से सिसकारी छूटी ।

“हाँ ।”

“कहीं...कहीं तूने बिल की रकम से ही तो मेरी उधारी नहीं चुका दी डिंपी ?”

डिंपी नजरें झुकाये खड़ी रही ।

जबकि रमेश तड़प उठा था ।

“ल...लेकिन तू अपने ऑफिस के साथियों से भी तो रुपये लेकर बिल जमा कर सकती थी डिंपी ?”

“वो अब मुझे कभी रुपये नहीं देंगे ।”

“क...क्यों ?”

“क्योंकि आज जब ऑफिस के बॉस को यह मालूम हुआ कि मैं तुम्हारे बच्चे की कुंवारी मां बनी थी, तो उन्होंने मुझे नौकरी से भी निकाल दिया ।”

हे भगवान !

रमेश का सीना छलनी होता चला गया ।

कैसा कहर टूट रहा था उसके ऊपर ।

“अब तू इन सब बातों को छोड़ रमेश !” डिंपी बोली- “और मुझे यह बता कि अदालत में जब जग्गु ने तेरे ऊपर हमला किया था, तो तू जख्मी तो नहीं हुआ ? कैसा खतरनाक दरिन्दा बन गया था जग्गु एकाएक, तेरे वकील रौनक मल्होत्रा को तो उसने वहीं जान से मार डाला ।”

“ख...मल्होत्रा मर गया ?” रमेश के नेत्र दहशत से फटे ।

“तुझे क्या लगता है, वो इतने चाकू लगने के बाद भी जिंदा रह सकता था ? मैंने खुद उसकी लाश देखी थी ।”

“अ...और जग्गु का क्या हुआ ?”

“वह तो तभी इंस्पेक्टर राजविर को धक्का देकर फरार हो गया था ।”

“तब तो पुलिस जग्गु के पीछे लगी होगी ?”

“वह तो लगी है, लेकिन जग्गु आज दोपहर मेरे पास भी आया था ।”

“त...तुम्हारे पास, क्यों ?”

“बोलता था, अगर उसने एक हफ्ते के अंदर-अंदर तेरा खून न कर दिया, तो वह अपने बाप से पैदा नहीं ।”

रमेश के शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी ।

उसके गले की घण्टी जोर से ऊपर उछली ।

“ल...लेकिन जो आदमी तुझे अदालत से लेकर भागा था रमेश !” डिंपी ने पूछा- “वह कौन था ? और आज तू सारा दिन कहाँ रहा ?”

रमेश ने उस दिन घटी तमाम घटनायें डिंपी को बता दीं ।

“हे मेरे परमात्मा !” डिंपी के नेत्र हैरत से फटे- “न...नटराज की वो मूर्तियां पीतल की हैं ?”

“हाँ ।”

“हे ईश्वर ! हे ईश्वर !” डिंपी सिर पकड़कर धम्म् से वहीं चारपाई पर बैठ गयी-“यह भगवान हमारी कैसी परीक्षा ले रहा है, कौन से पापों की सजा दे रहा है हमें ?”

“अब इस तरह मातम मनाने से कुछ नहीं होगा ।” रमेश बोला- “तू जल्दी से मुझे मूर्तियां लेकर दे, बाहर गुड्डू त्यागी मेरा इंतजार कर रहा है ।”

“तू...तू मूर्तियां लेकर अब वापस सेठ रुपचंद के पास जायेगा ?”

“हाँ ।”

“तू पागल हुआ है ।” डिंपी गुर्रा उठी- “दिमाग खराब हो गया है तेरा । वह भले लोग नहीं हैं रमेश ! तुझे अब वहाँ किसी भी हालत में लौटकर नहीं जाना चाहिये ।”

“ल...लेकिन ।”

“मैं जैसा कह रही हूँ, वैसा कर रमेश ! इसी में तेरी भलाई है, एक बात बोलूं ?”

“क्या ?”

“मुझे तो ऐसा लगता है, जैसे बुधवार की रात से आज तक तेरे साथ जितनी भी घटनायें घटी हैं, वो सब इत्तफाक नहीं है रमेश ! वह जरूर किसी की साजिश का एक हिस्सा है, कोई किसी चक्रव्यूह में फांसना चाह रहा है तुझे ।”

“लेकिन कौन ? कौन फांसेगा मुझे ?”

“यह तो मैं भी नहीं जानती । लेकिन मेरा दिल चीख-चीखकर गवाही दे रहा है कि एक के बाद एक यह सनसनीखेज घटनायें ऐसे ही नहीं घट रही रमेश, इन घटनाओं के पीछे जरूर कोई गहरी साजिश है । मुझे तो इस सारी साजिश में अब सबसे बड़ा हाथ उस सेठ का ही नजर आता है ।”

“स...सेठ रुपचंद का ?”

“हाँ, वही ।”

रमेश सोच में डूब गया ।

पिछले एक घण्टे से यही बात उसके दिमाग में घूम रही थी ।

“लेकिन फिलहाल मुझे वो मूर्तियां लेकर तो सेठ के पास जरूर जाना पड़ेगा ।”

“क्यों ?”

“वरना गुड्डू त्यागी यहीं न आ जायेगा ।”

“उसका भी एक तरीका है ।”

“क्या ?”

“हम अभी सोनपुर छोड़कर कहीं भाग जाते हैं ।”

“न...नहीं ।” रमेश सहम गया- “य...यह नहीं हो सकता डिंपी ! तू उन लोगों को नहीं जानती, वह बड़े खतरनाक लोग हैं, मैं यहाँ से भागकर चाहे कहीं भी जा छिपूं, वह मुझे जरूर ढूंढ निकालेंगे । इतना ही नहीं, इस समय वो मेरे ऊपर थोड़ा-बहुत जो यकीन कर रहे हैं, फिर वो भी नहीं करेंगे ।”

डिंपी का चेहरा रुई की तरह सफेद पड़ गया ।

“फिर क्या करेगा तू ?”

“मुझे मूर्तियां देने जाना ही होगा ।”

“ठीक है ।” डिंपी बोली- “अगर मूर्तियां देना इतना ही जरुरी है, तो तू गुड्डू त्यागी को दे आ । उसके साथ सेठ रुपचंद के अड्डे तक किसी हालत में नहीं जाना ।”

रमेश ने डिंपी की वह बात मान ली ।

अगले ही पल डिंपी बरामदे में बनी छोटी-सी क्यारी को जल्दी-जल्दी खोदकर उसमें से नटराज मूर्तियां निकाल रही थी ।

वह पांचों नटराज मूतियां रमेश ने अपनी पैंट की बेल्ट के नीचे अच्छी तरह कसकर बांध लीं और ऊपर से शर्ट ढक ली ।

नटराज मूर्तियां दिखाई देनी बिलकुल बंद हो गयीं ।

फिर रमेश ने डिंपी के घर से बाहर कदम रखा ।

“म...मैं भी तुम्हारे साथ चलूं ?” डिंपी बोली ।

“नहीं, तू यहीं रह । मैं गुड्डू त्यागी को मूर्तियां देकर अभी दो मिनट में आता हूँ ।”

“ल...लेकिन... ।”

“चिन्ता मत कर, मुझे कुछ नहीं होगा ।”

रमेश लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ सड़क पर चल दिया ।

डिंपी उसे डरी-डरी आंखों से तब तक जाते देखती रही, जब तक वह नजरों से पूरी तरह ओंझल न हो गया ।

यह बड़ी हैरानी की बात थी कि बुधवार की रात के बाद से हर पल, हर सैकिण्ड कोई-न-कोई नई घटना घट रही थी ।

और हर घटना ऐसी होती, जिससे रमेश षडयंत्र के ‘चक्रव्यूह’ में और अधिक उलझ जाता ।

फिर एक घटना घटी ।

दरअसल रमेश जैसे ही सोनपुर की पहली सड़क का मोड़ काटा था, तभी उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ी ।

वह यूं कांपा, मानों किसी ‘शैतान’ के दर्शन कर लिये हों ।

सामने बुलेट मोटरसाइकिल पर इंस्पेक्टर राजविर खड़ा था ।

“हैलो रमेश ।”

“अ...आप !” राजविर को देखते ही रमेश के शरीर में आतंक की लहर दौड़ी- “अ...आप इतनी रात को यहाँ क्या कर रहे हैं साहब ?”

“तुम्हारा ही इंतजार कर रहा हूँ रमेश ।”

“म...मेरा इंतजार ! म...मुझसे क्या फिर कोई गलती हो गयी ?”

“तुम्हें अभी, इसी वक्त मेरे साथ पुलिस स्टेशन चलना है ।”

“ल...लेकिन मेरा अपराध क्या है साहब ?” रमेश शुष्क लहजे में बोला- “कांचा पहलवान की हत्या के इल्जाम से तो कोर्ट ने मुझे सुबह ही बरी किया है ।”

“मैं तुम्हें कांचा पहलवान की हत्या के इल्जाम में गिरफ्तार नहीं कर रहा ।”

“फ...फिर ।”

“मुझे अभी चंद मिनट पहले ही टेलीफोन पर एक ‘गुमनाम टिप’ मिली है, मुझे बताया गया है कि दिल्ली शहर में संग्रहालयों की दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करने वाला जो गिरोह सक्रिय है, तुम उस गिरोह के मैम्बर हो ।”

“म...मैं !” रमेश के मुँह से चीख-सी खारिज हुई- “मैं उस गिरोह का मैम्बर हूँ ?”

“हाँ, और इसीलिये मैं तुम्हें मेटीरियल विटनेस (शक) की बिना पर पुलिस हिरासत में ले रहा हूँ, ताकि मामले की आगे जांच-पड़ताल कर सकूं । क्योंकि दुर्लभ वस्तुओं की चोरी का मामला काफी संगीन मामला है और आजकल इस तरह की चोरियों को लेकर दिल्ली पुलिस में काफी हड़कम्प मचा है ।”

रमेश की जान हलक में आ फंसी ।

उसे फौरन उन पांच नटराज मूर्तियों का ख्याल आया, जो उसकी बेल्ट की नीचे बंधी थी ।

हे ईश्वर !

हे ईश्वर !!

कौन उसके पीछे हाथ धोकर पड़ गया था ।

उस वक्त उसे वो मूर्तियां टाइम-बम लगीं । ऐसा टाइम-बम जो किसी भी क्षण फट सकता था ।

“स...साहब !” रमेश ने आर्तनाद-सा करते हुए कहा- “जरूर किसी ने आपको गलत टिप दी है । मेरा किसी गिरोह से कोई सम्बन्ध नहीं । म....मैं किसी गिरोह का मैम्बर नहीं ।”

“तुम्हें अब जो कहना है ।” इंस्पेक्टर राजविर सख्ती से बोला- “पुलिस स्टेशन जाकर कहना ।”

“ल...लेकिन... ।”

“बकवास बंद !” राजविर ने उसे जबरदस्त फटकार लगायी । फिर वह उसके हाथों में हथकड़ियां पहनाने के उद्देश्य से जैसे ही बुलेट से नीचे उतरा, उसी क्षण गली में तूफानी गति से दौड़ती हुई सफ़ेद होंडा सिटी प्रकट हुई थी ।

उसकी हैडलाइटों की तीखी रौशनी सीधी राजविर के चेहरे पर पड़ी ।

इंस्पेक्टर राजविर दुर्घटना का अनुमान लगा पाता, उससे पहले ही कार धुंआधार रफ्तार से दौड़ती हुई राजविर के एकदम नजदीक जा पहुँची थी ।

राजविर आतंकित मुद्रा में पलटकर भागा ।

लेकिन वो कहाँ तक भागता ?

किधर भागता ?

उसका शरीर धड़ाक की तेज आवाज करता हुआ सफ़ेद कार के अगले हिस्से से इस तरह टकराया, जैसे सड़क पर कोई पत्थर टकरा गया हो ।

टकराते ही राजविर का शरीर कई फुट ऊपर हवा में उछला ।

फिर वो तेज ध्वनि करता हुआ सड़क पर जा गिरा ।

नीचे गिरते ही इंस्पेक्टर राजविर के कण्ठ से एक ऐसी हृदयविदारक करुणादायी चीख खारिज हुई कि वह उस रात के सन्नाटे में 'नगाड़े' की तरह दूर-दूर गूंजी ।

उसी पल कार के ब्रेक चरमराये ।

उसके पहिये चीखते हुए रुके ।

फिर धड़ाक से कार का डोर खुला ।

डोर खुलते ही रमेश एकदम चीते की तरह जम्प लगाकर कार के अंदर घुस गया ।

फौरन कार की ड्राइविंग सीट पर बैठे गुड्डू त्यागी ने क्लच दबाया और कार को गियर में डाल दिया ।

तत्काल होंडा सिटी कार बन्दूक से छूटी गोली की तरह सोनपुर से भाग खड़ी हुई ।

खून में बुरी तरह लथपथ राजविर की जब बेहोशी टूटी, तो उसने खुद को एक चारपाई पर लेटे पाया ।

उसके शरीर पर जगह-जगह पट्टियां बंधी थीं ।

राजविर ने हड़बड़ाकर खड़े होने की कोशिश की, तो फौरन किसी ने उसकी बांह पकड़ ली ।

“लेटे रहो इंस्पेक्टर साहब, डॉक्टर ने थोड़ी देर आराम करने के लिये कहा है ।”

राजविर की दृष्टि खुद-ब-खुद आवाज की दिशा में उठ गयी ।

और !

अगले पल उसके जिस्म में करण्ट-सा प्रवाहित हो गया था ।

सामने ‘जग्गु’ खड़ा था ।

“त...तुम !”

“क्यों !” मुस्कराया जग्गु- “मुझे देखकर हैरानी हो रही है साहब ?”

“ल...लेकिन मैं यहाँ आया कैसे ?” राजविर ने पूछा- “म...मेरा तो एक्सीडेंट हुआ था ।”

“दरअसल जिस वक्त आपका एक्सीडेंट हुआ, ठीक उसी वक्त मैं भी सोनपुर में आया था । आपको खून से लथपथ सड़क पर पड़े देखा, तो मुझसे रहा न गया, मैं फ़ौरन आपको अपने घर ले आया ।”

“त...तुम !” राजविर की हैरानी और बढ़ी-“तुम मुझे उठाकर लाये ?”

“हाँ ।”

“लेकिन तुम कानून के मुजरिम हो । रौनक मल्होत्रा के खूनी हो और इस समय पूरी दिल्ली की पुलिस तुम्हारे पीछे है ।” इंस्पेक्टर राजविर के चेहरे पर दुविधा के भाव उभर आये थे- “मुझे बचाते समय तुमने यह नहीं सोचा जग्गु, होश में आते ही मैं तुम्हें अरेस्ट भी कर सकता हूँ ?”

“सोचा था साहब, सोचा था ।” जग्गु ने गहरी सांस ली- “आपको देखकर मेरे दिमाग में सबसे पहले यही सवाल कौंधा था । लेकिन आपकी हालत इतनी नाजुक थी कि मुझसे रहा न गया और मैं आपको उठाकर ले आया ।”

राजविर अचरज से जग्गु को देख रहा था ।

“इंस्पेक्टर साहब !” जग्गु भावनाओं के प्रवाह में बोला- “मैंने रौनक मल्होत्रा का खून किया जरूर है, लेकिन आवेश में किया है, जुनून में किया है । और यकीन मानो, अभी मेरे दिमाग में जुनून उतरा नहीं है इंस्पेक्टर साहब ! मेरे अंदर आग धधक रही है, ज्वालामुखी धधक रहा है । रमेश ने सिर्फ मेरे चाचा का ही खून नहीं किया बल्कि उसने उस इंसान का खून किया है, जिसने बचपन से आज तक मेरी परवरिश की थी, अपनी गोद में खिलाया था उसने मुझे । कांचा पहलवान ही वो इकलौता इंसान था इंसपेक्टर साहब-जिसने मेरे मां-बाप के स्वर्गवासी होने के बाद सारी दुनिया का प्यार मेरे ऊपर न्यौछावर कर दिया । इसीलिये मैं हर खून माफ

कर सकता हूँ, लेकिन कांचा पहलवान का खून माफ नहीं कर सकता । मेरे अंदर धधकती यह आग अब उसी दिन बुझेगी, जिस दिन मैं रमेश के खून से अपने हाथ रंग लूंगा और मेरा दावा है कि ऐसा करने से अब दिल्ली पुलिस भी मुझे नहीं रोक सकती ।"

राजविर फटे-फटे नेत्रों से जग्गु को देखता रह गया ।

डॉक्टर उसके होश में आने से पहले ही जा चुका था और इस समय उस पूरे घर में इंस्पेक्टर राजविर तथा जग्गु के अलावा कोई न था ।

राजविर कुछ देर आराम करता रहा, फिर वो आहिस्ता से बिस्तर छोड़कर उठा-"मेरी मोटरसाइकिल कहाँ है ?"

"बाहर ही खड़ी है ।" जग्गु बोला- "मैं उसे भी ले आया था ।"

राजविर संभल-संभलकर दरवाजे की तरफ बढ़ा ।

"मुझे गिरफ्तार नहीं करोगे इंस्पेक्टर साहब ?"

राजविर के कदम ठिठक गये ।

वह आहिस्ता से पलटा ।

"एक पुलिस इंस्पेक्टर होने के नाते यह मेरा फर्ज बनता है जग्गु !" राजविर बोला- "कि मैं तुम्हें अभी और इसी वक्त गिरफ्तार कर लूं । लेकिन अफसोस -इस समय मेरे सामने वकील रौनक मल्होत्रा का हत्यारा नहीं बल्कि सिर्फ एक इंसान खड़ा है । एक ऐसा इंसान, जिसके सीने में भावनायें हैं, जज्बात हैं और जिसने अभी-अभी एक आदमी की जान बचायी है । मैं नहीं जानता जग्गु-तुम्हारा यह रूप सच्चा है या फिर तुम यह कोई नाटक खेल रहे हो । हाँ, एक बात जरूर कहूँगा- मैं तुम्हारे इस रूप से प्रभावित जरूर हुआ हूँ, लेकिन एक बात का ख्याल जरूर रखना जग्गु !" एकाएक राजविर की आवाज में चेतावनी का पुट आ गया- "आज के बाद तुम्हें इंस्पेक्टर राजविर कहीं भी मिले, तो इस गलतफहमी में हरगीज मत रहना कि वह तुम्हें बख्श देगा । इंस्पेक्टर राजविर का कहर तुम्हारे ऊपर बिलकुल उसी तरह टूटेगा, जिस तरह किसी अपराधी के ऊपर इंस्पेक्टर का कहर टूटता है । क्योंकि तुम्हारे और मेरे बीच सिर्फ एक ही रिश्ता हो सकता है और वो रिश्ता है, अपराधी और इंस्पेक्टर के बीच का रिश्ता !"

"मुझे उस पल का बेसब्री से इंतजार रहेगा इंस्पेक्टर साहब !" जग्गु ने भी बे-खौफ जवाब दिया- "जब कानून के एक रखवाले से मेरी मुलाकात होगी, फिलहाल जाते-जाते अपनी एक अमानत ले जाइये ।"

"अ...अमानत !"

"हाँ-अमानत !"

जग्गु ने वहीं स्टूल पर रखी एक नटराज मूर्ति उठाकर राजविर की तरफ बढ़ाई ।

'नटराज मूर्ति' को देखते ही राजविर के दिमाग में धमाका हुआ ।

"य...यह मूर्ति तुम्हारे पास कहाँ से आयी ?"

"सोनपुर में जिस जगह आपका एक्सीडेण्ट हुआ था, वहीं यह मूर्ति भी पड़ी थी ।"

“ओह !”

“लेकिन बात क्या है, आप इस मूर्ति को देखकर इतना चौंके क्यों ?”

“जानते हो ।” राजविर के होठों पर हल्की-सी मुस्कान दौड़ी- “यह मूर्ति किस धातु की बनी है ?”

“नहीं, किस धातु की है ?”

“इस सवाल का जवाब तुम्हें आज नहीं बल्कि कल देश के तमाम अखबारों में छपा मिलेगा । हो सकता है, तब तुम्हें इस बात का सख्त अफसोस भी हो कि तुमने मुझे यह मूर्ति सौंपी तो क्यों सौंपी ।”

वह शब्द कहने के बाद मुड़ा इंस्पेक्टर राजविर !

फिर मूर्ति लेकर तेज-तेज कदमों से बाहर खड़ी बुलेट मोटरसाइकिल की तरफ बढ़ गया ।

जग्गु के होठों पर अब मुस्कान थी ।जहरीली मुस्कान !

११

सेठ रुपचंद के अड्डे पर पहुँचने के बाद भी रमेश कितनी ही देर तक यूं हाँफता रहा था, जैसे सैंकड़ों मील लम्बी मैराथन दौड़ में हिस्सा लेकर अभी-अभी वहाँ आया हो ।

उसकी आंखों में दहशत-ही-दहशत थी ।

वहाँ रमेश का सबसे पहले सेल्समैन से सामना हुआ । उसका नाम तानाजी जाधव था, वह पूना का रहने वाला था और एकदम ओरिजिनल मराठा था । लेकिन पिछले पांच साल से वो दिल्ली शहर में आकर बस गया था और अब दिल्ली के कुछ ऐसे गाढ़े रंग में रंग चुका था कि अपने सभी महाराष्ट्रियन संस्कारों को भूल चुका था ।

यहाँ तक कि वो जबान भी अब दिल्ली वाली बोलता था ।

अब तो उसकी जिंदगी में एक ही चीज का महत्व था, पैसा-पैसा और पैसा ।

रमेश को इतनी बुरी तरह हाँफते देख तानाजी जाधव भी चौंका ।

“क्या हुआ, तुम यूं हाँफ क्यों रहे हो ?”

तभी सेठ रुपचंद के आते ही गुड्डू त्यागी ने उन्हें आज इंस्पेक्टर राजविर से हुई मुठभेड़ के बारे में बता दिया ।

सेठ रुपचंद के नेत्र आश्चर्य से फैले ।

“व...वडी इंस्पेक्टर राजविर इसे गिरफ्तार क्यों करना चाहता था नी ?”

“साहब, वह बोलता था ।” रमेश ने भाव-विह्वल स्वर में बताया- “कि दिल्ली में आजकल दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करने वाला जो गिरोह सक्रिय है, मैं उस गिरोह का सक्रिय सदस्य हूँ । किसी ने उसे यह बात फोन पर गुमनाम टिप देकर बतायी थी ।”

“ग...गुमनाम टिप !” सेठ रुपचंद चौंका- “व...वडी उसे यह गुमनाम टिप किसने दी ?”

“यह तो राजविर को भी नहीं मालूम । लेकिन वह शख्स चाहे जो भी है साहब, वही इस सारे फसाद की जड़ है ।” रमेश ने आन्दोलित लहजे में कहा- “उसी ने मेरी हँसती-खेलती जिंदगी को यूं षडयंत्र रच-रचकर नरक के हवाले कर दिया है ।”

“धीरज रख रमेश साईं !” रुपचंद ने उसकी पीठ थपथपाई- “धीरज रख, वडी यूं आंदोलित होने से, यूं परेशान होने से कुछ नहीं होने वाला नी । तू यह बता, मूर्तियां लेकर आया ?”

“ह...हाँ ।”

“निकाल उन्हें ।”

रमेश ने पांचों मूर्तियां निकालने के मकसद से शर्ट ऊपर की ।

फिर उसकी नजर जैसे ही नटराज मूर्तियों पर पड़ी, वह सन्न रह गया ।एकदम सन्न !

उनमें से एक मूर्ति गायब थी ।

“य...यह तो सिर्फ चार मूर्तियां हैं ।” तानाजी जाधव के मुँह से सिसकारी छूटी ।

रमेश पसीनों से लथपथ हो गया ।

“ह...हाँ, ल...लेकिन मैं डिंपी के घर से पांच मूर्तियां ही लेकर चला था ।”

“वडी फिर एक मूर्ति किधर है नी ?” सेठ रुपचंद झुंझला उठा-“साईं, एक मूर्ति को तेरा पेट निगल गया नी या फिर हवा खा गयी ?”

“ज...जरूर !” तभी रमेश आतंकित मुद्रा में बोला- “जरूर वह मूर्ति सोनपुर में उसी जगह गिर पड़ी है, जहाँ इंस्पेक्टर राजविर और हमारी मुठभेड़ हुई थी ।”

“हे हे ईश्वर !” गुड्डू त्यागी के शरीर में भी खौफ की लहर दौड़ गयी- “अगर वह मूर्ति राजविर के हाथ लग गयी, तब क्या होगा ?”

सब स्तब्ध रह गये ।

अगले दिन एक ऐसी हृदयविदारक घटना घटी, जिसने रमेश के रहे-सहे हौंसले भी पस्त कर दिये ।

सुबह का वक्त था ।

रात रमेश ने अड्डे में ही गुजारी थी ।

उस अड्डे के बारे में रमेश को अभी इतना ही मालूम हो सका था कि वो किसी इमारत के बेसमेंट में बना था ।

उसमें आठ विशालतम हॉल कमरे थे, बड़े-बड़े गलियारे थे, चार अटेच्ड बाथरूम थे, एक बातचीत करने के लिए बड़ा कॉफ्रेंस हॉल था, कुल मिलकर वहाँ सुख-सुविधा के तमाम साधन मौजूद थे ।

तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी वहीं सोते थे, जबकि सेठ रुपचंद की अशोक विहार के इलाके में बड़ी भव्य कोठी थी ।

उस वक्त तक सेठ रुपचंद भी वहाँ आ चुका था ।

तभी अखबार हाथ में लिये गुड्डू त्यागी वहाँ भागा-भागा आया ।

उसके चेहरे पर हवाइयां उड़ रही थीं ।

उसका हाल बुरा था ।

“क्या बात है, वडी घबरा क्यों रहा है नी ?”

“अ...आपने आज का अखबार पढ़ा बॉस ?”

“नहीं, अखबार तो नहीं पढ़ा, कोई ख़ास खबर छपी है साईं ?”

“खबर नहीं बल्कि तोप का गोला समझो बॉस, जो भी पढ़ेगा, उसी के चेहरे पर मेरी तरह हवाइयां उड़ने लगेंगी ।”

“वडी ऐसी भी क्या खबर छप गयी साईं, मैं भी तो देखूं ।”

सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव और रमेश, उसे देखकर वह तीनों वाकई बुरी तरह उछल पड़े ।

अखबार के कवर पेज पर ही मोटी-मोटी सुर्खियों में छपा था:

दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन का सुराग पता चला, एक मूर्ति बरामद

दिल्ली । कल आधी रात के समय सोनपुर की एक गली के अंदर इंस्पेक्टर राजविर और कुख्यात अपराधी रमेश के बीच हुई भीषण भिड़न्त में दिल्ली पुलिस को सोने की एक नटराज मूर्ति बरामद हो गयी ।

उल्लेखनीय है कि नेशनल म्यूजियम से पिछले दिनों सोने की छः बेशकीमती नटराज मूर्तियां चोरी हो गयी थीं, जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में दस करोड़ रुपये कीमत थी । जो नटराज मूर्ति बरामद हुई, वह सोने की छः नटराज मूर्तियों में से ही एक है ।

बताया जाता है कि कल रात इंस्पेक्टर राजविर को टेलीफोन पर एक गुमनाम टिप मिली थी, जिसमें किसी अज्ञात व्यक्ति ने इंस्पेक्टर राजविर को बताया कि कुख्यात अपराधी रमेश दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले गिरोह का सक्रिय सदस्य है और वो थोड़ी देर बाद ही सोने की नटराज मूर्तियां लेकर सोनपुर से फरार होने वाला है ।

टिप मिलते ही इंस्पेक्टर राजविर ने फौरन सोनपुर पहुँचकर रमेश को जा दबोचा, लेकिन राजविर उसे गिरफ्तार कर पाता, उससे पहले ही रमेश अपने एक साथी की मदद से उस पर हमला करके भाग खड़ा हुआ ।

सर्वविदित है कि विभिन्न संग्रहालयों से दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाला यह संगठन पिछले दो साल से दिल्ली शहर में सक्रिय है । इतना ही नहीं, यह संगठन अब तक लगभग बाईस करोड़ रुपये मूल्य की अनेक ऐतिहासिक वस्तुएं चोरी कर चुका है ।

इंस्पेक्टर राजविर ने रमेश से बरामद मूर्ति पुरातत्व संग्रहालय को सौंप दी है । एण्टीक रिसर्च सेण्टर से प्राप्त रिपोर्ट के आधार पर यह साबित हो चुका है कि बरामद मूर्ति संग्रहालय से चोरी गयी असली नटराज मूर्ति ही है । दिल्ली पुलिस अब पूरी सरगर्मी से रमेश को तलाश कर रही है और रमेश को गिरफ्तार कराने वाले किसी भी व्यक्ति को एक लाख रुपये का नगद इनाम देने की घोषणा भी पुलिस की तरफ से कर दी गयी है ।

उस खबर को पढ़कर सभी भौंचक्के रह गये ।

रमेश को तो जैसे सांप सूंघ गया था, वह दहशत से थर-थर कांपने लगा ।

“एक बात मेरी समझ में नहीं आयी ।” तानाजी जाधव बोला ।

“क्या ?”

“यह कैसे संभव है कि पांच मूर्तियां जो रमेश ने हमें लाकर दीं, वह पीतल की है । जबकि जो नटराज मूर्ति इंस्पेक्टर राजविर के हाथ लगी, वो सोने की है ?”

सब हैरान निगाहों से एक-दूसरे का चेहरा देखते रहे ।

कोई कुछ न बोला ।

“त्यागी साईं !” सेठ रुपचंद ने उस सन्नाटे को भंग किया ।

“जी बॉस !”

“वडी तू जल्दी से वो सभी नटराज मूर्तियां और कसौटी लेकर आ ।”

गुड्डू त्यागी तुरन्त वहाँ से दौड़ पड़ा ।

जल्द ही जब वो वापस लौटा, तो उसके हाथ में नटराज मूर्तियां और एक कसौटी थी ।

सेठ रुपचंद ने एक-एक करके उन सभी पांचों मूर्तियों को कसौटी पर घिसा ।

लेकिन निराशा !

घोर निराशा !

वह सभी मूर्तियां पीतल की थीं ।

“म...मैं पहले ही बोलता था साहब !” रमेश उत्तेजित होकर बोला-“कोई मुझे फांसने की कोशिश कर रहा है, कोई मेरे चारों तरफ जाल बिछा रहा है ।”

“लेकिन कौन ?” रुपचंद झल्ला उठा- “वडी कौन हरामी तेरे को फंसाने की कोशिश कर रहा है नी ? वडी कौन तेरे चारों तरफ जाल बिछा रहा है ? मुझे उसका पता-ठिकाना तो बता और यह मूर्ति वाला करिश्मा कैसे हो गया ? रमेश साईं, अखबार में एकदम साफ-साफ लिखा है कि बरामद मूर्ति सोने की असली नटराज मूर्ति है । उसमें शक-शुबहे की तो कोई गुंजाइश ही नहीं बची ।”

“मेरे दिमाग में एक बात आ रही है साहब !”

“क्या ?”

“जरूर !” रमेश पुनः उत्तेजित हो उठा- “जरूर इंस्पेक्टर राजविर के पास वो नटराज मूर्ति नहीं है, जो बेल्ट के पीछे से निकलकर गिरी थी ।”

“फिर वो कौन-सी मूर्ति है साईं ?”

“जरूर मेरे पास से मूर्ति नीचे गिरने और इंस्पेक्टर राजविर द्वारा मूर्ति उठाये जाने के बीच किसी ने वह मूर्ति बदल दी ।”

“व...वडी !” रुपचंद के नेत्र फैले गये- “वडी तू यह कहना चाहता है कि किसी ने पीतल की वह मूर्ति उठाकर इसकी जगह असली सोने की मूर्ति रख दी ?”

“हाँ, म...मैं बिलकुल यही कहना चाहता हूँ साहब !”

“लेकिन ऐसा कौन करेगा साईं, वडी किसी को ऐसा करने की क्या जरूरत पड़ी है नी ?”

“जरुरत पड़ी है साहब !” रमेश बोला- “यह हरकत जरूर उसी रहस्यमयी व्यक्ति ने की है, जिसने इंस्पेक्टर राजविर को मेरे बारे में गुमनाम टिप दी । इतना ही नहीं साहब, मुझे तो अब एक और रहस्य की गुत्थी भी सुलझती दिखाई दे रही है ।”

“कैसी गुत्थी ?”

“जरा सोचो साहब, जब उस रहस्यमयी व्यक्ति के पास सोने की एक नटराज मूर्ती है, तो बाकि मूर्तियां भी उसी के पास होंगी । इसका मतलब उसी ने वो मूर्तियां हथियाई, इसे रहस्यमयी व्यक्ति ने कांचा पहलवान का भी खून किया ।”

रमेश की बात सुनकर तीनों के दिमाग में धमाके हुए ।

“बॉस !” तानाजी जाधव शुष्क लहजे में बोला-“मुझे तो उस रहस्यमयी व्यक्ति से ज्यादा इस सारे फसाद की जड़ खुद यह रमेश नजर आ रहा है । जबसे इसके कमबख्त कदम हमारे ठिकाने पर पड़े हैं, तभी से हमारे साथ भी अजीब-अजीब किस्म के हादसे हो रहे हैं । जरा सोचो बॉस, अगर कोई ऐसा रहस्यमयी व्यक्ति है भी, तो वह जरूर इससे अपनी पुरानी दुश्मनी निकाल रहा है, हम क्यों इसके चक्कर में पड़ें ? पहले ही नटराज मूर्तियां गायब होने की वजह से हमें दस करोड़ रुपये का थूक लग चुका है । हमारे हक में अब यही अच्छा है बॉस, हम इसे फौरन यहाँ से निकालकर बाहर खड़ा करें । यह भी हे ईश्वर का लाख-लाख

शुक्र है, जो इसने अभी हमारे अड्डे का गुप्त रास्ता नहीं देखा ।"

"तानाजी ठीक कहता है बॉस !" गुड्डू त्यागी ने भी तानाजी जाधव की बात के प्रति समर्थन जाहिर किया- 'इसका अब सचमुच यहाँ ज्यादा देर रुकना ठीक नहीं, दिल्ली पुलिस वैसे ही इसका सम्बन्ध दुर्लभ वस्तु चुराने वाले गिरोह से जोड़ रही है और फिर इसके ऊपर एक लाख रुपये का इनाम भी रख दिया गया है, ऐसी परिस्थिति में यह ज्यादा दिन पुलिस के शिकंजे से बचा नहीं रहने वाला । यह पकड़ा जाये, उससे पहले ही हमें इससे पल्ला झाड़ लेना चाहिये ।"

रमेश बेचैन हो उठा ।

एक साथ कई सारी बातें उसके दिमाग में कौंधी ।

अगर इस वक्त उन लोगों का आसरा उसके ऊपर से उठ गया, तो फिर उसे दिल्ली पुलिस के फंदे से दुनिया की कोई ताकत नहीं बचा सकती ।

उनके अड्डे से बाहर निकलते ही उसने पकड़े जाना है ।

वह अब एक खतरनाक अपराधी साबित हो चुका है ।

उसके ऊपर एक लाख का इनाम घोषित है ।

एक लाख !

रमेश के शरीर में सिहरन दौड़ गयी ।

एक लाख का इनाम हासिल करने के लालच में तो दिल्ली शहर का एक-एक आदमी उसे पुलिस के हवाले करना चाहेगा ।

अपनी मौजूदा स्थिति और होने वाले अपने खौफनाक अंजाम की कल्पना करके रमेश का पूरा शरीर कांप गया ।

उसने सेठ रुपचंद की तरफ देखा ।

रुपचंद जो तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी की बातें सुनकर किसी गहरी सोच में डूब गया था ।

"वडी तुम दोनों शायद ठीक ही कहते हो ।" फिर सेठ रुपचंद काफी सोचने-विचारने के बाद हुंकार-सी भरकर बोला- "वाकई अब इसका और ज्यादा देर यहाँ रुकना हमारी सेहत के लिये ठीक नहीं है ।"

"य...यह आप क्या कर रहे हैं साहब ?" रमेश दहल उठा ।

"वडी यह हम सिर्फ कह नहीं रहे बल्कि यह हमारा अटल फैसला भी है, गुड्डू त्यागी तुम्हें अभी वापस सोनपुर छोड़ आयेगा ।"

"न...नहीं साहब ! म...मेरे ऊपर रहम करो साहब !" रमेश गिड़गिड़ा उठा- "अगर ऐसी हालत में, मैं सोनपुर पहुँच गया, तो समझो मैं जेल पहुँच गया साहब ! वहाँ के गुण्डे-मवाली बहुत डेन्जर हैं, वह इनाम के लालच में मेरे ऊपर इस तरह झपटेंगे, जैसे चील मांस के लोथड़े पर झपटती है । मैं बेगुनाह होकर भी मारा जाऊंगा, इ...इसलिये मेरे ऊपर रहम करो ।"

"वडी लेकिन हम तेरे ऊपर कैसे रहम करें नी ?" सेठ रुपचंद बोला-"अगर तू ज्यादा दिन तक यहाँ रहा, तो हम सब लोगों का यहाँ बिस्तरा गोल हो जाना है ।"

“नहीं होगा साहब !” रमेश पुनः गिड़गिड़ाया- “आपमें से किसी का भी यहाँ से बिस्तरा गोल नहीं होगा । आप जैसा कहोगे, मैं बिलकुल वैसा-वैसा करूंगा । मैं आप लोगों का गुलाम बनकर रहूँगा, लेकिन भगवान के लिये मुझे दिल्ली पुलिस के मुँह में मत धकेलो साहब !”

रमेश की आंखों में आंसू छलछला आये ।

जबकि सेठ रुपचंद के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे थे ।

“म...मैं उस रहस्यमयी व्यक्ति के षड्यंत्र का शिकार हो चुका हूँ साहब !” रमेश खून के आंसू रोता हुआ बोला- “म...मेरे सामने अब कोई रास्ता नहीं, कोई मंजिल नहीं, मैं अब सिर्फ कानून से भागा हुआ एक खतरनाक अपराधी हूँ ।”

सेठ रुपचंद ने तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी की तरफ देखा ।

उन लोगों के चेहरे पर भी हिचकिचाहट के भाव थे ।

“ठीक है साईं !” रुपचंद ने यूं धीरे-धीरे गर्दन हिलाई, जैसे उस पर बड़ा भारी अहसान कर रहा हो- “वडी हम सलाह मशवरा करने के बाद कल तेरे बारे में कोई फैसला करेंगे ।”

“ल...लेकिन... ।”

“चिन्ता मत कर रमेश साईं, जो होगा, अच्छा होगा । अब तू जाकर आराम कर ।”

रमेश के चेहरे पर संतोष के भाव उभर आये ।

लेकिन उसे कहाँ मालूम था, अभी उसके ऊपर से बुरे ग्रहों कोई छाया हटी नहीं है ।

हर लम्हां मौत और खौफ के साये में जिंदगी बसर करते हुए रमेश की वो पांचवीं रात थी ।

अड्डे के अंदर ही एक सर्वेण्ट क्वार्टर जैसा छोटा-सा कमरा था, जो सेठ रुपचंद ने उसके लिये खोल दिया था ।

तानाजी जाधव ने उसे बिछाने के लिये एक दुतई और ओढ़ने के लिये एक पतला-सा कम्बल दे दिया था ।

१२

रात के दो बज रहे थे ।

लेकिन रमेश की आंखों में नींद का दूर-दूर तक नामों निशान न था, वह अपने कमरे में सिकुड़ा-सिमटा सा पड़ा था और उसकी आंखों के गिर्द रह-रहकर डिंपी का चेहरा घूम रहा था ।

जाने कहाँ-कहाँ तलाश कर रही होगी उसे वो ?

कितनी परेशान होगी उसके लिये डिंपी ?

उफ् !

उस छोटी-सी उधारी चुकाने के फितूर ने उसे कितने बड़े जंजाल में फंसा दिया था ।

अपनी आवारा कुत्ते जैसी हो चली हैसियत पर गौर करके रमेश कम्बल ओढ़े-ओढ़े ही अपने कमरे से निकलकर बाहर गलियारे में आ गया ।

नींद न आने की वजह से उसका थोड़ा चहलकदमी करने को दिल चाह रहा था ।

रमेश चंद कदम ही चला होगा, तभी वह एकाएक बुरी तरह चौंका ।

कांफ्रेंस हॉल के अंदर से बातचीत करने की आवाजें आ रही थीं ।

रमेश लपककर कॉफ्रेंस हॉल के नजदीक पहुँचा ।

वह एक बहुत बड़ा हॉल कमरा था । कॉफ्रेंस हॉल के बीचों-बीच एक लम्बी आयातकार मेज पड़ी थी, जिसके इर्द-गिर्द लगभग बीस के करीब कुर्सियां मौजूद थीं ।

पूरे कांफ्रेंस हॉल में गहन अन्धकार फैला था ।

सिर्फ छत में लटके एक साठ वाट के ग्लोब का फोकस मेज के बीचों-बीच पड़ रहा था ।

रमेश ने बंद दरवाजे की झिरी में-से अंदर का नजारा देखा ।

इतनी रात को भी सेठ रुपचंद वहाँ मौजूद था ।

उसके सामने तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी बैठे थे, वह तीनों उस समय डकैती की किसी बहुत महत्वपूर्ण योजना पर बातचीत कर रहे थे ।

रमेश दरवाजे से कान लगाकर उनकी वार्ता सुनने लगा ।

सेठ रुपचंद थोड़ी गरमजोशी से भरी आवाज में कह रहा था- "वडी मुझे आज ही सुपर बॉस डॉन अँटोनी का न्यूयार्क से एक मैसेज़ मिला है ।"

"क्या ?" तानाजी जाधव ने पूछा ।

"साईं, वो नटराज मूर्तियों के आश्चर्यजनक ढंग से गायब हो जाने की वजह से बड़े नाराज हैं । उन्होंने लिखा है कि वह बुधवार को दिल्ली के होटल मेरीडियन में कांचा पहलवान का बड़ी

बेसब्री से इंतजार कर रहे थे कि कब मूर्तियां लेकर उनके पास आये, लेकिन सुबह जब उन्होंने कांचा पहलवान की मौत का समाचार सुना, तो वह फौरन वापस न्यूयार्क के लिये कूच कर गये । पाटिल साईं, उन्होंने यह भी लिखा है कि जिस पार्टी से उन्होंने नटराज मूर्तियों का सौदा किया था, वह पार्टी मूर्तियां हासिल न होने के कारण बहुत नाराज हो रही हैं, उन्होंने बड़ी मुश्किल से उस पार्टी को काबू में किया है ।"

"और कुछ लिखा सुपर बॉस ने ?" गुड्डू त्यागी बोला ।

"हाँ ।" सेठ रुपचंद की आवाज थोड़ी गंभीर हो उठी- "इस बार सुपर बॉस ने हमें एक ऐसी डकैती की योजना के सम्बन्ध में बताया है कि अगर हम उस योजना में कामयाब हो गये, तो हमारे वारे-न्यारे हो जायेंगे । वडी उस डकैती में हमारे हाथ इतना मोटा रोकड़ा लगेगा कि हमारी पचास पुश्तें बैठकर खा सकती हैं ।"

"ऐसी क्या योजना है ?"

"ध्यान से सुनो ।" सेठ रुपचंद उन्हें विस्तारपूर्वक सब कुछ समझाता हुआ बोला- "कल यानि सोमवार को पूर्व सोवियत संघ के एक राज्य कजाखिस्तान से किसी राजा का एक दुर्लभ ताज दिल्ली शहर में प्रदर्शन के लिये आ रहा है और उस ताज में पचास ऐसे बेशकीमती हीरे लगे हुए हैं कि उन जैसे हीरे आज पूरी दुनिया में कहीं नहीं हैं । इतना ही नहीं वह ताज ऐतिहासिक दृष्टि से भी बहुत मूल्यवान है । उस ताज के बारे में कहा जाता है कि वो ताज ईसा से पूर्व उस दौर का है, जब इंसान ने सभ्यता की सीढ़ियां चढ़नी ही शुरू की थीं । उसी दौर में कजाखिस्तान के एक राजा ने अपने राज्य के बेहतरीन कारीगरों से इस ताज का निर्माण करवाया था । वडी उस राजा को ज्योतिष विद्या पर भी बहुत यकीन था, उसके हीरे के गुण-दोष के पारखी कई विद्वानों से सैकड़ों हीरों में से वह पचास हीरे चुनवाये । उन विद्वानों का मानना था कि वो हीरे राष्ट्र की उन्नति, शान्ति और खुशहाली के प्रतीक थे ।"

बोलते-बोलते सेठ रुपचंद रुका ।

तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी उसकी बातें बेहद गौर से सुन रहे थे ।

जबकि दरवाजे से कान लगाये खड़े रमेश की भी एकाएक उस दुर्लभ ताज में दिलचस्पी जाग उठी थी ।

"सुपर बॉस ने आगे लिखा है ।" सेठ रुपचंद थोड़ा रुककर पुनः बोला-"कि हीरों से जड़े उस दुर्लभ ताज के बारे में यह कहानी भी बड़ी प्रसिद्ध है कि जिस दिन से उस राजा ने वह ताज पहनना शुरू किया था, उसी दिन से उसके राज्य का विस्तार भी होना शुरू हो गया था । वरना उससे पहले कजाखिस्तान के इलाके में अनेक जंगली कबीले विद्रोह का बिगुल बजाते रहते थे, लेकिन ताज का निर्माण होते ही चारों तरफ शान्ति और खुशहाली का माहौल बन गया, जो सोवियत संघ के टूटने के बावजूद कजाखिस्तान में आज तक बरकरार है ।"

तानाजी जाधव ने थोड़ा बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

"कुछ भी कहो बॉस !" तानाजी जाधव बोला- "एकाएक ऐसी बातों पर यकीन नहीं होता, यह तो दन्त कथाओं जैसी कहानी मालूम होती है ।"

"वडी हमें इस बात से क्या लेना-देना नी ।" सेठ रुपचंद बोला- "कि उस ताज के साथ जुड़ी

यह कहानी सच्ची है या झूठी । वडी हमें अपने रोकड़े से मतलब होना चाहिये, अपने मुनाफे से मतलब होना चाहिये । वडी आज की तारिख में उस ताज को हासिल करने के लिये दुनिया के कई बड़े-बड़े देश जी-तोड़ कोशिश में लगे हैं, जिनमें अमरीका सबसे आगे है । सुपर बॉस का कहना है कि हमें उस ताज के बदले अमरीका सरकार एक अरब रुपये तक दे सकती है ।"

"एक अरब रुपये !" गुड्डू त्यागी के मुँह से सिसकारी छूटी ।

"हाँ, एक अरब रुपये । वडी अभी तक वो ताज कजाखिस्तान के एक म्यूजियम में भारी हिफाजत के साथ रखा हुआ था, उसकी वहाँ सिक्योरिटी कितनी जबरदस्त है, इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उस ताज को चुराने की अभी तक एक दर्जन से भी ज्यादा बार कोशिशें हो चुकी हैं, लेकिन हर कोशिश नाकाम रही । चोरों को हर बार असफलता का मुँह देखना पड़ा ।"

"जब उस ताज की इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी है ।" गुड्डू त्यागी बोला- "तो हम लोग ही उसे किस तरह चुरा पायेंगे ?"

"वडी तू पागल है नी ।" सेठ रुपचंद भुनभुनाया- "त्यागी साईं, आज से पहले उस दुर्लभ ताज को चुराने की जितनी भी कोशिशें हुई, वो सब कजाखिस्तान में हुई थीं । यह पहला मौका है, जब वो ताज किसी दूसरे देश में प्रदर्शन के लिये आ रहा है और इसे हमें अपनी खुशकिस्मती समझना चाहिये कि उस दुर्लभ ताज की प्रदर्शनी कहीं और नहीं बल्कि हमारे ही शहर के नेशनल म्यूजियम में लगेगी । वडी वही नेशनल म्यूजियम, जहाँ से हम लोग पहले ही नटराज मूर्तियां पार कर चुके हैं ।"

"यह बात आपको कैसे मालूम ?" तानाजी जाधव ने उत्सुकतापूर्वक पूछा- "कि उस ताज की प्रदर्शनी नेशनल म्यूजियम में ही लगेगी ?"

"वडी सुपर बॉस ने ही यह बात अपने मैसेज में लिखकर भेजी है और मुझे कैसे मालूम होता ?"

"ए...एक बात पूछूं बॉस ?" तानाजी जाधव इस बार थोड़ा हिचकिचाता हुआ बोला ।

"पूछो ।"

"सुपर बॉस को न्यूयार्क में बैठे-बैठे हर बात कैसे मालूम हो जाती है ?"

"वडी अगर यह मेरे को को मालूम होता ।" सेठ रुपचंद तिक्त स्वर में बोला- "तो मैं यहाँ तुम लोगों के साथ बैठकर अपना दिमाग खराब क्यों करता ? फिर तो मैं भी सुपर बॉस डॉन अँटोनी की तरह न्यूयार्क के किसी आलीशान होटल में पड़ा अपनी अगली योजना के पत्ते न फैला रहा होता ।"

तानाजी जाधव ने फ़ौरन अपने होंठ सी लिये ।

"तानाजी साईं !" रुपचंद एक-एक शब्द चबाकर बोला- "हमें इस तरह की बेकार बातों में अपना दिमाग खराब करने की बजाय इस तरफ ज्यादा ध्यान देना चाहिए कि हम उस ताज को चुराने में किस तरह कामयाब होंगे । वडी हमें दौलत कमाने का इतना शानदार मौका किसी भी हालत में खोना नहीं है । यूं समझो, हमारी किस्मत खुद अपने पैरों से चलकर कजाखिस्तान से यहाँ आ रही है ।"

“लेकिन बॉस !” गुड्डू त्यागी बोला- “उस दुर्लभ ताज को चुराना हमारे लिये इतना आसान भी न होगा, जितनी आसानी से हमने नटराज मूर्तियां चुरा ली थी ।”

“क्यों, दुर्लभ ताज चुराना इतना आसान क्यों नहीं होगा ?”

“क्योंकि यह आपको भी मालूम है बॉस, वह ताज पहली बार किसी दूसरे देश में प्रदर्शन के लिये लाया जा रहा है, ठीक ?”

“बिलकुल ठीक ।”

“इससे यह साबित होता है ।” गुड्डू त्यागी आगे बोला- “कि कजाखिस्तान राज्य की नजर में उस दुर्लभ ताज का बहुत ही खास महत्व है । मेरे इस तर्क को इस बात से भी और ज्यादा बल मिलता है कि उस दुर्लभ ताज को चुराने की कजाखिस्तान में ही कई छोटी-बड़ी कोशिशें हो चुकी हैं, लेकिन हर बार चोरों को नाकामी का मुँह देखना पड़ा । यानि कजाखिस्तान राज्य ने उस ताज की सिक्योरिटी का बहुत ही पुख्ता इंतजाम कर रखा है । अगर ऐसा न होता, तो चोर उसे न जाने कब के उड़ा ले गये होते, इस दुनियां में एक से बढ़कर एक शातिर मौजूद है ।”

“वडी, तुम कहना क्या चाहते हो ?”

“मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ बॉस, जिस ताज की सिक्योरिटी का कजाखिस्तान राज्य ने इतना पुख्ता इंतजाम कर रखा है, वह कजाखिस्तान अपने उस दुर्लभ ताज को ऐसे ही तो भारत नहीं भेज देगा । स्वाभाविक-सी बात है कि भारत में भी उस ताज के जबरदस्त इंतजाम किये होंगे ।”

सेठ रुपचंद गंभीर हो उठा ।

गुड्डू त्यागी काफी हद तक सही कह रहा था ।

“त्यागी साईं !” रुपचंद धीरे-धीरे गर्दन हिलाता हुआ बोला- “वडी तेरी बात में जान है । कजाखिस्तान राज्य में भारत सरकार की मदद से यहाँ भी सिक्योरिटी के इंतजाम तो जरूर किये होंगे ।”

“सिर्फ इंतजाम नहीं बॉस, बल्कि बहुत खास इंतजाम किये होंगे ।” गुड्डू त्यागी बोला- “सिक्योरिटी का इंतजाम तो नटराज मूर्तियों के लिये भी किया गया था, लेकिन क्या हुआ उस इंतजाम का ? सारा इंतजाम ढाक के तीन पात की तरह रखा रह गया और हम मूर्तियां चुराकर भी फरार हो गये । देख लेना बॉस, भारत सरकार हमारे द्वारा की जाने वाली दुर्लभ वस्तुओं को चोरी से भी भरपूर सबक लेगी और इसलिये उस दुर्लभ ताज का और ज्यादा खास, ज्यादा स्पेशल सिक्योरिटी इंतजाम किया जायेगा ।”

“मैं मानता हूँ त्यागी साईं ।” सेठ रुपचंद दृढ़ लहजे में बोला- “तेरी हर बात ठीक है । वडी लेकिन फिर भी हम लोगों को उस ताज को चुराकर दिखाना है, हमने साबित कर देना है कि बड़ी-बड़ी सिक्योरिटी को भेदने की क्षमता हम लोगों के अंदर है ।”

“इसके लिये हमें सबसे पहले दुर्लभ ताज को देखना होगा ।”

“बिलकुल ठीक ।”

“ताज को देखने के लिये नेशनल म्यूजियम में दर्शकों की ऐंट्री कब से शुरू होगी ?”

“परसों से ।” सेठ रुपचंद ने बताया- “कल वह दुर्लभ ताज कजाखिस्तान से दिल्ली लाया जायेगा । वह किस फ्लाइट से दिल्ली आ रहा है, यह बात अभी तक पूरी तरह गुप्त रखी गयी है । निःसन्देह दोनों सरकारों को इस बात का खतरा होगा कि अगर कहीं यह बात लीक हो गयी, तो कहीं अपराधी संगठन उस दुर्लभ ताज को हासिल करने के लिये पूरे प्लेन को ही हाईजैक न कर ले ।”

“ओह !”

“बहरहाल !” रुपचंद उस मीटिंग का पटाक्षेप करता हुआ बोला- “उस दुर्लभ ताज को हासिल करने की दिशा में हमारा सबसे पहला काम यह पता लगाना होगा कि भारत सरकार ने उसकी सिक्योरिटी के क्या-क्या इंतजाम किये हैं । साईं, सिक्योरिटी के इंतजामों की फुल जानकारी कर लेने के बाद ही हम किसी योजना की रुपरेखा तैयार करेंगे, ओके ?”

“ओके ।”

तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी की गर्दनें एक साथ स्वीकृति में हिलीं ।

मीटिंग उसी क्षण बर्खास्त हो गयी ।

रमेश जो कॉफ्रेंस हॉल के दरवाजे से कान लगाने खड़ा वार्तालाप का एक-एक शब्द सुन रहा था, वह हतप्रभ-सी स्थिति में वापस अपने कमरे की तरफ दौड़ा ।

कमरे में घुसते ही उसने अंदर से दरवाजा बंद कर लिया और फिर दुतई पर लेटकर लम्बी-लम्बी सांसे लेने लगा ।

उसके होश गुम थे ।

उसके कानों में घण्टियां बज रही थीं ।

दिमाग मानो सुनसान पड़ी वीरान घाटियां बन चुका था, जिसमें रह-रहकर एक ही आवाज गूंज रही थी- “हे मेरे हे ईश्वर ! हे मेरे भगवान ! क्या यह सचमुच उस ताज को चुराने में सफल हो जायेंगे ?”

क्या दिल्ली शहर में एक और चौंका देने वाली चोरी होगी ?

१३

अगले दिन उस दुर्लभ ताज के सम्बन्ध में एक अखबार के अंदर आधे पेज की प्रचार सामग्री छपी ।

प्रचार सामग्री में दुर्लभ ताज का पूरा वर्णन था और उसे शान्ति तथा खुशहाली का प्रतीक भी बताया गया था ।

इतना ही नहीं, दर्शकों का ध्यान आकर्षित करने के लिये अखबार के अन्दर कई बड़ी दिलचस्प बातें भी छपी थीं ।

जैसे अखबार में लिखा था, रुडोल्फ यूबे नामक जिस राजा ने उस दुर्लभ ताज का निर्माण कराया, वह एक सौ बीस वर्ष का होकर मरा ।

अपने पूरे जीवनकाल में उसे या उसके राज्य को किसी भी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ा ।

आगे लिखा था, वह दुर्लभ ताज अपनी सुरक्षा खुद करता है । जिसने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोशिश की, इतिहास साक्षी है कि वह खुद बर्बाद हो गया या फिर मारा गया ।

ऐसी ही ढेरों किस्म की बातें उस ताज के सम्बन्ध में अखबार के अन्दर छपी थी ।

साथ ही बेहद लुभावने शब्दों में लिखा था:

अब यह रहस्यपूर्ण ताज एक सप्ताह के लिये आपके शहर दिल्ली में आ पहुँचा है । ताज को देखने का यह शानदार मौका किसी भी हालत में न खोयें । कल मंगलवार से उस दुर्लभ ताज के दर्शन हेतु आप सब नेशनल म्यूजियम के हॉल नम्बर चार में पहुंचे ।

चार नम्बर हॉल के खुलने और बंद होने का समय-

सुबह दस बजे से शाम छः बजे तक

विशेष नोट-दर्शक अपने साथ किसी भी तरह का कोई सामान न लायें, क्योंकि यह सुरक्षा की दृष्टि से ठीक नहीं है ।

उस प्रचार सामग्री से एक बात पूरी तरह साबित हो गयी ।

वो यह कि सुपर बॉस डॉन अँटोनी ने उस दुर्लभ ताज के सम्बन्ध में जो-जो बातें अपने मैसेज में लिखी थीं, वह सब सच थीं ।

मंगलवार को सुबह ग्यारह बजे सेठ रुपचंद, गुड्डू त्यागी के साथ उस दुर्लभ ताज को एक नजर देखने और उसकी सिक्योरिटी का मुआयना करने नेशनल म्यूजियम पहुँचा ।

वहाँ दर्शकों की खूब भीड़ थी ।

लगभग सौ सुरक्षा कर्मियों ने नेशनल म्यूजियम को चारों तरफ से घेर रखा था ।

दस-बारह सुरक्षाकर्मी सेल्फ लोडिंग राइफल (एस०एल०आर०) लिये म्यूजियम की छत पर अलग-अलग दिशाओं में खड़े थे ।

म्यूजियम में प्रवेश करने के लिये लोहे के दो बड़े-बड़े एन्ट्रेंस डोर थे ।

लेकिन अब उन दोनों में-से एक एन्ट्रेंस डोर को सात दिन के लिये सील कर दिया गया था । सिर्फ मुख्य सड़क से जुड़े एन्ट्रेंस डोर द्वारा ही दर्शक आ-जा रहे थे ।

वहीं दो मेटल डिटेक्टर भी लगे थे ।

प्रत्येक दर्शक को उन मेटल डिटेक्टरों के ऊपर से गुजरकर अन्दर प्रवेश करना होता था ।

हालांकि यह विशेष नोट अखबार में ही छाप दिया गया था कि कोई भी दर्शक अपने साथ कैसा भी कोई-सामान न लाये, लेकिन फिर भी कुछ दर्शक भूल से अपने साथ हैण्ड बैग, वेनिटी बैग या ब्रीफकेस जैसी साधारण चीजें ले आये थे । एन्ट्रेंस डोर पर खड़े सुरक्षाकर्मी अब उन चीजों को अपने पास ही जमा कर रहे थे और बदले में उन्हें एक स्लिप दे रहे थे ।

वापसी पर दर्शक वह स्लिप सुरक्षाकर्मियों को लौटा देते और उन्हें उनका सामान मिल जाता ।

सेठ रुपचंद, गुड्डू त्यागी ने भी मेटल डिटेक्टर के ऊपर से गुजरकर म्यूजियम में प्रवेश किया ।

एन्ट्रेंस डोर के बाद म्यूजियम का मेन गेट था ।

वहाँ भी छः सुरक्षाकर्मी खड़े थे, जो प्रत्येक दर्शक की अपने हाथों से टटोल-टटोलकर तलाशी लेने के बाद ही अंदर जाने दे रहे थे ।

रुपचंद और गुड्डू त्यागी की भी तलाशी ली गयी ।

जेबों का सामान निकालकर देखा गया ।

पीठ और सीने से लेकर, पैंट की बेल्ट और जांघ तक को सुरक्षाकर्मियों ने खूब थपथपाकर देखा कि कहीं उन्होंने कोई प्राणघातक हथियार वहाँ तो नहीं बांधा हुआ है । तलाशी का ऐसा ही एक और सिलसिला म्यूजियम के विशाल गलियारे के अंदर भी चला ।

फिर वह न जाने कितने इंफ्रारेड कैमरों के सामने से गुजरकर हॉल नम्बर चार में दाखिल हुए ।

हॉल नम्बर चार की महिमा ही अलग थी ।

वहाँ का सारा माहौल तिलस्मी था ।

फॉल्स सीलिंग की छत और लगभग एक फुट चौड़ी प्लास्टर पेरिस की परत चढ़ी दीवार में दो दर्जन से भी ज्यादा रंग-बिरंगे बड़े-बड़े हैरीजन बल्ब लगे हुए थे, जिनका तीखा प्रकाश आपस में एकाकार होकर माहौल में विचित्र-सा माधुर्य बिखेर रहा था ।

उस छोटी-सी रंगीन दुनिया के बीचों-बीच एक चार फुट ऊंचे डायस पर शीशे के बॉक्स में बन्द वह दुर्लभ ताज रखा था ।

डायस से चार-चार फुट दूर लोहे के पाइप की बेरकेट्स लगायी गयी थीं ।

उन्हीं बेरकेट्स के सहारे आगे बढ़ते हुए दर्शकों को उस दुर्लभ ताज के दर्शन करने थे ।

सेठ रुपचंद और गुड्डू त्यागी दर्शकों की बेरकेट्स वाली लाइन में लग गये ।

फिर वो धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उस दुर्लभ ताज को देखने लगे ।

सेठ रुपचंद और गुड्डू त्यागी दर्शकों की बेरकेट्स वाली लाइन में लग गये ।

फिर वो धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए उस दुर्लभ ताज को देखने लगे ।

उनकी आंखें अपलक उसी ताज पर चिपककर रह गयीं थीं ।

क्या लाजवाब चीज थी ।

बेहद अद्भुत !

बेहद आश्चर्यजनक !

वह ताज जितना पुराना था, उतनी ही उसमें चमक थी ।

उसके अन्दर जड़े पचास बेशकीमती हीरे इस तरह जगमगा रहे थे, जैसे उन हीरों में लाइटें फिट कर दी गयी हों ।

वाकई वह एक नायाब चीज थी ।

दुर्लभ ताज को देखते ही सेठ रुपचंद और गुड्डू त्यागी के मुँह में पानी भर आया ।

जितनी देर वह हॉल नम्बर चार में रहे, उतनी देर उनकी एक सैकिण्ड के लिये भी दुर्लभ ताज के ऊपर से नजर नहीं हटी ।

दस मिनट बाद जब वह दोनों म्यूजियम से बाहर निकले, तो बुरी तरह मंत्रमुग्ध थे ।

उनके मन में यह धारणा अब और पक्की हो चुकी थी कि चाहे कुछ भी हो जाये ।

चाहे कितनी ही मुश्किलों का उन्हें सामना करना पड़े, लेकिन वह उस दुर्लभ ताज को हर हालत में हासिल करके रहेंगे ।

उसी रात सेठ रुपचंद ने अपनी कार में सवार होकर नेशनल म्यूजियम के आगे से दो चक्कर काटे ।

यह देखने के लिये कि रात के समय वहाँ सिक्योरिटी का क्या इंतजाम रहता है ।

परन्तु यह देखकर उसे भारी निराशा हुई कि रात के समय वहाँ सिक्योरिटी और बढ़ा दी गयी थी ।

दिन में जहाँ नेशनल म्यूजियम के चारों तरफ सौ पुलिसकर्मी फैले थे, वहीं अब दो सौ के आसपास थे ।

लेकिन फिर भी सेठ रुपचंद ने हिम्मत नहीं हारी ।

अड्डे पर लौटते ही उसने काफ्रेंस हॉल में मीटिंग बुलायी ।

हमेशा की तरह उस मीटिंग में तीन व्यक्ति शामिल हुए- खुद सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी ।

अपने सर्वेण्ट क्वार्टर जैसे कमरे में लेटा रमेश, जो बहुत देर से उसी पल का बेसब्री से इंतजार कर रहा था, वह भी कम्बल ओढ़े-ओढ़े दबे पांव दौड़ता हुआ कांफ्रेंस हॉल के दरवाजे पर जा पहुँचा और फिर वो अंदर होने वाले वार्तालाप को बड़े ध्यान से सुनने लगा ।

“इसमें कोई शक नहीं साईं !” सेठ रुपचंद बोला- “वह दुर्लभ ताज वाकई बड़े कमाल की चीज है, उस पर एक नजर डालते ही लगता है कि वो कोई मूल्यवान वस्तु हो सकती है । कुल मिलकर जितना शानदार वो दुर्लभ ताज है, भारत सरकार ने उतनी ही शानदार उसकी सिक्योरिटी कर रखी है ।”

सिक्योरिटी तो उसकी वैसे भी शानदार होती बॉस ।” तानाजी जाधव बोला- “आखिर भारत सरकार की नाक का सवाल है । अगर कहीं वो दुर्लभ ताज चोरी हो गया, तो यहाँ की सरकार कजाखिस्तान के अधिकारियों को अपना क्या मुँह दिखायेगी ? क्या कहेगी उनसे ? आखिर उन लोगों ने यकीन के बलबूते पर ही तो अपनी इतनी महत्वपूर्ण चीज को प्रदशन के लिये इण्डिया भेजा है ।”

सेठ रुपचंद एकाएक हो-हो करके हँसने लगा ।

“वडी तानाजी साईं !” रुपचंद हँसते हुए ही बोला- “इण्डिया की नाक तो अब कटनी ही कटनी है ।”

“क्यों ?”

“क्यों क्या ? वडी जब ताज ही चोरी हो जायेगा, तो फिर नाक भी कैसे बची रहेगी नी ?”

तानाजी जाधव के होठों पर भी मुस्कान थिरक उठी ।

“त्यागी साईं !” सेठ रुपचंद ने गुड्डू त्यागी की तरफ देखा- “वडी क्या बात है ? तू कैसे खामोश है नी ? तू कुछ बोलता-बोलता क्यों नहीं ?”

“ऐसे ही ।”

“कोई तो बात जरूर है साईं, वरना खामोश बैठने वाले आदमियों में तो नहीं तू ।”

“बॉस !” गुड्डू त्यागी थोड़ा शुष्क स्वर में बोला- “न जाने क्यों मेरा दिल उस दुर्लभ ताज को चुराने के लिये गवाही नहीं दे रहा है ।”

“क्यों, गवाही क्यों नहीं दे रहा ?”

“मुझे लगता है बॉस, अगर हमने उस दुर्लभ ताज को चुराने की योजना बनायी, तो यह तो ईश्वर जाने कि हम अपनी योजना में कामयाब हो पायेंगे या नहीं, लेकिन हमें बर्बाद जरूर हो जाना है, हमारा सर्वनाश जरूर हो जाना है ।”

“वडी यह क्या बकवास कर रहा है तू ?” रुपचंद गुर्रा उठा- “खोपड़ी खराब हो गयी है तेरी ?”

गुड्डू त्यागी ने दोबारा खामोशी धारण कर ली ।

“पागल आदमी, वडी यह बात तेरे दिमाग में आयी भी कैसे ?” सेठ रुपचंद उसे फटकार-सी लगाता हुआ बोला- “तुझे यह सूझा भी कैसे कि अगर हमने इस योजना पर काम किया, तो हमारा सर्वनाश हो जायेगा ? वडी इन्द्रलोक से तेरे को आकाशवाणी हुई या फिर जो मुँह में आया, बक दिया ।”

“नहीं ।” गुड्डू त्यागी ने धैर्यपूर्वक जवाब दिया- “मैंने ऐसे ही कुछ भी नहीं बका ।”

“यानि तुझे सर्वनाश होता दिखाई दे रहा है ?”

"हाँ ।"

"कैसे ?"

"आपने दुर्लभ ताज के उस विज्ञापन को तो पढ़ा ही था, जो अखबार के अंदर छपा था ।"

"बिलकुल पढ़ा था, सबने पढ़ा था ।"

"फिर तो आपने विज्ञापन में यह भी जरूर पढ़ा होगा ।" गुड्डू त्यागी बोला- "कि वह दुर्लभ ताज अपनी सिक्योरिटी खुद करता है, ऐसी कितनी ही कहानियां उस ताज के बारे में प्रसिद्ध हैं कि जब-जब किसी ने उस ताज को चुराने का प्रयास किया, तब-तब वही बर्बाद हुआ ।"

"वडी तू कहना क्या चाहता है साईं ? एकदम साफ-साफ बोल ।"

"मैं सिर्फ यह कहना चाहता हूँ कि हमें आज से पहले घटी उन घटनाओं से कुछ सीखना चाहिये, कोई सबक लेना चाहिये !"

"और सबक हम यह लें साईं !" सेठ रुपचंद ने गुड्डू त्यागी को कहर बरपा करती आंखों से घूरा- "कि हम उस दुर्लभ ताज को चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल दें । वडी तू यही कहना चाहता है नी, हम अपने हाथों से अपनी किस्मत फोड़ लें । कुल्हाड़ी चला ले अपनी गर्दन पर ।"

गुड्डू त्यागी थोड़ा बौखलाया-सा नजर आने लगा ।

"जवाब दे त्यागी साईं ! वडी तू चुप कैसे हो गया नी ?"

"म...मैं सिर्फ इतना कहना चाहता हूँ बॉस ।" गुड्डू त्यागी शुष्क स्वर में बोला- "किस्मत तो हमारी तभी बदलेगी, जब हमारे हाथ वह दुर्लभ ताज लगेगा । कहीं ऐसा न हो कि हमारे हाथ दुर्लभ ताज भी न लगे और हम बर्बाद भी हो जायें ?"

"तू गधा है ।" रुपचंद गुर्रा उठा- "वडी तू बिलकुल एक नम्बर का पग्गल आदमी है । यह हैरानी की बात है साईं, तू कजाखिस्तान सरकार द्वारा रचा गया इतना-सा नाटक नहीं समझ सका ।"

"न...नाटक, कैसा नाटक ?"

"वडी आज के सुबह के अखबार में उस दुर्लभ ताज के बारे में जो कुछ छपा था, वह सब झूठ-ही-झूठ है । किसी प्रोफेशनल राइटर द्वारा लिखी गयी वो एक ऐसे मनगढंत कहानी है, जिसे पढ़कर हर कोई आकर्षित हो सके । इतना ही नहीं, अगर कोई अपराधी उस दुर्लभ ताज को चुराने की कल्पना करे, तो उस सनसनीखेज स्टोरी को पढ़कर उसके हौंसले पस्त हो सकें, वो आतंकित हो जाये । तुझे नहीं मालूम त्यागी साईं, आज सुबह के अखबार में जो स्टोरी छपी, वो उस दुर्लभ ताज की सबसे बड़ी सिक्योरिटी है ।"

"स...सिक्योरिटी ।" गुड्डू त्यागी के साथ-साथ अब तानाजी जाधव की आंखों में भी हैरानी के भाव उभरे- "वो कैसे ?"

"वडी जब अपराधियों को यह मालूम होगा कि आज तक जिसने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया, वही बर्बाद हो गया, फिर दुर्लभ ताज को चुराने का दुस्साहस ही कौन करेगा नी ? वडी जैसे उस बात को सोच-सोचकर अब तेरी पतलून गीली हो रही है, वह भी तो घबरा

रहे होंगे । ऐसी परिस्थिति में वो स्टोरी उस दुर्लभ ताज की सबसे बड़ी सिक्योरिटी हुई कि नहीं हुई ?"

तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी, दोनों दंग रहे गये ।

दोनों के नेत्र हैरत से फैल गये ।

कितनी दूर की सूझी थी सेठ रुपचंद को ।

लेकिन अहम् सवाल ये था क्या उतनी दूर की कजाखिस्तान के अधिकारियों को भी सूझी थी ?

क्या उन्होंने सचमुच उस दुर्लभ ताज के बारे में वो भ्रमजाल फैलाया था ?

"लेकिन वो दुर्लभ ताज एक ऐतिहासिक वस्तु है बॉस ।" तानाजी जाधव कुछ सोचकर बोला- "क्या किसी ऐतिहासिक वस्तु के बारे में इस तरह का झूठा प्रचार किया जा सकता है ?"

"क्यों नहीं किया जा सकता ?" सेठ रुपचंद फौरन बोला- "वडी वो झूठा प्रचार उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के लिये किया जा रहा है, उसकी हिफाजत के लिये किया जा रहा है, फिर इसमें गलत क्या है ?"

तानाजी जाधव चुप हो गया ।

बात सही थी ।

वाकई इसमें गलत क्या था, कुछ नहीं ।

लेकिन एक आशंका गुड्डू त्यागी और तानाजी जाधव के दिल में आखिर तक नगाड़े की तरह बजती रही, अगर वह प्रचार कोई झूठी कहानी न होकर सच्चाई की जीती-जागती तस्वीर हुआ, तब क्या होगा ?

तब क्या वो बर्बाद हो जायेंगे ?

तब क्या उनका सर्वनाश निश्चित था ?

उन दोनों ने उस सब्जैक्ट पर जितना सोचा, उतनी ही उनके दिमाग की उलझनें बढ़ीं ।

"वडी तुम लोग अब क्या सोचने लगे नी ?"

"इसका मतलब उस दुर्लभ ताज को चुराना अब पूरी तरह तय है ?" तानाजी जाधव बोला ।

"वडी मैं तुम लोगों को क्या मूर्ख दिखाई देता हूँ ।" सेठ रुपचंद काले नाग की तरह फुफकारा- "अगर ताज चुराना तय न होता, तो क्या मैं तुम लोगों के साथ यहाँ बैठा अपनी रात ही काली करता ।"

तानाजी जाधव ने सकपकाकर पहलू बदला ।

"साईं, ताज चुराना तो हण्ड्रेड परसेण्ट तय है । वडी अब हम लोगों को सिर्फ यह सोचना है कि वो ताज चोरी कैसे होगा, उसकी सिक्योरिटी को किस तरह भेदा जायेगा ?"

"जब हम लोग ताज चुराने का फैसला कर ही चुके हैं ।" तभी तानाजी जाधव ने अपने

बुद्धिमान होने का परिचय दिया- “तो क्यों न हम सबसे पहले ताज की सिक्योरिटी के फुल इंतजाम का पता करें ।”

“सिक्योरिटी का बंदोबस्त था बॉस !” तानाजी जाधव बोला- “वह वो बंदोबस्त था, जो पहली नजर में ही दिखाई दे जाता हैं, जबकि वास्तव में भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के वास्ते ऐसे कई सीक्रेट इंतजाम किये हो सकते हैं, जो हमें पहली नजर में दिखाई नहीं देते । ऐसे गुप्त सुरक्षा इंतजाम न सिर्फ ज्यादा शक्तिशाली होते हैं बल्कि हम जैसे अपराधियों के लिये ऐसे इंतजाम ही ज्यादा खतरनाक साबित हो सकते हैं बॉस !”

सेठ रुपचंद के चेहरे पर थोड़ी हिचकिचाहट के भाव उभरे ।

“वडी तू कैसे गुप्त इंतजामों की बात कर रहा है तानाजी साईं ! जरा साफ-साफ बोल ।”

“जैसे उदहारण के तौर पर ऐसे जगह सेफ्टी अलार्म लगा दिया जाता है ।” तानाजी जाधव बोला- “जैसे ही कोई व्यक्ति गलत तरीके से वहाँ घुसता है, तो वह सेफ्टी अलार्म खुद-ब-खुद नजदीक के पुलिस स्टेशन में, पुलिस कण्ट्रोल रूम में या फिर बाहर मौजूद सुरक्षाकर्मियों के नजदीक बज उठता है । वह तुरन्त भांप जाते हैं कि वहाँ अंदर कुछ गड़बड़ है, कण्ट्रोल रूम से फौरन यही रिपोर्ट वायरलेस द्वारा तमाम पुलिस पैट्रोलिंग वेन्स को सर्कुलेट कर दी जाती है । जिसका नतीजा यह निकलता है कि अपराधी घटनास्थल पर ही चूहे की तरह फंस जाता है और पुलिस उसे रंगे हाथों गिरफ्तार कर लेती है । इसके अलावा मूल्यवान वस्तु के आसपास ऐसी वायरें बिछाकर उनमें करण्ट प्रवाहित कर दिया जाता है, जो वायरें एकाएक नजर नहीं आतीं । इतना ही नहीं, मेरे कहने का मकसद है कि भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के लिये और भी ऐसे इंतजाम किये हो सकते हैं । इसलिये जब तक हमें उन तमाम गुप्त इंतजामों के बारे में फुल जानकारी हासिल नहीं हो जाती, तब तक हमारा उस दुर्लभ ताज को चुराने के बारे में सोचना भी बेवकूफी है । अगर हमें उस दुर्लभ ताज को चुराना है, तो सबसे पहले हमारा काम यह होना चाहिये कि हम उन गुप्त इंतजामों के बारे में फुल जानकारी हासिल करें ।”

सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव की बातों से बड़ा प्रभावित हुआ ।

“लेकिन तानाजी साईं, हमें इतनी महत्वपूर्ण जानकारी हासिल कैसे होगी नी ?”

“जानकारी हासिल करने का सिर्फ एक रास्ता है ।”

“कौन- सा रास्ता ?”

“हमें किसी तरह ‘इनसाइड हैल्प’ हासिल करनी होगी, हमें नेशनल म्यूजियम के किसी ऐसे सिक्योरिटी ऑफीसर को अपने साथ मिलाना होगा, जो दुर्लभ ताज की फुल सिक्योरिटी की जानकारी रखता हो ।”

अब !

अब रुपचंद ने नेत्र फट पड़े ।

“वडी तेरा दिमाग तो ठिकाने है तानाजी साईं !” रुपचंद गुर्राया- “साईं तुझे मालूम है, तू क्या बक रहा है ? ऐसा भी कहीं हो सकता है ?”

“बिलकुल हो सकता है ।”

“कैसे ?”

“मैं बताता हूँ ।” तभी गुड्डू त्यागी बीच में बडे उत्साह के साथ बोला- “मेरे पास एक ऐसी योजना है, जिससे नेशनल म्यूजियम के किसी सिक्योरिटी ऑफीसर से मदद ली जा सकती है ।”

अब सेठ रुपचंद ने हैरान निगाहों से गुड्डू त्यागी को देखा ।

“क...क्या योजना है ?”

“अभी बताता हूँ योजना !”

गुड्डू त्यागी फौरन लपककर वहीँ कॉफ्रेंस हॉल में एक स्टूल पर पड़ा पिछले दिन का ‘प्रिया टाईम्स’ अखबार उठा लाया ।

फिर गुड्डू त्यागी ने उस अखबार का पन्ना खोला, जिस पर क्लासीफाइड एडवर्टाइजमेंट छपे रहते हैं ।

“इस विज्ञापन को पढ़ो बॉस !” गुड्डू त्यागी ने अखबार सेठ रुपचंद के सामने रखकर एक छोटे से विज्ञापन को उंगली से ठकठकाया- “इस विज्ञापन को पढ़ते ही सारा माजरा खुद-ब-खुद आपकी समझ में आ जायेगा ।”

रुपचंद के साथ-साथ तानाजी जाधव ने भी उस विज्ञापन को बड़ी उत्सुकता के साथ पढ़ा ।

लिखा था :

आवश्यकता है

आवश्यकता है एक ऐसी गवर्नेंस की, जो छः माह के एक बच्चे की अच्छी तरह देखभाल कर सके । शैक्षिक योग्यता जरुरी नहीं, लेकिन आवेदनकर्ता के अपना कोई छोटा बच्चा न हो । मासिक आय तीन अंकों में, इच्छुक औरत/लड़की नीचे लिखे पते पर फौरन सम्पर्क करें ।

राजदीप सोनवाल

(मुख्य सुरक्षा अधिकारी-नेशनल म्यूजियम)

४/१७ बी, न्यू फ्रेण्डस कॉलोनी

नई दिल्ली

उस विज्ञापन को पढ़कर सेठ रुपचंद ने थोड़ी भौंचक्की निगाहों से गुड्डू त्यागी की तरफ देखा ।

“वडी इस विज्ञापन में क्या खास बात है ?”

“आपको कोई खास बात नहीं दिखाई दी ?”

“नहीं ।”

“यह तो इस विज्ञापन से आप समझ ही गये होंगे ।” गुड्डू त्यागी बोला-“कि राजदीप सोनवाल नाम का यह व्यक्ति नेशनल म्यूजियम का चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर है और उसे अपने छः महीने के बच्चे की देखभाल के लिये एक गवर्नेस की जरुरत है । अब आप जरा मेरा आइडिये

पर कल्पना कीजिये बॉस, अगर हम राजदीप सोनवाल के घर में अपनी तरफ से किसी लड़की को गवर्नेस बनाकर भेज दें, तब कैसा रहेगा ?"

"उससे क्या होगा ?"

"उससे यह होगा कि हमारे द्वारा भेजी गयी लड़की सबसे पहले राजदीप सोनवाल को अपने प्रेमजाल में फांसेगी, उसे अपने संगमरमरी जिस्म का दीवाना बनायेगी । और जब राजदीप सोनवाल उसके इश्क में पूरी तरह गिरफ्तार हो चुका होगा, जब उसे उस लड़की के अलावा इस दनिया में कुछ नजर नहीं आयेगा, तब वो उससे बड़ी सहूलियत के साथ दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में सब कुछ उगलवा लेगी ।"

"वडी लेकिन इस बात की क्या गारण्टी है कि सोनवाल उस लड़की की मोहब्बत में गिरफ्तार होगा ही होगा ?"

"गारण्टी है ।" गुड्डू त्यागी दृढ़तापूर्वक बोला- "अगर लड़की कोई स्वर्ग की अप्सरा हो, अलिफ लैला के किस्से-कहानियों की हूर हो, मर्द को फांसने में हुनरमंद हो, तो उस बेचारे राजदीप सोनवाल की तो औकात ही क्या है, ऐसी लड़की के सामने तो बड़े-बड़े देवताओं का ईमान भी डोल जाना है ।"

सेठ रुपचंद हक्का-बक्का सा गुड्डू त्यागी को देखता रह गया ।

"वडी तू कहता तो ठीक है साईं ।" रुपचंद बोला- "लेकिन सवाल ये है कि हमें जन्नत की ऐसी हूर कहाँ मिलेगी, जो हमारे लिये यह सब कुछ करे ?"

"वह हमें मिलेगी नहीं बॉस, बल्कि मिल चुकी है ।"

"क...क्या मतलब ?"

रुपचंद के साथ-साथ तानाजी जाधव भी चौंका ।

"आपने डिंपी को देखा है बॉस ?"

"म...डिंपी, कौन डिंपी ?"

"रमेश की प्रेमिका डिंपी ! वही डिंपी जो सोनपुर में रहती है और जिसके साथ रमेश का बड़ा जबरदस्त, बड़ा तगड़ा रोमांस चल रहा है ।"

"नहीं, वडी मैंने तो उसे नहीं देखा ।"

"बॉस, बाई गॉड अगर उस लड़की को देखोगे, तो बस देखते रह जाओगे । वह कीचड़ में खिला कमल है । वह महलों की वह शहजादी है, जिसने गलती से सोनपुर जैसे बस्ती में जन्म ले लिया है । वो साक्षात स्वर्ग की अप्सरा है, जन्नत की हूर है । उसका सरु-सा लम्बा कद, उसका छरहरा बदन, उसकी तनी हुई सुडौल भरपूर छातियां, उसके गोरे-चिट्टे हाथ-पांव, बॉस क्या लड़की है । कसम से आग का गोला है, गोला !" बोलते-बोलते गुड्डू त्यागी की सांसे तेज-तेज चलने लगीं- "वह जब चलती है, तो उसके पैरों की धमक से उसके कूल्हों में ऐसी थिरकन पैदा होती है, जैसे वो चल नहीं रही हो बल्कि संगीत की ताल पर थिरक रही हो ।"

"बस-बस ।" सेठ रुपचंद ने उसे फौरन टोका- "वडी त्यागी साईं, तूने तो उस लड़की के जिस्म का पूरा भूगोल ही नाप डाला नी ।"

“वह लड़की है की इसी काबिल बॉस, बेपनाह तारीफ के काबिल ।”

“लेकिन जब वो इतनी ख़ूबसूरत है, तो रमेश के फंदे में कैसे फंस गयी ?”

“बस फंस गयी बॉस, इस रमेश की किस्मत किसी और मामले में तेज हो या न हो, लेकिन कम-से-कम लड़की के मामले में बड़ी किस्मत तेज है ।”

“बहरहाल अब तू यह चाहता है साईं ।” रुपचंद बोला- “कि डिंपी को गवर्नेस बनाकर राजदीप सोनवाल के यहाँ भेजा जाये ।”

“बिलकुल बॉस ! मेरी गारण्टी है कि राजदीप सोनवाल उसके प्रेमजाल में फंसेगा ही फंसेगा । डिंपी को देखते ही उसके सदाचार की चिता जल जानी है और बस वो भूखा कुत्ता बन जाना है । यह वो हथियार है बॉस, जिसका निशाना किसी भी हालत में खाली नहीं जायेगा ।”

“वडी त्यागी साईं, लेकिन डिंपी हमारे लिये काम क्यों करेगी ?”

“क्यों नहीं करेगी बॉस ! रमेश कहेगा, तो वह करेगी, हजार मर्तबा करेगी ।”

“रमेश कहेगा उससे ?”

“कैसे नहीं कहेगा ।” गुड्डू त्यागी के चेहरे पर एकाएक बड़े खूंखार भाव उभरे- “अगर उसने नहीं कहा, तो हमने उसे यहाँ से बाहर नहीं निकाल देना है ? उस हरामी को जहन्नुम नहीं पहुँचा देना है ?”

बात सेठ रुपचंद के दिमाग में भरी ।

“वडी तू कहता तो ठीक है ।” रुपचंद बोला- “अगर यह बात है, तो तू बुलाकर ला रमेश को ।”

रमेश, जो दरवाजे से कान लगाये खड़ा सारी बातचीत सुन रहा था, एकाएक उसके हाथ-पांव फूल गये ।

सांसे उसे अपने गले में फंसती महसूस हुई ।

वह वापस बड़ी तेजी से अपने कमरे की तरफ भागा ।

जल्द ही रमेश अपने कमरे में इस तरह लेट चुका था, जैसे गहरी नींद सो रहा हो ।

तभी वहाँ गुड्डू त्यागी के कदम पड़े ।

रमेश फिर भी सोने का अभिनय करता रहा ।

गुड्डू त्यागी ने उसे झंझोड़कर उठाया ।

“क...कौन है ?” रमेश हड़बड़ाकर उठा ।

“जल्द खड़ा हो, तुझे बॉस बुला रहे हैं ।”

“ब...बॉस !” रमेश की आवाज कांपी- “ल...लेकिन क्यों ?”

“अब हिलेगा भी, बाकी कहानी तुझे वही बतायेंगे ।”

रमेश भीगी बिल्ली बना खामोशी से उसके पीछे-पीछे चल पड़ा ।

उसे ऐसा महसूस हो रहा था, जिसे वो बलि का बकरा हो और उसे अब कुर्बानी के लिये ले जाया जा रहा था ।

रमेश जैसे ही कांफ्रेंस हॉल में दाखिल हुआ, तो सेठ रुपचंद की एक भरपूर नजर उसके ऊपर पड़ी ।

कांप उठा रमेश ।

“अ...आपने मुझे याद किया साहब ?”

“हाँ, मैंने तुम्हें याद किया रमेश साईं ! आओ, मेरे पास आओ ।”

रमेश कंपकंपाते कदमों से चलता हुआ सेठ रुपचंद के नजदीक पहुँचा ।

“तुमने हमसे यह विनती की थी न रमेश साईं, तुम्हें कुछ दिन के लिये यहीं रहने दिया जाये ।”

“ह...हाँ, साहब ! म...मैंने विनती की थी ।”

“वडी हमने तुम्हारी इस विनती पर अच्छी तरह सलाह-मशवरा किया है ।” सेठ रुपचंद बोला- “और साईं, खूब सलाह-मशवरा करने के बाद हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे कि तुम यहाँ रह सकते हो । लेकिन तुम्हें उसके बदले हमारी एक शर्त पूरी करनी होगी ।”

“क...कैसी शर्त ?” रमेश फंसे-फंसे स्वर में बोला ।

उसे ऐसा लग रहा था, जैसे कोई दानव उसके सीने को अपनी मुट्ठी में जकड़कर जोर से भींच रहा हो ।

“तानाजी साईं !” रुपचंद, तानाजी जाधव की तरफ घूमा- “वडी तू इसको शर्त के बारे में बता । इसे यह बता कि इसने क्या करना है नी ?”

तानाजी जाधव ने गला खंखारा ।

फिर उसने रमेश को सबसे पहले दुर्लभ ताज की चोरी के बारे में बताया ।

फिर उसे यह बताया कि उस चोरी में डिंपी को उन लोगों की किस प्रकार मदद करनी थी ।

रमेश सकते जैसी स्थिति में खड़ा रहा ।

खून उसकी कनपटी पर ठोकरें-सी मारने लगा ।

कितने घटिया इंसान थे वो ।कितने नीच ।

एक लड़की को, एक लड़की की आबरू को, वह अपने मतलब के लिये दांव पर लगा देना चाहते थे ।

“रमेश साईं !” सेठ रुपचंद कुछ रुककर बोला- “वडी तूने अभी तक जवाब नहीं दिया, तू डिंपी को गवर्नेस बनाकर राजदीप सोनवाल के घर भेजेगा या नहीं ?”

“म...मैं उसे कहीं भी कैसे भेज सकता हूँ साहब ।” रमेश डरे-डरे लहजे में बोला- “कहीं भी जाने या न जाने का फैसला तो खुद डिंपी ही कर सकती है ।”

“वडी बकवास मत कर !” सेठ रुपचंद एकाएक नाग की तरह फुंफकार उठा- “हम लोग कोई

दूध पीते बच्चे नहीं है कंजर ! याद रख-पुलिस तेरे पीछे भूखे कुत्ते की तरह घूम रही है । तू पुलिस के हत्थे चढ़ा और फौरन तेरी लुटिया डूबी । फौरन तेरी जिंदगी का दिया बुझा । इस समय तेरे ऊपर खतरा-ही-खतरा है और ऐसी स्थिति में डिंपी तुझे खतरे से बचाये रखने के लिए कुछ भी कर सकती है । वडी वो प्रेमिका है तेरी । लवर है तेरी । फिर उसे मोहब्बत का एक नाटक ही तो करना होगा । एक ड्रामा ही तो खेलना होगा ।"

रमेश चुप खड़ा रहा ।

"साईं !" रुपचंद ने उसे साफ-साफ चेतावनी दी- "अगर तू हमारी छत्रछाया में रहना चाहता है, अगर तू चाहता है कि तू पुलिस के हत्थे न चढ़े, तो वडी तेरे को डिंपी से यह काम कराना ही होगा ।"

रमेश फिर चुप ।

"यह सोचने का समय नहीं है रमेश !" इस बार तानाजी जाधव गरजा- "जल्दी से हाँ या ना में जवाब दो, अगर ना करते हो तो दफा हो जाओ यहाँ से । हम लोग पागल नहीं हैं, जो तेरे जैसे दिल्ली पुलिस में वाण्टेड, इनामशुदा हुए इश्तिहारी मुजरिम को अपने यहाँ शरण दें और ख्वामखाह किसी बड़े झमेले में फंसे ।"

रमेश के चेहरे पर कशमकश के भाव छाये रहे ।

वो फैसला नहीं कर पा रहा था कि उसे क्या करना चाहिये ?

"त्यागी साईं !" एकाएक रुपचंद चिंघाड़ उठा ।

"यस बॉस !" गुड्डू त्यागी ने फौरन तत्परता से कहा ।

"वडी तू क्यों हम लोगों का भेजा खराब करता है नी, तू इस कमीने को वापस सोनपुर छोड़कर आ । यह हमारे किसी मतलब की दवा नहीं है ।"

"न...नहीं ।" रमेश आतंकित हो उठा- "म...मैं सोनपुर नहीं जाऊंगा ।"

"कैसे नहीं जायेगा ।" गुड्डू त्यागी ने अपनी शर्ट की बाहें चढ़ाई और रौद्र रूप में उसकी तरफ बढ़ा- "तेरा तो बाप भी जीयेगा साले ! मादर... !!"

रमेश के पूरे शरीर में खौफ की लहर दौड़ गयी ।

वो जानता था कि वह उनके कई रहस्यों से वाकिफ हो चुका है ।

इसलिये ऐसी परिस्थिति में गुड्डू त्यागी उसे सोनपुर नहीं बल्कि कहीं और ही छोड़कर आने वाला था ।

शायद दूसरी दुनिया में !

ऐसी दुनियां में, जहाँ से वापसी को कोई रास्ता नहीं ।

इस बीच गुड्डू त्यागी ने उसकी बांह कसकर पकड़ ली थी, फिर वह उसे बुरी तरह घसीटता हुआ बोला- "बाहर निकल ! बाहर निकल सुअर के बच्चे !!"

"स...सुनो ।" रमेश चिल्ला उठा- "स...सुनो ।"

गुड्डू त्यागी ठिठक गया ।

“म... मैं तैयार हूँ साहब !” रमेश सेठ रुपचंद की तरफ देखता हुआ आहत् स्वर में बोला- “म...मैं तैयार हूँ, मैं आज ही डिंपी के पास जाकर इस बात की कोशिश करता हूँ कि वो गवर्नेस बन जाये ।”

“कोशिश नहीं ।” रुपचंद चिंघाड़ा- “वडी कोशिश नहीं, तूने यह काम हर हालत में करना है । अगर डिंपी, सोनवाल के घर गवर्नेस बनकर नहीं गयी, तो समझ तेरा और हमारा रिश्ता खत्म । वडी फिर हम तुझे नहीं जानते और तू हमें नहीं जानता ।”

“और उसे वहाँ जाकर सिर्फ बच्चा ही नहीं खिलाना है ।” तभी तानाजी जाधव भी गुर्राया- “बल्कि उसने वहाँ जाकर बच्चे के बाप को भी खिलाना है । उसकी भी लल्ला-लल्ला लोरी करनी है । बच्चे से ज्यादा बच्चे के बाप की देखभाल करनी है । उससे दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में सारे रमेश उगलवाने हैं, तभी हमारा काम मुकम्मल होगा ।”

“म...मैं समझ गया ।” रमेश ने बेबसी की स्थिति में अपनी गर्दन हिलाई- “स...सब कुछ समझ गया ।”

उसकी हालत अब ऐसी हो रही थी, जैसे उसने किसी शेर की मूछें पकड़ ली हों ।

जिन्हें वो न छोड़ सकता था और न ज्यादा देर तक पकड़े रह सकता था ।

१४

रात के उस समय बारह बज रहे थे, जब रमेश छिपता-छिपाता सोनपुर पहुँचा ।

सोनपुर में घुसते हुए वो बेहद सावधान था, जग्गु का डर उसके दिमाग में बैठा हुआ था ।

जग्गु के खौफ की वजह से ही वो डिंपी के घर में पीछे से खिड़की कूदकर अंदर घुसा ।

डिंपी तब बेखबर पड़ी सो रही थी ।

रमेश ने उसे झंझोड़कर जगाया ।

“त...तुम !” डिंपी, रमेश को देखते ही चौंक पड़ी- “त...तुम !!”

फौरन उसकी आंखों से नींद उड़ गयी ।

“सब कुछ ठीक तो है न डिंपी ?”

“त...तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिये था रमेश ।” एकाएक डिंपी के चेहरे पर आतंक के भाव उभर आये थे ।

“क...क्यों ?”

“इंस्पेक्टर राजविर तुम्हें तलाश करता घूम रहा है रमेश ! वह सुबह से दो बार सोनपुर में आ चुका है । यही हाल जग्गु का है-वह राजविर के खौफ की वजह से खुलेआम तो नहीं घूम रहा-लेकिन मुझे खबर है कि वह अपने चाकू से तुम्हारे पेट की अंतड़ियां फाड़ डालने के लिये बेहद व्याकुल है । इसके अलावा तुम्हारे लिये एक और बड़ी बुरी खबर है रमेश ।”

“क... क्या ?”

सिर्फ यही दोनों तुम्हारी तलाश में नहीं लगे हुए बल्कि जबसे दिल्ली पुलिस ने तुम्हारे ऊपर एक लाख का इनाम घोषित किया है, तब से इनाम हासिल करने के लालच में सोनपुर के कई दूसरे गुण्डे भी तुम्हारी तलाश में लग गये हैं । इसीलिये तो मैंने तुमसे कहा, तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिये था । तुम नहीं जानते रमेश, आज पूरे दिल्ली शहर में तुम्हारे नाम की चर्चा है, हर गली में, हर चौराहे पर, हर नुक्कड़ पर तुम्हारे बारे में बातें हो रही है । लोग तुम्हें लॉटरी का टिकिट समझ रहे हैं रमेश, हर कोई तुम्हें गिरफ्तार कराकर एक लाख कमाने का इच्छुक है ।”

हे ईश्वर !

हे ईश्वर !!

रमेश को अपने हाथ-पैर बर्फ होते महसूस हुए ।

वह दिन-ब-दिन कैसे भयानक जाल में फसता जा रहा था ।

“रमेश !”

“हूँ !” रमेश के अचेतन मस्तिष्क पर हथौड़े जैसी चोट पड़ी- “हूँ !”

“सुबह जब यहाँ इंस्पेक्टर राजविर आया था ।” डिंपी थोड़े सकुचाये स्वर में बोली- “तो उसके

साथ पूरी पुलिस पलटन भी थी ।”

“फिर ?”

“व...वह तुम्हारे घर का सारा सामान कुर्क करके ले गया, यहाँ तक कि उसने ऑटो रिक्शा भी नहीं छोड़ी ।”

“हे देवा !”

रमेश के मुँह से सिसकारी छूट गयी ।

फिर रमेश वहीं बैड पर धम्म् से बैठ गया था ।

उसके चेहरे से पसीने की धारायें बहने लगीं ।

डिंपी भी उसी के नजदीक ही बैठ गयी और बड़ी अजीब नजरों से उसे देखती हुई शुष्क लहजे में बोली- “तुम कल से कहाँ थे ? मैं तुम्हारे बारे में सोच-सोचकर परेशान हो रही थी ?”

“स...सेठ रुपचंद के अड्डे पर ही था ।”

“वह लोग अब तुम्हारे साथ किस तरह का व्यवहार कर रहे हैं ?”

“ठ...ठीक ही कर रहे हैं ।” रमेश ने विचलित स्वर में कहा- “उन्होंने मुझे वहीं रहने के लिये एक छोटा -सा कमरा दिया हुआ है ।”

“अगर यह बात है, तो फिर तुम इस खतरनाक जगह पर क्यों आये हो ? यहाँ तो तुम्हारे लिये मौत-ही-मौत है ।”

रमेश के चेहरे पर अब हिचकिचाहट के भाव उभरे ।

“जवाब क्यों नहीं देते ?”

“म...मैं इस समय एक बड़ी भारी मुसीबत में फंसा हुआ हूँ डिंपी !”

“मुसीबत !” डिंपी का दिल जोर से उछला- “कैसी मुसीबत ?”

रमेश ने अपना चेहरा दोनों हथेलियों में छिपा लिया ।

“म... मुसीबत भी ऐसी है, जिससे सिर्फ तुम ही मुझे छुटकारा दिला सकती हो ।”

“म...मैं ?”

“हाँ, तुम ।”

“ऐसी भी क्या मुसीबत है ?” डिंपी की आंखों में आश्चर्य के भाव उभरे ।

रमेश की उससे फिर भी कुछ कहने की हिम्मत न हुई ।

“रमेश, आखिर तुम कुछ बोलते क्यों नहीं, क्या बात है ?”

रमेश ने बेहद डरते-डरते सारी बात डिंपी को बता दी ।

उसे यह भी बताया कि उसने किस तरह गवर्नेस बनकर राजदीप सोनवाल को अपने प्रेमजाल में फांसना था ।

और यह भी बताया कि अगर उसने वो काम न किया, तो उसका क्या अंजाम होना था ।

डिंपी सन्न बैठी रह गयी ।

फिर उसके पास से उठी और खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गयी ।

“क्या बात है डिंपी !” रमेश फौरन उसके पीछे-पीछे खिड़की के पास पहुँचा-“क्या तुम मुझसे नाराज हो गयीं ?”

डिंपी ने अपना चेहरा खिड़की के पल्ले से सटा लिया ।

“तुम कुछ बोलती क्यों नहीं डिंपी ?”

रमेश ने डिंपी का चेहरा झटके से अपनी तरफ किया, तो उसके दिल-दिमाग पर बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी ।

वो रो रही थी, उसका चेहरा आंसुओं से तर था ।

“म...डिंपी !” तड़प उठा रमेश- “मैं जानता हूँ कि मैंने यह बात कहकर तुम्हारा दिल दुखाया है । ल...लेकिन तुम्हीं बताओ, मैं और क्या करता डिंपी ?” रमेश की आंखों में भी आंसू छलछला आये- “उन शैतानों ने मुझे मजबूर किया कि मैं तुमसे आकर यह बात कहूँ । लेकिन चिन्ता मत करो, अब अगर उनकी छत्रछाया मेरे ऊपर से उठती है, तो उठ जाये । मुझे परवाह नहीं । मुझे किसी बात की परवाह नहीं ।”

“न...नहीं रमेश !” डिंपी ने जल्दी से अपने आंसू साफ किये थे- “नहीं । इस समय तुम्हें उन लोगों की मदद की बहुत जरुरत है । अगर उन लोगों की छाया तुम्हारे ऊपर से उठ गयी, तो तुम नहीं जानते कि तुम कितने बड़े संकट में फंस जाओगे ।”

“ल...लेकिन... ।”

"बेफिक्र रहो रमेश ।” डिंपी कसकर उसके सीने से लग गयी- “मैं तुम्हारे लिये यह काम करूंगी, तुम्हारी खुशियों के लिये यह काम करूंगी ।”

“य...यह बात तुम दिल से कह रही हो डिंपी ?”

“ह...हाँ ।” डिंपी की आवाज भावनाओं के वेग से कंपकंपायी- “द...दिल से ही तो कह रही हूँ ।”

रो पड़ा रमेश ।

डिंपी भी उसके सीने से लिपटी धीरे-धीरे सुबक रही थी ।

उस रात रमेश जब वापस सेठ रुपचंद के अड्डे पर लौटा, तो उसका मन भारी-भारी था ।

उस दिन भी गुड्डू त्यागी ने सोनपुर में उसकी आंखों पर पट्टी बांधी और तब वो उसे अपने अड्डे पर लेकर गया ।

उन लोगों का अड्डा कहाँ है, इस रमेश से रमेश अभी तक अनजान था ।

उसने कई बार रात को चोरी-छिपे अड्डे का गुप्त रास्ता पता लगाने का प्रयास किया, लेकिन हर बार उसे अपने मकसद में नाकामी मिली ।

बेपनाह कोशिशों के बाद उसे सिर्फ इतना मालूम हो सका कि वह लोग कॉफ्रेंस हॉल के अंदर ही कहीं से प्रकट होते हैं और फिर वहीं से गायब हो जाते हैं ।

यानि आने-जाने का रास्ता उसी कॉफ्रेंस हॉल के अंदर से था ।

बहरहाल उस रात के बाद से डिंपी की परीक्षा की घड़ी शुरू हुई ।

वह अगले दिन ही नेशनल म्यूजियम की चीफ सिक्योरिटी ऑफीसर राजदीप सोनवाल की कोठी पर जा पहुँची थी ।

पहला झटका तो उसे यही देखकर लगा कि वहाँ उससे पहले ही तीन लड़कियां मौजूद थीं ।

डिंपी का दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगा ।

उसे वो नौकरी किसी भी हालत में चाहिये थी ।

किसी भी कीमत पर ।

चाहे कुछ भी ड्रामा क्यों न करना पड़े ।

डिंपी का दिमाग एकाएक काफी तेजी से चलने लगा ।

एक-एक करके तीनों लड़कियों को ड्राइंग हॉल में बुलाया गया ।

सबसे आखिर में डिंपी की बारी आयी ।

डिंपी डरती-डरती ड्राइंग हॉल में दाखिल हुई, वह काफी भव्य ढंग से सजा हुआ एक ड्राइंग हॉल था, जिसमें सामने दो अलग-अलग कुर्सियों पर मिस्टर एण्ड मिसेज सोनवाल बैठे थे ।

दोनों जवान थे, खूबसूरत थे, उनकी उम्र तीस-बत्तीस के आसपास थी और शक्ल-सूरत से ही काफी सभ्य नजर आ रहे थे ।

मिसेज सोनवाल की गोद में एक गोरा-चिट्टा बच्चा पड़ा किलौली-सी कर रहा था, वह भी अपने मम्मी-डैडी की तरह ही खूबसूरत था ।

“नमस्ते !” उन दोनों को देखते ही डिंपी ने अपने हाथ जोड़ लिये ।

“नमस्ते !”

उन दोनों के हाथ भी ‘नमस्ते’ की मुद्रा में जुड़े ।

“बैठो ।” फिर राजदीप सोनवाल ने कहा ।

डिंपी सिकुड़ी-सिमटी सी एक कुर्सी पर बैठ गयी ।

“तुम्हारा नाम क्या है ? पहला सवाल मिसेज सोनवाल ने पूछा था ।

“स...प्रिया मेहरा ।” उसने जानबूझकर नकली नाम बताया ।

“तुम्हारी शादी हो गयी ?”

जी नहीं ।”

“ओह !” मिसेज सोनवाल ने राहत की सांस ली- “फिर तो किसी छोटे बच्चे के होने का भी सवाल नहीं उठता, कहाँ तक पढ़ी हो ?”

“बी० ए ० फाइनल ।”

“गुड, रहती कहाँ हो ?”

यही वो पल था, जब डिंपी ने ड्रामा किया ।

मिसेज सोनवाल के उस सवाल के पूछते ही डिंपी की आंखों में आंसू छलछला आये ।

उसने दोनों हथेलियों से अपना चेहरा छिपा किया और जोर से सुबक उठी ।

हड़बड़ा उठे सोनवाल दम्पत्ति !

जबकि राजदीप सोनवाल तो कुर्सी से उछलकर खड़ा हो गया था ।

“क...क्या बात है ?” राजदीप सोनवाल बौखलये स्वर में बोला- “क...क्या हम लोगों ने कोई गलत सवाल पूछ लिया ?”

“न...नहीं साहब !” डिंपी ने सुबकते हुए ही कहा- “आप लोगों ने कोई गलत सवाल नहीं पूछा ।”

“फ...फिर तुम रो क्यों रही हो ?”

“जिसकी किस्मत में ही रोना लिखा हो साहब ।” डिंपी भाव-विह्वल स्वर में बोली- “वह रोने के अलावा और कर भी क्या सकती है । यूं तो यह दुनिया इतनी बड़ी है साहब, लेकिन इस इतनी बड़ी दुनिया में मेरा कोई घर नहीं, कोई ठिकाना नहीं ।”

“यह कैसे हो सकता है ।” सोनवाल दम्पत्ति चौंके- “कि इतनी बड़ी दुनिया में तुम्हारा कोई घर नहीं, कोई ठिकाना नहीं ?”

“ऐसा ही है साहब ।”

“तुम्हारे मा-बाप नहीं ?”

“नहीं ।”

“बहन-भाई, कोई नहीं ?” राजदीप सोनवाल के स्वर में हैरत उमड़ी ।

“नहीं साहब ।”

“कमाल है, एकाएक यकीन नहीं आता ।”

“मुझे खुद भी यकीन नहीं आता साहब ।” डिंपी नौकरी हासिल करने के लिये शानदार ड्रामा करती हुई बोली- “क्योंकि आज से सिर्फ तीन महीने पहले मेरे पास सब कुछ था, सब कुछ । मेरे मां-बाप थे, एक बड़ा भाई था । मैं चण्डीगढ़ की रहने वाली हूँ, वहीं मेरे पिताजी का कपड़े का बड़ा अच्छा कारोबार था । नीचे दुकान थी और ऊपर मकान । उ...उस रात मैं अपनी एक सहेली के घर गयी हुई थी, जिसकी अगले दिन बारात आने वाली थी । और...और उसी रात सब कुछ तबाह हो गया, सब कुछ ।”

“क...क्या हुआ था ?” राजदीप सोनवाल के चेहरे पर जबरदस्त सस्पैंस झलका ।

“द...दरअसल उस रात पंजाब पुलिस से बचकर भागते हुए दो आतंकवादी हमारे घर में घुस आये थे, उन्होंने जब हमारे घर में शरण चाही, तो पिताजी और भैया ने उनका विरोध किया, बस इसी बात से क्रोधित होकर आतंकवादियों ने मम्मी सहित मेरे पिताजी और भैया की हत्या कर दी । इतना ही नहीं, उन्होंने हमारे घर और दुकान में भी आग लगा डाली ।”

“ओह, वैरी सैड !” सोनवाल दम्पत्ति सन्न रह गये ।

जबकि डिंपी अब पहले से भी ज्यादा जोर-जोर से सुबक रही थी ।

डिंपी के उस ड्रामें का मिसेज सोनवाल पर और भी गहरा असर हुआ ।

वह अपने बच्चे को गोद में उठाये-उठाये डिंपी के नजदीक आ गयी तथा फिर उसके कंधे पर स्नेह से हाथ रखा- “धीरज रखो प्रिया, धीरज रखो । इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे साथ बहुत भयंकर दुर्घटना घटी है, लेकिन भगवान बहुत बड़ा है, वो सबकी मदद करता है ।”

डिंपी फिर भी धीरे-धीरे सुबकती रही ।

“हमारी सहानुभूति तुम्हारे साथ है प्रिया ।” राजदीप सोनवाल ने भी उसे ढांढस बंधाया- “तुम्हें चिन्ता करने की कोई जरुरत नहीं ।”

“इ...इसका मतलब आपने मुझे नौकरी दे दी साहब ?”

“क्यों नहीं, और यह नौकरी देकर मैं तुम्हारे ऊपर कोई अहसान नहीं कर रहा प्रिया ।” राजदीप सोनवाल बोला- “बल्कि यह नौकरी कबूल करके तुम मेरे ऊपर अहसान कर रही हो । मुझे अपने आप पर गर्व है कि मैं तुम्हारे जैसी बेसहारा लड़की के काम आ सका ।”

“थैंक्यू-थैंक्यू सोनवाल साहब ।” डिंपी ने जल्दी-जल्दी अपनी आंखों के आंसू पोंछे ।

“और हाँ ।” तभी मिसेज सोनवाल बोली- “आज से तुम इसी कोठी में रहोगी, हमारे साथ । अब यही तुम्हारा घर है ।”

"ल...लेकिन... ।” डिंपी के चेहरे पर हिचकिचाहट के भाव उभरे ।

“प्लीज प्रिया, इंकार मत करना । अब तुम इसी घर की एक सदस्य हो ।”

“ठ...ठीक है ।” वह शब्द कहते हुए डिंपी ने उन दिनों के सामने अपनी गर्दन झुका ली थी ।

इस तरह डिंपी, राजदीप सोनवाल के यहाँ न सिर्फ गवर्नेस की नौकरी पाने में सफल हो गयी बल्कि उसी कोठी के अंदर उसे रहने के लिये एक बैडरूम भी मिल गया ।

राजदीप सोनवाल के जिस बच्चे की डिंपी को देखभाल करनी थी, उसका नाम 'चिंटू' था ।

यह बात डिंपी को बाद में पता चली कि मिसेज सोनवाल कृषि कार्यालय में सचिव थीं ।

वह अपने चिंटू बेटे को डिंपी के हवाले करके उसी दिन सरकारी काम से एक सप्ताह के लिये उदयपुर चली गयीं ।

डिंपी का काम अब और भी आसान हो गया ।

अब वो और ज्यादा सहूलियत से राजदीप सोनवाल को अपने फंदे में फांस सकती थी ।

उसी रात से डिंपी का 'खेल' शुरू हुआ ।

रात के लगभग ग्यारह बज रहे थे, जब डिंपी की ह्रदय विदारक चीख से पूरी कोठी दहल गयी ।

राजदीप सोनवाल उस समय तक जाग रहा था और अपने बैडरूम में लेटा "कमांडर शेखावत सीरीज" का एक जासूसी नॉवेल पढ़ रहा था ।

डिंपी की ह्रदयविदारक चीख सुनते ही उसने नॉवेल एक तरफ रखा तथा फिर अद्वितीय फुर्ती के साथ डिंपी के बैडरूम की तरफ झपटा ।

बैडरूम का दरवाजा खुला था ।

वह दनदनाता हुआ अंदर दाखिल हो गया ।

वह जैसे ही अंदर घुसा-फौरन डिंपी बेहद दहशतजदां अवस्था में चीखती हुई उसके शरीर से आ लिपटी तथा बचाओ-बचाओ चिल्लाने लगी ।

वह अभी भी नींद के आगोश में थी ।

"प्रिया ! प्रिया !!" सोनवाल ने उसे बुरी तरह झंझोड़ा ।

डिंपी ने चौंकने का जबरदस्त अभिनय किया ।

उसकी आंखें खुलीं ।

फिर वो एकदम झटके से पीछे हटी ।

उसके वक्ष वेग से ऊपर-नीचे उठ गिर रहे थे, सांसों में तूफान था, कपड़े अस्त-व्यस्त थे ।

"प्रिया-क्या हुआ प्रिया ?" सोनवाल ने उसे हैरान निगाहों से देखा-"तुम चिल्लाई क्यों थीं ?"

जवाब देने की बजाय डिंपी धम्म से बेड पर बैठ गयी और अपनी सांसों को संतुलित करने का प्रयास करने लगी ।

"तुमने क्या कोई बुरा सपना देखा था ।"

"कैसा सपना ?"

"वही सपना !" डिंपी की आंखें उदास हो गयीं-"हमारे घर में आग लग रही है-मेरे मम्मी, डैडी और भाई का खून बहाया जा रहा है-खून के छींटे उड़ रहे हैं-उनकी चीखें गूंज रही हैं । म...मुझे यह सपना अक्सर दिखाई देता है साहब-और जब भी मैं इस सपने को देखती हूँ-तो इसी तरह

चिल्लाकर उठ बैठती हूँ ।" बोलते-बोलते डिंपी की आंखों में आंसुओं का समंदर तैर गया ।

उसने जोर से एक सुबकी ली ।

"धीरज रखो ।" राजदीप सोनवाल ने उसे ढांढस बंधाया-"वक्त के साथ-साथ हर जख्म भर जायेगा ।"

"सॉरी साहब !" डिंपी ने अपने आंसू साफ किये-मेरी वजह से आपको इतनी रात को परेशानी उठानी पड़ी ।"

"इसमें परेशनी की कोई बात नहीं-वैसे भी अभी तो मैं जाग ही रहा था ।"

"म...मैं आपसे एक विनती करूं साहब ?"

"क्यों नहीं-जो कहना है, बे-हिचक कहो ।"

"दरअसल जिस रात मुझे यह सपना दिखाई देता है उस रात अगर मैं अपने कमरे में अकेली सोती हूँ, तो यह सपना मुझे बार-बार आता है ।"

"क्या मतलब ?"

"अगर आप इजाजत दें साहब-तो आज की रात मैं आपके कमरे में सोना चाहती हूँ । म...मैं जमीन पर ही सो जाऊंगी-वरना यह सपना बार-बार मुझे परेशान करता रहेगा ।"

"ल...लेकिन... ।" राजदीप सोनवाल, डिंपी के उस प्रस्ताव पर हक्का-बक्का रह गया ।

"लेकिन क्या ?"

सोनवाल चुप ।

"शायद आपको कोई ऐतराज है साहब ?"

"नहीं-नहीं-ऐतराज जैसी कोई बात नहीं ।"

"फिर ?"

सोनवाल को सूझा नहीं-वो उस लड़की को क्या कहे ?

"ठीक है साहब-मैं यहीं सो जाऊंगी ।"

"नहीं-नहीं-अगर तुम्हें सपने की वजह से ज्यादा परेशानी होती है-तो तम मेरे बैडरूम में ही सो जाओ ।"

"थैंक्यू-थैंक्यू साहब ।"

डिंपी तुरन्त राजदीप सोनवाल के बैडरूम में एक चटाई पर जाकर लेट गयी थी ।

चिंटू-जो थोड़ी देर पहले तक उसके साथ सो रहा था-डिंपी ने अब उसे राजदीप सोनवाल के बिस्तर पर सुला दिया ।

बेचारा सोनवाल !

वो अपने अंदर अजीब-सी बेचैनी महसूस कर रहा था ।

उस रात लाख कोशिश करने के बावजूद भी उसे नींद न आ सकी ।

वह बिस्तर पर लेटा करवट-पर-करवट बदलता रहा ।

उसकी आंखें बार-बार डिंपी के जिस्म पर टिक जाती थीं ।

डिंपी !

जो सचमुच जन्नत की हूर थी ।

स्वर्ग की अप्सरा थी ।

वह रात सोनवाल पर बड़ी भारी गुजरी ।

डिंपी के रूप का जादू उसके ऊपर चल चुका था ।

और !

इस रमेश से नावाकिफ डिंपी भी नहीं थी ।

वह बंद पलकों की झिर्री में से राजदीप सोनवाल की प्रत्येक हरकत देख रही थी ।

अगले दिन-सुबह के वक्त ।

राजदीप सोनवाल नेशनल म्यूजियम जाने के लिये तैयार हो रहा था-तभी उसने देखा कि डिंपी भी चिंटू को तैयार कर रही है ।

“क्या बात है ।” राजदीप सोनवाल थोड़ा हँसकर बोला -“आज सुबह-ही-सुबह इस शैतान को दूल्हा कैसे बनाया जा रहा है ?”

“सोचती हूँ-थोड़ी देर के लिये इसे कहीं बाहर घुमा लाऊं ।”

“ख्याल तो अच्छा है-लेकिन कहाँ जाओगी ?”

“आप ही बताओ न कि कहाँ ले जाऊं ?”

“मैं क्या बता सकता हूँ ।”

“फिर भी कोई तो आइडिया तो दीजिये ।”

सोनवाल सोच में डूब गया ।

“तुमने नेशनल म्यूजियम देखा है ?” एकाएक सोनवाल बोला ।

“नेशनल म्यूजियम-नहीं तो ।”

“मैं म्यूजियम में राउण्ड पर जा रहा हूँ ।” राजदीप सोनवाल अपनी बेल्ट कसता हुआ बोला-“अगर तुम चाहो-तो तुम भी गुड्डु को लेकर मेरे साथ चल सकती हो-इसी बहाने सैर भी हो जायेगी । वैसे भी आजकल म्यूजियम में कजाखिस्तान से एक बेशकीमती ताज प्रदर्शन के लिये आया हुआ है ।”

“ठीक है-फिर तो वहीं चलते हैं ।” डिंपी ने उत्साहित होकर कहा-“वहाँ आपका साथ भी रहेगा ।”

“गुड !” मुस्करा दिया सोनवाल ।

जबकि डिंपी भी मन-ही-मन अपनी सफलता पर प्रसन्न हो रही थी ।

कुछ देर पश्चात् वो राजदीप सोनवाल के साथ ‘सिएलो’ गाड़ी में सवार होकर नेशनल म्यूजियम पहुँची ।

वहाँ उपस्थित तमाम सुरक्षा कर्मियों ने फौरन एड़ियां बजा-बजाकर सोनवाल को सेल्यूट मारा ।

फिर सोनवाल ने तीन-चार सुरक्षा कर्मियों से सिक्योरिटी के सम्बन्ध में कुछेक सवाल पूछे थे ।

उसके बाद वो आगामी आधा घण्टे तक राउण्ड लगाने के साथ-साथ डिंपी को म्यूजियम के अलग-अलग हिस्सों में घुमाता रहा ।

सबसे ज्यादा टाइम उन्होंने नम्बर चार में गुजारा ।

हॉल नम्बर चार-यानि म्यूजियम का वह हॉल कमरा, जहाँ दुर्लभ ताज प्रदर्शन के लिये रखा था ।

उस ताज की भव्यता देखकर डिंपी भी भौंचक्की रह गयी ।

उसके दिमाग में अंधड़ से चलने लगे ।

जबकि राजदीप सोनवाल इस बीच डिंपी को उस दुर्लभ ताज से जुड़ी अनेक रहस्यमयी गाथायें सुनाता रहा था ।

सारा समय इसी तरह गुजर गया ।

लौटते वक्त ।

“क्या सोच रही हो प्रिया ?” कार ड्राइव करते समय राजदीप सोनवाल ने डिंपी की तरफ देखा ।

“कुछ भी नहीं ।”

“कुछ तो !”

“मैं दरअसल उस दुर्लभ ताज के बारे में सोच रही हूँ ।”

“क्या सोच रही हो ?”

“यही कि वह कितना सुंदर है-कितना अद्वितीय-वह तो मूल्यवान भी बहुत होगा साहब ?”

“एकदम सही कहा तुमने-वह न सिर्फ मूल्यवान है बल्कि बेहद मूल्यवान है ।” राजदीप वालीवाल बोला-“अंतर्राष्ट्रीय बाजार में उस दुर्लभ ताज की कीमत कई अरब रुपये है ।”

“क...कई अरब रुपये !” डिंपी के नेत्र फैल गये ।

“हाँ ।”

“तब तो उसे कोई भी चुराने की कोशिश कर सकता है ।”

“बिल्कुल कर सकता है-आज से पहले भी कजाखिस्तान में कई बार उस दुर्लभ ताज को

चुराने की कोशिशें हो चुकी हैं-लेकिन हर बार चोरों को असफलता का मुँह देखना पड़ा ।"

"क्यों ?"

"क्योंकि उस ताज के बारे में प्रसिद्ध है कि वो अपनी सिक्योरिटी खुद करता है-जिस किसी ने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोशिश की, वह ताज तो न चुरा सका- हाँ पूरी तरह बर्बाद जरूर हो गया । उदाहरण के तौर पर रूस के एक नौजवान ने उस ताज को चुराने की कोशिश की थी-वह ताज चुराने में तो कामयाब न हुआ-हाँ पुलिस के हत्थे जरूर चढ़ गया । फिर किसी तरह अपने हथकण्डों की बदौलत वो पुलिस के शिकंजे से भी बचकर भाग निकला था-लेकिन उसी रात जब वो छिपता-छिपाता अपने किसी परिचित के यहाँ जा रहा था-तभी उसका ट्रक के अगले-पिछले दोनों पहिये उसके ऊपर से गुजर गये । बहरहाल अगले दिन उसका क्षत-विक्षिप्त शव पुलिस को सड़क पर पड़ा मिला ।"

"ओह !" डिंपी के शरीर में सनसनी-सी दौड़ गयी ।

"ऐसी ही एक घटना और सुनो ।" राजदीप सोनवाल कार ड्राइव करता हुआ बोला-"एक दूसरे चोर ने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया था-वह अपने मकसद में तो कामयाब न हो सका-लेकिन असफल होकर जब वो अपने घर लौटा तो उसी रात उसके घर में बड़ी भयंकर आग लग गयी-जिसमें उस चोर के साथ-साथ उसका पूरा परिवार जलकर खाक हो गया ।"

डिंपी भौचक्की-सी बैठी रह गयी ।

हे ईश्वर !

हे ईश्वर !!

इतना हंगामाखेज है वो ताज ?

फ...फिर रमेश का क्या होगा ?

क...क्या उसके साथ भी ऐसा ही कोई हादसा पेश आना था ? डिंपी के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा हो गया ।

फिर डिंपी ने थोड़ा रुककर पूछा-"साहब-उस दुर्लभ ताज को चुराने की जैसी कोशिशें कजाखिस्तान में हो चुकी हैं-ऐसी ही कोई कोशिश इधर दिल्ली शहर में भी तो हो सकती है ।"

"बिलकुल हो सकती है ।" राजदीप सोनवाल बोला-हमें खुद इस बात का पूरा शक है कि ऐसी कोई कोशिश यहाँ होगी-संभव है कि किसी संगठन ने इस दिशा में अपनी कोशिशें भी शुरू कर दी हों । इसीलिये भारत सरकार ने उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के खास इंतजाम किये हैं-तुमने देखा नहीं, नेशनल म्यूजियम पर कितने ढेर सारे सिक्योरिटी गार्ड तैनात थे-इसके अलावा प्रत्येक दर्शक की कितनी सजगता से तलाशी ली जा रही थी ।"

"क्या सुरक्षा का सिर्फ वही इंतजाम है ?"

"क्यों ?" राजदीप सोनवाल चौंका-"क्या वो इंतजाम कम है ?"

"यह बात नहीं-मैं यह पूछना चाहती हूँ कि दुर्लभ ताज के लिये कुछ गुप्त सिक्योरिटी भी तो

की गयी होगी ।”

“ग...गुप्त सिक्योरिटी !”

सोनवाल के दिमाग में धमाका-सा हुआ ।

उसके हाथ कार के स्टेयरिंग पर कांप गये ।

“क्यों-क्या हुआ ?”

“क...कुछ नहीं । वह जल्दी से सम्भला-“कुछ नहीं । तुमने सही कहा-हमने गुप्त सिक्योरिटी का बंदोबस्त भी किया है ।”

“क्या है वो बंदोबस्त ?”

“सॉरी !” राजदीप सोनवाल के होठों पर हलकी-सी मुस्कान दौड़ी-“गुप्त सिक्योरिटी के बारे में किसी को कुछ नहीं बताया जा सकता ।”

“क्यों ?”

“क्योंकि हमें यह आदेश भारत सरकार की तरफ से मिले हुए हैं ।”

बड़े दिलफरेब अंदाज में मुस्कराई डिंपी-“लेकिन मुझे बताने में क्या फर्क पड़ता है ।”

“फर्क पड़ता है भई !” सोनवाल ने थोड़े शरारती अंदाज में उसकी आंखें में झाका-“हो सकता है कि तुम भी अपराधियों से मिली हुई होओ ।”

डिंपी की ‘मुस्कान’ भक्क् से उड़ गयी ।

उसका दिल जोर से उछला ।

जबकि कार अपनी रफ्तार से दौड़ती रही थी ।

जल्द ही कार कोठी के लॉन में जाकर रुकी ।

डिंपी, नन्हें गुड्डू को अपनी गोद में संभाले बाहर निकली थी और उसके पीछे-पीछे ही राजदीप सोनवाल भी कार को लॉक करके बाहर निकला ।

“प्रिया-कल मैं तुमसे एक सवाल पूछना तो भूल ही गया था ।”

“कैसा सवाल ?”

“तुम्हारे पिताजी का क्या नाम था ?”

“द...लालसिंग-लालसिंग मेहरा जी !”

“ओह ! थैंक्स ! थैंक्स अ लॉट !”

“ल...लेकिन आपने पिताजी का नाम क्यों पुछा साहब ?”

“यूं ही !” राजदीप सोनवाल मुस्कराया-“मधुर स्मृति के लिये ।”

डिंपी का दिल धाड़-धाड़ करके बजने लगा ।

जरूर कोई और वजह थी ।

उसी दिन-आधी रात के समय जब पूरा सोनवाल भवन गहन सन्नाटे में डूबा था-चारों तरफ गहन खामोशी थी-तभी किसी ने डिंपी के दरवाजे पर बड़े सांकेतिक अंदाज में तीन बार दस्तक दी ।

डिंपी के फौरन बिस्तर से उछलकर खड़ी हो गयी ।

उसने लपककर दरवाजा खोला-फिर झट् से बोली-"त...तुम यहाँ क्यों आये हो ?"

"अंदर तो आने दो ।" काला साया सरसराये लहजे में बोला-"फिर सब कुछ बताता हूँ ।"

डिंपी दरवाजे से एक तरफ हट गयी ।

फौरन साये ने अंदर कदम रखा-वह रमेश था ।

"त...तुम्हें यहाँ आते देखा तो नहीं ?" डिंपी ने जल्दी से दरवाजा वापस बंद किया ।

"न...नहीं-किसी ने नहीं देखा ।" रमेश सरसराये लहजे में बोला-"लेकिन तुम इतना घबरायी हुई क्यों हो-कहीं कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गयी ?"

"अभी तक तो नहीं हुई-लेकिन आने वाले समय में हो सकती है ।"

"क...क्या मतलब ?" रमेश का दिल उछला-"त...तुम कहना क्या चाहती हो-क...कैसी गड़बड़ हो सकती है ?"

डिंपी हिचकिचाई ।

"तुम कुछ बोलती क्यों नहीं ?"

डिंपी ने दबी-दबी जबान में उसे शाम वाली घटना के बारे में बताया ।

"य...यानि तुम यह कहना चाहती हो ।" रमेश बोला-"कि राजदीप सोनवाल को तुम्हारे ऊपर शक हो गया है-इसलिये उसने तुमसे तुम्हारे पिताजी का नाम पूछा ।"

"और नहीं तो क्यों पूछा ?"

"ऐसे भी तो पूछा हो सकता है-फिर राजदीप सोनवाल ने वजह भी तो बयान की थी-उसने कहा था कि वो मधुर स्मृति के लिये पूछ रहा है ।"

"यह सब बेकार बातें हैं रमेश !" डिंपी आन्दोलित लहजे में बोली-"यह कोई ठोस वजह नहीं-मैं गारण्टी से कहती हूँ कि सोनवाल के उस साधारण सवाल के पूछने के पीछे जरूर कोई महत्वपूर्ण वजह थी ।"

रमेश भी सोच में डूब गया ।

"म...मुझे डर लग रहा है रमेश-म...मुझे लग रहा है, जैसे कोई अनर्थ होने वाला है ।"

"तुम पागल हो गयी हो ।"

"मैं पागल नहीं हुई रमेश !"

"लेकिन यह तुम्हारे दिल का वहम भी तो हो सकता है डिंपी-राजदीप सोनवाल को आसमान

से आवाज तो नहीं आने वाली कि तुम किन्हीं अपराधियों से मिली हुई हो और... ।"

रमेश की जबान से निकलने वाले शब्द पूरे हो पाते-उससे पहले ही किसी ने बाहर से दरवाजा थपथपाया ।

रमेश के शब्द हलक में ही घुट गये ।

"क...कौन ?" डिंपी ने कंपकंपाये स्वर में पूछा ।

"मैं हूँ-राजदीप सोनवाल ।" बाहर से बड़ी कड़कदार आवाज उभरी -"दरवाजा खोलो डिंपी !"

दोनों के शरीर में करेंट-सा प्रवाहित हो गया ।

दोनों घबरा उठे ।

डिंपी ने डरते-डरते दरवाजा खोला-सामने रौद्र रूप में राजदीप सोनवाल खड़ा था ।

उसकी कनपटी की नसें तनी हुई थीं-नथुने फूल-पिचक रहे थे ।

रमेश उसके दरवाजा खोलने से पहली ही बैड के नीचे जा छिपा था ।

"अ...आप !" राजदीप सोनवाल का वो रौद्र रूप देखकर डिंपी कांप गयी-"अ...आप इस वक्त !"

"पीछे हटो ।" सोनवाल गुर्राया ।

डिंपी सहमकर पीछे हो गयी ।

उसके हाथ-पैर 'जूड़ी' के मरीज की तरह कांपने लगे ।

"कौन हो तुम ?" अंदर आते ही सोनवाल चिंघाड़ा ।

"स...प्रिया-म...मैं प्रिया हूँ ।"

"नहीं ।" राजदीप सोनवाल कहर भरी नजरों से उसे घूरता हुआ धीरे-धीरे उसकी तरफ बढ़ा-"तुम प्रिया नहीं हो-तुम प्रिया नहीं हो सकतीं ।"

"क...क्यों ?" प्रिया के शरीर में झुरझुरी दौड़ी-"म...मैं प्रिया क्यों नहीं हो सकती ?"

"क्योंकि तुम किसी अपराधी संगठन की मैम्बर हो ।" सोनवाल चीखकर बोला-"और...और तुम्हारा यह नाम भी नकली है ।"

"डिंपी हक्की-बक्की रह गयी ।

उसके दिमाग में भयंकर विस्फोट हुआ ।

जबकि राजदीप सोनवाल ने उसी क्षण आश्चर्यजनक फुर्ती के साथ रिवॉल्वर निकालकर डिंपी के ऊपर तान दी थी ।

पसीनों में लथपथ होती चली गयी डिंपी !

"यह झूठ है ।" वो हलक फाड़कर डकरायी-"म...मैं किसी अपराधी संगठन की मैम्बर नहीं-मैं अपराधी नहीं ।"

मुझे बेवकूफ मत बनाओ ।" राजदीप सोनवाल ने दांत किटकिटाते हुए डिंपी के माथे पर रिवॉल्वर रखी-"बहुत हो चुका अब यह नाटक-मैं तुम्हारी तमाम हरकतों से वाकिफ हो चुका हूँ चालाक लड़की । मुझे मालूम हो चुका है कि तुमने गवर्नेस की यह नौकरी भी किसी षडयंत्र के तहत हासिल की है ।"

क...कौन कहता है ।" डिंपी ने हिम्मत करके पूछा-"कि मैंने गवर्नेस की यह नौकरी किसी षडयंत्र के तहत हासिल की है ?"

"मैं कहता हूँ ।" सोनवाल डकराया-"हालात कहते हैं तुम्हारी वह झूठी कहानी कहती है-जो तुमने मुझे इण्टरव्यू के दौरान सुनायी ।"

"कौन-सी कहानी ?"

"यही कि तुम चण्डीगढ़ के किसी कपड़ा व्यापारी की लड़की हो-जिसका नाम लालसिंग मेहरा था-जिसके परिवार की आतंकवादियों ने हत्या कर दी थी-तुम्हारी वह तमाम बातें-तमाम तर्क झूठे हैं लड़की-सब कुछ मनगढंत है ।"

"झूठ बोल रहे हैं आप !" डिंपी बिफरकर बोली-"इस तरह का आरोप लगाकर आप एक निर्दोष और मजबूर लड़की के अकेलेपन का नाजायज फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं ।"

"शट अप ।"

चिंघाड़ा राजदीप सोनवाल -फिर उसके हाथ का एक ऐसा झन्नाटेदार झांपड़ डिंपी के गाल पर पड़ा कि उसके मुँह से चीख निकल गयी-आंखों के गिर्द रंग-बिरंगे तारे झिलमिला उठे ।

"यू शुड बी अशेम्ड ऑफ योअर सैल्फ !" सोनवाल चीखता चला गया-"खबरदार जो ऐसा वाहियात इल्जाम मेरे ऊपर लगाया तो ।"

"ल...लेकिन आपके पास इस बात का क्या सबूत है ।" डिंपी बोली-कि मेरी कहानी झूठी है ? मनगढंत है ?"

"सबसे पहला और सबसे बड़ा तो यही सबूत है । राजदीप सोनवाल दांत किटकिटाकर बोला-"कि तुम न तो चण्डीगढ़ की रहने वाली हो और न लालसिंग मेहरा नामक किसी कपड़ा व्यापारी की लड़की हो ।"

"आपको कैसे मालूम ?"

"बताता हूँ-सब कुछ बताता हूँ ।" राजदीप सोनवाल रिवॉल्वर हिलाता हुआ बोला-"इसमें कोई शक नहीं कि तुमने पूरा ड्रामा बड़े ही शानदार ढंग से किया था-मुझे शायद सात जन्म तक भी तुम्हारे ऊपर शक न हो पाता । लेकिन आज सुबह नेशनल म्यूजियम से लौटते समय काफी हद तक तुम्हारी हकीकत का पर्दाफाश हो गया ।

"क...क्यों-उस समय मैंने ऐसा क्या बोल दिया था-जो पर्दाफाश हो गया ।"

"तुम्हें याद है ।" सोनवाल बोला-"नेशनल म्यूजियम से लौटते समय तुम्हारे दिल-दिमाग पर एक ही चीज हावी थी-ताज और दुर्लभ ताज ! उस बेहद मूल्यवान ताज के बार तुमने मुझसे एक ऐसा सवाल पूछा-जिसने तुम्हारी हकीकत की सारी कलई खोल दी । याद है तुम्हें -तुमने मुझसे उस ताज की गुप्त सिक्योरिटी के बारे में पूछा था और तुम्हारे मुँह से उस सवाल को

सुनते ही मैं उछल पड़ा ।”

“क्यों-उछल क्यों पड़े तुम ?”

“क्योंकि आमतौर पर साधारण आदमियों को गुप्त सिक्योरिटी के बारे में कोई जानकारी नहीं होती-वो यही समझते हैं कि जो दिखाई दे रही है-वही सारी सिक्योरिटी है । इसके पीछे महत्वपूर्ण वजह भी है-क्योंकि गुप्त सिक्योरिटी के बारे में न तो लोगों को कोई जानकारी ही होती है और न इस तरह की सिक्योरिटी की पब्लिसिटी ही की जाती है । ऐसी परिस्थिति में एक बेहद सामान्य लड़की के मुँह से गुप्त सिक्योरिटी की बात सुनकर भला कौन ऑफीसर न चौंक पड़ेगा । फौरन मेरे दिमाग में यह बात खलबली मचाती चली गयी कि जरूर कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ है-जरूर तुम कोई खतरनाक खेल, खेल रही हो । मैंने फौरन तुम्हारी हकीकत पता लगाने का फैसला कर लिया और इसी दिशा में मैंने सबसे पहले तुमसे तुम्हारे पिताजी का नाम पूछा ।”

डिंपी भौंचक्की निगाहों से सोनवाल को देखने लगी ।

“प...पिताजी का नाम क्यों पूछा तुमने ?”

“बताता हूँ-वह भी बताता हूँ ।” राजदीप सोनवाल एक के बाद एक धमाका करता हुआ बोला-दरअसल तुमसे तुम्हारे पिताजी का नाम मालूम करके मैंने चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर फोन किया-वहाँ के कमिश्नर को मैंने तुम्हारे पिताजी का नाम बताया और तुम्हारे द्वारा सुनाई गयी पूरी कहानी बतायी । मैंने वहाँ के कमिश्नर से आग्रह किया कि वो पूरी जांच-पड़ताल कराकर मुझे रिपोर्ट दें ।

“ल...लेकिन जब उन्हें मेरे चण्डीगढ़ के घर का पता ही मालूम नहीं था ।” डिंपी बोली-“तो वह मेरे बारे में जांच-पड़ताल कैसे कर सकते थे ?”

“पता पता लगा लेना बहुत मामूली काम है ।” राजदीप सोनवाल रिवॉल्वर हाथ में लिये-लिये बोला-“तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि लगभग सभी शहरों में वस्त्र व्यापारी संघ के नाम से कपड़ा व्यापारियों का एक संगठन होता है-और छोटे-बडे सभी कपड़ा व्यापारी उस संगठन के मैम्बर होते हैं ऐसा ही एक वस्त्र व्यापारी संघ चण्डीगढ़ में भी है-मैंने जैसे ही चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर को तुम्हारे बारे में रिपोर्ट भेजी-तो फौरन हैडक्वार्टर के एक सब-इंस्पेक्टर ने चण्डीगढ़ के वस्त्र व्यापारी संघ से सम्पर्क स्थापित किया-संघ के पास शहर के सभी व्यापारियों की एक लिस्ट होती है । सब-इंस्पेक्टर ने जब तुम्हारे द्वारा बताया गया कथित लालसिंग मेहरा का नाम संघ के संचालक को बताया-तो फौरन तुम्हारे ड्रामे का पर्दाफाश हो गया । क्योंकि लालसिंग मेहरा नाम के कपड़ा व्यापारी तो चण्डीगढ़ में कई थे-लेकिन उनमें ऐसा कोई न था-जिसका परिवार आतंकवादियों के हाथों मारा गया हो या जिसके घर दुकान में आतंकवादियों ने आग लगायी हो । बहरहाल थोड़ी देर पहले ही चण्डीगढ़ के पुलिस हैडक्वार्टर से मेरे पास रिपोर्ट आ चुकी है और साबित हो गया है कि तुम्हारे द्वारा सुनाई गयी कहानी पूरी तरह झूठी है ।”

डिंपी को अपने दिमाग में अनार छूटते हुए लगे ।

उसका चेहरा सफेद झक्क् पड़ गया ।

“अब अगर अपनी जिंदगी चाहती हो” राजदीप सोनवाल ने बेहद हिंसक अंदाज में रिवॉल्वर से

उसका माथा ठकठकाया-“अगर चाहती हो कि तुम्हारा यह खूबसूरत जिस्म एक लाश में न बदल जाये-तो सच-सच बताओ, कौन हो तुम ? तुम्हें यहाँ किसने भेजा है ?”

तभी उस घटना ने बड़े अप्रत्याशित ढंग से करवट बदली ।

“उस लड़की से क्या पूछते हो साहब !” बैडरूम में धमाका-सा करती एक नई आवाज गूंजी थी-“मैं बताता हूँ कि यह कौन है और इसे यहाँ किसने भेजा है ।”

राजदीप सोनवाल के दिल-दिमाग पर बम-सा गिरा ।

वह झटके से उस दिशा में घूमा-जिधर से आवाज आयी थी ।

अगले पल उसके होश उड़ गये ।

उसके सामने पौने छः फुट लम्बा सामान्य से बदन वाला रमेश खड़ा मुस्करा रहा था-रमेश की गोद में चिंटू था-जिसकी कनपटी पर उसने रिवॉल्वर रखी हुई थी ।

“क...कौन हो तुम ?” राजदीप सोनवाल के मुँह से सिसकारी छूटी ।

“दुश्मन का कोई नाम नहीं होता साहब-वह किसी भी रूप में, सामने आ सकता है ।”

“पहेलियां मत बुझाओ ।” सोनवाल गुर्राया-“सच-सच बताओ-कौन हो तुम ?”

“फिलहाल तुम्हारे लिये इतना ही जान लेना काफी है कि मैं प्रिया का साथी हूँ ।”

“ओह !”

“यह नाटक न जाने कितना लम्बा चलता मिस्टर !” रमेश बोला-“इसलिये ये अच्छा ही हुआ कि इस नाटक का यहीं अंत हो गया ।”

“लेकिन यह नाटक रचा क्यों क्या ?”

“वही बताने जा रहा हूँ-मगर उससे पहले अपनी यह रिवॉल्वर मेरे हवाले कर दो ।”

सोनवाल हिचकिचाया ।

“जल्दी करो ऑफीसर-वरना तुम्हारे बेटे की जान को नुकसान पहुँच सकता है-जिसके लिये फिर मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा ।”

राजदीप सोनवाल ने खून का-सा घूंट पीते हुए रमेश को रिवॉल्वर सौंप दी ।

“गुड !” मुस्कराया रमेश-“काफी समझदार आदमी हो-हमारा अच्छा साथ निभेगा ।”

“मैं तुम्हारी कोई बकवास नहीं सुनना चाहता ।” सोनवाल फुंफकारा -“मुझे सिर्फ यह बताओ कि तुम लोग कौन हो ।”

“वही बता रहा हूँ । पहली बात-तुम्हारा यह अंदाजा बिलकुल सही है कि प्रिया किसी अपराधी संगठन के लिये काम कर रही है । दूसरी बात-तुम्हारा यह अंदाजा बिलकुल भी सही है कि प्रिया ने तुम्हें जो कहानी सुनायी वह बिलकुल मनगढंत है । दरअसल वह कहानी तुम्हें इसलिये सुनाई गयी थी-ताकि तुम्हारी हमदर्दी हासिल करके इस कोठी के अंदर घुसा जा सके ।”

“लेकिन इस ड्रामें के पीछे वजह क्या थी ?”

“वजह !” मुस्कराया रमेश-“वजह सुनोगे, तो उछल जाओगे ऑफीसर !”

“मैं उछलना ही चाहता हूँ ।”

“ठीक है-तो सुनो ।” रमेश के चेहरे पर अब थोड़ी कठोरता उभर आयी-“तुमने दिल्ली शहर में सक्रिय उस संगठन के बारे में तो सुना ही होगा-जो दुर्लभ वस्तुओं की चोरी करता है ।”

“उस संगठन के बारे में कौन नहीं जानता ।”

“वैरी गुड-अगर उस संगठन के बारे में जानते हो-तो अब वही संगठन उस दुर्लभ ताज को भी चुराना चाहता है ।”

“परन्तु तुम दोनों का उस संगठन से क्या सम्बन्ध है ?”

“हमारा सम्बन्ध !” रमेश ने गले का थूक सटका -“हम उस संगठन के मैम्बर हैं ।”

राजदीप सोनवाल के नेत्र अचम्भे से फैल गये ।

“तुम...तुम उस संगठन मैम्बर हो ?”

“हाँ ।”

“लेकिन तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?”

“दरअसल हमारे संगठन को उस दुर्लभ ताज की गुप्त सिक्योरिटी के बारे में मालूम नहीं है ।”

“और तुम्हारा संगठन यह सोचता है ।” सोनवाल गुर्राया-“कि मैं तुम्हें उस सिक्योरिटी से वाकिफ करा दूंगा ।”

“बिल्कुल ।” रमेश ने दृढ़तापूर्वक कहा-हमारा संगठन जो सोचता है-वही होता है ।”

“अफसोस-बेहद अफसोस ! इस बार तुम्हारा गलत व्यक्ति से वास्ता पड़ गया है-मैं किसी भी कीमत पर तुम्हें उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में नहीं बताऊंगा ।”

“इस नन्ही-सी जान की कीमत पर भी नहीं ?”

“क...क्या मतलब ?” बौखला गया राजदीप सोनवाल ! मतलब यह कि मैं और प्रिया फिलहाल तुम्हारे इस बेटे को अपने साथ लेकर जा रहे हैं-हमारे जाने के बाद पूरी रात तुम्हारे पास होगी-तुम खूब अच्छी तरह हमारे प्रस्ताव पर गौर करना-अगर तुमने हमें गुप्त सिक्योरिटी के बारे में बता दिया-तो तुम्हारे बेटे को छोड़ दिया जायेगा । वरना... ।”

“वरना क्या ?”

“वरना हमारा संगठन सिर्फ इतना करेगा ।” रमेश खूंखार लहजे में बोला-“कि इस मासूम बेटे की गर्दन धड़ से अलग करके तुम्हारे पास भेज देगा-ताकि तुम और तुम्हारी सरकार दोनों ही उस कटे हुए सिर पर दुर्लभ ताज की ताजपोशी कर सको ।”

“न...नहीं । राजदीप सोनवाल दहल गया -“नहीं । तुम ऐसा नहीं करोगे ।”

“हम ऐसा ही करेंगे ।” रमेश सख्त लहजे में बोला-“अभी तो मैंने सिर्फ तुम्हें उस दृश्य के बारे में बताया है-लेकिन जरा कल्पना करो कि कल जब तुम्हारे मासूम बेटे का कटा हुआ सिर साक्षात् तुम्हारी आंखों के सामने रखा होगा, तब तुम पर क्या बीतेगी । उस समय क्या तुम

पागल नहीं हो जाओगे-चीखने नहीं लगोगे-और तुम्हारी पत्नी !" रमेश ने दांत किटकिटाये-"तुम्हारी पत्नी क्या उस दृश्य को देखकर जिन्दा रह सकेगी ऑफीसर ?"

"नहीं-नहीं ।" राजदीप सोनवाल चिंघाड़ उठा-"तुम दरिंदे हो-वहशी हो ।"

रमेश के होठों पर मुस्कान खेलती रही ।

"फिलहाल हम जा रहे हैं । ऑफीसर !" रमेश सहज स्वर में बोला-"कल तुमसे फिर किसी जरिये से सम्पर्क स्थापित किया जायेगा-तब तक अपना फैसला सोचकर रखना ।"

"सुनो-सुनो ।" सोनवाल चीख उठा ।

लेकिन वह नहीं रुके ।

राजदीप सोनवाल चीखता रहा और वो चले गये ।

उसके चिंटू को लेकर चले गये ।

अगले ही पल एक सनसनीखेज घटना का जन्म हुआ ।

उस वक्त जब उन्होंने बैडरूम से निकलकर कोठी के गलियारे में कदम रखा-तभी उनके कानों में किसी के भागते कदमों की आवाज पड़ी ।

एक क्षण-सिर्फ एक क्षण के लिये रमेश की नजर साये पर पड़ी-क्योंकि अगले ही क्षण वो काला साया गलियारे का मोड़ काटकर अंधेरे में गायब हो चुका था ।

और !उसी क्षण में रमेश साये को पहचान गया ।

वो काला भुजंग जग्गु था ।

जग्गु !

खौफ से कांप गया रमेश ।

शरीर में एक साथ हजारों चीटियां रेंगती चली गयीं ।

ब...जग्गु वहाँ क्या करने आया था

उ...उसे यह कैसे पता चला कि वो वहाँ है

रमेश और डिंपी ने जग्गु के बारे में जितना सोचा -उतनी ही उनकी रूह कांपी ।

जग्गु, राजदीप सोनवाल की कोठी से निकलकर भागता चला गया ।

जल्द ही वो एक टेलीफोन बूथ के अंदर जा घुसा था ।

उसने रिसीवर उठाया-फिर बड़ी तेजी से कुछ नम्बर डायल किये ।

शीघ्र ही दूसरी तरफ घण्टी जाने लगी थी ।

कुछ देर बेल बजती रही-बजती रही ।

"हैलो !" फिर लाइन पर एक उनींदा-सा स्वर उभरा-"इंस्पेक्टर राजविर स्पीकिंग !"

“इंस्पेक्टर साहब !” जग्गु ने फौरन कॉयन-हॉल में एक रुपये का सिक्का डाल दिया-“मैं बोल रहा हूँ-पहचाना मुझे ?”

“कौन ?”

“यानि नहीं पहचाना ?”

एक पल के लिये खामोशी छा गयी ।

“त...तुम जग्गु हो ।” राजविर की नींद अब पूरी तरह उड़ चुकी थी ।

“बिलकुल ठीक ।” जग्गु चहका -वाकई आपकी तारीफ करनी होगी इंस्पेक्टर साहब-जो मुझे सिर्फ आवाज से ही पहचान लिया ।”

“इसमें तारीफ जैसी कोई बात नहीं ।” इंस्पेक्टर राजविर खुंरदुरे लहजे में बोला-“हम पुलिस वाले हैं जग्गु-ओर अपराधियों को सिर्फ आवाज से पहचान लेना ही हमारी फितरत होती है । खैर यह बताओ-तुमने इतनी रात को मुझे फोन किसलिये किया है ? क्या वकील रौनक मल्होत्रा की हत्या करने के इल्जाम में अपने आपको कानून के हवाले करना चाहते हो ?”

“नहीं-हरगिज नहीं ।” जग्गु की आवाज में सख्ती उभर आयी-“मैंने आपसे पहले भी कहा था इंस्पेक्टर साहब -आज फिर कहता हूँ-मैं तब तक अपने आपको कानून के हवाले करने वाला नहीं, जब तक मैं रमेश से अपने चाचा के खून का बदला नहीं चुका लेता ।”

“फिर फोन क्यों किया है ।?”

“मैं रमेश के बारे में आपको एक बड़ी सनसनीखेज जानकारी देना चाहता हूँ ।”

“कैसी जानकारी ?”

“रमेश आजकल एक बेहद खतरनाक योजना पर काम कर रहा है इंस्पेक्टर साहब !” जग्गु ने और ज्यादा सस्पैंस क्रियेट किया-“मैंने आपको जो बताना था-बता दिया । एक पुलिस इंस्पेक्टर होने के नाते अब आगे की इन्वेस्टीगेशन करना आपका काम है -हाँ, मैं आपको इंवेस्टीगेशन करने के लिये एक हिंट जरूर दे सकता हूँ ।”

“क...कैसा हिंट ?”

“डिंपी भी उस योजना में रमेश की मदद कर रही है-अब बंदे को इजाजत दीजिये-नमस्ते !”

“जग्गु-जग्गु !” इंस्पेक्टर राजविर चीखता रह गया ।

जबकि जग्गु बड़े निर्विकार अंदाज में टेलीफोन का रिसीवर हुक पर लटका चुका था ।

उसके होठों पर मुस्कान खेल रही थी ।

वो मुस्कान -जो किसी बेहद चालाक व्यक्ति के होठों पर उस समय खेला करती है, जब वो अपने दो दुश्मनों को लड़ाने के लिये कोई बढ़िया चाल चल दे ।

१५

सुबह के दस बजने जा रहे थे ।

उस दिन का मौसम पिछले दिन के मुकाबले ज्यादा गरम था ।

एक बार फिर सब लोग कॉफ्रेंस हॉल में जमा थे ।

सेठ रुपचंद आयातकार मेज के एक कोने पर ऊंची पुश्त वाली रिवॉल्विंग चेयर पर विराजमान था-उसने आज अपने चेहरे को नकाब से ढका हुआ था-जिसमें से उसकी सिर्फ दो आंखें बाहर झांक रही थीं ।

साफ लगता था-आज कोई खास बात है ।

कॉफ्रेंस हॉल की अन्य कुर्सियों पर तानाजी जाधव, त्यागी, रमेश, डिंपी ओर उन सबके अलावा , उस दिन का सबसे ज्यादा खास मेहमान राजदीप सोनवाल भी वहाँ बैठा था ।

राजदीप सोनवाल की वहाँ उपस्थिति निःसंदेह चौंका देने वाली थी ।

सोनवाल की वहाँ उपस्थिति से एक बात और भी साबित होती थी कि उसने अपने मासूम बच्चे की जिंदगी बचाने के लिये उन शैतानों के सामने घुटने टेक दिये हैं ।

आज उसने अपने उसूलों को अपने आदर्शों की बलि दे दी है ।

इसके अलावा एक बाप और कर भी क्या सकता है ?

सिर्फ एक घण्टा पहले की बात है ।

राजदीप सोनवाल उस समय अपनी कोठी के ड्राइंग हॉल में बेचैनी पूर्वक टहल रहा था ।

उसकी आंखों में आतंक की छाया थी ।

होंठ खुश्क !

जब से वह दोनों चिंटू का अपहरण करके ले गये थे-तब से उसका यही हाल था ।

कभी वो इस कमरे में चहलकदमी करता-तो कभी उस कमरे में ।

सारी रात सिगरेट-पर-सिगरेट फूंकते हुए गुजरी ।

कई बार उसके दिमाग में यह ख्याल भी आया कि वह उदयपुर टेलीफोन करके उस घटना की अपनी पत्नी को सुचना दे दे ।

लेकिन फिर वो रुक गया ।

उसे सुचना देने से ही क्या होना था-वह परेशान और होती ।

रह-रहकर सोनवाल की आंखों के गिर्द अपने मासूम बेटे का मुखड़ा चक्कर काट जाता ।

एक बाप की बेताब बाहें अपने जिगर के टुकड़े को कलेजे से लगाने के लिये मचल रही थी ।

और !

तभी गरम लोहे पर चोट हुई ।

मारुती वैन में सवार होकर गुड्डू त्यागी उसकी कोठी पर पहुँचा था ।

राजदीप सोनवाल को एक टाइपशुदा पात्र दिया-जिसमें सिर्फ चंद लाइनें लिखी थीं ।

"अगर अपने बेटे की जिंदगी के लिये हमारी शर्त मंजूर है-तो फौरन पत्रवाहक के साथ वैन में बैठकर आ जाओ-इसी में तुम्हारी भलाई है ।"

तुम्हारे बेटे का शुभचिन्तक

गुमनाम संगठन

पत्र पढ़ते ही राजदीप सोनवाल ने गुस्से में उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले ।

"और अगर मै तुम्हारे साथ न गया ।" राजदीप सोनवाल झपटकर गुड्डू त्यागी का गिरेहबान पकड़ लिया तथा हलक फाड़कर चिल्ला उठा-"तो तुम क्या कर लोगे-क्या कर लोगे ?"

खतरनाक ढंग मुस्कराया गुड्डू त्यागी !

उसकी मुस्कान खून को बर्फ की तरह जमा देने वाली थी ।

गिरेहबान पकड़ने का उसने जरा भी बुरा नहीं माना ।

"अगर तुम मेरे साथ न गये-तो वह हो जायेगा ऑफीसर !" गुड्डू त्यागी फुंफकारता-सा बोला-"जिसकी कल्पना भी तुम्हारे लिये दुश्वार है-तुम्हारे चिंटू के खून के छीटें दूर-दूर तक उड़ेंगे-दूर-दूर तक । और हमारी उस दरिंदगी के जिम्मेदार तुम होओगे-सिर्फ तुम ।"

तत्काल गुड्डू त्यागी का गिरेहबान सोनवाल के हाथ से छूट गया ।

सारी गर्मी जाती रही ।

वह अपने आपको सौ साल के वृद्ध की तरह कमजोर महसूस करने लगा ।

रात भर की बेचैनी और विवशता के कारण उसमें इतना भी साहस न बचा था-जो ज्यादा विरोध कर सके ।

वह एक हारे हुए जुआरी की तरह निर्जीव कदमों से चलता हुआ चुपचाप मारूति वैन में सवार हो गया ।

उसे आंखों पर पट्टी बांधकर अड्डे पर लाया गया था ।

वहाँ जब उसकी आंखों से पट्टी खोली गयी-तो उसने अपने आपको उसी कॉफ्रेंस हॉल में पाया-जिसमें इस वक्त बैठा था ।

"सोनवाल साईं !" सेठ रुपचंद उसे काली नकाब के पीछे से घूरता हुआ बोला-"वडी हमें खुशी है कि तुमने ज्यादा हील-हुज्जत किये बिना हमारा प्रस्ताव कबूल कर लिया-वडी तुम तो वाकई बहोत समझदार आदमी निकले नी ।"

"चिंटू कहाँ है ?" राजदीप सोनवाल ने बेचैनीपूर्वक पहलु बदला ।

“साईं- वो जहाँ है, कुशल-मंगल है और फिर वैसे भी ज्यादा फिक्र नहीं करनी-आखिर उसकी देखभाल के वास्ते तुम्हारी गवर्नेस तो हमारे पास है ही ।”

वह बात कहकर बड़े खतरनाक ढंग से हंसा रुपचंद ।

“म...मैं फिर भी चिंटू को एक बार देखना चाहता हूँ ।” राजदीप सोनवाल अपने बेटे को देखने के लिये व्याकुल हुआ जा रहा था ।

“इतनी जल्दी भी क्या है साईं !” रुपचंद बोला-“देख लेना उसे भी । बारह घण्टे में उसकी सूरत थोड़े ही बदल जानी है । मेल-मिलाप का यह सिलसिला भी चलेगा-लेकिन पहले तुम हमें दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी के बारे में बताओ ।”

“देखो ।” राजदीप सोनवाल सब्र के साथ बोला-“तुम लोग जिस गुप्त सिक्योरिटी की जानकारी के लिये इतने व्याकुल हो रहे हो-मेरा दावा है कि सिक्योरिटी को जानने के बाद भी तुम लोग कुछ नहीं कर पाओगे- ताज को चुराना बिलकुल नामुमकिन है ।”

“क्यों है नामुमकिन ?”

“क्योंकि उस ताज की सिक्योरिटी बहुत परफैक्ट है-बहुत अभेद्य है ।”

मुस्कराया सेठ रुपचंद-फिर बोला-“वडी सोनवाल साईं-भारत सरकार हर एण्टीक आइटम की ऐसी ही परफैक्ट सिक्योरिटी करती है-भारत सरकार हर बार यही सोचती है कि इस दुर्लभ वस्तु को दुनिया की कोई ताकत नहीं चुरा सकती । लेकिन होता क्या है-कोई चालाक अपराधी सुरक्षा के सारे तामझाम को रेत के ढेर की तरह भेदता हुआ दुर्लभ वस्तु चुरा ले जाता है । भारत सरकार को तब मालूम होता है कि वास्तव में वो सिक्योरिटी कितनी परफैक्ट थी-कितनी सिक्केबंद थी-वडी मैं ठीक कह रहा हूँ या नहीं ?”

“बिलकुल ठीक कह रहे हो ।” राजदीप सोनवाल ने कबूल किया-“लेकिन अगर तुम लोग दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी को भी ऐसी ही कमजोर सिक्योरिटी समझ रहे हो-तो यह तुम्हारी बहुत बड़ी भूल है-बहुत बड़ी गलतफहमी है । उसकी सिक्योरिटी वाकई बहुत परफैक्ट है ।”

“वडी वो चाहे कितनी ही परफैक्ट सिक्योरिटी है-हम उसके बारे में फुल जानकारी चाहते हैं ।”

“जैसी तुम लोगों की इच्छा ।” राजदीप सोनवाल बोला-“ओपन सिक्योरिटी से तो आप लोग वाकिफ होंगे ही ?”

“हम किसी चीज से वाकिफ नहीं साईं ! तुमने हमें जो बताना है-सिरे से बताओ । यह सोचकर बताओ कि हम सिक्योरिटी के बारे में कुछ नहीं जानते-इसके अलावा एक बात और अच्छी तरह सुन लो ।”

“क्या ?”

“अगर तुमने हमारे साथ कोई चालाकी खेलने की कोशिश की ।” सेठ रुपचंद ने दांत किटकिटाये-“अगर तुमने हमें पुलिस के किसी पचड़े में फांसने का प्रयास किया तो फिर तुम्हारी खैर नहीं । फिर हम तुम्हारे साथ-साथ तुम्हारे बच्चे के भी ऐसी ढोल-तासे बजायेंगे कि तुम तमाम उम्र कलपोगे-तमाम उम्र खून के आंसू रोओगे । एक बात और-जब तक हम अपनी योजना में कामयाब नहीं हो जाते-तब तक तुम्हारा बेटा भी यहीं हमारे कब्जे में रहेगा ?”

राजदीप सोनवाल का चेहरा सफेद झक्क् पड़ गया ।

“वडी तुम्हें अब जो कहना है-कहो ।” रुपचंद बोला-“सबसे पहले यह बताओ-नेशनल म्यूजियम में आजकल दिन में क्या सिक्योरिटी रहती है ?”

सोनवाल ने बेचैनीपूर्वक पहलू बदला ।

हालात उसे अच्छे नजर नहीं आ रहे थे ।

“द...दिन में लगभग सौ सिक्योरिटी गार्ड म्यूजियम के चारों तरफ तैनात रहते हैं ।” राजदीप सोनवाल ने खून का सा घूंट पीते हुए उन लोगों को सिक्योरिटी के बारे में बताना शुरू किया-“लेकिन रात के समय उन्हीं सिक्योरिटी की संख्या बढ़कर दो गुनी हो जाती है ।”

“यानि दो सौ !”

“हाँ ।”

“ठीक है-आगे बोलो ।”

“इसके अलावा नेशनल म्यूजियम की आसपास की इमारतों पर भी चौबीस घण्टे लगभग तीस-चालीस सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते हैं ।”

“एक मिनट !” रुपचंद ने उसे फिर टोका-“म्यूजियम के आसपास की इमारतों पर सिक्योरिटी गार्ड्स को किसलिये तैनात किया गया है ?”

“अच्छा सवाल है । दरअसल उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी करने से पहले भारत में ज्यूरी के मेम्बरों की एक मीटिंग हुई थी-बेहद खास मीटिंग-उस मीटिंग में उन केस फाइलों का अध्ययन किया गया, जिनमें ऐसी ही दुर्लभ वस्तुओं की लूट के बारे में कई रिपोर्टें दर्ज थीं । प्रत्येक केस फाइल में यह ब्यौरा बड़े विस्तार से लिखा था कि फलां दुर्लभ वस्तु का सिक्योरिटी सिस्टम यह था कि उसे अपराधियों ने चुराने के लिये यह योजना बनायी ।”

“फिर ?”

“ज्यूरी के मैम्बरों ने दुनिया भर की ऐसी दर्जनों केस फाइलों का अध्ययन किया-उन फाइलों का अध्ययन करने से यह फायदा था कि दुर्लभ ताज की एक बहुत परफैक्ट सिक्योरिटी की रूपरेखा बनायी जा सकती थी । फाइलों का अध्ययन करते-करते ही ज्यूरी के मैम्बरों के हाथ में एक ऐसी फाइल लगी-जिसमें न्यूयार्क के एक सराफा बाजार की लूट का मामला दर्ज था । लिखा था-सराफा बाजार की सिक्योरिटी के लिये स्थानीय पुलिस प्रशासन ने बड़े जबरदस्त सुरक्षा इंतजाम कर रखे थे-सराफा बाजार के चारों तरफ सैकड़ों की संख्या में हमेशा सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते थे-उनकी बिना आज्ञा के एक चूहा तक सराफा बाजार में नहीं घुस सकता था । लेकिन इतनी पॉवरफुल सुरक्षा के बावजूद सराफा बाजार में डकैती पड़ी-और ऐसी डकैती पड़ी कि पूरा सराफा बाजार लूट लिया गया, लेकिन बाहर-खड़े उन सिक्योरिटी गार्डों को कानों-कान भनक तक न लगी ।”

“वह कैसे ?” तानाजी जाधव ने हैरान होकर पूछा ।

“दरअसल अपराधियों ने सराफा बाजार को लूटने के लिये जो योजना बनायी-वह गजब की योजना थी ।” राजदीप सोनवाल बोला-“उन्होंने सराफा बाजार को लूटने के लिये उसकी बगल

की एक इमारत का इस्तेमाल किया । वह सबके सब लूट में काम आने वाला अपना साज-सामान लेकर किसी तरह उस बगल वाली इमारत की छत पर पहुँच गये-सराफा बाजार और उस इमारत के बीच में चार-साढ़े चार फुट चौड़ी एक पतली-सी गली थी । अपराधियों ने उस बगल वाली इमारत की छत से सराफा बाजार की छत तक लोहे की एक मजबूत सीढ़ी डाली-फिर वो एक-एक करके उसी सीढ़ी पर चलते हुए बगल वाली इमारत की छत से सराफा बाजार की छत पर पहुँच गये ।"

"वैरी गुड !" गुड्डू त्यागी भी चहका-"फिर ?"

"सराफा बाजार की छत पर पहुँचने के बाद उन्होंने ड्रिल मशीन की मदद से सराफा बजार की छत में एक बीस इंच व्यास का काफी चौड़ा छेद बनाया-फिर वो उसी छेद में से होकर सराफा बाजार के अंदर घुस गये-उसके बाद उन्होंने अंदर ही अंदर बड़े इत्मीनान से पूरा सराफा बाजार लूटा फिर वापस छेद में से होकर ऊपर पहुंचे तथा सीढ़ी द्वारा ही दूसरी इमारत की छत पर पहुँचकर वहाँ से फरार हो गये । सर्राफे में इतना बड़ा काण्ड हो गया-वह सराफा बाजार पूरा-का-पूरा लुट गया-लेकिन नीचे पहरा देते सिक्योरिटी गार्डों के कानों पर जूं तक न रेंगी-उन्हें भनक तक न पड़ी कि क्या हो गया था । बहरहाल भारत के ज्यूरी मैम्बरों ने उस डकैती से प्रेरणा ली-और नेशनल म्यूजियम के आसपास की इमारतों पर भी इसीलिये सिक्योरिटी गार्ड तैनात कर दिये-ताकि कोई अपराधी संगठन बिलकुल उसी तरह की योजना बनाकर दुर्लभ ताज को न ले उड़े ।"

"ओह !"

सभी के मुँह से सिसकारी छूटी ।

सभी सराफा बाजार लूटने की उस योजना से बड़े प्रभावित हुए ।

"इस तरह नेशनल म्यूजियम के अंदर दाखिल होने के फिलहाल सभी रास्ते पूरी तरह बंद हैं ।" राजदीप सोनवाल बोला-"न तो कोई अपराधी म्यूजियम के मेन गेट से ही अंदर घुस सकता है और न किसी अगल-बगल वाली इमारत को ही जरिया बनाकर । अगर किसी ने नीचे-ही-नीचे लम्बी सुरंग खोदकर भी म्यूजियम के हॉल नम्बर चार तक पहुँचने का प्रयास किया-तब भी वो सफल नहीं हो पायेगा । क्योंकि म्यूजियम में जगह-जगह ऐसे इलैक्ट्रॉनिक संयंत्र लगाये गये हैं-जो सुरंग खोदने की पोजीशन में एक विशेष ध्वनि पैदा करके सिक्योरिटी गार्डों को खतरे का संकेत दे देंगे-जिससे पुलिस अपराधियों को फौरन पकड़ लेगी ।"

सब स्तब्ध बैठे रहे ।

"अब आगे सुनो ।" राजदीप सोनवाल बोला-"अगर कोई अपराधी जादू के जोर से या किसी करिश्में की बदौलत फिर भी म्यूजियम के अंदर घुसने में कामयाब हो जाता है-तो वह सबसे पहले म्यूजियम के लॉन में पहुंचेगा ।

वहाँ भी मौत मुँह फाड़े उसका इन्तजार कर रही होगी-क्योंकि न सिर्फ म्यूजियम के लॉन में बल्कि म्यूजियम के प्रत्येक गलियारे के अंदर भी हर समय बड़ी संख्या में सिक्योरिटी गार्ड तैनात रहते हैं । जिनकी प्रत्येक आठ घण्टे के बाद ड्यूटी बदल जाती है ।"

"इसके अलावा और क्या इंतजाम है ?"

“और भी कई महत्वपूर्ण बंदोबस्त हैं ।” राजदीप सोनवाल ने कुर्सी पर बैठे-बैठे पहलु बदला-“सबसे पहले तो उन्हीं सुरक्षा प्रबंधों को भेदकर म्यूजियम के अंदर घुसना नामुमकिन है-लेकिन अगर फिर भी कोई इन सुरक्षा प्रबंधों को भेदने में सफल हो जाता है-तो वह जैसे ही हॉल नम्बर चार की दीवार को छुएगा, तो फौरन उससे कनेक्टिड सेफ्टी अलार्म की घण्टी नजदीक के तीन पुलिस स्टेशनों के साथ-साथ पुलिस हैडक्वार्टर में भी जोर से बज उठेगी । उस घण्टी के बजते ही क्या होगा-इसका अंदाजा तुम लोग बखूबी लगा सकते हो । फौरन पूरे दिल्ली शहर में दौड़ती पुलिस पेट्रोलिंग वैनों को हैडक्वार्टर से वह खतरे की सूचना सर्कुलेट कर दी जायेगी-पलक झपकते ही पेट्रोलिंग वैन नेशनल म्यूजियम की तरफ भागने लगेंगी-म्यूजियम के आसपास के सारे रोड ब्लॉक कर दिये जायेंगे-सीमा चौकियां सील कर दी जायेंगी और बड़ी संख्या में पुलिस नेशनल म्यूजियम पर पहुँचकर उसे चारों तरफ से घेर लेंगी । इससे तुम आसानी के साथ अंदाजा लगा सकते हो कि सैफ्टी अलार्म बजते ही म्यूजियम के आसपास कितना हंगामाखेज माहौल बन जायेगा । ऐसी परिस्थिति में अपराधियों के लिये वहाँ से दुर्लभ ताज चुराकर भागना तो बहुत बड़ी बात है-उनके लिये अपनी जान बचाना भी मुश्किल काम होगा ।”

“सेफ्टी अलार्म की जो बेल बजेगी ।” तानाजी जाधव एक-एक प्वॉइण्ट पर अच्छी तरह गौर करता` हुआ बोला-क्या उसकी आवाज म्यूजियम के अंदर या बाहर खड़े सिक्योरिटी गार्डों को भी सुनायी देगी ?”

“बिलकुल सुनायी देगी ।”

“वडी वो कैसे नी ?”

“दरअसल दिल्ली पुलिस ने सभी गार्डों को एक-एक खास किस्म की रिस्टवॉच दी है ।” राजदीप सोनवाल ने बताया-“और वो रिस्टवॉच सेफ्टी अलार्म से कनेक्टिड है-इसलिये अलार्म बजने की वो तीखी ध्वनि रिस्टवॉच पर बिलकुल साफ-साफ सुनाई देगी ।”

“ओह !”

“एक बात बताओ ।” गुड्डू त्यागी बोला ।

“पूछो ।”

“अगर कोई दिन में हॉल नम्बर चार की दीवार को छूएगा, तो क्या तब भी अलार्म बज उठेगा ?”

“नहीं ।” राजदीप सोनवाल गहरी सांस लेकर बोला-“दिन के समय सेफ्टी अलार्म डैड रहता है । लेकिन अगर तुम लोग उस दुर्लभ ताज को दिन-दहाड़े लूटने की योजना बना रहे हो-तब भी तुम्हारी योजना सिरे नहीं चढ़ने वाली ।”

“किसलिये ?”

“क्योंकि दिन में प्रत्येक दर्शक को कड़ी जांच-पड़ताल के बाद ही अंदर म्यूजियम में घुसने दिया जाता है-यहाँ तक कि दर्शकों को मेटल डिटेक्टर के ऊपर से भी गुजरना होता है । ऐसी परिस्थिति में तुम लोग हथियार लेकर म्यूजियम के अंदर नहीं घुस सकते और घुसने की कोशिश करोगे तब भी मैं समझता हूँ कि तुम्हें नाकामी ही हाथ लगेगी-क्योंकि स्वचालित

हथियारों से लैस इतने सारे सिक्योरिटी गार्डों का सामना तुम लोग किसी हालत में नहीं कर पाओगे ।"

कॉफ्रेंस हॉल में सन्नाटा छा गया ।सनसनीखेज सन्नाटा !

सेठ रुपचंद सहित सबके चेहरों पर गंभीरता की परत पुत गयी ।

डिंपी के तो उस सिक्योरिटी के विषय में सुनते ही हाथ-पांव फूल गये थे ।

उसे साफ-साफ लग रहा था कि वह लोग अपने मकसद में सफल होने वाले नहीं ।

डिंपी मन-ही-मन प्रार्थना करने लगी-"हे भगवान-तू इन लोगों को सद्बुद्धि दे ।"

"अक्ल दे ।"

"यह दुर्लभ ताज को चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल दें ।"

लेकिन भगवान भी उन्हें सद्बुद्धि कहाँ देता-उनके दिमाग पर तो लालच ने पर्दा डाल दिया था ।

लालच !जो उनका सर्वनाश करने पर तुला था ।

राजदीप सोनवाल गला खंखार कर बोला-"दुर्लभ ताज की जो सिक्योरिटी की गयी है-सिक्योरिटी के सम्बन्ध में मैंने तुम लोगों को लगभग पूरी डिटेल बता दी है । अब इस पूरी सिक्योरिटी के बाद-इस पूरे परफैक्ट इंतजाम के बाद एक आखिरी सिक्योरिटी और है, जो उस दुर्लभ ताज के लिये की गयी है ।"

"क...क्या ?" सेठ रुपचंद के नेत्र अचम्भे से फट पड़े-"वडी क्या अभी कोई और सिक्योरिटी भी बची है ?"

"हाँ ।" राजदीप सोनवाल सहज स्वर में बोला-"अभी एक आखिरी सिक्योरिटी और बची है-और मैं समझता हूँ कि वो सिक्योरिटी इन तमाम सिक्योरिटी से ज्यादा परफैक्ट है-ज्यादा सिक्केबंद है ।"

"वडी ऐसी क्या सिक्योरिटी है वो ।" सेठ रुपचंद जबरदस्त सस्पैंस के बीच झूलता हुआ बोला-उसके बारे में भी बता ।"

"अब उसी के विषय में बताने जा रहा हूँ । दरअसल ज्यूरी के मैंम्बरों ने दुर्लभ ताज की सुरक्षा व्यवस्था के लिये जो चक्रव्यूह रचा है-वह सिक्योरिटी उस चक्रव्यूह का सबसे आखिरी और सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है । यूं तो म्यूजियम में जितने भी सुरक्षा प्रबन्ध किये गये हैं-वह सब अपने आप में कम्पलीट हैं और उन्हें भेद पाना असंभव है । लेकिन... ।"

"लेकिन क्या ?"

"सुरक्षा रुपी चक्रव्यूह के उस आखिरी हिस्से को भेदने की बाबत सोचना भी, मैं समझता हूँ कि पागलपन होगा-क्योंकि वहाँ ज्यूरी के मैम्बरों ने इतना जबरदस्त मायाजाल बिछाया है कि अगर उस मायाजाल को भेदने के लिए आज के युग में अर्जुन, अभिमन्यु, भीम, नुकूल, सहदेव या युधिष्ठिर जैसे महान योद्धा भी आ जायें-तो उन्हें भी असफलता का मुँह देखना पडेगा । सुरक्षा रुपी चक्रव्यूह का वे आखिरी चरण 'हॉल नम्बर चार' है । उस हॉल की सिक्योरिटी यह सोचकर की गयी है कि अगर कोई अपराधी किसी तरह तमाम सिक्योरिटी को भेदता हुआ

'हॉल नम्बर चार' तक पहुँचने में सफल हो जाता है-तो फिर उसके हाथों से दुर्लभ ताज को किस तरह बचाया जाये ।"

"क...किस तरह बचाया जायेगा नी ?"

"मान लो ।" राजदीप सोनवाल बोला-"जो अपराधी तमाम सिक्योरिटी सिस्टम को भेदकर हॉल नम्बर चार तक पहुँचने में सफल होता है-वह अपराधी तुम हो । अब तुम मुझे यह बताओ कि वहाँ पहुँचने के बाद तुम क्या करोगे ?"

"वडी और क्या करता-अंदर घुसने की कोशिश करूंगा नी ।"

"एग्जेक्टली !" राजदीप सोनवाल चहक उठा-"तुम अंदर ही घुसने की कोशिश करोगे-लेकिन सवाल ये है कि तुम अंदर ही घुसोगे कैसे ? क्योंकि हॉल नम्बर चार के दरवाजे पर तो बड़े भारी-भरकम ताले और चोर ताले लगे हुए हैं-जिन्हें 'मास्टर की' कि सहायता से भी नहीं खोला जा सकता ।"

"सोनवाल साईं !" सेठ रुपचंद थोड़ा झुंझलाकर बोला-"वडी अगर ताला खुल नहीं सकता-तो टूट तो सकता है नी । और अगर ताला टूट भी नहीं सकता-कम-से-कम दरवाजा तो टूट-ही-टूट सकता है ।"

"आई एण्टायरली एग्री विद यू ।" राजदीप सोनवाल पहले की तरह ही चहककर बोला-"मैं तुमसे बिलकुल सहमत हूँ-बल्कि मैं खुद भी यही कहना चाहता हूँ कि प्रत्येक अपराधी की उस अवस्था में यही मोनोपली होगी । क्योंकि जो इतने पावरफुल सिक्योरिटी सिस्टम को भेदकर हॉल नम्बर चार तक पहुंचेगा-उसे वहाँ पहुँचकर खाली हाथ लौटना तो किसी भी हालत में गंवारा न होगा । चाहे उसे कुछ भी क्यों न करना पड़ेगा-कैसा भी जायज या नाजायज तरीका इस्तेमाल क्यों न करना पड़े । अपराधी की इसी मोनोपली को ध्यान में रखकर ज्यूरी के मैम्बरों ने हॉल नम्बर चार की सुरक्षा व्यवस्था की है । अगर तुममें से कोई फिलहाल हॉल नम्बर चार में गया है-तो उसने वहाँ जाकर देखा भी होगा कि उस हॉल की छत और दीवारें फॉल्स सीलिंग तथा प्लास्टर पेरिस की बनी हुई हैं । जिनकी मोटाई लगभग एक फुट के करीब है-दीवार तथा छत को इतनी मोटाई में डेकोरेट करने के पीछे एक खास कारण है ।"

"कैसा कारण ?"

"दीवार और छत-दोनों जगह स्वचालित गनें छिपी हुई हैं । कोई भी अपराधी जैसे ही किसी गलत तरीके से हॉल में घुसेगा-तभी दीवार तथा छत में छिपी हुई स्वचालित गनें हरकत में आ जायेंगी और वो हॉल के हर हिस्से पर हर ऐंगल पर गोलियों की बौछार करना शुरू कर देंगी । यानि अपराधी हॉल में चाहे किसी भी जगह क्यों न खड़ा हो-गोलियां उसे वहीं आकर लगेंगी और वो पलक झपकते ही एक लाश में बदल जायेगा ।"

सेठ रुपचंद सहित सब के चेहरों पर कालिख पुत गयी ।

"और अगर अपराधी किसी तरह उन गोलियों से भी बच गया ।"

राजदीप सोनवाल बोला-"जोकि बिल्कुल नामुमकिन काम है-तब भी वो उस दुर्लभ ताज को नहीं चुरा पायेगा ।"

"क...क्यों ?" तानाजी जाधव के दिमाग पर बिजली-सी गिरी-"फिर उस ताज को चुराने में

क्या मुश्किल है ?”

“बहुत बड़ी मुश्किल है । क्योंकि अपराधी उस ताज को निकालने के लिये जैसे ही उसके शीशे के बॉक्स को छुएगा-तभी उस बॉक्स के अंदर बंद दुर्लभ ताज बीस फुट नीचे एक कुएं जैसी गहराई में चला जायेगा । अपराधी बॉक्स से हाथ हटायेगा तो वह फिर ऊपर आ आयेगा । हाथ लगायेगा-तो फिर नीचे चला जायेगा । बस यही नाटकीय और बेहद तिलिस्मी प्रक्रिया चलती रहेगी-लेकिन दुर्लभ ताज अपराधी के हाथ नहीं लगेगा ।”

“साईं !” रुपचंद सनसनाये स्वर में बोला-इसका मतलब वह सिस्टम तो शीशे के बॉक्स में ही फिट हुआ-क्योंकि उसे हाथ लगाते ही दुर्लभ ताज ऊपर-नीचे होता है ।”

बिलकुल ठीक ।”

और अगर हम शीशे के उस बॉक्स को ही तोड़ डालें-तो क्या होगा ?”

“कुछ नहीं होगा-उस पोजीशन में वो दुर्लभ ताज बीस फुट नीचे चला जायेगा तथा फिर ऊपर नहीं आयेगा । फिर तो वही इंजीनियर उस दुर्लभ ताज को बीस फुट नीचे से निकाल सकते हैं-जिन्होंने वहाँ वो सारे सिक्योरिटी डेवायसिज फिट किये हैं ।”

“ओह !”

वहाँ पुनः शमशान घाट जैसा सन्नाटा छ गया ।

सब स्तब्ध थे ।

बिलकुल मौन !

“सोनवाल साईं !” सेठ रुपचंद नकाब के पीछे से उसे देखता हुआ हिचकिचाये स्वर में बोला-“वडी यह तो वाकई बड़ा जबरदस्त इंतजाम है ।”

“मैं पहले ही कहता था ।” राजदीप सोनवाल के होठों पर मुस्कान दौड़ी-“कि उस दुर्लभ ताज को चुराना आसान नहीं है-उसका सिक्योरिटी सिस्टम बेइन्तिहाँ मजबूत है । शायद भारत में पहली बार किसी एण्टीक आइटम के लिये इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी की गयी है ।”

“वडी इसमें कोई शक नहीं ।” रुपचंद बोला-“कि सिक्योरिटी वाकई बहुत पावरफुल है-लेकिन एक बात मैं फिर भी कहूँगा ।”

“क्या ?”

“सिक्योरिटी चाहे कितनी भी जबरदस्त हो-लेकिन उसे तोड़ा जा सकता है । साईं-दिमाग के ब्लेड से हर धांसू सिक्योरिटी की काट पैदा की जा सकती है ।”

“य... यानि !” रमेश के नेत्र हैरत से फटे-“यानि तुम यह कहना चाहते हो कि तुम इस सिक्योरिटी को भेदने की कोई योजना बना लोगे ?”

“मैं अभी कोई दावा नहीं कर रहा-लेकिन सोनवाल साईं, मेरा यह मानना है कि दुनिया का कोई काम मुश्किल नहीं-कोई काम असंभव नहीं । जरुरत है तो इंसान के अंदर बस लगन की-हौंसले की-और एक तंदरुस्त दिमाग की ।”

“म...मुझे तो नहीं लगता कि कोई अपराधी यह करिश्मा कर पायेगा ।”

“वडी तुम हमें चैलेन्ज दे रहे हो नी ?”

सोनवाल सकपकाया ।

“साईं-अगर तुम हमें चैलेन्ज दे रहे हो, तो हमें तुम्हारा यह चैलेन्ज कबूल है ।”

ठीक है-आप इसे मेरा चैलेन्ज ही समझें । क्योंकि मुझे पूरा यकीन है कि इस परफैक्ट सिक्योरिटी को दुनिया का कोई व्यक्ति नहीं भेद सकता ।”

बढ़िया बात है ।” सेठ रुपचंद ने गरमजोशी के साथ कहा-“वडी हम तुम्हें यह करिश्मा करके दिखायेंगे ।”

फिर वो मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी ।

राजदीप सोनवाल को जिस तरह आंखों पर पट्टी बांधकर वहाँ लाया गया था । उसी तरह वहाँ से विदा कर दिया गया ।

लेकिन जाने से पहले वो अपने बेटे चिंटू से मिला और बड़े ही जज्बाती होकर मिला ।

“मैं तुमसे एक विनती करना चाहता हूँ मैडम ।” फिर उसने जाने से पहले डिंपी से कहा था ।

“क...कहिये ।” डिंपी का स्वर कांप उठा ।

“तुम एक स्त्री हो ।” राजदीप सोनवाल की आवाज भावनाओं से भरी हुई थी-“मैं जानता हूँ कि तुम चाहे कितना ही इन अपराधियों से मिली हुई होओ-लेकिन फिर भी तुम उतनी कठोर नहीं हो सकतीं-जितना यह सब हैं-इसीलिये मैं तुमसे यह विनती करने की हम्मत कर पा रहा हूँ । चिंटू मेरा इकलौता बेटा है-इसकी अच्छी तरह देखभाल करना ।”

डिंपी भी जज्बाती हो उठी ।

वह एकदम चिंटू की तरफ झपटी और उसने उसे अपनी छाती से चिपटा लिया ।

“इ...इसे कुछ नहीं होगा ।” डिंपी बोली-“ज...जब तक मैं जिन्दा हूँ- कोई आंच नहीं आयेगी सोनवाल साहब ।”

“मुझे तुम पर भरोसा है ।” राजदीप सोनवाल की आंखें भीग गयीं-“हालांकि तुमने मुझे धोखा दिया-लेकिन फिर भी न जाने क्यों मुझे तुम्हारे ऊपर ऐतबार करने को दिल चाहता है ।”

तड़प उठी डिंपी !

जबकि सोनवाल फिर वहाँ से चला गया था ।

१६

रमेश की जिंदगी अब एक बिल्कुल नया मोड़ ले चुकी थी ।

कल का ऑटो रिक्शा ड्राइवर हालात की चक्की में पिसकर अब पूरी तरह एक अपराधी बन चुका था ।

सेठ रुपचंद ने उसे अपने संगठन का मेम्बर बना लिया था ।

इतना ही नहीं- उसे अड्डे से बाहर आने-जाने की इजाजत भी सेठ रुपचंद ने दे दी थी ।

तब रमेश को पहली बार यह मालूम हुआ कि वो अड्डा सेठ रुपचंद की विशाल ज्वैलरी शॉप के नीचे तहखाने में बना हुआ था ।

लेकिन उस अड्डे में आने का रास्ता एक तीन मंजिले मकान के अंदर से था- वह मकान ज्वैलरी शॉप के बिल्कुल पीछे वाली गली में था । वह पुराना-सा मकान भी सेठ रुपचंद की मिल्कियत था- वह ढाई सौ वर्ग गज में फैला था और उस मकान के तहखाने से होकर एक छोटी-सी सुरंग पार करते हुए अड्डे तक पहुँचा जाता था ।

वह सुरंग सीधे कांफ्रेंस हॉल में खुलती थी ।

दरअसल कॉफ्रेंस हॉल में एक अर्द्धनग्न लड़की की विशाल पेंटिंग लगी थी- उस पेंटिंग के बराबर में एक नन्हा-सा लाल बटन था जब वह बटन दबाया जाता, तो वह पेंटिंग किसी स्लाइडिंग डोर की तरह एक तरफ सरक जाती ।

फिर उस पेंटिंग के पीछे स्टेयरिंग व्हील जैसा लोहे का एक चक्कर नजर आता ।

इस चक्के को घुमाने पर ही दीवार का एक बड़ा भाग दायीं तरफ सरकता था । और तब कहीं सुरंग का दहाना दिखाई देता ।

वह अड्डा उस विशालकाय ज्वैलरी शॉप के नीचे जरूर बना हुआ था- लेकिन उस अड्डे में आने-जाने का रास्ता पिछली गली में बना वही पुराना मकान था ।

रमेश ने जब पहली बार तानाजी जाधव के साथ उस रास्ते के दर्शन किये- तो वह उस पूरे सिस्टम से बड़ा प्रभावित हुआ ।

हद से ज्यादा प्रभावित हुआ ।

ऐसे करिश्मे तो उसने सिर्फ कभी-कभार फिल्मों में ही देखे थे । आम जिन्दगी में भी इस तरह का कुछ होता है- यह तो उसने सोचा भी न था ।

बहरहाल- फिर दुर्लभ ताज चुराने के लिये योजना पर काम शुरू हुआ ।

सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी- वह तीनों उस ताज को चुराने का दृढ़ संकल्प ले चुके थे ।

हालांकि सिक्योरिटी वाकई बहुत पावरफुल थी- लेकिन वो निराश नहीं थे ।

उन्हें लग रहा था कि वो वाकई कोई ‘करिश्मा’ कर डालेंगे ।

उस सिक्योरिटी को भेदने के लिए उन्होंने खूब दिमाग लड़ाया ।

उसी शाम उन तीनों के बीच उस सब्जेक्ट पर एक मीटिंग हुई ।

काफी देर तक उन्होंने विचार-विमर्श किया ।

लेकिन ‘नतीजा’ कुछ न निकला ।

वह सारा दिन और सारी रात उस सिक्योरिटी को भेदने की कोशिश करते रहे ।

प्रत्येक दो-दो घण्टे के बाद उनके बीच मीटिंग होती । इन दो घण्टे में जिसने जो कुछ सोचा होता- वह अपना आइडिया एक-दूसरे के सामने रखता ।

कुल मिलाकर उनके बीच सात मीटिंगें हुई ।

लेकिन नतीजा फिर भी जीरो ही रहा ।

उनके द्वारा खूब दिमाग भिड़ाकर सोचा गया आइडिया कूड़े का ढेर साबित हुआ ।

शनिवार- सुबह दस बजे ।

वह तीनों कॉफ्रेंस हॉल में पुनः सिर-से-सिर जोड़े बैठे थे ।

लेकिन इस समय उनके चेहरे पर ऐसी फटकार बरस रही थी- जैसी सारी रात किसी ने उनकी जमकर धुनाई की हो ।

कल का उत्साह अब निराशा में बदल चुका था ।

रमेश भी उनके बीच बिल्कुल खामोश काठ का उल्लू बना बैठा था ।

“बॉस- अब उस दुर्लभ ताज को वापस कजाखिस्तान लौटने में तीन दिन रह गये हैं ।” तानाजी जाधव शुष्क स्वर में बोला- “सिर्फ तीन दिन ! और अभी तक हमारे पास उस दुर्लभ ताज को चुराने की कोई सॉलिड योजना नहीं है ।”

“मैं एक बात कहूँ बॉस ?” रमेश बोला ।

“वडी तू भी बोल- तू ही क्यों खामोश रहता है नी ।”

“उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी वाकई बहुत मजबूत है बॉस ।” रमेश बोला- “हमें उसे चुराने का ख्याल भी अपने दिमाग से निकाल देना चाहिये ।”

“वडी तू पागल है ।” सेठ रुपचंद भड़क उठा- “साई, तू क्या समझता है - अगर अभी तक योजना नहीं बनी, तो आगे भी नहीं बनेगी ? ऐसा भी कहीं होता है ? साईं- हमें निराशा से भरी बातें अपने दिमाग में नहीं लानी । इंसान वो होता है- जो हारने के बावजूद दिल से अपनी हार कबूल नहीं करता- बल्कि वो और संघर्ष करता है- और लड़ाई लड़ता है । वडी ऐसे ही लोगों की जिंदगी में करिश्मे होते हैं- ऐसे ही लोगों को फतेह मिलती है ।”

“ल...लेकिन... ।” गुड्डू त्यागी ने कुछ कहना चाहा ।

“कुछ नहीं- कुछ नहीं सुनना मुझे ।” रुपचंद भुनभुना उठा- “वडी हमने वो ताज चुराना है- हर हालत में चुराना है- अंडरस्टैंड ?”

सब खामोश हो गये ।

तभी एक बेहद सनसनीखेज घटना घटी ।

ऐसी घटना- जिसने सबको चौंकाकर रख दिया ।

लम्बे फल वाला एक चाकू बड़े अकस्मात् ढंग से सनसनाता हुआ कॉफ्रेंस हॉल में घुसा था- और फिर वह खचाक की तेज आवाज करता आयताकार मेज के बीचों-बीच जा धंसा ।

चारों उछल पड़े ।

हलचल-सी मच गयी ।

सबके सब बिजली जैसी रफ्तार से दौड़ते हुए कॉफ्रेंस हॉल से बाहर निकले ।

पूरा गलियारा सुनसान पड़ा था ।

कहीं कोई नहीं ।

उन चारों ने पूरा अड्डा छान मारा- लेकिन उस व्यक्ति के कहीं दर्शन न हुए जिसने चाकू फेंककर मारा था ।

आखिरकार वो थक-हारकर वापस कांफ्रेंस हाल में लौटे ।

चारों बुरी तरह डरे हुए थे ।

वापस कॉफ्रेंस हॉल में लौटते ही एक और धमाका हुआ ।

तेज धमाका!

उनकी नजर मेज में धंसे चाकू पर पड़ी थी- उन्होंने देखा कि उस चाकू की नोंक में एक कागज भी फंसा हुआ है ।

जरूर किसी ने वो कागज उन तक पहुँचाने के लिये ही चाकू वहाँ फेंककर मारा था ।

गुड्डू त्यागी बेपनाह फुर्ती से चाकू की तरफ झपटा ।

जल्द ही उसने चाकू की नोंक में फंसा कागज निकाल लिया और फिर उसे खोलकर जल्दी-जल्दी पढ़ने लगा ।

जैसे-जैसे उसने कागज पढ़ा- ठीक वैसे-वैसे उसकी आंखें हैरत से फटती चली गयीं ।

कागज के अन्त तक पहुँचते-पहुँचते उसकी आंखें अचम्भे के मारे अपनी कटोरियों से बाहर निकलने को तैयार थीं ।

“ब...बॉस !” पूरा कागज पढ़ते ही गुड्डू त्यागी खुशी से चिल्ला उठा- “बॉस- ह...हमें योजना मिल गयी- हमें दुर्लभ ताज चुराने की मास्टरपीस योजना मिल गयी ।”

“वडी तू क्या कह रहा है ?” सेठ रुपचंद भी बौखलाया-सा उसकी तरफ झपटा- क्या कह रहा है ?”

“य...यह देखो बॉस !” गुड्डू त्यागी ने वह कागज उन सबके सामने लहराया- उसका खुशी से बुरा हाल था- य...यह देखो- एकाएक हमारे हाथ कितनी जबरदस्त योजना लग गयी है ।”

“लेकिन यह योजना आयी कहाँ से साईं- वडी किसने भेजी ?”

गुड्डू त्यागी ने फौरन उस कागज पर लिखे आखिरी दो शब्द पढ़े- तत्काल उसके चेहरे पर गंभीरता छा गयी ।

“वही क्या हुआ- चुप क्यों हो गया ?”

“इ...इस पर तो डॉन अँटोनी का नाम लिखा है बॉस ।”

“ड...डॉन अँटोनी !” कांप उठी रुपचंद की भी आवाज- “य...यानि सुपर बॉस !”

सबके नेत्र हैरत से फैल गये ।

जबकि सेठ रुपचंद ने गुड्डू त्यागी के हाथ से अब वो कागज झपट लिया था- फिर वो एक ही सांस में पूरी योजना पढ़ता चला गया ।

ज्यों-ज्यों उसने योजना पढ़ी- ठीक उसी अनुपात में उसकी आंखों की चमक बढ़ती चली गयी

।

पूरी योजना पढ़ते ही उसकी आंखें भी कई-कई हजार वाट के बल्ब की मानिन्द जगमगाने लगी थीं ।

“स...साई- त्यागी साईं !” रुपचंद ने हर्षनाद-सा किया- “वडी यह तो सचमुच बड़ी धांसू योजना है ।”

“हाँ बॉस- हाँ ।”

इस बीच तानाजी जाधव भी योजना को पढ़ गया था ।

“अगर हम इस योजना पर काम करें साईं ।” रुपचंद पागलों की तरह बोला- “तो हमें ताज चुराने से कोई नहीं रोक सकता- फिर तो हमने हर हालत में कामयाब होना ही है ।”

“अ...आप बिल्कुल ठीक कह रहे हैं बॉस !” तानाजी जाधव भी खुशी से कंपकंपाये स्वर में बोला- “म...मुझे तो अब यह सोच-सोचकर हैरानी हो रही है कि इतनी साधारण-सी योजना हमारे दिमाग में क्यों नहीं आयी- सुपर बॉस के दिमाग में ही क्यों आयी ।”

“वडी मैं पहले ही बोलता था ।” रुपचंद ने कहा- “पहले ही बोलता था कि इस दुनिया में हर चीज की काट मौजूद है । वडी देखा तुमने- देखा- ज्यूरी के मेम्बर जिस सिक्योरिटी को परफेक्ट समझ रहे थे- सिक्के बंद समझ रहे थे- सुपर बॉस ने उस सिक्योरिटी को भेदने की योजना भी बना डाली । वडी जब ज्यूरी के मेम्बरों को यह पता चलेगा कि दुर्लभ ताज इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी के बावजूद यूं आसानी से चोरी हो गया- तो वह अपना माथा पीठ लेंगे- कलप कर रह जायेंगे ।”

वह शब्द कहते हुए जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने लगा रुपचंद- और जोर-जोर से- ऐसा लग रहा था जैसे उसके ऊपर खुशी का दौरा पड़ गया हो ।

थोड़ी देर बाद ही कॉफ्रेंस हॉल में फिर एक मीटिंग हुई ।

उस मीटिंग में इंडियन म्यूजियम का चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर राजदीप सोनवाल भी मौजूद था ।

यह सुनकर सोनवाल के दिमाग में बम-सा फटा कि उन्होंने दुर्लभ ताज को चुराने की कोई मास्टरपीस योजना बना ली है ।

वाकई वो अचम्भे की बात थी ।

“ल....लेकिन योजना क्या है ?” राजदीप सोनवाल ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

मुस्कराया रुपचंद ।

उसने इस समय भी अपने चेहरे पर नकाब धारण की हुई थी ।

“सोनवाल साईं !” रुपचंद अपनी चिर-परिचित ‘सिन्धी’ भाषा में बोला- “वडी हमने सुना है कि कल शाम पांच बजे बंगलुरू से हवाई जहाज द्वारा दो ताबूतों में शेर और चीते की खालें दिल्ली लायी जा रही हैं जिनमें पहले भूसा भरा जायेगा और फिर उन्हें प्रदर्शनी के लिये म्यूजियम में रखा जायेगा।"

सोनवाल चौंका।

"त...तुम्हें यह सब कैसे मालूम?"

“वडी हमें तो यह भी मालूम है नी ।” सेठ रुपचंद मुस्कराया- “कि जिन ताबूतों में यह खालें लाया जायेंगी- उन ताबूतों को एअरपोर्ट पर रिसीव करने भी तुम जाओगे ।”

“यह झूठ है- गलत है ।”

“वडी यह सच है ।” रुपचंद उससे भी ज्यादा, जोर से चिल्लाया- “साईं- हमें सब मालूम है- हमसे कुछ नहीं छिपा ।”

“लेकिन... ।”

“वडी हमें तो यह भी मालूम है ।” रुपचंद सोनवाल की बात काटकर बोला- “कि उन ताबूतों को रिसीव करने का एक अथॉरिटी लैटर तुम्हें मिल भी चुका है ।”

राजदीप सोनवाल भौंचक्का रह गया ।

वह हक्का-बक्का-सा सेठ रुपचंद की नकाब में छुपी सूरत को देखने लगा ।

“ल...लेकिन तुम ताबूतों के सम्बन्ध में इतनी छानबीन क्यों कर रहे हो- कहीं तुम्हारा मकसद उन खालों को चुराने का तो नहीं है ?”

“नहीं सोनवाल साईं !” वडी जब दुर्लभ ताज जैसी बेशकीमती चीज आंखों के सामने हो- तो चिड़िया की बीट हाथ लगाना कौन पसन्द करता है ।”

“फिर तुम ताबूतों के बारे में इतने सवाल-जवाब क्यों कर रहे हो ?”

“दरअसल वह दोनों ताबूत दुर्लभ ताज चुराने की दिशा में हमारी बहुत बड़ी मदद करने वाले हैं ।”

“त...ताबूत मदद करने वाले हैं ।” राजदीप सोनवाल की आंखें और ज्यादा आश्चर्य से फैल गयीं- “व...वो कैसे ?”

“वडी- मैं तुम्हें पूरी योजना बताता हूँ- दरअसल कल शाम ठीक पांच बजे वह दोनों ताबूत सफदरजंग एयरपोर्ट पहुंचेंगे- ठीक ?”

“ठीक ।”

“उन ताबूतों को रिसीव करने तुम इंडियन म्यूजियम की एक स्टेशन वैगन लेकर एयरपोर्ट जाओगे- उस स्टेशन वैगन को एक ड्राइवर चला रहा होगा । सफदरजंग एयरपोर्ट पहुँचते ही खालों के वह ताबूत वैगन में लाद दिये जायेंगे तथा फिर वो स्टेशन वैगन जिस तरह बिना कहीं रुके म्यूजियम से एयरपोर्ट पहुँची थी । फिर वो उसी तरह सफदरजंग एयरपोर्ट से वापस इंडियन म्यूजियम पहुंचेगी ।”

राजदीप सोनवाल बड़ी उत्सुकता से सेठ रुपचंद की एक-एक बात सुन रहा था ।

“वडी तभी एक घटना घटेगी ।” सेठ रुपचंद योजना की रूपरेखा समझाता हुआ बोला- “स्टेशन वैगन ताबूतों को लेकर अभी सफदरजंग एयरपोर्ट से थोड़ी ही दूर आयेगी कि तभी तुम्हारे सिर में एकाएक बड़ा तेज दर्द उठेगा ।”

“म...मेरे सिर में दर्द उठेगा ?” सोनवाल चौंका ।

“हाँ ।”

“क्यों उठेगा ?”

“वडी तुमने एक स्पॉट पर पहुँचकर सिरदर्द का नाटक करना है- जानबूझकर स्टेशन वैगन के ड्राइवर के सामने ऐसा शो करना है जैसे तुम्हारे सिर में बहुत तेज दर्द उठ रहा हो ।”

“ल...लेकिन मुझे नाटक करने की क्या जरूरत है ?”

“क्योंकि यही हमारी योजना है सोनवाल साईं ।”

“मैं तुम्हारी किसी योजना पर काम करने वाला नहीं ।” एकाएक राजदीप सोनवाल गुस्से में बोला ।

“काम तो तुम करोगे ।”

“नहीं करूंगा ।”

“वडी अगर नहीं करोगे ।” रुपचंद ने दांत किटकिटाये- “तो तुम्हारी खैर नहीं- तुम्हारे मासूम बच्चे की खैर नहीं ।”

बच्चे के नाम सुनते ही सोनवाल का सारा गुस्सा हवा हो गया ।

“तुम लोग जबरदस्ती कर रहे हो ।” सोनवाल आन्दोलित लहजे में बोला- तुमने चिंटू की जान के बदले में मुझसे सिक्योरिटी की जानकारी मांगी थी- वह जानकारी मैंने तुम्हें दे दी- किस्सा खत्म । अब मैं तुम्हारी कोई बात मानने के लिये बाध्य नहीं हूँ ।”

“वडी तुम्हें अपने बच्चे की जान प्यारी है या नहीं ?”

सोनवाल सकपकाया ।

“वडी मुझे मेरे सवाल का जवाब दो ।” रुपचंद चिंघाड़ा- तुम्हें बच्चे की जान प्यारी है या नहीं ?”

“अ...अपने बच्चे की जान किसे प्यारी नहीं होती ।”

“अगर उसकी जान प्यारी है सोनवाल साईं- तो तुम्हें वही करना होगा, जो हम कहेंगे- हमारी हर बात माननी होगी ।”

राजदीप सोनवाल कसमसाकर रह गया ।

“वडी अब आगे सुनो ।” रुपचंद बोला- “तुमने स्टेशन वैगन के ड्राइवर के सामने भयंकर सिरदर्द का नाटक इसलिये करना है- ताकि तुम ड्राइवर को टेबलेट लेने किसी केमिस्ट की दुकान पर भेज सको । इस पूरे ड्रामे का अभिप्राय सिर्फ इतना है कि ड्राइवर को कुछ देर के लिये स्टेशन वैगन से थोड़ा दूर भेजा जा सके । अब यह पूछो कि ड्राइवर को स्टेशन वैगन से दूर भेजने की क्या जरूरत है ।”

“क...क्या जरूरत है ?”

“साईं- जिस समय तुम्हारी स्टेशन वैगन सफदरजंग एयरपोर्ट से चलेगी- उसी क्षण तुम देखोगे

कि एक फियेट स्टेशन वैगन के पीछे लगी हुई है । वडी वो फियेट, हमारी फियेट होगी और उसमें हमारे आदमी सवार होंगे । एक पूर्व निधारित तन्हा-सी जगह पर पहुँचकर जैसे ही तुम सिरदर्द का ड्रामा करोगे और ड्राइवर को टेबलेट लेने के लिये भेजोगे- उसी क्षण फियेट के अंदर से निकलकर हमारा एक आदमी तेजी से तुम्हारे पास पहुंचेगा । वडी हमें यह भी मालूम है कि इंडियन म्यूजियम की स्टेशन वैगन दो पोर्शन में बंटी हुई है । आगे वाला जोकि ड्राइविंग पोर्शन है- सिर्फ चार फुट का है । जबकि पिछला पोर्शन, जिसे बॉक्स पोर्शन कहा जाता है- उसकी लम्बाई पंद्रह फुट है । बॉक्स पोर्शन में ही ताबूत जैसे आइटम रखे जाते हैं और उसके लोहे के मजबूत दरवाजे पर हमेशा एक भारी-भरकम ताला झूलता रहता है । एनी वे- उस दिन भी दोनों ताबूत स्टेशन वैगन की उसी बॉक्स पोर्शन में होंगे और उसके दरवाजे पर ताला लगा होगा । लेकिन ड्राइवर जैसे ही स्टेशन वैगन खड़ी करके टेबलेट लेने केमिस्ट की दुकान की तरफ जायेगा- तभी हमारा आदमी तुम्हारे पास पहुंचेगा और तुमने उसे फौरन बॉक्स पोर्शन के ताले की चाबी दे देनी है ।"

"च...चाबी दे देनी है क्यों ?"

"वही बता रहा हूँ साईं । ताले की चाबी मिलते ही हमारा आदमी आनन-फानन में बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोलेगा- दरवाजा खुलते ही हमारे और दो आदमी जो फियेट में बैठे होंगे, वह डकैती डालने वाले थोड़े से साज-सामान के साथ फुर्ती से स्टेशन वैगन के बॉक्स पोर्शन में दाखिल हो जायेंगे । उसके बाद हमारे बॉक्स पोर्शन का ताला वापस लगायेगा- चाबी तुम्हें देगा- और उसके बाद फियेट लेकर पहले की तरह ही सड़क पर आगे बढ़ जायेगा । यह पूरा काम ड्राइवर द्वारा टेबलेट लेकर लौटने से पहले ही कम्पलीट हो जाना है ।"

"ल...लेकिन तुम्हारे दो आदमी बॉक्स पोर्शन में घुसकर क्या करेंगे ?" राजदीप सोनवाल ने जिज्ञासावश पूछा ।

"दरअसल उन दोनों का काम बड़ा महत्वपूर्ण है ।" रुपचंद बोला- वडी उन्होंने ही दुर्लभ ताज की चोरी करनी है । बॉक्स पोर्शन में पहुँचने के बाद उन दोनों का सबसे पहला काम ताबूतों के अंदर घुसना होगा । वडी इस बात से तो तुम भी अच्छी तरह वाकिफ होओगे कि ताबूतों में खाल रखे जाने के बाद साधारणतया इतनी जगह जरूर बची रहती है कि उस खाली जगह में एक आदमी आ जाये- ताबूतों में वह खाली जगह छोड़ने के पीछे भी एक साइंटिफिक रीजन होता । वडी ताबूत में वो खाली जगह इसलिये छोड़ी जाती है- ताकि खाल को हवा सही तरह मिलती रहे और खाल मसाला लगी होने की वजह से खराब न हो ।"

राजदीप सोनवाल पूरी योजना बड़े विस्मय से सुन रहा था ।

"लेकिन यह तो तुमने अभी बताया ही नहीं ।" राजदीप सोनवाल बोला- "कि तुम्हारे वह दोनों आदमी ताबूतों में घुसकर क्या करेंगे ?"

"साईं- यह बात भी तुम्हें योजना में आगे चलकर मालूम होगी कि उन दोनों आदमियों ने ताबूतों में घुसकर क्या करना है । फिलहाल तुम्हारे लिये इतना समझ लेना ही काफी है कि बॉक्स पोर्शन में पहुँचने के बाद उनका एकमात्र उद्देश्य ये होगा- कि वो जल्द-से-जल्द उन ताबूतों के अंदर इस तरह घुस जायें कि बाहर से देखने पर किसी को इस बात की भनक तक न मिले- उन ताबूतों के साथ कैसी भी छेड़खानी की गयी है ।"

"वो इस तरह ताबूतों में कैसे घुस सकते हैं ?"

“क्यों नहीं घुस सकते नी ?”

“क्योंकि ताबूत सीलबन्द होते हैं- उन पर सरकारी मुहर लगी होती है ।”

“साईं- हमारे आदमी सील नहीं तोड़ेंगे- उसे हाथ भी नहीं लगायेंगे ।” रुपचंद बोला- “वडी वो ताबूत के नीचे से तख्ते उखाड़ कर उसके अंदर घुसेंगे और अंदर घुसते ही ताबूत के तख्ते ठीक उसी तरह वापस ठोंक देंगे- जैसे वो पहले ठुके थे । इस तरह ताबूतों की सील भी लगी रहेगी- ताला भी पड़ा रहेगा- और हमारे दोनों आदमी अपने पूरे साज-सामान के साथ ताबूत के अंदर भी घुस जायेंगे ।”

सोनवाल हक्का-बक्का रह गया ।

“उ...उसके बाद क्या होगा ?” सोनवाल ने सस्पेंसफुल स्वर में पूछा ।

“वडी उसके बाद स्टेशन वैगन इंडियन म्यूजियम पहुंचेगी । म्यूजियम में हॉल नम्बर चार सहित कुल छः हाल कमरे हैं सोनवाल साईं । यहाँ एक बात ध्यान देने के काबिल है- म्यूजियम के बाकी पांच हॉल शाम के पांच बजे ही बंद हो जाते हैं । सिर्फ चार नम्बर हॉल ही एकमात्र ऐसा हॉल है- जो शाम के छः बजे तक खुला रहता है । जबकि शेर-चीते की खाल के जो ताबूत बंगलुरू से दिल्ली आ रहे हैं- उनके सफदरजंग-एयरपोर्ट पहुँचने का टाइम भी शाम के पांच बजे का ही है । तुम क्या समझते हो- उन ताबूतों को एयरपोर्ट से इंडियन म्यूजियम तक पहुँचने में कितना समय लग जायेगा ?”

“लगभग आधा घण्टा !”

“आधा घण्टा !” रुपचंद बोला- “और वडी कल चूंकि स्टेशन वैगन बीच रास्ते में भी रुकेगी- इसलिये उसका इंडियन म्यूजियम पौने छः बजे तक ही पहुँचना मुमकिन होगा । करैक्ट ?”

“करैक्ट ।”

“साईं- पौने छः बजे इंडियन म्यूजियम पहुँचने के बाद तुम दोनों ताबूत किस हॉल कमरे में रखोगे ?”

“तीन नम्बर हॉल में ।”

“लेकिन तब तक तो वह हॉल बंद हो चुका होगा ?”

“निःसन्देह तब तक वह हॉल बंद हो चुका होगा ।” राजदीप सोनवाल बोला- “लेकिन हॉल नम्बर तीन और चार की चाबियां हमेशा म्यूजियम के हेड सिक्योरिटी गार्ड सरदार दलबीर सिंह के पास रहती है- जो चौबीस घण्टे म्यूजियम में मिलता है । दरअसल इंडियन म्यूजियम की बैक साइड का एक क्वार्टर सरदार दलबीर सिंहके नाम अलॉट किया गया है- इसलिये वह या तो म्यूजियम में मिलेगा या फिर अपने क्वार्टर में मिलेगा ।”

“और वडी बाकी हॉल कमरों की चाबियां किसके पास रहती हैं ?”

“वह अलग-अलग हॉल कमरों के अलग-अलग चीफ एग्जीक्यूटिव के पास रहती है ।”

“यानि अगर तुम कल शाम पौने छः बजे एकदम से उन हॉल कमरों की चाबियां हासिल करना चाहोगे, तो वह चाबियां तुम्हें हासिल नहीं होंगी ।”

"हाँ ।"

"वैरी गुड !" रुपचंद की आंखों में खुशी की चमक दौड़ी साईं- अब मैं योजना को दोबारा आगे बढ़ाता हूँ । वडी कल शाम पौने छः बजे जब तुम्हारी स्टेशन वैगन इंडियन म्यूजियम पहुंचेगी- तो सरदार दलबीर सिंह ताबूतों को रखवाने के लिये हॉल नम्बर तीन का दरवाजा खोलना चाहेगा- लेकिन कल उस हॉल का दरवाजा नहीं खुलेगा सोनवाल साईं ।"

"क्यों ?" सोनवाल के दिमाग में धमाका-सा हुआ- "कल उस हॉल का दरवाजा क्यों नहीं खुलेगा ?"

"क्योंकि कल मैं म्यूजियम जाऊंगा- और खुद अपने हाथों से हॉल नम्बर तीन का ताला खराब करके आऊंगा ।"

"वो कैसे ?"

"वडी यह कोई बड़ी बात नहीं । मुझे मालूम हुआ है कि हॉल नम्बर तीन पूरे म्यूजियम में सबसे ज्यादा तन्हा जगह पर है । इतना ही नहीं- पेशाबघर भी उसके काफी नजदीक है । मैंने कल किसी भी वक्त पेशाब करने के बहाने उस तन्हा जगह पर जाकर हॉल नम्बर तीन के ताले में चाबी डालनी है और उसे कसकर इधर-उधर हिला देना है । वह चाबी चूंकि उस ताले की नहीं होगी- इसलिये कसकर इधर-उधर हिलाने से उस ताले के अंदर के कलपुर्जे हिल जायेंगे तथा फिर थोड़ी देर बाद दलबीर सिंहके खूब कोशिश करने पर भी वो ताला नहीं खुलेगा ?"

"इससे क्या फायदा होगा ?"

"वडी सारा फायदा ही इससे होगा- पूरी योजना ही इस छोटी-सी घटना पर टिकी है ।"

"वो- कैसे ?"

"सोनवाल साईं !" रुपचंद- "वडी जब हॉल नम्बर तीन का दरवाजा तो सरदार गुरुचरन सिंह से खुलेगा नहीं और बाकी हॉल कमरों की चाबियाँ उसके पास होंगी नहीं- तो तुम्हीं बताओ साईं वह उन दोनों ताबूतों को किस हॉल में रखवायेगा ?"

सोनवाल सकपका उठा ।

पलक झपकते ही सारी योजना उसकी समझ में आ गयी ।

"जवाब दो साईं ।" रुपचंद मुस्कराकर बोला- "वडी वो उन ताबूतों को किस हॉल कमरे में रखवायेगा नी?

"ए...ऐसी परिस्थिति में तो सरदार दलबीर सिंहको वह ताबूत हॉल नम्बर चार में ही रखवाने होंगे ।"

"सही- बिल्कुल सही कहा तुमने ।" रुपचंद प्रफुल्लित हो उठा ।" और वडी यही हम लोग चाहते हैं- यही हमारी योजना है । सोनवाल साईं- सिर्फ वह ताबूत ही हॉल नम्बर चार में बंद नहीं होंगे बल्कि हमारे दोनों आदमी भी उन ताबूतों के साथ-साथ निर्विघ्न उस हॉल में बंद हो जायेंगे । उस हॉल नम्बर चार में जिसकी सिक्योरिटी के इतने जबरदस्त इंतजाम भारत सरकार ने किये हैं । जिस सिक्योरिटी पर ज्यूरी के मेम्बरों को गर्व है । हमारे दोनों आदमी जिस तरह नीचे से तख्ते उखाड़कर ताबूत में घुसे थे- वह हॉल बंद होने के बाद उसी प्रकार

तख्ते उखाड़कर ताबूतों से बाहर निकल आयेंगे । अब एक दूसरी बात सुनो- ऐसी परिस्थिति में फॉल्स सीलिंग की छत और प्लास्टर पेरिस की दीवारों में छिपी स्वचालित गनें भी हमारे आदमियों का कुछ नहीं बिगाड़ पायेंगी । क्योंकि वह स्वचालित गनें भी उसी वक्त हरकत में आती हैं जब हॉल बंद होने के बाद उसमें कोई गलत तरीके से घुसता है । बिल्कुल यही स्थिति शीशे के तिलिस्मी बॉक्स में बंद दुर्लभ ताज की है- वडी वह बॉक्स भी ताज को ऊपर-नीचे ले जाने वाला करामाती प्रदर्शन तभी दिखाता है, जब कोई हॉल में गलत तरीके से घुस जाये- वरना साधारण स्थिति में वो दुर्लभ ताज अपनी जगह फिक्स ही रहता है । सोनवाल साईं- अब तुम अंदाजा लगा सकते हो कि वो ताज, वह युगों पुराना कजाखिस्तान का दुर्लभ ताज कितनी आसानी से हमारे हाथ लग जायेगा ।"

राजदीप सोनवाल भौंचक्की-सी अवस्था में रुपचंद का नकाबशुदा चेहरा देखता रह गया ।

उसे अभी भी अपने कानों पर यकीन नहीं आ रहा था ।

वो विश्वास नहीं कर पा रहा था कि उन अपराधियों ने इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी को भेदने की कोई योजना बना ली है ।

वो वाकई करिश्मा था ।करिश्मा!

"सोनवाल साईं !" रुपचंद खुश होता हुआ बोला- "वडी ज्यूरी के मेम्बर उस दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी करने में बस एक ही जगह मात खा गये- उन्होंने नम्बर चार में तिलिस्मी मायाजाल तो बिछाया साईं , लेकिन उस मायाजाल में बस एक ही लूज पॉइंट छोड़ दिया कि वो सिक्योरिटी सिस्टम तभी हरकत में आयेगा- जब कोई उस हॉल में गलत तरीके से प्रवेश करे- वरना सब कुछ सामान्य रहेगा । अगर इस सिक्योरिटी सिस्टम में यह लूज पॉइंट न होता- शायद आज हम किसी भी हालत में उस दुर्लभ ताज को चुराने की योजना न बना पाते । लेकिन इसमें ज्यूरी के उन मेम्बरों की भी क्या गलती है साईं- वडी उन्हें यह कोई ख्वाब थोड़े ही चमका होगा कि कोई इस तरह भी हॉल में घुस सकता है ।"

राजदीप सोनवाल सकते जैसी अवस्था में बैठा ।

"साईं !" रुपचंद दोबारा बोला- "मुझे अब शायद यह कहने की जरूरत नहीं कि तुमने मुझे जो चैलेन्ज दिया था- उसमें मैं जीत चुका हूँ । वडी इस परफेक्ट योजना से साबित हो चुका है कि सचमुच इस दुनिया में कोई काम नामुमकिन नहीं ।"

"एक बात बताओ ।" सोनवाल शुष्क स्वर में बोला ।

"पूछो ।"

"मैं मानता हूँ । कि तुम्हारे दोनों आदमी, उस दुर्लभ ताज को आसानी से चुरा लेंगे- लेकिन फिर वो उस दुर्लभ ताज को लेकर हॉल नम्बर चार से किस तरह बाहर निकलेंगे ? क्योंकि हॉल नम्बर चार के दरवाजे पर बाहर से ताला पड़ा है और म्यूजियम में चप्पे-चप्पे पर सिक्योरिटी गार्डों का पहरा है ।"

सेठ रुपचंद ने उनके हॉल नम्बर चार से बाहर निकलने की भी योजना बतायी ।

वह योजना हॉल में घुसने वाली योजना से भी ज्यादा जबरदस्त थी ।

सोनवाल हतप्रभ रह गया ।

पूरी योजना में कहीं सुई की नोंक के बराबर भी लूज पॉइंट नहीं था ।

“इसमें कोई शक नहीं ।” फिर राजदीप सोनवाल थोड़ा रुककर प्रभावित स्वर में बोला- “कि तुमने इतने मजबूत विश्वस्तर के सिक्योरिटी सिस्टम को भेदने की एक मास्टर पीस योजना बना ली है- लेकिन इस योजना को बनाते समय तुम एक बहुत महत्वपूर्ण बात भूल गये ।”

“वो क्या ?”

रुपचंद के साथ-साथ सब चौंके ।

सब हैरान हुए ।

“दुर्लभ ताज तो तुम चुरा लोगे- लेकिन उस दुर्लभ ताज के बारे में कहा जाता है कि वो अपनी सुरक्षा खुद करता है । और यह सच भी है- आज तक जिसने भी उस दुर्लभ ताज को चुराने का प्रयास किया- वही किसी-न-किसी दुर्घटना में मारा गया या बर्बाद हो गया । आज तक ऐसी दर्जनों कहानियां उस दुर्लभ ताज के साथ जुड़ चुकी हैं- जब अपराधियों ने तुम्हारी तरह ही बड़े जोर-शोर के साथ का प्रयास किया- लेकिन वो अपने मकसद में सफल न हुए ।”

“वडी इस बार हम सफल होंगे ।” रुपचंद ने दृढ़ शब्दों से कहा- “यह सब कहानियां, सिर्फ कहानियां है- जिसमें सच्चाई नहीं- हकीकत नहीं । इन कहानियों को सिर्फ इसलिये गढ़ा गया है- ताकि हमारे जैसे अपराधियों के दिलों में खौफ पैदा किया जा सके और उन्हें दुर्लभ ताज चुराने से रोका जा सके ।”

सोनवाल कुछ न बोला । वो भांप गया कि उन्हें समझाना बेकार है ।

वह अब कोई-न-कोई गुल खिलाकर रहेंगे और अपने मासूम बच्चे की जिंदगी के लिये उसे भी मजबूरन उनकी योजना में शामिल होना पड़ेगा ।

बहरहाल फिर राजदीप सोनवाल को कुछ जरूरी निर्देश देकर वहाँ से विदा कर दिया गया ।

उसे विदा करते ही सेठ रुपचंद ने आनन-फानन योजना में काम आने वाले सामान की एक लिस्ट बनायी ।

एक फायर ब्रिगेड वैन ।

चार अग्निशमन कर्मचारियों की खाकी वर्दियां ।

गैस मास्क ।

गैस टैंक ।

हेलमेट ।

.३२ या .३८ कैलिबर की स्मिथ एण्ड वैसन या कोल्ट जैसी बेहद उम्दा किस्म की चार रिवॉल्वरें- जो खतरे के समय में सुरक्षा कवच का काम अंजाम दे सकें ।

दुर्लभ ताज से ही मेल खाता एक नकली पीतल का ताज ।

दस-दस लीटर वाली कैरोसीन ऑयल की दो केनें ।

हथौड़ा ।

कीलें ।

आदि-आदि ।

सामान की लिस्ट तैयार होते ही वह सब फौरन सामान जुटाने के काम में लग गये ।

शनिवार की रात दस बजे तक उन्होंने लगभग सारा सामान एकत्रित कर लिया ।

सबसे ज्यादा परेशानी फायर बिग्रेड वैन के हासिल होने में पेश आयी ।

लेकिन आखिरकार उन्हें प्राइवेट संस्थान द्वारा बेची जा रही बिल्कुल चालू हालत में फायर ब्रिगेड पच्चीस हजार रुपये में मिल गयी ।

अग्निशमन कर्मचारियों का सामान बेचने वाली एक रिटेल शॉप से उन्होंने अग्निशमन कर्मियों की चार सिली सिलाई वर्दियां, बेज, गैस मास्क, गैस टैंक और हेलमेट वगैरह सब खरीद लिये ।

दुर्लभ ताज से ही मेल खाता एक नकली पीतल का ताज उन्हें जामा मस्जिद के मीना बाजार से हासिल हो गया- उसमें थोड़ी बहुत जो कमी थी, वो तानाजी जाधव ने ठीक कर दी ।

बाकी इंग्लिश रिवॉल्वरें, कैरोसीन ऑयल, कील, हथौड़ा जैसी बेहद साधारण चीजें भी उन्हें आसानी से उपलब्ध हो गयी ।

वह फिर इकट्ठे हुए ।

इस बार सेठ रुपचंद ने सबको यह बताया कि किसने क्या-क्या करना था ।

हॉल नम्बर तीन के ताले को खराब करने की जिम्मेदारी सेठ रुपचंद ने खुद संभाली- जो कि सबसे आसान काम था ।

गुड्डू त्यागी को सफदरजंग एयरपोर्ट से स्टेशन वैगन का पीछा करते समय फियेट ड्राइव करने की जिम्मेदारी सौंपी गयी ।

और सबसे खतरनाक मुहिम पर, ताबूतों में घुसकर दुर्लभ ताज चुराने का काम तानाजी जाधव और रमेश को सौंपा गया ।

खुद को इतने जोखिम भरे काम पर नियुक्त होते देख रमेश का दिल नगाड़े की तरह बज उठा ।

उसका कलेजा मुँह को आ गया ।

वह अपने सर्वेन्ट क्वार्टर जैसे छोटे से कमरे में लेटा बेइन्तहा बेचैनी का अनुभव कर रहा था ।

उसे यह पता तक न चला कि डिंपी कब उसके नजदीक आकर खड़ी हो गयी ।

“रमेश !” डिंपी ने उसे आहिस्ता से पुकारा ।

रमेश चुपचाप पड़ा रहा ।

“रमेश !” इस मर्तबा डिंपी ने आवाज देने के साथ-साथ उसे झंझोड़ा भी- तो वह चौंककर पलटा ।

“त...तुम !” डिंपी को देखकर उसकी आवाज कांपी- “तुम !”

“क्या सोच रहे हो ?”

“क...कुछ भी तो नहीं ।”

“मुझसे झूठ बोलते हो ।” डिंपी उसके नजदीक ही बैठ गयी- “क्या मैं नहीं जानती कि तुम इस वक्त क्या सोच रहे हो ।”

“क...क्या सोच रहा हूँ ?”

“तुम कल की योजना को लेकर डर हुए हो- यह सोच-सोचकर तुम्हारी जान निकल रही है कि सेठ रुपचंद ने तुम्हें कितने खतरनाक काम पर नियुक्त किया है ।”

“न...नहीं ।” रमेश की आवाज फिर कांपी- “य...यह सच नहीं ।”

“मुझसे झूठ बोलते हो ।” डिंपी की आवाज कड़वाहट से भर गयी- “मैं क्या तुमसे वाकिफ नहीं । आज तक पूरी जिंदगी में कभी एक मक्खी तक नहीं मारी- कभी किसी के दस पैसे चुराने तक का हौसला दिल में पैदा नहीं हो सका- और कल तुम्हें इतनी जबरदस्त सिक्योरिटी में रखा दुर्लभ ताज चुराने के लिये भेजा जा रहा है । ऐसी परिस्थिति में अगर तुम डरोगे नहीं- तो क्या करोंगे ।”

रमेश अब साफ-साफ सहमा हुआ नजर आने लगा ।

“रमेश !”

रमेश चुप रहा ।

“मेरी बात ध्यान से सुनो रमेश !” डिंपी फुसफुसा उठी- “उस दुर्लभ ताज को चुराना तुम्हारे जैसे चूहे दिल वाले आदमी के बस का काम नहीं है । मुझे तो बार-बार यह सोचकर हैरानी हो रही है कि सेठ रुपचंद ने इतने खतरनाक काम को अंजाम देने के लिये तुम्हारे जैसे डरपोक व्यक्ति को ही क्यों चुना । एक बात बोलूं रमेश ?”

“क...क्या ?” रमेश का सस्पेंसफुल स्वर ।

“मुझे तो इसमें भी सेठ रुपचंद की कोई चाल नजर आती है । तुम मानो या मानो- लेकिन मुझे साफ-साफ लगता है कि वह तुम्हें जरुर किसी नये चक्कर में फंसाने जा रहा है वरना वह खुद भी तो हॉल नम्बर चार के अंदर जा सकता था- तानाजी जाधव के साथ गुड्डू त्यागी को भी तो भेजा जा सकता था । लेकिन नहीं- उसने ऐसा कुछ नहीं किया । उसने तुम्हें चुना- तुम्हें- एक बिल्कुल नये, बेहद डरपोक तथा, नातजुर्बेकार आदमी को ।”

“त...तुम कहना क्या चाहती हो ?”

“मैं सिर्फ यह कहना चाहती हूँ कि अब तुम्हारा यहाँ एक मिनट और भी रुकना खतरे से खाली नहीं है- तुम्हारी जान जोखिम में है- इसलिये जितना जल्द-से-जल्द संभव हो, यहाँ से भाग चलो ।”

“न...नहीं- यह नहीं हो सकता ।”

“क्यों नहीं हो सकता ? क्या तुम अड्डे से बाहर निकलने का रास्ता नहीं जानते ?” डिंपी

फुसफुसाई ।

“वह सब जानता हूँ- ल...लेकिन मैं भागकर कहाँ जाऊंगा डिंपी ? रमेश की आवाज में पीड़ा थी- “कहाँ मुझे आसरा मिलेगा ? म...मेरी जिंदगी अब शह और मात के खतरनाक खेल में फंस चुकी है । पूरे दिल्ली की पुलिस मुझे इस तरह तलाशती घूम रही है- जैसे भूसे के ढेर में सुई तलाश की जाती है ।”

“फ...फिर, तुम क्या करोगे ?”

“मैं कर भी क्या सकता हूँ ।” रमेश के स्वर में बेहद निराशा थी- “अब तो मेरे सामने यही एक रास्ता है कि मैं सेठ रुपचंद के आदेश का पालन करूं । ल...लेकिन मेरे दिमाग में अब एक योजना और है डिंपी ।”

“य...योजना- कैसी योजना ?”

“मैंने इन शैतानों को चुपचाप बातें करते सुना है कि दुर्लभ ताज हाथ में आते ही यह तीनों हिन्दुस्तान छोड़कर खामोशी से अपने सुपर बॉस के साथ अमरीका भाग जायेंगे । इसके लिये जाली पासपोर्ट और वीजा वगैरह की भी तैयारियां हो चुकी हैं ।”

“कहीं तुम इस गलतफहमी में तो नहीं ।” डिंपी तुरन्त बोली- “कि यह तुम्हें भी अपने साथ अमरीका ले जायेंगे ?”

“मैं इतना बड़ा पागल नहीं हूँ- जो इस तरह के लोगों से ऐसी उम्मीद रखूंगा ।”

“फ...फिर क्या योजना है तुम्हारी ?”

रमेश अब डिंपी की तरफ झुक गया तथा और धीमे स्वर में फुसफुसाया- “अब यह लोग कभी अमरीका नहीं जा सकेंगे डिंपी ।”

“य...यह तुम क्या कह रहे हो ?” डिंपी के नेत्र आश्चर्य से फैल गये ।

“मैं ठीक ही कह रहा हूँ । इस वक्त तुम मेरी कोई बात अच्छी तरह नहीं समझ सकोगी- लेकिन अब एक बात ध्यान रखना । आज तक तुम मुझे डरपोक और बुजदिल समझती थी न- तो सुनो अब डरपोक रमेश मर गया । आज से एक एसा नया रमेश जन्म लेगा- जो अपने आपमें बहादुरी की मिसाल होगा । आज तक लोग मेरे खिलाफ षडयंत्र रचते थे- लेकिन अब मैं षडयंत्र रचूंगा । ऐसा षडयन्त्र- जो सबके छक्के छुटा देगा ।” बोलते-बोलते रमेश की आंखों में खून उतर आया- “और...और उस व्यक्ति को तो मैं किसी भी हालत में माफ नहीं करूंगा डिंपी- जिसकी वजह से आज मेरी यह हँसती-खेलती जिंदगी नरक बन गयी है ।”

रमेश का चेहरा ज्वालामुखी की तरह दहकने लगा ।

होंठ गुस्से से कंपकंपाने लगे ।

वह एक ही पल में दरिन्दा बन चुका था- साक्षात दरिन्दा ।

रमेश का वह रौद्र रूप देखकर उस साये का कलेजा पत्ते की तरह कांप उठा- जो उस छोटे से कमरे के दरवाजे से आंख और कान सटाये खड़ा उनका वार्तालाप सुन रहा था ।

अगले ही पल वो तेजी से पलटा ।उसके शरीर में फुर्ती-सी समा गयी थी ।फिर वो लम्बे-लम्बे

डग रखता हुआ कांफ्रेंस हॉल की तरफ बढ़ गया ।

गहन अंधकार में भी उस साये के कदम इस तरह उठ रहे थे- मानो वह उस अड्डे के एक-एक हिस्से से वाकिफ हो ।

१७

आखिरकार वो महत्वपूर्ण समय भी आ ही गया- जिसका सेठ रुपचंद और उसके संगठान के मेम्बरों को पिछले कई दिनों से इंतजार था ।

सचमुच वह रोमांचकारी क्षण थे ।रोमांचकारी भी और रहस्य से भरे हुए भी ।

कोई नहीं जानता था कि आगामी कुछ घण्टों में अब क्या होने वाला है ।

खेल शुरू हुआ ।पत्ते बिछाये जाने लगे ।

वह रविवार की खून में डूबी हुई शाम थी- जैसे ही पांच बजे, इंडियन म्यूजियम की एक स्टेशन वैगन ताबूत लेने के लिये सफदरजंग एयरपोर्ट की विशाल मारकी में जाकर रुकी ।

स्टेशन वैगन में उस समय राजदीप सोनवाल के अलावा सुखविर जाट नाम का एक बेहद लम्बा-चौड़ा ड्राइवर भी मौजूद था- जो हरियाणा का रहने वाला था और जिसके कंधे पर हमेशा एक दुनाली बंदूक टंगी रहती थी । वह बंदूक सरकारी थी और म्यूजियम की तरफ से उसे इसलिये हासिल हुई थी- ताकि कोई भी खतरा देखते ही वह उसका इस्तेमाल कर सके ।

लगभग दस मिनट बाद ही शेर और चीते की खालों के दोनों ताबूत स्टेशन वैगन के बॉक्स पोर्शन में रख दिये गये ।

फिर सुखविर जाट के सामने ही राजदीप सोनवाल ने दरवाजे पर पीतल का भारी-भरकम ताला लगाकर चाबी अपनी जेब में रखी ।

उसके बाद स्टेशन वैगन तूफानी रफ्तार से म्यूजियम की तरफ दौड़ पड़ी ।

सुखविर जाट पूरी तन्मयता से वैगन ड्राइव कर रहा था ।

वैसे भी वो दिलखुश आदमी था ।

हमेशा मस्त रहता ।

उसकी बराबर में बैठे राजदीप सोनवाल ने रियर व्यू में देख लिया था कि एयरपोर्ट से ही सफेद रंग की एक फियेट उनकी वैगन के पीछे लग गयी है ।

वैगन अपना फासला तय करती रही ।

वह अभी मुश्किल से एक किलोमीटर भी न चली होगी कि राजदीप सोनवाल ने एकाएक जोर से सिसकारी भरकर अपना सिर पकड़ा और फिर एकदम से ड्राइविंग सीट पर ढेर होता चला गया ।

वो सीधा सुखविर जाट की गोद में जाकर गिरा ।

“साहब जी- साहब जी !” सुखविर जाट के हाथ-पांव फूल गये- उसने जल्दी से स्टेशन वैगन के ब्रेक अप्लाई किये- “के होया साहब जी ?”

सोनवाल कुछ न बोला ।

वह जख्मी सांड की भांति बुरी तरह हाँफता रहा- जोर-जोर से हाँफता रहा ।

“कुछ तो बोलो साहब जी- क...के होया जी?” सुखविर जाट बुरी तरह दहशतजदां हो उठा था ।

“म...मेरे सिर में बहुत तेज दर्द हो रहा है सुखविर ।” सोनवाल पीड़ा से बुरी तरह कराहकर बोला- “द...दर्द के मारे सिर फटा जा रहा है ।”

“स...सिरदर्द में इतनी बुरी हालत साहब जी ?”

“यह कोई साधारण सिरदर्द नहीं है सुखविर ।” वह पीड़ा से और बुरी तरह छटपटाया- “क...कभी-कभी मेरे सिर में एक गोला-सा टकराता है- त...तुम एक काम करोगे सुखविर ।”

“हुकुम करो साहब जी- हुकुम ।”

“तुम फौरन कहीं से सिरदर्द की एक टेबलेट ले आओ- वरना आज मेरे यहीं प्राण निकल जाने हैं ।”

बेचारा सुखविर !

घबरा तो वह पहले ही काफी चुका था ।

उसकी आंखें बड़ी तेजी से चारों तरफ घूम गयीं ।

आसपास के इलाके में केमिस्ट की दुकान तो क्या कैसी भी कोई दुकान न थी ।

हाँ- पांच या छः सौ गज के फासले पर उसे एक कॉलोनी जरूर दिखाई दी ।

अगले ही पल वो बदहवास स्थिति में पैदल ही कॉलोनी की तरफ दौड़ पड़ा ।

सफेद फियेट जो मन्थर गति से चलती हुई वैगन से आगे निकल गयी थी- सुखविर जाट के कूच करते ही टर्न होकर दोबारा वैगन के नजदीक पहुँची ।

फिर फियेट में- से बेहद आनन-फानन गुड्डू त्यागी बाहर निकला ।

राजदीप सोनवाल भी अब बड़ी चुस्त अवस्था में, वापस सीट पर बैठ चुका था ।

पलक झपकते ही गुड्डू त्यागी ने राजदीप सोनवाल से चाबी हासिल की ।

फिर उसने दौड़कर बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोला ।

उसके बॉक्स पोर्शन का दरवाजा खोलते ही फियेट में पहले से तैयार बैठे तानाजी जाधव और रमेश तुरन्त केरोसीन ऑयल की केनें तथा डकैती में काम आने वाला कुछ जरूरी साज-सामान लेकर फुर्ती के साथ फियेट से बाहर निकले तथा फिर चीते की तरह दौड़ते हुए बॉक्स पोर्शन के अंदर घुस गये ।

उस वक्त दोनों ने अग्निशमन कर्मचारियों की ड्रेस पहन रखी थी ।

उन दोनों के बॉक्स पोर्शन में घुसते ही गुड्डू त्यागी ने फौरन बाहर से दरवाजे का ताला लगा दिया ।

चाबी राजदीप सोनवाल को सौंपी ।

उसके बाद वो पहले की तरह ही आनन-फानन फियेट में जाकर बैठ गया ।मुश्किल से एक मिनट में ही सारा काम हो गया था ।

थोड़ी देर बाद ही सुखविर जाट की वापसी हुई- वह सांड की तरह हाँफ रहा था ।

राजदीप सोनवाल को बिल्कुल ठीक-ठाक अवस्था में सीट पर बैठे देखकर वह चौंका ।

“अ...आपका सिरदर्द ठीक हो गयो साहब जी ?” सुखविर जाट के स्वर में हैरानी थी ।

“हाँ सुखविर ।” सोनवाल ने गहरी सांस ली- “तुम्हारे जाते ही सिर का दर्द बड़े आश्चर्यजनक ढंग से ठीक हो गया था । मैंने तुम्हें पीछे से कई आवाजें भी दीं- लेकिन तुमने सुना ही नहीं- क्या तुम टेबलेट ले आये ?”

“हाँ साहब जी- टेबलेट तो मैं ले आया ।” सुखविर जाट ने टेबलेट फौरन सोनवाल की तरफ बढ़ा दी ।

“कोई बात नहीं ।” सोनवाल ने टेबलेट जेब में रखी- “यह टेबलेट फिर कभी काम आयेगी । चलो- तुम अब जल्दी से म्यूजियम चलो ।”

अगले ही पल स्टेशन वैगन पुनः इंडियन म्यूजियम की तरफ भागी जा रही थी ।

छः बजने में उस समय दस मिनट बाकी थे- जब स्टेशन वैगन म्यूजियम के विशाल प्रांगण में जाकर रुकी ।

राजदीप सोनवाल के लिये वो सबसे ज्यादा नाजुक क्षण थे ।

हेड सिक्योरिटी गार्ड सरदार दलबीर सिंह और सुखविर जाट- उन दोनों ने मिलकर वैगन के बॉक्स पोर्शन में- से वह दोनों ताबूत उतारे ।लेकिन ताबूत उतारने में उन्हें अपनी भरपूर ताकत का इस्तेमाल करना पड़ा ।

“साहब जी !” सुखविर जाट एक ताबूत उतारते ही बुरी तरह हाँफने लगा- “यह बक्से आते-आते इत्ते भारी कैसे ही गयो जी ?”

सोनवाल हड़बड़ाया ।

“ओये पापे !” सरदार दलबीर सिंह अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोला- “रास्ते में चुड़ैल-शुड़ैल तो नहीं घुस गयी इन ताबूतों विच ।”

सुखविर जाट की चुड़ैल-शुड़ैल के नाम हंसी छूट गयी ।

सोनवाल भी मुस्करा दिया ।

इस तरह मजाक में ही वो बात आई-गई हो गयी ।

दोनों ताबूत उठाकर हॉल नम्बर तीन के नजदीक लाये गये ।

सरदार दलबीर सिंहने हॉल का ताला खोलना चाहा- तो ताला न खुला ।

जरूर सेठ रुपचंद वहाँ आकर अपने हाथों की कारीगरी दिखाने में सफल हो गया था ।

सरदार दलबीर सिंहने फिर कोशिश की- लेकिन इस बार भी उसे असफलता ही मिली ।

“क्या हुआ ?” सोनवाल जानबूझ कर अंजान बना- “ताला कैसे नहीं खुल रहा ?”

“असी पता नहीं साहब जी ।” दलबीर सिंहके चेहरे पर उलझनपूर्ण भाव उभरे- “पंज बजे तब मैंने ताला बंद किया था- तब तो सब कुछ ठीक-ठीक था ।”

“फिर इतनी जल्दी क्या हो गया ?”

दलबीर सिंहसे एकाएक जवाब देते न बना ।

“सरदार जी!” सुखविर जाट थोड़ा हेकड़ी से बोला- “जरा ताल्ली मेरे को दिखाना जी- मैं देख्खूं यह ससुरा कैसे ना खुले ।”

सरदार दलबीर सिंहने चाबियों का गुच्छा सुखविर जाट को सौंप दिया ।

अगले ही पल गैंडे जैसा शक्तिशाली सुखविर जाट ताले से उलझ गया ।

जबकि सोनवाल के चेहरे पर अब सस्पेंसफुल भाव उभर आये थे ।

सुखविर जाट ने बेइन्तहा कोशिश की ।

चाबी की मूठ पकड़कर खूब जोर लगाये- लेकिन आखिरकार ताला उससे भी न खुला ।

“अब क्या होगा ?” राजदीप सोनवाल ने नकली चिन्ता जाहिर की- “कहाँ रखेंगे इन ताबूतों को ?”

“शाह जी !” एकाएक सरदार दलबीर सिंहबोला- “असी-अभी एक ताले वाले को बुलाकर लाता है- उसने पंज मिनट में ताला खोल देना है ।”

“नहीं ।” राजदीप सोनवाल फौरन बोला- “ऐसी गलती कभी मत करना दलबीर सिंह।”

“क्यों शाहजी ?”

“यह सारे ताले वाले एक नम्बर के बदमाश होते हैं- इन्होंने एक बार जिस ताले की चाबी बना ली, दोबारा उसी की डुप्लीकेट खुद-ब-खुद बना लेते हैं । फिर तुम्हें तो मालूम ही है कि इस हॉल में कितना कीमती सामान रखा रहता है- अगर यहाँ कभी चोरी हो गयी, तो तुम्हारी आफत आ जायेगी ।”

“आप बिल्कुल ठीक बोले साहब जी ।” सुखविर जाट फौरन सहमति में गर्दन हिलाई- “हमारे गांव में ससुरों एक बिल्कुल ऐसा ही केस हो गयो था ।”

“फिर असी क्या करें शाहजी ?” सरदार दलबीर सिंह विचलित हुआ ।

“करना क्या है- इन ताबूतों को रात भर के लिये किसी भी सुरक्षित जगह पर रख दो । सुबह इस हॉल का ताला तोड़कर जब नया ताला लगाया जायेगा- तभी इन ताबूतों को भी इसके अन्दर रख देना ।”

“ऐसी चंगी जगह तो अब बस एक ही है शाह जी- जहाँ इन ताबूतों को रातभर के लिये रखा जा सकता है ।”

“कौन-सी जगह ?”

“चार नम्बर हॉल ।”

“तो फिर पूछते क्या हो- उसी में रख दो । सुबह निकाल लेना ।”

ठीक छ: बजे उन दोनों ताबूतों को हॉल नम्बर चार में रखकर हॉल बंद कर दिया गया ।

इस तरह तानाजी जाधव और रमेश सिक्योरिटी के इतने बड़े तामझाम को भेदकर सहज ही हॉल नम्बर चार में घुसने में सफल हो गये ।

वह हॉल में बंद हो गये थे ।

लेकिन किसी को पता तक न था कि थोड़ी ही देर बाद वहाँ कितना बड़ा हंगामा होने वाला है ।

फिर योजना का अगला चरण शुरू हुआ ।

हॉल में बंद होने के बाद सबसे पहले तानाजी जाधव अपने ताबूत के तख्ते उखाड़कर बाहर निकला ।

फिर उसके पीछे-पीछे रमेश भी निकला ।

जैसा कि स्वाभाविक था- फॉल्स सीलिंग की छत और प्लास्टर पेरिस की दीवारों के पीछे छिपी स्वचालित गनों ने उनके ऊपर गोलियां नहीं बरसायी ।

ताबूतों से बाहर निकलते ही वह दोनों उस शीशे के बॉक्स की तरफ बढ़े गये- जिसमें दुर्लभ ताज रखा था ।

और जिसकी कीमत कई अरब रुपये थी ।

पलक झपकते ही वो दुर्लभ ताज तानाजी जाधव के हाथों में था ।

उसी पल रमेश ने उस शीशे के बॉक्स में पीतल का वो नकली ताज रख दिया- जिसे उन्होंने जामा मस्जिद के मीना बाजार से खरीदा था ।

इस तरह बिना किसी मुश्किल के- बिना किसी बड़े हंगामे के वो ताज चोरी हो गया ।

अब उन्हें उस दुर्लभ ताज को लेकर सिर्फ उस हॉल से बाहर निकलना बाकी था ।

हालांकि वो काफी मुश्किल काम था ।

लेकिन वो भी हुआ ।

कुशलतापूर्वक हुआ ।

वहाँ से भाग निकलने की योजना रात के दस बजे से शुरू हुई ।

वो योजना काफी हंगामाखेज थी और दहला देने वाली भी ।

जैसे ही रात के दस बजे- फौरन तानाजी जाधव और रमेश ने अपने साथ लायी कैरोसिन ऑयल की केनों में-से तेल हॉल के अंदर-ही-अंदर चारों तरफ छिड़कना शुरू कर दिया ।

इतना ही नहीं- फिर तानाजी ने आग भी लगा दी ।

फौरन चार नम्बर हॉल के अंदर धूं-धूं करके आग लगने लगी । धुंआ तेजी से बाहर निकलने लगा ।

“आग- आग- आग- ।”

इंडियन म्यूजियम की सिक्योरिटी रात होने की वजह से उस वक्त अपनी चरम सीमा पर थी- जब एकाएक चारों तरफ आग-आग का भीषण कोलाहल मच गया ।

सब इधर-से-उधर भागने लगे ।

बाहर तैनात हेड सिक्योरिटी गार्ड सरदार दलबीर सिंहके कानों में भी जैसे ही उस कोलाहल की आवाज पड़ी- वह भी म्यूजियम के अंदर की तरफ भागा ।

“क...क्या हुआ ? अंदर आते ही दलबीर सिंहने एक सिक्योरिटी गार्ड से पूछा- “क्या हुआ?”

“ह...हॉल नम्बर चार में आग लग गयी है सर ।” सिक्योरिटी गार्ड ने बुरी तरह बौखलाये हुए कहा- ब...बहुत बुरी तरह आग लगी है ।”

“ल...लेकिन कैसे ?” दलबीर सिंहके नेत्र फटे- “कैसे लगी आग ?”

“यह मालूम नहीं सर- म...मगर खूब धुआं उठ रहा है- खूब आग की लपटें निकल रही हैं ।”

सरदार दलबीर सिंह फौरन हॉल नम्बर चार की तरफ दौड़ पड़ा ।

वास्तव में ही धुएं से पूरा गलियारा भरा पड़ा था ।

अंदर उठती भीषण आग की लपटें दरवाजे की झिर्री में से भी साफ नजर जा रही थीं ।

सरदार दलबीर सिंहको एकाएक न जाने क्या सूझा कि उसने दौड़कर वह सभी वायरें उधेड़नी शुरू कर दीं- जिनकी बदौलत हॉल नम्बर चार में सिक्योरिटी का वह तिलिस्मी जाल बिछाया गया था ।

पलक झपकते ही वो पूरा सिक्योरिटी सिस्टम ठप्प हो गया ।

लेकिन बदहवासी के आलम में उठाये गये इस कदम से सेफ्टी अलार्म बज उठा था ।

परिणामस्वरूप पूरे दिल्ली शहर की पुलिस में हड़कम्प मच गया ।

सभी सीमा चौकियां को सतर्क कर दिया गया ।

रोड ब्लॉक कर दिये गये ।

पुलिस की जिप्सियां, पी.आर.सी., वैनें, जीपें- वह सब हथियारबन्द पुलिसकर्मियों से भर-भरकर इंडियन म्यूजियम की तरफ भागने लगी ।

तभी घटना ने एक और मोड़ लिया ।

टन-टन की आवाज आसपास के सारे वातावरण में गूंज उठी थी ।

“फायर ब्रिगेड आ गयी ।” एक सिक्योरिटी गार्ड चीख-पुकार मचाता अंदर की तरफ भागा- “फायर ब्रिगेड आ गयी ।”

वह ‘फायर ब्रिगेड’ आने का ऐसा शोर मचा रहा था- जैसे कोई तोप घुसी चली आ रही हो ।

फायर ब्रिगेड इंडियन म्यूजियम के प्रांगण में आकर रुक गयी । फिर उस फायर ब्रिगेड वैन के अंदर से दो अग्निशमन कर्मचारी बड़ी फुर्ती से बाहर कूदे ।

“नीचे कूदते ही उन्होंने पानी का एक-एक मोटा पाइप अपने हाथों में ले लिया ।

“आग किधर लगी है ?” उनमें से एक अग्निशमन कर्मचारी हलक फाड़कर चिल्लाया ।

“हॉल नम्बर चार में- जल्दी वहाँ पहुंचो- जल्दी ।”

फौरन वह दोनों कर्मचारी हॉल नम्बर चार की तरफ दौड़ पड़े ।

सिर पर हैलमेट और मुँह पर गैस मास्क लगा होने की वजह से उनका पूरा चेहरा छिप गया था ।

पीठ पर गैस टंकियां बंधी थीं ।वह सेठ रुपचंद और गुड्डू त्यागी थे ।

“वडी फौरन इस हॉल का दरवाजा खोलो ।” चार नम्बर हॉल के नजदीक पहुँचकर सेठ रुपचंद ने हलक फाड़ा- “वरना सब कुछ जलकर राख हो जाना है ।”

सरदार दलबीर सिंह- जो अनायास घटे इस हादसे से बुरी तरह बौखलाया हुआ था- उसने फौरन हॉल नम्बर चार का दरवाजा खोल दिया ।

इतना ही नहीं! हॉल का दरवाजा खोलते ही वह अपनी जान की परवाह किये बिना धधकती आग में उसके अंदर कूद गया ।

फिर वो अपनी सेल्फ लोडिंग राइफल संभाले दौड़ता हुआ दुर्लभ ताज के नजदीक जा खड़ा हुआ ।

हड़बड़ाहट में ही उसने देखा कि दुर्लभ ताज अपनी जगह पर सुरक्षित मौजूद है ।

वह फौरन राइफल संभाले दुर्लभ ताज के पास यूं तनकर खड़ा हो गया- मानो अगर आज उस ताज को चुराने दुनिया की कोई भी ताकत उसके सामने आ गयी, तो वह अकेला ही उसे तहस-नहस कर डालेगा ।

अपने कर्तव्य के प्रति पूरी तरह समर्पित था दलबीर सिंह।

लेकिन काश! काश उसने दुर्लभ ताज को ध्यान से देखा होता ।

तो उसे मालूम पड़ता कि जिस ताज की हिफाजत के लिये वो अपनी जान की बाजी लगाकर वहाँ खड़ा है- वह ताज तो कभी का चोरी हो चुका है ।

उधर- सेठ रुपचंद और गुड्डू त्यागी वहाँ एक नया ही नाटक खेल रहे थे । वह पाइप से निकलते पानी के मोटे धारे को आग पर बरसाने की बजाय इधर-उधर दीवारों पर मार रहे थे ।

यही वजह थी- आग बुझने की बजाय हर पल और भीषण रूप धारण करती जा रही थी ।

उन दोनों की नजर हॉल में दीवार से चिपके खड़े तानाजी जाधव और रमेश पर भी पड़ चुकी थी ।

उन दोनों के चेहरों पर सफलता की चमक विद्यमान थी ।

वह खुश थे । इस बीच म्यूजियम के बाहर पुलिस फोर्स का विशाल जमघट इकट्ठा हो गया ।

तभी अपना कानफोड़ सायरन बजाती हुई फायर ब्रिगेड वैनों का एक बड़ा काफिला म्यूजियम के प्रांगण में आकर रुका ।

देखते-देखते वहाँ चारों तरफ अग्निशमन कर्मचारी-ही-कर्मचारी नजर आने लगे ।

रमेश, सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी को जैसे उसी पल का इंतजार था ।

वह अग्निशमन कर्मचारियों की भीड़ का फायदा उठाकर वहाँ से भाग खड़े हुए ।

रमेश और तानाजी जाधव भी चूंकि अग्नि कर्मचारियों की ड्रेस में ही थे- इसलिये उन्हें वहाँ से भागने में कोई परेशानी न हुई ।

सबने यही समझा कि उनकी फायर ब्रिगेड वैन के टेंकर का पानी खत्म हो गया है- इसलिये वो वापस जा रहे हैं । बहरहाल सारे सुरक्षा प्रबन्ध रखे रह गये । म्यूजियम के बाहर दिल्ली पुलिस के जत्थे-के-जत्थे खड़े रह गये ।

और वह चार आदमी- सिर्फ चार आदमी उनके बीच से उस बेहद मूल्यवान दुर्लभ ताज को ले उड़े ।

उससे भी ज्यादा डूब मरने की बात यह थी कि किसी को इस बात की कानों-कान भनक तक नहीं थी कि वो दुर्लभ ताज चोरी हो गया ।

१८

अगले दिन धमाका हुआ ।

अगले दिन के सारे समाचार-पत्र एक ही खबर से रंगे पड़े थे-

बेहद जबरदस्त सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद दुर्लभ ताज चोरी किलेबंद सिक्योरिटी को आसानी से भेदा गया । हर अखबार ने उस समाचार के अलग-अलग शीर्षक बनाये थे ।

उस समाचार को खूब मिर्च-मसाला लगाकर छापा गया था ।

दो-तीन अखबारों ने तो दिल्ली पुलिस की कार्यकुशलता पर व्यंग्य भी कसे थे और फ्रंट पेज पर कार्टून भी प्रकाशित किये थे ।

बहरहाल उस समाचार में एक बात और बड़ी दिलचस्प थी- जिससे वाकई दिल्ली पुलिस की काबिलियत का पता चलता था ।

उस खबर के मुताबिक दिल्ली पुलिस ने दुर्लभ ताज चुराने के इल्जाम में तत्काल ही एक व्यक्ति को गिरफ्तार भी कर लिया था ।

वह व्यक्ति था- इंडियन म्यूजियम का हेड सिक्योरिटी गार्ड सरदार दलबीर सिंह!

दलबीर सिंहका दोष ये था- उसने अग्निशमन कर्मचारियों के कहने पर हॉल नम्बर चार का दरवाजा क्यों खोला ?

फिर वो उनके आगे-आगे आग में क्यों कूदा ?

इस सम्बन्ध में दिल्ली पुलिस के एक बड़े अफसर की टिप्पणी भी अखबारों में छपी थी- जो काबिले गौर थी- "यह सब सरदार दलबीर सिंहकी वजह से हुआ । सरदार दलबीर सिंह अपराधियों का 'इनसाइड हैल्पर' था । जरूर उसी न हॉल नम्बर चार में भीषण अग्निकाण्ड किया था और फिर वह आग में आगे-ही-आगे कूदा भी इसलिये था- ताकि दुर्लभ ताज चुराने में अपराधियों की मदद कर सके । बहरहाल दलबीर सिंहसे कठोर पूछताछ की जा रही है तथा उम्मीद है कि बहुत जल्द चोरी से सम्बन्धित कुछ और रहस्य की गुत्थियां भी सुलझेंगी ।"

वाकई- बेचारा सरदार दलबीर सिंहफंस गया था । खामख्वाह फंस गया था ।

उसी दिन एक आश्चर्यजनक घटना और घटी ।

दोपहर के दो बज रहे थे- जब सुपर बॉस डॉन अँटोनी एकाएक सेठ रुपचंद के अड्डे पर आ गया ।

डॉन अँटोनी को देखकर सब हैरान रह गये- बेहद भौंचक्के क्योंकि उसके आने की पहले से कोई सूचना नहीं थी ।

एक बार फिर वह सब कॉफ्रेंस हॉल में आयताकार मेज के इर्द-गिर्द जमा हुए ।

आज ऊंची पुश्त वाली उस रिवॉल्विंग चेयर पर डॉन अँटोनी बैठा था- जिस पर हमेशा सेठ रुपचंद बैठता था ।

जबकि रुपचंद उसके पहलू में ही पड़ी एक कुर्सी पर भीगी बिल्ली-सी बना बैठा था ।

अन्य कुर्सियों पर तानाजी जाधव, गुड्डू त्यागी और रमेश बैठे थे ।

डिंपी भी मासूम चिंटू को गोद में लिये वहीं बैठी थी ।

डॉन अँटोनी के सामने दुर्लभ ताज रखा था । दुर्लभ ताज- जिसे वो हाथों में ले-लेकर बड़ी हसरत भरी निगाहों से देख रहा था ।

डॉन अँटोनी की उम्र लगभग चालीस-पैंतालीस के आसपास थी । कद लम्बा था- नैन-नक्श आकर्षक थे और उसके बाल बेहद विशिष्ट अंदाज में पीछे की तरफ कढ़े हुए थे- जिससे उसका व्यक्तित्व काफी रौबदार बन गया था ।

डॉन अँटोनी ने अपने गठे हुए शरीर पर इस समय ब्राउन कलर का सूट पहना हुआ था ।

डॉन अँटोनी काफी देर तक दुर्लभ ताज को हसरत भरी निगाहों से देखता रहा ।

“म...मुझे इस वक्त आपको यहाँ देखकर हैरानी हो रही है सुपर बॉस !” सेठ रुपचंद थोड़े सकपकाये स्वर में बोला- “व...वडी आपको इतनी जल्दी न्यूयार्क में यह खबर कैसे मिल गयी कि हमने दुर्लभ ताज चुरा लिया है- अ...और आप इतनी जल्दी न्यूयार्क से इधर दिल्ली कैसे आ गये ?”

मुस्कराया डॉन अँटोनी ! उसके लाल-सुर्ख होंठों पर बाल जैसी बारीक मुस्कान दौड़ी थी ।

“तुम दोनों ही बात गलत ढंग से सोच रहे हो रुपचंद ।”

डॉन अँटोनी ने एकदम शुद्ध हिन्दी में जवाब दिया ।

“क...क्या मतलब ?”

“दरअसल तुम लोगों ने दुर्लभ ताज चुरा लिया है- मुझे यह खबर न्यूयार्क में नहीं पता चली थी ।” डॉन अँटोनी बोला- “बल्कि दिल्ली आने के बाद पता चली । मैं कल ही न्यूयार्क से दिल्ली आने के लिये उड़ान भर चुका था और आज सुबह जब मैंने दिल्ली के इंदिरा गांधी एयरपोर्ट पर कदम रखा- तभी एक अखबार के जरिये से मुझे यह खुशखबरी मिली । हाँ- यह इत्तेफाक जरूर हुआ कि मेरे कदम ऐसे शानदार मौके पर दिल्ली शहर में पड़े- जब तुम अपनी योजना में कामयाब हो चुके थे ।”

सब सनसनायी-सी अवस्था में बैठे रहे ।

“ऐनी वे !’ डॉन अँटोनी ने अपने पीछे को कढ़े बालों पर हाथ फेरा- “अब कुछ काम की बातें कर लें । सबसे पहले तुम लोग मुझे यह बताओ कि क्या तुम सभी ने अपने-अपने पासपोर्ट और विजा तैयार करा लिये हैं ?”

“यस सुपर बॉस !” गुड्डू त्यागी ने आदर से गर्दन झुकाई- हम सभी के पासपोर्ट और विजा पूरी तरह तैयार हो चुके हैं तथा हम सब हिन्दुस्तान छोड़ने के लिये एकदम तैयार हैं ।”

“सुपर बॉस !” तानाजी जाधव भी बोला- “हम लोगों को अब जल्द-से-जल्द हिन्दुस्तान छोड़ देना चाहिये ।”

“क्यों ?” डॉन अँटोनी की आंखें सिकुड़ीं- “जल्द-से-जल्द क्यों ?”

“क्योंकि अब हमारे लिये यहाँ खतरा-ही-खतरा है वडी ।” सेठ रुपचंद अपने चिर-परिचित अंदाज में बोला- “आपको तो मालूम ही होगा नी- हमने इस पूरी योजना को कामयाब बनाने के लिये इंडियन म्यूजियम के चीफ सिक्योरिटी ऑफिसर राजदीप सोनवाल की इनसाइड हेल्प हासिल की है । वडी राजदीप सोनवाल एक देशभक्त आदमी है- ईमानदार आदमी है- उसने इस पूरी डकैती में हमारी मदद भी इसलिये की, क्योंकि उसका बेटा चिंटू हमारे कब्जे में था । लेकिन हमने जैसे ही उसका बेटा उसे लौटाना है सुपर बॉस- उसने उसी क्षण हमारी सारी करतूत का पुलिस के सामने भंडाफोड़ कर देना है । वडी उसने मेरी सूरत नहीं देखी- लेकिन बाकी सबकी सूरत देखी है- वो बाकी सबको पहचानता है । इसलिये इससे पहले कि वो हमारे लिए कोई आफत पैदा करे-“कोई मुश्किल पैदा करे- उससे पहले ही हम हिन्दुस्तान छोड़कर भाग जायें ।”

“ओ.के. ।” डॉन अँटोनी धीरे-धीरे गर्दन हिलाने लगा- “ओ.के.- आइ एन्टायरली ऐग्री विद यू । मैं कुछ बंदोबस्त करता हूँ ।”

“थैंक्यू थैंक्यू सुपर बॉस !”

डॉन अँटोनी की आंखें फिर दुर्लभ ताज पर जाकर टिक गयीं ।

“देट्स वंडरफुल !” डॉन अँटोनी ने फिर उस दुर्लभ ताज को अपने हाथों में लहराया- “वाकई इस दुर्लभ ताज को चुराकर तुम लोगों ने कमाल कर दिखाया है । एक ऐसा दुर्लभ ताज- जिसे शान्ति और खुशहाली का प्रतीक बताया जाता है- जिसे आज तक कोई नहीं चुरा सका । जिस दुर्लभ ताज के बारे में प्रसिद्ध है कि जिसने भी उसे चुराने का प्रयास किया- वही बर्बाद हो गया- वही मारा गया । और उसी दुर्लभ ताज को चुराने का कमाल तुम लोगों ने कर दिखाया- दैट वाज वेरी ब्रेव ऑफ यू ।”

“इसमें हमारा क्या कमाल है सुपर बॉस !” तानाजी जाधव मुस्कराकर बोला- “सारा कमाल तो आपका है- आपके द्वारा बनायी गयी अद्भुत योजना का है । दुर्लभ ताज की सिक्योरिटी इतनी परफेक्ट थी कि हम लोग तो लगभग हार ही मान बैठे थे- हमें लगने लगा था कि हम दुर्लभ ताज चुराने में कभी सफल नहीं हो पायेंगे । लेकिन तभी आपने दुर्लभ ताज चुराने की मास्टर पीस योजना भेजकर हमारी सारी परेशानियां दूर कर दीं ।”

तानाजी जाधव की बात सुनकर डॉन अँटोनी के नेत्र एकाएक बुरी तरह फैल गये ।

उसने तानाजी जाधव को यूं अचम्भे से देखा- मानों उसके सिर पर सींग उग आये हों ।

“म....मैंने तुम लोगों को योजना भेजी ।” डॉन अँटोनी के मुँह से तेज सिसकारी छूटी- “य...यह कैसे हो सकता है- यह क्या कह रहे हो तुम ?”

“वडी पाटिल वही तो कह रहा है- जो सच है । रुपचंद बोला- “अगर आपने हमें वो धांसू योजना न भेजी होती सुपर बॉस- तो आज हम इस दुर्लभ ताज को चुराने में ही कैसे कामयाब होते?”

“ल...लेकिन मैंने तो तुम लोगों को कोई योजना नहीं भेजी ।” डॉन अँटोनी ने एकाएक उनके बीच जबरदस्त विस्फोट कर दिया था- “और मैं कोई योजना बनाकर भेजता भी कैसे- मुझे तो ये भी जानकारी नहीं थी कि इस दुर्लभ ताज की इंडियन म्यूजियम में क्या सिक्योरिटी की गयी है ।”

सब दंग रह गये ।बुरी तरह दंग ।

सबको ऐसा लगा- मानो उनके दिमाग में 'एटम-बम' फट रहे हों । ज्वालामुखी फट रहा हो ।

सचमुच वो एक हंगामाखेज सस्पेंस था जिसका रमेश उन लोगों के बीच अब जाकर खुला ।

गुड्डू त्यागी ने रूमाल निकालकर फौरन अपने चेहरे पर छलछला आये ढेर सारे पसीने साफ किये- फिर खौफ से कंपकंपाये स्वर में बोला- "ल...लेकिन अगर वह योजना हमें आपने नहीं भेजी सुपर बॉस- तो फिर किसने भेजी ?"

"मैं क्या बता सकता हूँ कि वह योजना तुम्हें किसने भेजी ?"

डॉन अँटोनी के चेहरे पर भी जबरदस्त सस्पेंस के चिन्ह थे ।

सबके दिल धाड़-धाड़ करके पसलियों को कूटने लगे ।

"ब...बॉस !" तानाजी जाधव एकाएक रुपचंद से सम्बोधित होकर कंपकंपाये स्वर में बोला- "म...मैं एक बात बोलूं बॉस ?"

इस समय उसका पूरा शरीर जूड़ी के मरीज की तरह थर-थर कांप रहा था ।

"बोल ।"

"ह...हम पर कोई आफत आने वाली है बॉस !" तानाजी जाधव एक और धमाका करता हुआ बोला- "क...कोई अनर्थ होने वाला है- म...मुझे लगता है कि अब हमारा सर्वनाश होकर रहेगा ।"

"वडी यह क्या बकता है तू ।" रुपचंद भड़क उठा- "तू पागल हो गया है ।"

"न...नहीं- मैं पागल नहीं हुआ ।" तानाजी जाधव के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था- "म...मैं आपसे पहले ही बोलता था बॉस- इस दुर्लभ ताज को मत चुराओ- मत चुराओ । इसने जिस प्रकार आज तक दूसरे अपराधियों को बर्बाद किया है- उसी तरह यह हमें भी बर्बाद कर डालेगा। और देखो- इस दुर्लभ ताज के आते ही हमारे ऊपर संकट की शुरुआत हो चुकी है ।"

"वडी बंदकर-बंदकर अपनी यह बकवास ।" रुपचंद दहाड़ उठा- "तू पागल हो गया है- और तू अपने साथ-साथ हम सबको भी पागल करके छोड़ेगा ।"

सेठ रुपचंद के वह शब्द अभी पूरे भी न हुए थे । कि तभी एकाएक कॉफ्रेंस हॉल में किसी के जोर-जोर से खिलखिलाकर हँसने की आवाज गूंज उठी ।

वह हँसी ऐसी थी- जैसे कब्र में से निकलकर कोई शैतान हँसा हो ।

"पाटिल ठीक ही कहता है सेठ रुपचंद !" फिर एक भयानक आवाज पूरे कॉफ्रेंस हॉल में गूंजी- "सचमुच तुम सबकी बर्बादी का समय शुरू हो चुका है ।"

एक साथ !बिल्कुल एक साथ सबकी गर्दनें उस भयानक आवाज की दिशा में घूमी ।

और !

अगले पल एक और एटम बम फट गया ।

बल्कि एटम-बम से भी खतरनाक कोई बम !

उन सबके सामने जग्गु खड़ा था ।

काला भुजंग जग्गु !

वो जग्गु! जिसके हाथ में इस समय रिवॉल्वर थी और होठों पर बेहद कातिलाना मुस्कान मटरगश्ती कर रही थी ।

“व...वडी तुम !” जग्गु को वहाँ देखकर सेट रुपचंद के नेत्र अचम्भे से फैल गये- “तुम अंदर किधर से आये ?”

“उसी गुप्त रास्ते से आया ।” जग्गु एक ही रिवॉल्वर से उन सबको कवर करता हुआ बोला- जिस रास्ते का इस्तेमाल सेठ रुपचंद या तो कभी-कभार सिर्फ तुम करते हो या फिर तुम्हारे अलावा मेरे चाचा कांचा पहलवान भी कभी-कभी उस गुप्त रास्ते का इस्तेमाल किया करते थे । जबकि तुम्हारे यह दोनों प्यादे तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी उस रास्ते के बारे में कुछ नहीं जानते ।”

पाटिल और त्यागी- उन दोनों के नेत्र अचम्भे से फैल गये ।

वाकई इस रहस्य से तो वह भी वाकिफ नहीं थे कि वहाँ कोई और गुप्त रास्ता भी है ।

खुद सेठ रुपचंद भी सन्न-सा बैठा था- उसे अपने हाथ-पैर बर्फ होते महसूस दिये ।

“वडी इसका मतलब दुर्लभ ताज चुराने की जो मास्टर पीस योजना हमें मिली- वह हरकत भी तुम्हारी थी ?”

“नहीं ।” काले भुजंग जग्गु ने बड़ी ईमानदारी के साथ इंकार में गर्दन हिलाई- “वह काली हरकत नहीं थी । दरअसल जबसे मैंने छुपकर तुम लोगों की बातचीत सुनी है- तबसे खुद मेरे दिमाग में भी रह-रहकर यही एक सवाल कौंध रहा है कि तुम लोगों के पास वह योजना भेजी तो किसने भेजी ।”

सब आवाक् रह गये ।

यूं हतप्रभ और भौंचक्के- मानों किसी दुर्घटना के श्राप से पत्थर की शिला में बदल गये हों ।

“व...वडी यह योजना वाकई तुमने नहीं भेजी ?”

“नहीं ।”

सबकी हैरानी बढ़ती जा रही थी ।

“बहरहाल अब तुम लोगों को यह सोच-सोचकर परेशान होने की जरूरत नहीं है कि तुम्हें वह योजना भेजी तो किसने भेजी ।

“क्यों ?” डॉन अँटोनी बोला- “परेशान होने की जरूरत क्यों नहीं है ।”

“क्योंकि जो दुर्लभ ताज तुम लोगों की बर्बादी का कारण बन सकता है- उस ताज को मैं अपने साथ लिये जा रहा हूँ ।”

“नहीं ।” गुड्डू त्यागी एकाएक हलक फाड़कर चीखता हुआ कुर्सी से खड़ा हो गया- “तुम इस

दुर्लभ ताज को यहाँ से नहीं ले जा सकते ।"

"मैं इसे ले जाऊंगा बिरादर !" जग्गु के चेहरे पर हिंसक भाव उभर आये- "और इस दुर्लभ ताज को आज मुझे ले जाने से कोई नहीं रोक सकता । तुम शायद नहीं जानते- मैं पिछले कई दिन से इसी समय का इंतजार कर रहा था । मैंने अपने चाचा की मौत पर सौगन्ध खाई थी कि अगर मैंने एक सप्ताह के अंदर-अंदर रमेश का खून न कर दिया- तो मैं अपने बाप से पैदा नहीं । और सौगन्ध वाले दिन से आज तक मुझे ऐसे कई मौके मिले- जब मैं बड़ी आसानी से रमेश का खून कर सकता था । लेकिन जानते हो- मैंने अभी तक इसका खून क्यों नहीं किया ?"

"क...क्यों नहीं किया ?"

"क्योंकि मुझे मालूम हो गया था कि यह तुम लोगों के साथ मिलकर दुर्लभ ताज चुराने के चक्कर में लगा हुआ है- उसी क्षण मैंने फैसला कर लिया कि मैं एक तीर से दो शिकार करूंगा । सबसे पहले इस दुर्लभ ताज को हड़पूंगा- जिसे चुराने के लिये तुम सब मरे जा रहे थे और इस हरामजादे का खून भी करूंगा । मैं तुम सबकी एक-एक हरकत पर नजर रखने लगा । और देखो !" जग्गु खिलखिलाकर हंसा- "देखो- आज सारे पासे किस तरह पलटे हुए हैं बिरादर! दुर्लभ ताज को चुराने के लिये सारी मेहनत तुम लोगों ने की- रात दिन जागकर प्रयास किये और अब उसी दुर्लभ ताज को तुम लोगों के सामने से मैं उठाकर ले जाऊंगा । तुम मुझे रोक भी नहीं सकते- क्योंकि अगर किसी ने मुझे रोकने की कोशिश की तो इस रिवॉल्वर से तुम सबके दिमाग की धज्जियां उड़ जानी है ।"

सब सन्न बैठे थे- बिल्कल सन्न !

जबकि रमेश के शरीर में चींटियां-सी रेंग रही थीं ।

उधर- मुस्कराते हुए आगे बढ़ा जग्गु! फिर उसने बे-हिचक आयताकार मेज पर रखा दुर्लभ ताज उठा लिया ।

फिर वो ताज उठाकर रमेश की तरफ घूमा ।

"अब तुम मरने के लिये तैयार हो जाओ रमेश !" जग्गु का चेहरा एकाएक खून से लिथड़ा हुआ नजर आने लगा था- उसने रिवॉल्वर रमेश की तरफ तान दी- तुम इस दुर्लभ ताज की बदौलत कई दिन फालतू जी चुके हो लेकिन अब तुम्हारा मरना तय है ।"

उसी क्षण मानो गजब हो गया । एकाएक रमेश ने वो किया- जिसकी कोई उस जैसा आदमी से कल्पना भी नहीं कर सकता था ।

जग्गु की रिवॉल्वर गोली उगल पाती- उससे पहले ही रमेश का पौने छः फुट लम्बा जिस्म रबड़ के किसी खिलौने की भांति हवा में उछला ।

उसने कलाबाजी खायी और फिर धड़ाधड़ उसकी दोनों लातें बड़ी तूफानी गति से जग्गु के सीने पर पड़ीं ।

चीख उठा जग्गु !

उसके हाथ से रिवॉल्वर छूटकर दूर जा गिरी ।

धायं!

तभी किसी ने गोली चलायी- फौरन जग्गु की खोपड़ी तरबूज की तरह फट गयी ।

जग्गु हलकाये कुत्ते की तरह डकराता हुआ नीचे गिरा और नीचे गिरते ही उसके प्राण-पखेरू उड़ गये ।

उसका चेहरा मरने से पहले बेहद वीभत्स हो गया था ।

रमेश भौंचक्की अवस्था में उस तरफ पलटा- जिधर से गोली चलायी गयी थी ।

गोली डॉन अँटोनी ने चलायी थी- और इस समय वो रिवॉल्विंग चेयर की पुश्तगाह से पीठ टिकाये बैठा बड़े इत्मीनान से अपने रिवॉल्वर की नाल में फूंक मार रहा था ।

अभी वह सब जग्गु की अकस्मात् मौत से उभर भी न पाये थे कि तभी घटनाक्रम में एक और नया मोड़ आया ।

उन सभी ने अड्डे के ऊपर तेज शोर-शराबे की आवाज सुनी ।

उन्हें ऐसा लगा- जैसे ज्वैलरी शॉप में ढेर सारे लोग आ जा रहे हैं ।

“वडी !” सबसे पहले सेठ रुपचंद के कान खड़े हुए- “वडी यह ऊपर क्या हो रहा है- यह ऊपर कैसी हलचल-सी मची है ।”

डॉन अँटोनी के चेहरे पर भी पसीने की बूंदें चुहचुहा आयीं ।

“जरूर कुछ गड़बड़ है ।” डॉन अँटोनी बोला- “जरूर कुछ घपला है ।”

“मैं ऊपर जाकर देखता हूँ कि क्या चक्कर है ।” तानाजी जाधव झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा हो गया ।

फिर वो तेजी से उन सीढ़ियों का तरफ दौड़ा- जो ऊपर ज्वैलरी शॉप की तरफ जाती थीं ।

उस ज्वैलरी शॉप में इस समय सिर्फ एक सेल्समैन बैठा था- जो संगठन का ही मेम्बर था ।

तानाजी जाधव सीढ़ियां चढ़कर जितनी तेजी से ऊपर गया- उतनी ही तेजी से वो वापस लौटा ।

लेकिन उन चंद सेकेंड में ही उसकी दहशत से बुरी हालत हो चुकी थी- वह यूँ पत्ते की भांति थर-थर कांप रहा था, मानो उसने साक्षात मौत के दर्शन कर लिये हों ।

“व...वडी क्या हुआ ?” उसे यूं घबराया देखकर रुपचंद के दिल में भी हौल उठी- “वडी तू इस तरह थर-थर क्यों कांप रहा है ?”

“ब...बॉस-बॉस !” तानाजी जाधव शुष्क स्वर में बोला- “पुलिस ने हमारे अड्डे को चारों तरफ से घेर लिया है- लगता है कि किसी ने पुलिस को हमारे संगठन के बारे में इन्फॉर्मेशन दे दी है ।”

“क...क्या ?” सब उछल पड़े- “प...पुलिस-पुलिस आ गयी ।”

सब ‘पीले’ पड़ गये ।

“साईं !” रुपचंद झटके से कुर्सी छोड़कर खड़ा होता हुआ बोला- “हमें, फौरन अड्डे से भाग

निकलना चाहिये- जल्दी करो- जल्दी ।"

"ल...लेकिन किधर से भागे बॉस !" तानाजी जाधव के जिस्म का एक-एक रोआं खड़ा था- "ऊपर ज्वैलरी शॉप में पुलिस है- जरूर पीछे वाले मकान में भी अब तक पुलिस पहुँच गयी होगी ।"

"वडी तुम सब मेरे पीछे-पीछे आओ ।" सेठ रुपचंद बौखलाया-सा बोला- हम उस गुप्त रास्ते से भागते हैं- जिसका इस्तेमाल आज तक सिर्फ मैं करता रहा हूँ या फिर कभी-कभी कांचा पहलवान भी किया करता था । वडी रास्ता पीछे वाली गली में ही बनी एक बहुत खूबसूरत कोठी में खुलता है ।

सब बड़ी सस्पेंसफुल स्थिति में रुपचंद के पीछे-पीछे लपके ।

वह कॉफ्रेंस हॉल से निकलकर एक दूसरे कमरे में पहुंचे ।

वहाँ भी दीवार पर एक अर्द्धनग्न लड़की की काफी बड़ी पेंटिंग लगी हुई थी- जो बड़ी मोटी-मोटी कीलों से दीवार पर फिक्स नजर आ रही थी ।

लेकिन सेठ रुपचंद ने उस पेंटिंग को दीवार से कैलेंडर की तरह उतारकर एक तरफ रख दिया ।

तब मालूम हुआ कि पेंटिंग में जो मोटी-मोटी किले लगी हुई आ रही थीं- वह दिखावटी थीं ।

पेंटिंग के उतरते ही उसके पीछे स्टेयरिंग व्हील जैसा एक नजर आने लगा ।

रुपचंद ने उस चक्के को घुमाया- तो उसके पीछे का हिस्सा स्लाइडिंग डोर की तरह एक तरफ सरक गया ।

फौरन वहाँ काफी लम्बी सुरंग नजर आने लगी ।

तुरन्त फिर एक ऐसी घटना घटी- जो अब तक घटी तमाम घटनाओं में सबसे ज्यादा हंगामाखेज थी और उस घटना के बाद सबका खेल खत्म हो गया ।

स्लाइडिंग डोर के हटने के बाद जैसे-जैसे ही सुरंग का दहाना नजर आया- तो रमेश तुरन्त दौड़कर सबसे पहले उस सुरंग में घुस गया ।

सुरंग में घुसते ही वो फिरकनी की तरह उन सबकी तरफ घूमा- इस बीच उसके हाथ में ३८ कैलिबर की एक पुलिस स्पेशल रिवॉल्वर भी आ गयी थी ।

"डोंट मूव !" रमेश गला फाड़कर चिल्लाया- "अगर कोई एक कदम भी आगे बढ़ा- तो मैं उसे शूट कर दूंगा ।"

"व...वडी यह क्या मजाक है ?" रुपचंद भी चिल्लाया- यह क्या बकवास है रमेश !"

"रमेश नहीं ।" रमेश ने सख्ती से दांत किटकिटाये- "बल्कि मुझे इंस्पेक्टर रमेश सिन्हा बोलो रुपचंद- मैं दिल्ली पुलिस की स्पेशल क्राइम ब्रांच का इंस्पेक्टर हूँ !"

"स...स्पेशल क्राइम ब्रांच का इंस्पेक्टर ।"

सबके दिल-दिमाग पर भीषण बिजली-सी गड़गड़ाकर गिरी ।

सब भौंचक्के रह गये ।

“साईं !” रुपचंद बोला- “साई- तू जरूर मजाक कर रहा है ।”

मैं तुम सब के साथ मजाक ही रह रहा था । रमेश गरजता हुआ बोला- लेकिन आज नहीं बल्कि आज से पहले तक मैंने मजाक किया था । तीन जुलाई दिन बुधवार की रात से आज तक जितनी भी घटनायें घटीं- वह सब मेरे दिमाग की उपज हैं- मेरे दिमाग की उपज! और यह पूरा तिलिस्म इसलिये बिछाया गया- ताकि तुम सब लोगों को रंगे हाथों गिरफ्तार किया जा सके ।”

“इ...इसका मतलब यह सब तुम्हारी वजह से हुआ है ?” डॉन अँटोनी की आंखें भी फटीं ।

“हाँ- यह सब मेरी वजह से हुआ है ।”

“यू चीट- फुलिश ।” डॉन अँटोनी चिल्ला उठा- “यू कान्ट गैट अवे लाइक दिस- यू डोन्ट डिज़र्ट फॉरगिवनेस ।”

“व्हाई आर यू लूजिंग टेम्पर ?” रमेश भी अंग्रेजी में ही चिल्लाया- “तुम आपे से बाहर क्यों हो रहे हो मूर्ख आदमी- तुम्हें शायद मालूम नहीं है कि तुम्हारा सारा खेल खत्म हो चुका है और अब तुम हिन्दुस्तानी पुलिस के मेहमान हो ।”

यही वो क्षण था- जब इंस्पेक्टर राजविर अपनी पूरी पुलिस पलटन के साथ ज्वैलरी शॉप वाला दरवाजा तोड़कर वहाँ आ घुसा । इतना ही नहीं- ढेर सारे पुलिसकर्मी पिछले मकान वाले रास्ते से भी वहाँ आ गये थे ।

देखते-ही-देखते अड्डे में चारों तरफ पुलिस फैल गयी ।

इतनी पुलिस को देखकर डॉन अँटोनी और उसके साथियों के रहे-सहे कस-बल भी ढीले पड़ गये ।

इंस्पेक्टर राजविर ने आते ही रमेश को जोरदार सैल्यूट मारा- फिर आदर से गर्दन झुकाकर बोला- “मुझे आपकी पोस्ट के बारे में मालूम हो चुका है सर !”

रमेश सिर्फ आहिस्ता से मुस्करा दिया ।

जबकि अन्य पुलिसकर्मियों ने डिंपी को छोड़कर बाकी सबके हाथों में हथकड़ियां पहना दी थी ।

डिंपी! जो उस जबरदस्त रहस्योद्घाटन से खुद बहुत हैरान थी ।

१९

अगला दिन- एक बार फिर समाचार-पत्रों की धुआंधार बिक्री का दिन था ।

न सिर्फ दिल्ली शहर के बल्कि पूरे हिन्दुस्तान के अखबारों में उस संगठन के पकड़े जाने की बड़े व्यापक रूप से चर्चा हुई ।

सबने कवर पेज पर उस स्टोरी को छापा । आम नागरिकों में भी यह जानने की तेज जिज्ञासा पायी गयी कि रमेश ने उस संगठन के विरुद्ध जो जाल बिछाया- वह जाल किस तरह का था ।

आम नागरिकों की जिज्ञासा को देखते हुए रमेश ने यह घोषणा की, कि वह आज रात नौ बजे उस पूरे केस का पर्दाफाश करेगा । इतना ही नहीं- वह उस पूरे केस पर पर्दाफाश भी सेठ रुपचंद के अड्डे में ही बैठकर करेगा ।

कॉफ्रेंस हॉल के अन्दर ही ।

यही वजह थी कि रात के नौ बजते-बजते छोटे-बड़े सभी किस्म के पत्रकारों और प्रेस फोटोग्राफरों का भी एक बड़ा हुजूम सेठ रुपचंद के अड्डे में जमा हो चुका था ।

कल तक जिस अड्डे में चंद लोग नजर आते थे- आज वहाँ भीड़-ही-भीड़ थी ।

पुलिस का वहाँ इतना जबरदस्त बंदोबस्त किया गया था कि कॉफ्रेंस हॉल में पैर रखने तक को जगह न बची थी ।

दिल्ली दूरदर्शन, स्टार टी.वी. और जी.टी.वी. जैसे टेलीविजनों की कई टीमें वहाँ आयी हुई थीं ।

दिल्ली दूरदर्शन ने तो आम नागरिकों की जिज्ञासा को मद्देनजर रखकर उस बेहद सनसनीखेज मीटिंग का सीधा प्रसारण राष्ट्रीय चैनल पर करने का फैसला किया था ।

कॉफ्रेंस हॉल में काफी ऊपर लकड़ी का एक मचान बनाया गया था- जिस पर टेलीविजनों की टीमें अपने शानदार ड्यूमेटिक कैमरों के साथ मौजूद थीं ।

विशाल आयताकार मेज के दोनों तरफ पड़ी कुर्सियों पर इस समय डॉन अँटोनी, सेठ रुपचंद, गुड्डू त्यागी और तानाजी जाधव बैठे थे । उनके अलावा इंस्पेक्टर राजविर और राजदीप सिंनवाल भी उन्हीं कुर्सियों पर विराजमान थे ।

तभी उस विशाल हुजूम को चीरकर टवीड का काला सूट और लाल फूलदार टाई लगाये रमेश ने कॉफ्रेंस हॉल में इस तरह कदम रखा, जैसे रंगमंच पर सबका चहेता कोई अभिनेता प्रकट हुआ हो ।

आज उसके व्यक्तित्व में विचित्र-सी आभा दैदीप्यमान हो रही थी । रमेश को देखते ही सब लोग उसके सम्मान में खड़े हो गये ।

रमेश आज उस रिवॉल्विंग चेयर पर जाकर बैठा- जिस पर कभी सेठ रुपचंद बैठता था ।

रिवॉल्विंग चेयर पर बैठते ही उसने एक मधुर मुस्कान सबकी तरफ उछाली ।

फिर भूमिका बांधते हुए अपने सामने रखे माइक पर बोला- मैं जानता हूँ कि आप सब लोग यहाँ इसलिये उपस्थित हुए हैं- ताकि इस केस के बारे में पूरी जानकारी हासिल कर सकें । इसमें कोई शक नहीं कि यह एक काफी दिलचस्प केस था जिसमें दिमाग का भरपूर इस्तेमाल किया गया । दरअसल यह सारा ड्रामा तीन जुलाई दिन बुधवार की रात से ही शुरू नहीं हुआ बल्कि हमारा क्राइम ब्रांच पिछले कई महीने से इस ड्रामे की तैयारी कर रहा था । संग्रहालयों से दुर्लभ वस्तुओं की जो चोरी हो रही थी- उसने पूरी दिल्ली पुलिस में हड़कम्प मचा दिया था । अपराधियों ने दो साल के छोटे से अंतराल में ही बाइस करोड़ रुपये मूल्य की कई दुर्लभ वस्तुएं चोरी कर लीं- जो कि काफी सनसनीखेज बात है । लेकिन दुर्भाग्य ये था कि दिल्ली पुलिस उन चोरों को पकड़ना तो बहुत दूर उनके बारे में कोई सूत्र तक पता नहीं लगा पा रही थी । तब यह केस हमारी क्राइम ब्रांच ने अपने हाथ में लिया और मुझे ऑटो रिक्शा ड्राइवर बनकर अपराधियों का पता लगाने का आदेश दिया । इस तरह बहुरूपिया रूप धारण करने के कारण पुलिस को कई बार बड़े फायदे होते हैं- जिनमें सबसे बड़ा फायदा तो यही है कि इस तरह का रूप धारण करने से पुलिस का आदमी आम नागरिकों से कोई भी सवाल पूछ सकता है और उसे अपने उस सवाल का जवाब भी बड़ा सही मिलेगा- जबकि किसी ऑफिसर के सवालों के जवाब देने में आम आदमी थोड़ा कतराते हैं । ऐनी वे- अपनी विभाग से आदेश मिलते ही मैं ऑटो रिक्शा ड्राइवर बनकर दुर्लभ वस्तु चुराने वाले संगठन की टोह में लग गया ।"

बोलते-बोलते रुका रमेश !

पूरे कॉफ्रेंस हॉन में सन्नाटा था ।गहन सन्नाटा !

अपना गला खंखारने के बाद रमेश ने फिर बोलना शुरू किया- "मैं सिर्फ नाम के लिये ही ऑटो रिक्शा ड्राइवर नहीं बना था- बल्कि मैं अपने कैरेक्टर को ज्यादा सजीव रूप देने के लिये दिल्ली शहर में सवारियां भी ढोता था । उसी दौरान मेरी डिंपी से मुलाकात हुई- जो अपने ऑफिस आते-जाते हुए कई बार मेरी ऑटो रिक्शा में बैठी । इसे इत्तेफाक ही कहा जायेगा कि जल्द ही मेरी डिंपी से अच्छी जान-पहचान हो गयी । बाद में जब मुझे यह मालूम हुआ कि डिंपी हरामीपेशा लोगों की बस्ती सोनपुर में रहती है तो मैं उससे और ज्यादा सम्पर्क बढ़ाने की कोशिश करने लगा- क्योंकि मैं जानता था कि डिंपी कभी भी मेरे लिये सूत्रधार का काम कर सकती है ।"

"एक्सक्यूज मी सर !" इंस्पेक्टर राजविर बोला- "क्या डिंपी को यह बात पहले से मालूम नहीं थी कि आप क्राइम ब्रांच के ऑफिसर हैं ?"

"नहीं- बिल्कुल भी नहीं ।' रमेश की गर्दन इंकार में हिली- "दरअसल जो ड्रामा मैं आप सब लोगों के साथ खेल रहा था- वही ड्रामा मैं डिंपी के साथ भी खेल रहा था । यह बात अलग है कि कई बार मेरे दिल ने चाहा- मैं कम-से-कम डिंपी को अपनी सारी हकीकत बता दूं । लेकिन नहीं- मैं हर बार जज्बातों के उस बवंडर को अपने सीने में दफन करके रह गया । क्योंकि अगर मैं ऐसा न करता- तो यह अपने डिपार्टमेंट के साथ, अपने फर्ज के साथ गद्दारी होती ।"

सब मन्त्रमुग्ध अंदाज में रमेश की एक-एक बात सुन रहे थे ।

"खैर !" रमेश आगे बोला- "मैं डिंपी से सम्पर्क बढ़ाता चला गया । उन्हीं दिनों जब मुझे पहली बार इस बात का अहसास हुआ कि डिंपी मुझसे प्यार करने लगी है तो मैं सन्न रह गया । मुझे

सूझा नहीं कि ऐसी परिस्थिति में मुझे क्या करना चाहिये । जिस दिन मुझे डिंपी के प्यार का अहसास हुआ- उसी दिन क्राइम ब्रांच के एक दूसरे ऑफिसर को यह भेद मालूम पड़ गया कि दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन का कांचा पहलवान भी एक मेम्बर है । इतना ही नहीं उन्हें यह भी मालूम हो गया कि कांचा पहलवान सोनपुर में रहता है । फौरन मुझे हेडक्वार्टर बुलाया गया- डिंपी और मेरे सम्बन्धों के बारे में भी उन्हें आश्चर्यनजक ढंग से जानकारी मिल चुकी थी । हेडक्वार्टर से मुझे नया आदेश मिला कि मैं कांचा पहलवान पर नजर रखने के लिये सोनपुर में एक किराये का मकान लेकर रहना शुरू कर दूं । विभाग के चीफ ने मुझे यह भी सलाह दी कि इस पूरे सिलसिले में डिंपी मेरी काफी मदद कर सकती है ।"

पूरे कॉफ्रेंस हॉल में सन्नाटा था ।

सबकी निगाहें एक ही व्यक्ति पर केन्द्रित थीं ।

रमेश पर !

"अब मैं एक अजीब उलझन में फंस गया था ।" रमेश एक के बाद एक रहस्य की गुत्थियां खोलता हुआ बोला- "एक तरफ मेरा कर्तव्य था- जो मुझे लगातार डिंपी के साथ ड्रामा करने के लिये प्रेरित कर रहा था क्योंकि इसी में पूरे केस की भलाई थी । जबकि मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही थी- एक मासूम-सी लड़की के साथ धोखा- नहीं कभी नहीं । लेकिन दोस्तों !" बोलते-बोलते रमेश की आवाज भारी हो गयी- "आखिर में जीत फर्ज की हुई- कर्तव्य की हुई । कानून की वेदी पर अपनी आत्मा की बलि चढ़ा दी । मैंने न सिर्फ डिंपी को धोखे में रखा बल्कि उसके साथ प्रेम का नाटक भी किया । उसी की मदद से मैंने सोनपुर में एक किराये का मकान हासिल किया और वहाँ रहने लगा । इसी तरह एक महीना गुजर गया- पूरा एक महीना । फिर आयी तीन जुलाई की रात- हादसे की वो रात जिस रात से इस पूरे घटनाक्रम की आधारशिला रखी गयी ।"

"इसी सारी घटना की शुरुआत कैसे हुई ?" राजविर ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

"वही बता रहा हूँ ।" रमेश बोला- "दरअसल इस पूरे घटनाक्रम की शुरुआत यूं तो तीन जुलाई की दोपहर से ही हो गयी थी । हुआ यूं कि तीन जुलाई की दोपहर के समय हमारे विभाग को एक मुखबिर के द्वारा बड़ी महत्वपूर्ण सूचना मिली कि जो छः नटराज मूर्तियों इंडियन म्यूजियम से चुराई गयी थीं- उन्हें कांचा पहलवान किसी को सौंपने चार बजे होटल मेरीडियन जायेगा । फौरन हमारे विभाग के एक-से-एक धुरंधर जासूस कांचा पहलवान के पीछे लग गये- लेकिन इसे बदकिस्मती कहो कि न जाने कैसे कांचा पहलवान को यह भनक मिल गयी कि उसका पीछा किया जा रहा है- उसने पुलिस के शिकंजे से भाग निकलने की बेइन्तहा कोशिश की और इसी भागा दौड़ी के चक्कर में कांचा पहलवान पुलिस की गोली का शिकार हो गया तथा घटनास्थल पर ही मारा गया । कांचा पहलवान के रूप में दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन तक पहुँचने की जो आशा की किरण दिल्ली पुलिस को नजर आ रही थी- वह भी उसकी मौत के साथ लुप्त हो गयी । कांचा पहलवान की लाश के पास से हमें दो महत्वपूर्ण चीजें मिलीं ।"

"वो महत्वपूर्ण चीजें क्या थीं ?"

"पहली चीज- सेठ रुपचंद की ज्वैलरी शॉप का एक विजिटिंग कार्ड था । दूसरी चीज- सोने की वो छः नटराज मूर्तियाँ थी जिन्हें इंडियन म्यूजियम से चुराया गया था ।"

“अ...आपको सोने की वो असली नटराज मूर्तियां थीं ?” इंस्पेक्टर राजविर ने बुरी तरह चौंककर पूछा था ।

“हाँ- वो नटराज मूर्तियां हमें मिल गयी थीं ।”

कई और दिमागों में भी धमाके से हुए ।

“फ...फिर वो नकली मूतियां कहाँ से आयीं ?” राजविर ने पूछा ।

“वह भी बताता हूँ । दरअसल कांचा पहलवान की हत्या बुधवार के दिन दोपहर के तीन बजे हो गयी थी लेकिन क्राइम ब्रांच ने इस बात को पूरी तरह गुप्त रखा कि कांचा पहलवान मारा गया है । उसकी हत्या के बाद फौरन ही आनन-फानन क्राइम ब्रांच के हेडक्वार्टर में एक मीटिंग बुलायी गयी । उस मीटिंग में इस सवाल पर शिद्दत से विचार किया गया कि अब किस तरह दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन तक पहुँचा जाये । काफी सोच-विचार के बाद एक जबरदस्त योजना तैयार हुई । योजना ये थी कि किसी साधारण नागरिक की जिंदगी बसर करते क्राइम ब्रांच के ऑफिसर को लोगों के सामने यह शो करना था- जैसे कांचा पहलवान की हत्या उसी ने की है इतना ही नहीं- उसे अब यह भी शो करना था- मानो सोने की छः नटराज मूर्तियां उसके पास है । ज्यूरी के मेम्बरों की राय थी कि जब दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन को कांचा पहलवान की हत्या के बारे में खबर मिलेगी- तो वह बौखला उठेंगे- इतना ही नहीं, वह लोग कांचा पहलवान के हत्यारे को भी तलाश करने के लिये जमीन-आसमान एक कर देंगे । सिर्फ इसलिये भी, क्योंकि उसके पास सोने की छः बहुमूल्य नटराज मूर्तियां हैं । हत्यारे को तलाशने की इस कोशिश में संगठन के आदमी स्वाभाविक रूप से हमारे जासूस तक पहुँचते और इस तरह इस संगठन का पर्दाफाश हो जाता ।”

“वैरी गुड! एक रिपोर्टर बड़ा प्रभावित होकर बोला- “वाकई ज्यूरी के मेम्बरों ने संगठन तक पहुँचने के लिये लाजवाब योजना बनायी थी ।”

वहाँ मौजूद तमाम लोग उस योजना से बेहद प्रभावित हुए ।

“उसके बाद क्या हुआ ?” पत्रकारों की भीड़ में से किसी महिला पत्रकार ने उत्सुकतापूर्वक पूछा ।

“उसके बाद उस लाजवाब योजना को कार्यरूप देने का काम मुझे सौंपा गया ।” रमेश ने धाराप्रवाह ढंग से बोलने हुए कहा- “लेकिन मैंने ज्यूरी के सम्मानित सदस्यों के सामने एक शर्त रखी और कहा- अगर मैं इस केस पर काम करूंगा, तो सिर्फ और सिर्फ एक साधारण ऑटो रिक्शा ड्राइवर बनकर । मेरे सामने परिस्थितियों चाहे कितनी भी मुश्किल क्यों न आ जायें- लेकिन मुझे इस मिशन के दौरान किसी भी हालत में अपने पद का इस्तेमाल नहीं करना है और न मेरा विभाग ही मुझे कोई सहायता देने की कोशिश करेगा । मेरी शर्त ज्यूरी के मेम्बरों ने कबूल कर ली- फिर योजना के तहत बेहद आनन-फानन में पीतल की पांच नकली नटराज मूर्तियां बनवायी गयीं ।”

“पांच ही क्यों ?” आकाशवाणी के एक संवादहे ईश्वर ने फौरन रमेश की बात काटी- “छः क्यों नहीं ?”

“यह रहस्य भी आप लोगों को आगे चलकर मालूम हो जायेगा । बहरहाल उसके बाद पूरा ड्रामा शुरू हो गया । मुझे अब सबसे पहले कांचा पहलवान की हत्या का दोबारा से ड्रामा

स्टेज करना था । इसलिये मैंने तीन जुलाई की रात रूस्तम सेठ के ठेके में जमकर शराब पी । योजना बनाते समय हमने उन दिनों दिल्ली शहर में चल रही ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल का भी भरपूर फायदा उठाया । इत्तेफाक से रूस्तम सेठ की मेरे ऊपर पिछले कई दिन की उधारी बकाया थी- मुझे मालूम था कि मैं जब उसके ठेके पर बैठकर ज्यादा शराब पीऊंगा- तो एक ऐसी स्टेज जरूर आयेगी, जब रूस्तम सेठ झुंझलाकर या तो मुझे शराब पीने से रोकेगा या फिर मुझसे उधारी के रुपये मांगेगा । और यही मैं चाहता था- मैं ऐसा माहौल पैदा करना चाहता था जिससे झड़प हो और मुझे ऑटो रिक्शा ड्राइवरों की हड़ताल होने के बावजूद अपना ऑटो चलाने का बहाना मिल सके । लेकिन रूस्तम सेठ की और मेरी झड़प कोई तूल पकड़ पाती- उससे पहले ही डिंपी ने वहाँ प्रकट होकर मेरी सारी योजना पर पानी फेर दिया । परन्तु फिर भी मैंने हिम्मत नहीं हारी- मैं जो ड्रामा रूस्तम सेठ के साथ खेलना चाहता था- फिर वही ड्रामा मैंने डिंपी के साथ खेला और यह कहता हुआ ऑटो रिक्शा लेकर गुस्से में निकल पड़ा कि अब तुम्हारी उधारी के रुपये कमाकर ही लौटूंगा । सोनपुर से मैं योजना के अनुसार रीगल सिनेमा पर पहुँचा । एक बात और- ऑटो रिक्शा की नम्बर प्लेट पर मैंने मिट्टी भी पहले ही पोत दी थी ।"

सेठ रुपचंद- जो रमेश की एक-एक बात बड़े गौर से सुन रहा था- वह पूछे बिना न रह सका- "वडी जब कांचा पहलवान की मौत बुधवार को तीन बजे ही हो गयी थी- तो वह व्यक्ति कौन था, जो रीगल सिनेमा के सामने तुम्हारी ऑटो रिक्शा में आकर बैठा ?"

"वह हमारे विभाग का ही एक जासूस था और उस वक्त कांचा पहलवान का रोल अदा कर रहा था ।"

"ओह ।"

"लेकिन साईं तुम्हें कांचा पहलवान की हत्या का नाटक दोबारा स्टेज करने की क्या जरूरत थी ।"

"दरअसल वह नाटक ही हमारी योजना का मुख्य आधार था मिस्टर रुपचंद ।" रमेश बोला- "हत्या का वह नाटक दोबारा स्टेज करते समय मुझे अपने खिलाफ कुछ सबूत इस तरह छोड़ने थे- जैसे वह मेरे न चाहने पर भी अकस्मात् छूट गये हों । अगर मैं वह सारा ड्रामा स्टेज न करता तो तुम्हीं बताओ कि इंस्पेक्टर राजविर को या फिर तुम्हें इस बात का भ्रम कैसे होता कि कांचा पहलवान की हत्या मैंने की थी । पुलिस की और तुम्हारी दृष्टि में अपने आपको कांचा पहलवान का हत्यारा साबित करने के लिये मुझे कोई-न-कोई ड्रामा तो स्टेज करना ही था- अपने खिलाफ ऐसे सबूत तो छोड़ने ही थे, जिनको आधार मानकर पुलिस मुझे कांचा पहलवान का हत्यारा समझती । फिर वह ड्रामा रचना इसलिये भी जरूरी था- क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि डिंपी को मेरे ऊपर कैसा भी कोई शक हो । जबकि सच्चाई ये है कि आई.टी.ओ. के ओवर ब्रिज से आगे जब फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते ने मेरी ऑटो रिक्शा रोकी तो वह भी मेरी योजना का ही एक अंग था ।"

"कैसे- वडी वो कैसे नी?"

"दरअसल फ्लाइंग स्क्वाड की नीली जिप्सी को देखकर मैंने जानबूझकर ऑटो रिक्शा की रफ्तार तेज कर दी थी- क्योंकि मैं जानता था कि स्पीडिंग के अपराध में फ्लाइंग स्क्वाड दस्ता फौरन मेरे पीछे लग जायेगा- ऐसा ही हुआ भी । मैंने फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते को जानबूझकर

अपने पीछे इसलिये लगाया था- ताकि मैं उन्हें डिंपी के प्रेग्नेंट होने के बारे में बता सकूँ । इंडिया गेट पर कांचा पहलवान की लाश भी मैंने योजना के तहत ही फेंकी । मैं फ्लाइंग स्क्वाड दस्ते के सब-इंस्पेक्टर को अपनी ऑटो रिक्शा का नम्बर नोट करते भी देख चुका था । मुझे मालूम था कि सुबह जब पुलिस को इंडिया गेट पर कांचा पहलवान की लाश पड़ी मिलेगी तो स्वाभाविक रूप से उनका शक सीधा मेरे ऊपर जायेगा । मेरे ऊपर शक जाना इसलिये भी जरूरी था- क्योंकि हड़ताल होने के बावजूद मेरी ऑटो रिक्शा उस इलाके में देखी गयी थी । हाँ- इंस्पेक्टर राजविर ने मेरे खिलाफ एकदम एक्शन लेने की बजाय पहले मेटरनिटी वार्डों की जो भी रजिस्ट्री चेक की- उसके लिये मैं वाकई उनके दिमाग की दाद दूंगा । यह बात अलग है कि मिस्टर राजविर द्वारा उठाये गये इस कदम से भी आखिरकार मुझे ही फायदा हुआ ।कांचा पहलवान की लाश इंडिया गेट पर फेंकने के बाद मेरी योजना का सबसे पहला काम था- किसी भी तरह पुलिस के शिकंजे में फंस जाना । ताकि मैं दुर्लभ वस्तु चोरी करने वाले संगठन की दृष्टि में यानि !" रमेश ने सभी अपराधियों की तरफ उंगली उठाई- "आप सब महानुभावों की नजरों में खुलकर आ सकूँ ।"

"एक सवाल का जवाब और दीजिये सर !" इंस्पेक्टर राजविर बोला- "जब आप इंडिया गेट की तरफ जा रहे थे, उस समय आपकी ऑटो रिक्शा में कांचा पहलवान की लाश कहाँ थी ? वह तो आपके विभाग का वो जासूस था जो कांचा पहलवान की हत्या का ड्रामा रच रहा था । फिर दिल्ली पुलिस को इंडिया गेट पर बृहस्पतिवार की सुबह जो असली कांचा पहलवान की लाश पड़ी मिल- वो वहाँ कहाँ से आयी ?"

"वैरी सिम्पल- इसके लिये एक बड़ा साधारण-सा तरीका अपनाया गया ।" रमेश बोला- "दरअसल बृहस्पतिवार की सुबह इंडिया गेट पर जो लाश पड़ी मिली- कांचा पहलवान की उस असली लाश को हमारे विभाग के आदमी पहले ही इंडिया गेट की झाड़ियों में छिपा गये थे । मैंने जब कांचा पहलवान का रोल अदा करते जासूस को वहाँ फैंका- तो वह हमारे दृष्टि से ओझल होते ही वहाँ से कूच कर गया था । इस तरह बृहस्पतिवार की सुबह पुलिस को जो लाश झाड़ियों से बरामद हुई- वह वास्तव में ही असली कांचा पहलवान की लाश थी ।"

इंस्पेक्टर राजविर की आंखों में बेइन्तहा प्रशंसा के भाव उभर आये ।

"सर!" तभी 'नवहिंदुस्थान टाइम्स' अखबार का पत्रकार बोला- "मेरे दिमाग में बहुत देर से एक सवाल हलचल मचा रहा है- अगर साथ-के-साथ उस सवाल का भी जवाब मिल जाये, तो कैसा रहे ?"

"क्यों नहीं- जरूर पूछो ।"

"सर- हमारे नवहिंदुस्थान टाइम्स अखबार में कांचा पहलवान की मौत की बाबत जो खबर प्रकाशित हुई थी- उस खबर को मैंने ही तैयार किया था । जहाँ तक मुझे याद पड़ता है सर- उस खबर में यह लिखा था कि कांचा पहलवान जब रीगल सिनेमा के पास से ऑटो रिक्शा में बैठकर भागा, तो उससे पहले बुलेट पर सवार पुलिसकर्मियों ने पास की गली में दो फायर की आवाज सुनी थी ।"

"जी हाँ- यह खबर बिल्कुल सही है ।"

"फिर वह गोलियां किसने चलायी सर ?"

“गुड क्वेश्चन!” रमेश ने जवाब दिया- “दरअसल कांचा पहलवान का रोल अदा करते हमारे जासूस ने ही दो हवाई फायर किये थे । वह भी इसलिये- ताकि बुलेट पर सवार पुलिस कर्मियों को योजना अनुसार अपनी तरफ आकर्षित किया जा सके और बाद में यह साबित करने में आसानी रहे कि कांचा पहलवान की हत्या वास्तव में किसी ऑटो रिक्शा ड्राइवर ने ही की थी ।”

“वैरी इंटरेस्टिंग ।” एक रिपोर्टर बे-साख्ता कह उठा- “वाकई क्या खूब योजना थी ।”

रमेश आहिस्ता से मुस्कराया ।

“खैर- मैं अब आगे की योजना के बारे में बताता हूँ ।” रमेश थोड़ा रुककर पुनः बोला- “उसके बाद मैं पीतल की मूर्ति बेचने खासतौर पर सेठ रुपचंद की दुकान पर इसलिये गया- ताकि यह मालूम हो सके कि सेठ रुपचंद और कांचा पहलवान के बीच आपस में क्या रिश्ता था । यह बात मैं पहले ही बता चुका हूँ कि कांचा पहलवान की जेब से हमें सेठ रुपचंद की ज्वैलरी शॉप का एक विजिटिंग कार्ड मिला था । हाँ- इस स्पॉट पर एक करिश्मा जरूर हुआ ।”

“करिश्मा ।” रुपचंद चौंका- “वडी कैसा करिश्मा नी ?”

“भई- यह क्या कम बड़ा करिश्मा था ।” रमेश के होठों पर मुस्कान रेंगी- “कि मैं तुम्हारी ज्वैलरी शॉप पर मूर्ति बेचने गया और इत्तेफाक से तुम ही दुर्लभ वस्तु चुराने वाले संगठन के बॉस निकले । जब तुमने मुझे तलाशने के लिये मेरे पीछे आदमी दौड़ाये थे- मैं तभी समझ गया था कि इस अवैध धंधे में जरूर तुम्हारा कोई-न-कोई रिश्ता है । उसके बाद मेरे द्वारा छोड़े गये लीक पॉइंटों की जांच-पड़ताल करते हुए इंस्पेक्टर राजविर का मेरे तक पहुँचना और फिर मेरा सोनपुर से भाग निकलना सामान्य घटना थी ।”

“मुझे तो अब इस बात का भी शक होने लगा था । राजविर बोला- “कि सोनपुर से भागते समय आपकी जो जेब कटी उसके पीछे भी आपकी ही कोई चाल थी ।”

“बिल्कुल ठीक कहा तुमने ।” रमेश मुस्कराया- “दरअसल बस में चढ़ते समय मैं जानबूझकर एक शराबी से टकरा गया था और मेरी जेब में उस समय जो बीस रुपये थे- उन्हें मैंने खुद ही उसकी जेब में डाल दिये थे ।”

“ऐसा क्यों किया आपने ?”

“क्योंकि मैं चाहता था कि मैं टिकट न लेने के अपराध में गिरफ्तार हो जाऊं- “पुलिस के शिकंजे में जल्द-से-जल्द फंसू ।”

“ओह- लेकिन अगर आपको गिरफ्तार ही होना था ।” राजविर ने पूछा- “तो आप मेरे आने पर डिंपी के घर से भागे ही क्यों- गिरफ्तार तो मैं आपको तभी कर लेता ।”

“निःसन्देह तुम मुझे गिरफ्तार कर लेते- लेकिन मैं यह ड्रामा करते हुए गिरफ्तार होना चाहता था- जैसे मैं पुलिस से बचने की कोशिश कर रहा होऊं । क्योंकि ऐसी स्थिति में दिल्ली पुलिस का तथा संगठन के लोगों का संदेह मेरे ऊपर और दृढ़ होता ।”

“वाकई ।” खामोश बैठे राजदीप सोनवाल ने भी रमेश की खुलेदिल से तारीफ की- “आपने एक-एक पॉइंट पर काफी बारीकी से काम किया मिस्टर रमेश ।”

“वह तो किया ।” रमेश के होठों पर मुस्कान रेंगी- “लेकिन मुझे गिरफ्तार करने के बाद मिस्टर

राजविर ने मेरी जो जमकर धुनाई की- वह बारीक काम नहीं था ।"

"सॉरी सर!" राजविर के चेहरे पर खेदपूर्ण भाव उभरे- "मैं वाकई अपने किये के प्रति बहुत शर्मिन्दा हूँ ।"

"इसमें शर्मिन्दा होने जैसी कोई बात नहीं मिस्टर राजविर ।" रमेश फौरन बोला- "इट्स रादर ए मेटर ऑफ प्लेजर- आइ एम प्राउड ऑफ यू । उस समय तुम अपने कर्तव्य का पालन कर रहे थे इसलिये सिर्फ मुझे ही नहीं बल्कि पूरे पुलिस डिपार्टमेन्ट को तुम्हारे ऊपर गर्व होना चाहिये ।"

"यू आर वैरी काइंड सर ।"

रमेश आहिस्ता से मुस्करा दिया ।

"अब अदालत वाला स्पॉट आता है ।" रमेश आगे बोला- "यह तो अब आप लोग भी समझ गये होंगे कि मैं गिरफ्तार ही इसलिये हुआ था- क्योंकि मुझे यकीन था कि संगठन के लोग मुझे पुलिस के शिकंजे से किसी-न-किसी तरह जरूर निकाल लेंगे ।"

"आपको ऐसा यकीन क्यों था सर?" एक पत्रकार ने पूछा ।

"सवाल अच्छा है ।" रमेश बोला- "दरअसल मेरे इस यकीन का सबसे बड़ा ठोस कारण ये था कि संगठन के लोगों को मेरे बारे में पता चल चुका था और वह पुलिस की तरह मुझे न सिर्फ कांचा पहलवान का खूनी समझ रहे थे बल्कि उन्हें इस बात का भी पूरा भरोसा था कि नटराज मूर्तियां मेरे ही पास हैं- यही मेरे यकीन की असली वजह थी- मैं जानता था कि नटराज मूर्तियां हासिल करने के लिये वह किसी-न-किसी तरह मुझे पुलिस के शिकंजे से जरूर आजाद करायेंगे- जैसा कि इन्होंने किया भी । डिफेन्स लॉयर रौनक मल्होत्रा के तर्क वाकई लाजवाब थे- और मैं जीवन में पहली बार किसी वकील से इतना प्रभावित हुआ था । इस प्रकार संगठन के लोग मुझे अदालत से रिहा कराकर खुद ही अपने अड्डे पर ले गये- इन्होंने अपनी मौत को खुद ही दावत दी । हाँ- धुनाई मेरी वहाँ भी खूब हुई ।"

पूरे कांफ्रेंस हाल में हंसी का फव्वारा छूट गया ।

"उसके बाद दिल्ली पुलिस द्वारा मेरे ऊपर जो एक लाख रुपये का इनाम घोषित किया गया- वह भी हमारी ही योजना थी ।"

"उससे क्या फायदा मिला आपको ?"

"बहुत बड़ा फायदा मिला । उसी घोषित इनाम की वजह से मैं सेठ रुपचंद की रहनुमाई हासिल कर सका- उसका कृपापात्र बन सका- और इन सबसे ऊपर मैं उसी घोषित इनाम की वजह से संगठन का सक्रिय मेम्बर बन सका ।"

"लेकिन आपको इनके संगठन में शामिल होने की क्या जरूरत थी सर ।" दूरदर्शन टीम के एक सदस्य ने पूछा- "आपका मिशन तो वहीं खत्म हो गया था- आपने फौरन ही इन लोगों को गिरफ्तार क्यों नहीं करा दिया ?"

"मैं बिल्कुल यही कदम उठाता ।" रमेश बोला- "लेकिन जब मुझे यह मालूम हुआ कि इनका कोई सुपर बॉस डॉन अँटोनी भी है- तो मैं रुक गया । मैंने फैसला कर लिया कि मैं इन सबको रंगे हाथों सुपर बॉस के साथ गिरफ्तार करूंगा ।"

"ओह !"

"घटनाक्रम आगे बताने से पहले मैं आपको एक बात और बता देना मुनासिब समझता हूँ- वो यह कि इंस्पेक्टर राजविर को जो असली सोने की नटराज मूर्ति जग्गु ने दी, उस मूर्ति को मैंने ही जानबूझकर घटनास्थल पर फेंका था । और मेरे पास मौजूद छः मूर्तियों में से वही एक असली सोने की मूर्ति थी । मैं समझता कि अब आप लोगों को यह बताने की जरूरत नहीं कि पीतल की पांच ही मूर्तियां क्यों गढ़वाई गयी थी । मैं फिर स्पष्ट करता हूँ- दरअसल पीतल की पांच मूर्तियां इसलिये गढ़वाई गईं थी- क्योंकि आवश्यकता ही पांच मूर्तियों की थी ।"

सब स्तब्ध भाव से रमेश को देख रहे थे ।

"इस पूरे घटनाक्रम के बाद ।" रमेश बोला- "दुर्लभ ताज का नाटक रचा गया ।"

"क...क्या ?" डॉन अँटोनी के नेत्र अचम्भे से फटे- "दुर्लभ ताज का कजाखिस्तान से यहाँ आना भी एक नाटक था ?"

"जी हाँ ।" रमेश के होठों पर चालाकी से भरी मुस्कान रेंगी- "दरअसल तुम लोगों ने इंडियन म्यूजियम से जो दुर्लभ ताज चुराया- वो असली ताज नहीं था । वह तो असली ताज की डमी मात्र था । सच्चाई ये है कि असली ताज तो कजाखिस्तान से यहाँ आया ही नहीं- वह कजाखिस्तान में अपनी जगह मौजूद है । यह सारा नाटक कजाखिस्तान राज्य की सहमति लेने के बाद तुम्हें गिरफ्तार करने के लिये रचा गया । यहाँ तक कि मिस्टर राजदीप सोनवाल की तरफ से अखबार में गवर्नेस की आवश्यकता के लिये जो विज्ञापन छपा- वह विज्ञापन भी हमारे ही मायाजाल का एक हिस्सा था । मिसेज सोनवाल को जानबूझकर एक सप्ताह के लिये उदयपुर भेजा गया । डिंपी को गवर्नेस बनाकर भेजना भी हमारी पहले से सोची-समझी योजना थी- और यह सारा खेल इसलिये खेला गया, ताकि पूरे ड्रामे को हकीकत का रंग दिया जा सके ।"

"इ...इसका मतलब मिस्टर सोनवाल को यह रहस्य पहले से ही मालूम था ।" राजविर हैरानी से बोला- "कि आप क्राइम ब्रांच के ऑफिसर हैं ?"

"पहले से ही नहीं बल्कि बहुत पहले से मिस्टर सोनवाल को यह रहस्य मालूम था- दरअसल वह मेरे बचपन के मित्र हैं । हमारे साथ-साथ पढ़ने से लेकर लगभग हर काम साथ-साथ किया है । हाँ- एक काम में, मैं इनसे जरूर पिछड़ गया ।"

"किस काम में सर ?"

"शादी इन्होंने मुझसे पहले कर ली ।"

पूरे कांफ्रेंस हॉल में हंसी का तेज फव्वारा छूट गया ।

"अन्त में मैं एक रहस्य और बताकर इस पूरी कहानी का पटाक्षेप करता हूँ ।" रमेश बोला- "दुर्लभ ताज चुराने की जो मास्टर पीस योजना रुपचंद को सुपर बॉस के नाम से मिली- दरअसल योजना भी मेरे दिमाग की ही उपज थी । डिंपी की मदद से मैंने वह कागज कांफ्रेंस हॉल में फिंकवाया था ।"

एक बार फिर सब सन्न रह गये ।

"तो दोस्तों- यह थी वो योजना ।" रमेश थोड़ा रुककर बोला- "जिसे क्राइम ब्रांच ने इस

संगठन को गिरफ्तार करने के लिये रचा था- हमें इस बात की खुशी है कि हम अपने मकसद में कामयाब हुए । इसके अलावा अगर आपमें से किसी के दिमाग में कोई सवाल मंडरा रहा है- तो वह बे-हिचक उसका जवाब पूछ सकता है ।"

"सर ।" अखबार का एक रिपोर्टर बोला- "आप जग्गु के बारे में कोई टिप्पणी करना चाहेंगे?"

"जरूर! इस पूरी योजना को अंजाम देते समय जग्गु एकमात्र एक कैरेक्टर था- जो हमेशा मौत की नंगी तलवार बनकर मेरे सिर पर लटका रहा । अगर मैं पूरी योजना में किसी से आतंकित हुआ तो वह जग्गु था । रौनक मल्होत्रा की हत्या उसने जिस प्रकार देखते-ही-देखते कर डाली थी- वह वाकई उसके जुनून की इन्तेहा थी। फिर मुझे अंदर-ही-अंदर जग्गु से हमदर्दी भी थी- क्योंकि वह जो कुछ कर रहा था, भावनाओं में बहकर कर रहा था । मैं जग्गु को बचाने की हर मुमकिन कोशिश करता- लेकिन डॉन अँटोनी ने जितनी तेजी से उस पर गोली चलाई, उस पोजिशन में कोई कुछ नहीं कर सकता था ।"

"एक आखिरी सवाल और सर !" दूरदर्शन टीम का इन्चार्ज थोड़ा मुस्कराकर बोला- "आपने सबके विषय में बता दिया लेकिन यह नहीं बताया कि मिस डिंपी अब क्या रोल अदा करने वाली हैं ?"

"थोड़ा धीरज रखो ।" रमेश ने भी मुस्कराकर ही जवाब दिया- "बहुत जल्द इस सवाल का जवाब भी आपको मिल जायेगा ।"

"थैंक्यू सर ।"

"ऐनी क्वेश्चन ?"

"नो सर !"

"ऐनीथिंग ऐल्स ?"

सब खामोश रहे ।

फिर वो सनसनीखेज मीटिंग वहीं बर्खास्त हो गयी थी ।

डॉन अँटोनी, सेठ रुपचंद, तानाजी जाधव और गुड्डू त्यागी पर अदालत में मुकदमा चला ।

मुकदमे के दौरान एक बात का और पर्दाफाश हुआ वो यह कि सुपर बॉस डॉन अँटोनी माफिया ग्रुप का एजेंट था और उसे जितनी भी महत्वपूर्ण जानकारियां हासिल होती थी, माफिया ग्रुप के माध्यम से ही हासिल होती थीं ।

उन चारों को अदालत ने उम्र कैद की सख्त सजा सुनायी ।

राजदीप सोनवाल को अपना बेटा मिल गया ।

और डिंपी! सोनपुर स्थित अपने घर में खामोशी से लेटी थी डिंपी ।

मुँह तकिये में छिपा रखा था और उसके अन्तर्मन में उठा ज्वार-भाटा उसे हिचकियां ले-लेकर रोने के लिये प्रेरित कर रहा था ।

वह रोती जा रही थी ।

रोती ही जा रही थी ।

उसकी आंखों के गिर्द रमेश का चेहरा चक्कर काट रहा था । उसे वह पल याद आ रहे थे, जब रमेश ने उससे बड़े अनुरागपूर्ण स्वर में कहा था- "मैं तुमसे प्यार करता हूँ डिंपी- और कभी-कभी एक सपना भी देखा करता हूँ ।"

"क...कैसा सपना ?" डिंपी का दिल धड़क उठा था ।

"यही कि हमारे पास खूब धन-दौलत हो- आगे-पीछे नौकर-चाकर हों- शानदार गाड़ी हो- खूबसूरत घर हो । और...और उस घर में तुम किसी राज कुमारी की तरह रहो ।"

रमेश के वह शब्द सुनकर डिंपी का पूरा अस्तित्व हवा में परवाज़ करने लगा था- उसे यूँ महसूस हुआ था, जैसे सारे जहान की दौलत उसे मिल गयी हो ।

"हे भगवान!" डिंपी ने जोर से सुबकी ली- "रमेश ने आखिर मेरे साथ ऐसा मजाक क्यों किया ? क्यों किया ?"

"उसने तुम्हारे साथ मजाक नहीं किया डिंपी ।"

"यह मजाक नहीं तो और क्या था ?" डिंपी गुर्रायी- "क्या अधिकार था उसे मेरे सपनों से खेलने का ?"

"यह अधिकार दिया नहीं जाता पागल ।" तभी किसी ने स्नेहसिक्त भाव से डिंपी के बालों में उंगलियां फेरी- "यह अधिकार तो खुद-ब-खुद हासिल हो जाता है ।"

डिंपी एकदम चौंककर पलटी ।

सामने रमेश खड़ा था ।

"त...तुम...तुम ।" डिंपी हड़बड़ा उठी ।

"किसी महापुरुष ने सच ही कहा है डिंपी- हर आदमी की सफलता के पीछे किसी-न-किसी स्त्री का हाथ होता है । आज मुझे यह जो सम्मान मिला- यह जो शोहरत मिली- उसकी एकमात्र हकदार तुम हो- सिर्फ तुम ।"

"य...यह तुम क्या कह रहे हो रमेश ?"

"जानती हो ।" रमेश भावुकतावश बोलता चला गया- "इस केस को सॉल्व करने का मुझे जो सबसे बड़ा पुरस्कार मिला है वह तुम हो डिंपी- तुम । मुझे आज तुम हासिल हो गयीं- सच्चे दिल से प्यार करने वाली एक पत्नी हासिल हो गयी ।"

"म...मुझे यह सब कुछ एक सपना लग रहा है रमेश ।"

"नहीं- यह सपना नहीं है ।"

"ल...लेकिन मुझे यकीन नहीं आ रहा ।" डिंपी की आवाज कंपकंपायी ।

रमेश ने फौरन अपने दहकते होंठ डिंपी के होठों पर रख दिये- फिर उसे कसकर अपनी बांहों में भर लिया ।

"क्या अब भी तुम्हें यह सब एक सपना ही लग रहा है डिंपी ?" वह गरम सांसों के वेग में बोला ।

डिंपी खामोश रही ।

उसका शरीर तपने लगा ।

वक्ष उठने-गिरने लगे ।

“ज...जवाब दो डिंपी ।” रमेश की आवाज में मदहोशी थी, बेचैनी थी- “क्या अब भी तुम्हें वह सब एक सपना ही लग रहा है ?”

“नहीं ।” डिंपी की आवाज वासना के वेग से कांपी- “नहीं- यह सच है- अ...अटूट सत्य ।”

वह कसकर रमेश के सीने से लिपट गयी ।

बाहर एक शानदार गाड़ी डिंपी का इंतजार कर रही थी ।

एक खूबसूरत जिंदगी उसका इंतजार कर रही थी ।

रमेश ने उसे जितने भी सपने दिखाये थे- वह आज तमाम सपने पूरे हो चुके थे ।

** ** समाप्त ** **